Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

सफलता के चरण

43
S
7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
168007

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता के चरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता के चरण

Central Library
168007
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

लेखक
गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
168007

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-S

© भारती साहित्य सदन

आर्य साहित्य
BOOKS IN HINDI, ENGLISH & SANSKRIT
Phone - 9213527666, 7065619655
011 23553624

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5

मूल्य : एक सौ रुपये मात्र

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
३०-पी, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : १९९६ (प्रस्तुत रूप में प्रथम बार)

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

सफल जीवन के विषय में मतभेद हो सकता है। आर्थिक सम्पन्नता भी सफल जीवन का लक्षण सम्भव है और मानसिक तथा आत्मिक निर्मलता भी इसका लक्षण कही जा सकती है। यह भी कहा जाता है कि आर्थिक सम्पन्नता से दूसरी बातें भी सम्भव हैं। अतः इस विषय को न छूते हुए सफल जीवन की ओर बढ़ने के पगों पर ही इस पुस्तक को लिखने का यत्न किया गया है।

जीवन की सफलता, आर्थिक, मानसिक अथवा आत्मिक कुछ भी हो, उसको प्राप्त करने के लिए मार्ग एक ही है। इस ओर जाने के लिए प्रथम चरण है अपने ध्येय में दृढ़ निष्ठा। निष्ठाहीन व्यक्ति पथ में छोटी-सी भी बाधा उपस्थित होने पर विचलित होकर चलना छोड़ देता है। सब महापुरुष लगन के द्वारा महानता प्राप्त कर सके हैं। लगन निष्ठा का दूसरा नाम है।

लगन अर्थात् सिद्धि प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्न, सफलता के लिए अत्यावश्यक होता हुआ भी ऐसा नहीं है कि सिद्धि दिला ही देगा। इसके लिए जिस पर चरण उठाए जाएँ, पथ भी उचित ही होना चाहिए। मिथ्या मार्ग पर चलनेवाला निष्ठावान व्यक्ति लक्ष्य से दूर हो जाएगा। एक परिश्रम करनेवाला व्यक्ति चोरी, ठगी, धोखा तथा झूठ बोलकर भी तो परिश्रम करता है। अतः परिश्रम करने में लगन भी, परिश्रम की दिशा मिथ्या होने पर, ध्येय तक पहुँचाने में सफल नहीं हो सकती। मार्ग उचित दिशा का ही होना चाहिए।

दिशा निश्चय करने के लिए विवेक अर्थात् युक्तियुक्त व्यवहार परमावश्यक है। युक्ति के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकारों से मन को रिक्त होना चाहिए। युक्ति मन का विषय है। उक्त पाँच विकार मन को मलिन कर युक्ति में बाधा बन जाते हैं। अतएव मार्ग निश्चय करने में निर्मल मन ही समर्थ हो सकता है।

मार्ग निश्चय हो जाए, उस पर चलने अर्थात् ध्येयप्राप्ति में लगन भी हो जाए तो फिर अगला पग है गति। गति इतनी धीमी भी हो सकती है कि जीवन-काल में सफलता न मिले। अतः सफलता के चरणों में चलने की गति का भी ध्यान रखना योग्य है। ध्येय की ओर बढ़ने में गति लाने के उपायों में प्रायः भूल हो जाती है। इस भूल से बचने के लिए धर्माचरण की आवश्यकता है। धर्मानुकूल व्यवहार रखकर ही गति-सहित बढ़ना वांछनीय है।

ये हैं सफलता के चरण। प्रस्तुत उपन्यास इसी विषय पर लिखा गया है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

'निर्धनता महान् अभिशाप है।' इस कथन को रामसुमन ने कभी भी स्वीकार नहीं किया। जब वह दूसरों को यह कहते सुनता था तो वह उन्हें कहा करता था, "सुख-दुःख, अच्छाई-बुराई, मान-अपमान, ये सब मन की अवस्थाएँ हैं। इनका धन के होने अथवा न होने से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

रामसुमन का यह दृढ़ मत था कि धनियों का धन, बलवानों का बल और प्रभुओं का प्रभुत्व भगवान की कृपा का ही परिणाम है। उसका ही प्रताप सर्वत्र विद्यमान रहता है। अतः मुख्य बात राम की कृपा है, शेष सब गौण हैं। उसके मुख पर प्रायः यह दोहा रहता था—

हरि माया कृत दोष गुण, बिनु हरि भजन न जाहिं।
भजिय राम तजि काम सब, अस विचारि मन माहिं॥

रामसुमन सेठ कमलापति की कोठी में चौकीदार था। उसे सेठ जी की कोठी में काम करते सत्रह वर्ष हो गए थे, अतः वह घर का एक अंग-सा ही दिखने लगा था। रामसुमन का बड़ा लड़का रामनिरंजन तो पिता से भी अधिक सेठ जी के परिवार में घुला-मिला रहता था और यदि उसका वर्ण भी सेठ जी के बच्चों की भाँति गंदमी होता अथवा वह भी उन जैसे बढ़िया वस्त्र पहनता तो कभी भी कोई बाहरी व्यक्ति उसे सेठ जी के परिवार से बाहर का न समझता। रामनिरंजन गौर-वर्णीय हृष्ट-पुष्ट लड़का था और मोटे मशीनी मलेशिया कपड़े के घर के सिले हुए और घर पर ही धुले वस्त्र पहनता था। इस प्रकार सेठ जी के बच्चों के बीच खड़ा वह उनसे अलग प्रतीत होता था। उसे देखनेवालों के मुख से यही निकलता था, 'लड़का तो सुन्दर है, परन्तु किसी निर्धन का प्रतीत होता है।'

रामसुमन को सेठ जी की कोठी के पिछवाड़े में नौकरों के क्वार्टरों में स्थान मिला हुआ था। इस गृह में एक कोठरी थी, उसके सामने बरामदा और छोटा-सा सेहन था। कोठी की चारदीवारी के भीतर ही यह गृह बना था। इसके सेहन में रामसुमन अपनी गाय बाँधा करता था। गाय के गोबर इत्यादि के कारण स्थान यदि गंदा हो जाता तो इसे साफ-सुथरा रखने के लिए रामसुमन की पत्नी भगवती को विशेष परिश्रम करना पड़ता था।

कोठी के दो अन्य नौकरों के लिए अलग-अलग गृह थे। एक में परशुराम चपरासी रहता था और दूसरे में लेखराज मोटर-ड्राइवर। इन तीन उपगृहों के अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी के इसी कक्ष में मोटर रखने का गैरज भी था। इनमें जहाँ लेखराज और परशुराम सदा ही अपनी निर्धनता पर आँसू बहाया करते थे, वहाँ इनके व्यवहार के विपरीत रामसुमन सदा सन्तुष्ट और प्रसन्न रहता था। रामसुमन के परिवार में अपनी पत्नी भगवती और दो लड़के थे। किन्तु चपरासी परशुराम और मोटर-ड्राइवर लेखराज अकेले थे। उनके परिवार के लोग उनके गाँवों में थे। लेखराज और परशुराम को, वेतन भी रामसुमन से अधिक मिलता था।

परन्तु रामसुमन अपने दोनों साथियों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट रहता था। रामसुमन के पास एक गाय थी, जो उसके बच्चों को दूध देती थी और साथ ही कुछ आय में वृद्धि भी कर देती थी। परन्तु परशुराम और लेखराज बहुत ही दुःखी अवस्था में रहते थे। इन्हीं से रामसुमन की अपने भगवान में निष्ठा की चर्चा होती रहती थी। यद्यपि वे दोनों भी परमात्मा पर अविश्वास तो नहीं करते थे, फिर भी अपने जीवन और उसके बनानेवाले से वे असन्तुष्ट अवश्य थे।

रामनिरंजन सोलह वर्ष का हो गया था। पिता के अथक प्रयत्न और कठोर मितव्ययता के फलस्वरूप वह दसवीं श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त कर मैट्रिक की परीक्षा दे चुका था। रामनिरंजन अपनी पढ़ाई मन लगाकर करता था। सेठ जी का लड़का सतीश रुपये-पैसे से उसका सदा सहायक रहता था।

सतीश रामनिरंजन का सहपाठी था। दोनों सतीश के कमरे में बैठे इकट्ठे पढ़ा करते थे। परिणामस्वरूप रामनिरंजन को पुस्तकें नहीं खरीदनी पड़ती थीं। घर का काम करने के लिए और स्कूल में लिखने के लिए कापियाँ भी सतीश से मिल जाती थीं। सतीश को रामनिरंजन की सहायता का पुरस्कार भी मिलता रहता था। वह सतीश को स्कूल के पाठ को समझाने और उसे स्मरण कराने में सहयोग देता था। अतः सतीश रामनिरंजन के प्रति आभार अनुभव करता था। रामनिरंजन को भी इससे लाभ होता था। इस समझने और समझाने से ही उसको अपने पाठ का भी अभ्यास हो जाता था। परिणाम यह हो रहा था कि सतीश रामनिरंजन का आभारी होता जाता था और रामनिरंजन पढ़ाई में अधिकाधिक योग्य होता जाता था।

ज्यों-ज्यों रामनिरंजन बड़ा होता गया, उसे अपनी निर्धनता की अनुभूति भी उसी प्रकार अधिकाधिक होती गई और अपने तथा सेठ जी के परिवार के मध्य खाई का अनुभव भी स्पष्ट होता गया। वह सतीश के कमरे में बैठकर सतीश को पाठ स्मरण कराया करता था और स्वयं भी, स्कूल से मिले हुए घर के काम को वहीं बैठकर कर लिया करता था। वह सेठ जी की कोठी की सज-धज और अपने रहने के स्थान में आकाश-पाताल का अन्तर देखता था। एक स्वच्छ, सुसज्जित और लाभप्रद था, दूसरा कमरा जिसमें पूर्ण परिवार रहता था, छोटा, गन्दा, अँधेरा और आवश्यक सामान से भी रहित था।

निर्धनता के अनुभव का श्रीगणेश उसे तब हुआ जब वह दूसरी श्रेणी में पढ़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। सतीश की एक बहन थी—रेखा। वह बहुत ही हँसमुख और मधुर स्वभाव की थी। वह तब चार वर्ष की थी और सतीश तथा रामनिरंजन के कंधों पर चढ़ती-उतरती उनसे खेला करती थी। एक दिन उसने गुड़िया का विवाह रचाने का प्रयत्न किया। उसकी माँ सत्यवती ने उससे पूछा—"रेखा! गुड़िया तो तुम्हारी है, पर किससे करोगी इसका विवाह?"

रेखा चिन्ता में डूब-सी गई। उसने पूछा, "माँ, तो विवाह अकेले नहीं हो सकता?"

"ऊँहूँ। एक गुड़िया होती है और एक गुड्डा, दोनों का विवाह होता है। गुड़िया बहू बनकर गुड्डे के घर चली जाती है।"

"तो गुड्डा कहाँ से लाऊँ?"

"मैं क्या जानूँ?" माँ ने मुस्कराते हुए कह दिया।

समीप ही रेखा की बड़ी बहन रानी खड़ी थी। उसने रानी को कहा—"रानी का गुड्डा होगा।"

"यह कैसे हो सकता है? बहन-बहन समधिन नहीं बन सकतीं।"

"अच्छी बात है। मैं निरंजन भैया से कहूँगी कि वह एक गुड्डा बना ले।"

"ऊँहूँ। एक धनी की गुड़िया निर्धन के गुड्डे से नहीं ब्याही जा सकती।"

"क्यों?"

"इसलिए कि निर्धन के घर तो खाने के लिए भी नहीं होता। वह गुड़िया को खिलाएगा कहाँ से?"

रेखा हँस पड़ी। वह जानती थी कि उसकी गुड़िया तो कुछ भी खाती नहीं थी। इस कारण वह किसी के भी घर ब्याही जा सकती है, वह चाहे निर्धन हो अथवा धनवान। उसी सायंकाल, जब सतीश और रामनिरंजन स्कूल का काम कर रहे थे, उसने रामनिरंजन से अपने मन में उठ रहा प्रश्न पूछ लिया।

"निरंजन!" इसी नाम से सेठ जी के घर के लोग रामनिरंजन को सम्बोधित किया करते थे, "एक निर्धन लड़के से धनी की लड़की का विवाह क्यों नहीं हो सकता?"

रामनिरंजन को शरारत सूझी। उसने कह दिया, "हो क्यों नहीं सकता? कौन करेगा विवाह, तुम करोगी?"

रेखा ने हँसते हुए कहा, "मेरी गुड़िया करेगी।"

"किसके साथ?"

"तुम्हारे साथ।" रेखा ने हँसते हुए कहा।

"मैं तो गुड़िया से विवाह नहीं करूँगा, किसी लड़की से करूँगा।"

"किसी धनवान की लड़की से?"

"हाँ।" रामनिरंजन उत्तर देता हुआ मुस्करा रहा था।

"तो उसको खिलाओगे कहाँ से?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जहाँ से मैं खाता हूँ।"

"पर तुम क्या मिठाई खाते हो ?"

"हाँ, नित्य ही।"

"भूषण हैं तुम्हारे पास ?"

"बहुत हैं, मैं अपनी पत्नी को पहनाऊँगा।"

"तब तो ठीक है।"

"क्या ठीक है ?"

रेखा हँस पड़ी और उठकर वहाँ से भाग गई।

इसके कुछ दिन पश्चात् रेखा अपनी कोठी के पिछवाड़े के 'लॉन' में 'रस्सा-कूद' खेल रही थी। रामनिरंजन स्कूल से लौटकर, पढ़ने के लिए सतीश के कमरे की ओर जा रहा था कि वहाँ रेखा को रस्से पर कूदते हुए देखने के लिए खड़ा हो गया। चार वर्ष की चंचल लड़की सहज ही रस्सी पर से ऐसे कूद रही थी, जैसे कि वह हवा में खड़ी है और रस्सी को उसके पाँव के नीचे से निकलने में किसी प्रकार की बाधा नहीं।

रेखा ने खेलना बंद कर रामनिरंजन से पूछा, "निरंजन ! तुम इस प्रकार खेल सकते हो ?"

"नहीं।" रामनिरंजन ने मुस्कराते हुए कहा।

"क्यों नहीं खेल सकते ?"

"एक निर्धन का बेटा धनी की बेटी के समान नहीं खेल सकता, उसे तो लिखना-पढ़ना है।"

इस पर रेखा को उस दिन की बात स्मरण हो आई। उसने रामनिरंजन के समीप आकर कहा, "तुम तो कहते थे कि एक गरीब आदमी धनी की लड़की से विवाह कर सकता है ?"

"हाँ, क्यों पूछती हो ?"

"मेरी माँ कहती थी, नहीं कर सकता। जब मैंने कहा कि मैं तुमसे विवाह करूँगी तो इस पर उसने कहा था, यह नहीं हो सकता। फिर मुझे डाँटकर कहा था, ऐसी बात कभी फिर मत कहना।"

"माँ जी ने ठीक कहा था रेखा ! मैंने भी अपनी माँ से जब कहा था तो मुझे भी उसने मना कर दिया था। जानती हो क्यों ?"

"नहीं।"

"इसलिए कि तुम मेरी बहन हो। बहन का भाई के साथ विवाह नहीं हो सकता।"

रेखा का मुख फीका पड़ गया। वास्तव में जब उसने अपनी माँ से विवाह न हो सकने का कारण पूछा था तो उसने बताया था कि रामनिरंजन निर्धन का बेटा है। उससे उसका विवाह नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा ने कह दिया, "मेरी माँ तो कहती थी कि तुम गरीब हो, हमारे नौकर हो, इस कारण मेरा-तुम्हारा विवाह नहीं हो सकता।"

उस दिन से रामनिरंजन को अपने और सेठ जी में अन्तर का ज्ञान हो गया। दिन-प्रतिदिन यह ज्ञान पुष्ट होता गया। जब उसको विवाह-सम्बन्ध का ज्ञान होने लगा तो रेखा की चंचलता उसके मन में चपलता और प्रसन्नता का एक साकार रूप लेने लगी। उस रूप को वह भीतर ही भीतर दबाता रहता था और अपनी माँ की कही हुई बात को स्मरण कर मन को समझाता था कि रेखा उसकी बहन है और बहन-भाई का विवाह नहीं हो सकता।

: २ :

मैट्रिक की परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ तो सतीश और रामनिरंजन दोनों परिणाम जानकर प्रसन्नता से उछलते हुए घर पहुँचे। रामनिरंजन प्रथम श्रेणी में भी अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ था और सतीश द्वितीय श्रेणी में साधारण स्तर पर। फिर भी जब दोनों कोठी में पहुँचे और उन्होंने अपने उत्तीर्ण होने का समाचार बताया तो सतीश पर तो मानो बधाइयों की बौछार होने लगी। सतीश की माँ भी इस गुल-गपाड़े को सुनकर बाहर निकल आई। सब-के-सब कोठी के बरामदे में खड़े थे। सभी कोठी के और घर के सब नौकर भी सेठ जी को बधाइयाँ देने लगे। सेठ जी ने सतीश की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार किया और उसका माथा चूम लिया। परन्तु उन खड़े हुओं में से एक ने भी नहीं पूछा कि रामनिरंजन का क्या हुआ, यद्यपि सब जानते थे कि वह भी सतीश के साथ ही परीक्षा में बैठा था।

जब सेठ कमलापति बाहर से आए तो सबको खड़े देखा, और पूछने लगे, "क्या बात है?"

सेठ जी की बड़ी लड़की रानी ने उत्तर दिया, "सतीश पास हो गया है।"

"तो फिर बड़ी बात क्या हुई? परिश्रम किया था तो उत्तीर्ण भी होना ही था।"

"किन्तु प्रसन्नता तो होनी ही चाहिए, इस बात पर।"

इसी समय रेखा बोल उठी, "प्रसन्नता तो पिताजी को भी है परन्तु ···।"

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। यह उसका स्वभाव था। बिना हँसे वह अपनी बात कह ही नहीं सकती थी। घर के भी लोग जानते थे कि वह सदा हँसती रहती है। इस कारण उनका यह स्वभाव हो गया था कि उसकी शेष बात को सुनने के लिए उसकी हँसी को भी सुनें।

हँसकर रेखा ने कहा, "परन्तु पिताजी अपनी प्रसन्नता छुपा रहे हैं।" वह फिर हँस पड़ी।

सेठ जी ने कहा, "कुछ कहोगी भी? भला मैं क्यों छुपा रहा हूँ अपनी खुशी?"

"इसलिए कि मिठाई न खिलानी पड़े।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तो सब हँस पड़े। सेठ जी भी हँसने लगे। उन्होंने हँसकर अपनी पत्नी को कहा, "भाग्यवान ! इस मिठाई की भूखी लड़की को लड्डू मँगवा दो।"

"पिताजी ! मैं तो साड़ी लूँगी, बड़ी बढ़िया।" रेखा की बड़ी बहन रानी ने कह दिया।

"मैं पहले देख भी तो लूँ कि मेरी प्रसन्नता तुम्हारी साड़ी के मूल्य की है अथवा नहीं। सुनाओ सतीश ! कितने अंक प्राप्त किए हैं ?"

"पिताजी ! तीन सौ बीस।"

"अर्थात् सैकण्ड डिवीजन में ?"

"मुझे तो पास होने की भी आशा नहीं थी।"

"क्यों ?"

"गणित का पर्चा खराब हो गया था।"

"तो फिर मिठाई तो तुम्हारे परीक्षक को खिलानी चाहिए जिसने तुम्हें फोकट में ही पास कर दिया।"

सतीश ने मुस्कराकर कहा, "पिता जी ! मिठाई तो हम सबको खिला दीजिए और साड़ी, रानी के स्थान पर, परीक्षक को दे दीजिएगा।"

"कौन है वह परीक्षक जो साड़ी पहनेगा ?"

"पता तो चल सकता है, कुछ यत्न करना पड़ेगा।"

सब हँसने लगे।

समीप खड़ा रामनिरंजन सारा वार्तालाप सुन रहा था। अभी तक भी किसी ने उसको नहीं पूछा था कि वह पास हुआ है अथवा नहीं, और पास हुआ है तो कितने अंक लेकर पास हुआ है।

रामनिरंजन चुपचाप वहाँ से खिसककर अपने घर चला गया। भगवती बर्तन मसलकर हाथ धो रही थी। उसका ध्यान निरंजन की ओर नहीं था। वह अपने विचारों में लीन हाथ-मुख धोती रही और रामनिरंजन चुपचाप कमरे में जाकर खाट पर लेट गया। उसे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि धनी बाप और मुझ-जैसे निर्धन बाप के बेटे में कितना अन्तर है। उसकी साधारण सफलता पर भी कितना आनन्द मनाया जा रहा है, और मेरी ओर किसी का ध्यान तक नहीं गया !

आज तो रेखा का व्यवहार, जो सदा उसके प्रति सहिष्णुता का रहता था, बिल्कुल बदल-सा गया है। वह भी अपने भाई की सफलता में उसको भूल गई थी। इसका रामनिरंजन को भारी खेद था और खाट पर लेटते ही अपनी हीन अवस्था का स्मरण कर उसकी आँखों में आँसू निकल आए।

उसकी माँ भीतर आई और रामनिरंजन को खाट पर लेटे आँसू पोंछते हुए देखकर उसको स्मरण हो आया कि आज उसकी परीक्षा का फल निकलने वाला था। उसे रोते देखकर उसने समझा कि वह अनुत्तीर्ण हो गया है। वह खाट के किनारे पर बैठकर उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछने लगी, "क्या बात है निरंजन ! परीक्षा-फल निकल आया है ?"

वह उठकर बैठ गया और बोला, "हाँ माँ ! मैं उत्तीर्ण हो गया हूँ।"

"उत्तीर्ण हो गया है तो फिर रो क्यों रहा है ?"

वह अपने मन के भावों को बता नहीं सका। माँ को अपने पुत्र के पास हो जाने की बड़ी प्रसन्नता थी। परन्तु उसको रोते देखकर वह अपनी प्रसन्नता को प्रकट नहीं कर सकी। उसने पुत्र की पीठ पर हाथ फेरकर कहा, "क्या हुआ बेटा ?"

"कुछ नहीं माँ ! मैं देख रहा हूँ कि गरीब होना पाप है। सतीश सैकण्ड डिवीजन में बहुत कम नम्बर लेकर पास हुआ है, फिर भी कोठी में बधाइयों की धूम मच रही है। मैं फर्स्ट डिवीजन में बहुत अंक लेकर पास हुआ हूँ और मुझसे किसी ने पूछा तक नहीं कि मैं पास भी हुआ हूँ अथवा नहीं।"

"मैं जो पूछ रही हूँ तुमसे ! जो अपने नहीं, उन्हें क्या आवश्यकता है हमारे विषय में पूछने की ?"

रामसुमन किसी काम से बाजार गया हुआ था। वह बाजार में लड़कों को समाचार-पत्र में छपा अपना-अपना परीक्षाफल देख प्रसन्नता से कूदते अथवा शोक में आँखें झुकाए जाते देख आया था। कोठी में निरंजन की पीठ पर उसकी माँ को हाथ फेरते देखकर उसने भी वही समझा, जो भगवती ने रामनिरंजन को रोते देखकर समझा था। इससे उसके पाँव वहीं बरामदे के बाहर ही भूमि पर गड़-से गए। उसका दिल बैठता हुआ प्रतीत होने लगा। वह अपने दिल को सम्भालने के लिए वहीं बैठ गया और अपना तम्बाकू का बटुआ टटोलने लगा।

उसने तम्बाकू का बटुआ, जो सदा उसकी जेब में रहता था, निकाला। उसमें से थोड़ा-सा तम्बाकू हाथ की तली पर रख दूसरे हाथ से मसलने लगा।

भगवती ने उसको बाहर बरामदे में ही बैठते देखकर आवाज दी, "भीतर आओ जी ! मुँह मीठा कराओ। निरंजन पास हो गया है।"

रामसुमन ने सुना तो एक क्षण के लिए वह भगवती की बात को समझने के लिए ठिठक-सा गया। उसका हाथ तम्बाकू मसलता-मसलता रुक गया। पश्चात् वह चित्त की प्रसन्नता में तम्बाकू भूल गया और हाथ झाड़ते हुए उठकर कमरे में जा पहुँचा।

"ओह ! तो तुम पास हुए हो ! पर यह मुँह क्यों लटका रखा है ? मेरी चिर-परिचित अभिलाषा आज पूर्ण हो गई। राम जी की कृपा से हमारा परिवार एक पग आगे बढ़ा है। मैं अभी सेठ जी के पास जा रहा हूँ और उनसे तुम्हें किसी काम पर लगाने के लिए कहता हूँ।····

"देखो बेटा ! तपस्या का जीवन समाप्त हुआ। अब सुख के दिन दिखाई देने लगे हैं।····यह लो।" उसने अपनी जेब में से रुपये-रुपये के नोट निकाले और उनमें से एक रुपया निरंजन को देकर कहा, "बाहर से लड्डू ले आओ और दो-दो लड्डू सबको बाँट दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिरंजन को उत्साह नहीं आया कि वह हाथ बढ़ाकर रुपया ले ले। वह विचार कर रहा था कि सतीश के उत्तीर्ण होने पर पचासों रुपये की मिठाई बँटेगी और उसके लिए एक रुपये के लड्डू। किस-किस को दूँगा? उसने अपने पिता से कहा, "पिता जी! नौकरी मिलने पर जब पहला वेतन लाऊँगा तब लड्डू बाँटूँगा, अभी नहीं।"

"उसे तो तुम बाँटना, अब तो मैं बाँट रहा हूँ। अच्छा मैं ही ले आता हूँ। अपने पड़ोसियों को तो खिलाने ही होंगे।"

रामनिरंजन देख आया था कि उसके पड़ोसी और चपरासी भी उन्हीं में खड़े थे जो सतीश को बधाई दे रहे थे। वे भी उसके विषय में यह जानने के लिए किंचित् मात्र भी उत्सुक नहीं थे कि उसका परीक्षा-फल कैसा रहा है? इस कारण उसकी इच्छा नहीं हो रही थी कि उनको मिठाई खिलाए। अतः उसने कह दिया, "सब व्यर्थ है।"

: ३ :

रामनिरंजन अब समझने लग गया था कि धनी बनना आवश्यक है। बिना रुपये-पैसे के संसार में मान पाने की आशा नहीं की जा सकती। कितना प्रसन्न रहता था वह सतीश और रेखा से घुल-मिलकर! परन्तु इस समय उन्होंने भी इसकी ओर देखा तक नहीं। यदि वह भी धनवान का बेटा होता तो सभी परिचित-अपरिचित उसको और उसके पिता को बधाइयाँ देने लपककर आते।

वह इसी प्रकार अपने विचारों में लीन खाट पर लेटा रहा। भगवती उसको सान्त्वना दे, बाहर आकर गाय के लिए सानी करने लगी थी। सायंकाल होने जा रहा था। रामसुमन सेठ जी से मिलने गया हुआ था। वह अभी तक लौटकर नहीं आया था।

रामनिरंजन को आए दो घंटे से ऊपर हो चुके थे। आज वह अपने भविष्य के विषय में हवाई किले बना रहा था और उसका चित्त न तो किसी से मिलने के लिए जाने को करता था और न ही उसे घूमने के लिए जाने की इच्छा थी।

इसी समय सतीश आया और बाहर से उसको आवाज देने लगा, "निरंजन! निरंजन!!"

निरंजन खाट से उठा और कोठी से बाहर निकल आया। सतीश बरामदे के बाहर भूमि पर खड़ा था। माँ गाय को भूसा-दाना इत्यादि डाल रही थी। सतीश के हाथ में दो लिफाफे देखकर वह समझ गया कि यह सतीश के पास होने की मिठाई है। उन दो लिफाफों में इतने लड्डू थे कि जो कदाचित् एक रुपये से अधिक मूल्य के होंगे। इससे उसको अपनी अवस्था का और भी अधिक स्पष्ट ज्ञान हो गया। उसका कलेजा मुँह को आने लगा और आँखों में आँसू छलकने लगे।

सतीश ने उसकी आँखों में तरलता देखी तो स्तब्ध रह गया। उसने लिफाफा आगे कर दिया, परन्तु उसके मुख से शब्द नहीं निकले। उसके इस मिठाई देने में अस्वाभाविकता-सी प्रतीत हो रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में सतीश के मन में अपने पास होने की प्रसन्नता तो उस समय ही विलीन हो गई थी, जब सब लोग, उसकी माता, बहन, पिता, नौकर-चाकर उसको बधाई दे रहे थे और उससे अधिक अंक पानेवाले रामनिरंजन की ओर किसी का ध्यान ही नहीं था।

जब पिता जी सतीश को कह रहे थे कि उसके परीक्षक को पुरस्कृत करना चाहिए, जिसने उसको पास कर दिया है, तब सतीश को रामनिरंजन स्मरण हो आया था। उसने कहा था, 'पिता जी ! रामनिरंजन भी पास हो गया है।'

सेठ जी ने सतीश की बात सुनी-अनसुनी कर दी, तो वह समझ गया कि उसके पिता की निरंजन के पास होने में किंचित् मात्र भी रुचि नहीं है। उसने अपने कहने में रंग देने के लिए कह दिया, 'पिता जी ! उसके सात सौ पैंसठ अंक आए हैं। कदाचित् उसे वजीफा मिल जाए।'

'तो फिर ?'

इस 'तो फिर' का उत्तर सतीश के पास नहीं था। वह चुप रहा और तुरन्त ही उन बधाइयों और मिठाई की बातों को छोड़ अपने कमरे में चला गया।

सतीश यह भलीभाँति जानता था कि रामनिरंजन उनके चौकीदार का लड़का है और स्वयं वह लाखों के स्वामी का पुत्र। यह अन्तर उसको कुछ भला नहीं प्रतीत हुआ। वह जानता था कि उसके पास होने का श्रेय बहुत अंशों में रामनिरंजन को है। इससे वह रामनिरंजन का आभारी है। उसका विचार था कि घर के सब लोग जानते हैं कि रामनिरंजन पढ़ाई में उसकी सहायता करता रहा है। इस कारण भले ही दिखाने के लिए ही सही, तो भी कुछ प्रसन्नता उसके उत्तीर्ण होने पर दिखानी चाहिए थी।

वह अपने परिवार के लोगों के, विशेष रूप से अपने पिताजी के व्यवहार पर दुःख अनुभव करता हुआ अपने कमरे में बैठा रहा। लगभग एक घंटे के पश्चात् रेखा उसके कमरे में आई। उसके हाथ में लड्डुओं के दो थैले थे। एक थैला सतीश के सामने रखकर बोली, "माता जी ने दिया है।"

"मैं तो पास हुआ हूँ। मेरी ओर से तुम सब खाओ।" सतीश ने कह दिया।

"हम तो खाएँगे ही। पहले तुम भी तो लो !"

सतीश के मन में आया कि वह यह मिठाई रामनिरंजन के घर पहुँचा दे। उसका विचार था कि सब नौकरों को मिली है तो काका चौकीदार को भी मिली होगी। परन्तु वह कुछ अपनी ओर से देने का विचार करता था। इतना विचारकर उसने एक लिफाफा रेखा के हाथ से ले लिया। रेखा ने दूसरा लिफाफा सतीश के सामने करके कहा, "यह निरंजन भैया के लिए है।"

"माँ ने दिया है ?"

"नहीं, जब मैंने उसे देने को कहा था तो माँ ने कहा कि जब उसका पिता बधाई देने के लिए आएगा तो उसे दे दी जाएगी। यह तो मेरे भाग की है जो मैं दे रही हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हीं जाकर दे आओ।"

"जब माँ नहीं दे रही तो तुम क्यों दे रही हो ?"

"इसलिए कि वह मुझे 'रेखा बहन' कहता है।" इतना कहते-कहते रेखा का मुख लाल हो गया। तब सतीश विचार करने लगा कि उसे देने जाए अथवा नहीं। रेखा ने कहा, "तुम नहीं जाओगे तो मैं चली जाऊँगी।"

"तो जाकर दे आओ न!"

"परन्तु वहाँ जो गाय बँधी रहती है न, मुझे उससे भय लगता है। कहीं उसका सींग मेरे पेट में लग गया तो यह फुटबाल के ब्लैडर की भाँति फट जाएगा।"

यह कहती-कहती वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। सतीश की भी हँसी निकल गई। उसने हँसकर कहा, "अच्छी बात है, तुम अपना फुटबाल-सा पेट बचाकर रखो। मैं ही दे आता हूँ।"

इस प्रकार दोनों लिफाफों को लेकर सतीश रामनिरंजन की कोठरी के पास पहुँचा। उसने एक थैला सामने करके कहा, "माता जी ने दिया है।"

रामनिरंजन ने पूछ लिया, "सतीश! यह क्या है और किस उपलक्ष्य में है ?"

"लड्डू हैं, मेरी माता जी ने मेरे पास होने की प्रसन्नता में सबको खिलाए हैं।"

"पर पास तो मैं भी हुआ हूँ। हम भी बाँटने वाले हैं। पिता जी लेने गए हैं। हमारे बराबर-बराबर हो गए। यह तुम हमारी ओर से अपनी माता जी को दे देना।"

"और यह रेखा बहन ने दिए हैं।" उसने दूसरा लिफाफा सामने कर दिया।

"रेखा ने ? इन्हें तो ले लूँगा। उसको मेरा धन्यवाद देना।"

रेखा के भेजे लड्डू वह वापस नहीं कर सका। वह उसका अपमान करना नहीं चाहता था। उसका चित्त कह रहा था कि उसने अपने हिस्से के मुझे भेजे हैं।

सतीश उसके रेखा के लड्डू थामने पर हँस पड़ा। निरंजन ने इसका विचार न कर कहा, "रेखा के लड्डू उसके हार्दिक स्नेह के सूचक हैं। मैं बहन के घर के लड्डू तो न लेता, परन्तु उसके स्नेह को ठुकरा नहीं सकता।"

इतना कहकर रेखा वाला लिफाफा लेकर वह भीतर जाने लगा तो सतीश ने कहा, "और यह जो माता जी ने भेजे हैं ?"

"वे तो रीति-रिवाज के सूचक ही हैं। सो हमारे और उनके परस्पर कट गए।"

सतीश ने अपने मन से ही माँ का नाम ले लिया था। उसका विचार था कि माता-पिता की अवहेलना को वह इस प्रकार ढँक लेगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। इस प्रकार वह एक लिफाफा लेकर वापस लौट गया।

: ४ :

रामसुमन अपने पुत्र के परीक्षा में सफल होने का समाचार सुनकर प्रसन्नता से झूमता हुआ सेठ जी को यह समाचार सुनाकर उसके लिए काम-धन्धे की बात कहने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल पड़ा। पर इससे पहले ही सेठ जी कहीं काम पर चले गए थे, इसलिए वह बाजार से मिठाई लेने चला गया। सेठानी ड्राइंगरूम में बैठी हुई लड्डू बाँट रही थी। उसे आशा थी कि अन्य सबकी भाँति जब चौकीदार भी बधाई देने आएगा तो उसी समय वह उसे लड्डू दे देगी। परन्तु रामसुमन को बाहर ही बाहर से चले जाते देखकर उसे क्रोध आ गया।

रामसुमन तो यह विचार कर रहा था कि सेठ जी आएँ तो उन्हें बधाई दे। यदि सेठानी जी भी बरामदे में दिखाई दे जातीं तो वह उनको भी बधाई दे देता, परन्तु उसका साहस कोठी के भीतर जाकर बधाई देने का नहीं हुआ। वह सेठ जी के आने पर पुनः आने का विचार कर बाजार चला गया।

जब रामसुमन लौटा तो सेठ जी आ गए थे। वह लड्डुओं को घर में रखकर सेठ जी के पास चला गया। रामसुमन ने हाथ जोड़ नमस्कार कर बधाई देते हुए कहा, "मालिक! यह समाचार सुनकर बहुत खुशी हुई।"

सेठ जी ने सेठानी को, जो समीप ही बैठी हुई थीं, कह दिया, "रामसुमन का भी मुँह मीठा कराओ।"

"लड्डू तो अब समाप्त हो गए हैं, कल और मँगाऊँगी तो इसे भेज दूँगी।"

रामसुमन ने कह दिया, "मालिक! इस सेवक का पुत्र भी पास हुआ है। इस कारण प्रसन्नता और भी अधिक हो गई है। मैं भी लड्डू बाँटने का विचार कर रहा हूँ।"

"ओह! ठीक है। सुनाओ, अब लड़के को आगे क्या कराने का विचार कर रहे हो? क्या वह भी कालेज में भर्ती होगा?"

"मालिक! मुझ गरीब में उसको इससे अधिक पढ़ाने की सामर्थ्य ही कहाँ है?"

"हाँ ठीक है। उसे कहीं नौकर रखवा दो।"

इसी समय उनके आटा मिल का मैनेजर सुन्दरदास वहाँ आ गया। वह अभी आकर खड़ा ही हुआ था कि रामसुमन ने कह दिया, "मालिक! मैनेजर साहब से मेरी सिफारिश कर दीजिए, ये चाहें तो नौकरी मिल सकती है।"

"रामसुमन!" सेठ जी ने कहा, "रामनिरंजन अब सज्ञान हो गया है, उसके रहने के लिए जगह भी तो अलग चाहिए।"

"हाँ सरकार! यह भी विचार कर रहा हूँ। पहले नौकरी लग जाए तब फिर मकान के विषय में देखूँगा।"

"परशुराम अपना मकान छोड़ रहा है, यदि वह भी तुम ले लो तो रामनिरंजन वहाँ रह लेगा।"

रामसुमन ने हाथ जोड़ धन्यवाद दिया। सेठ जी ने कहा, "सुन्दर से बात करके उसकी नौकरी का भी प्रबन्ध हो जाएगा।"

रामसुमन अपने उद्देश्य में सफल हो, प्रसन्नता से भरा हुआ घर पहुँचा। जीवन के किसी भी सोपान पर चढ़ने के समय अवर्णनीय आनन्द की अनुभूति होती है। उस आनन्द को भाषा में व्यक्त करना सम्भव नहीं। रामसुमन के मन में कुछ ऐसा ही अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रहा था। जब-जब भी वह अपनी आवश्यकताओं को कम करके रामनिरंजन की पढ़ाई का प्रबन्ध करता था तो साथ ही वह उसके परीक्षा में सफल होकर कहीं न कहीं नौकरी से घर की आय में वृद्धि की बात का विचार भी किया करता था। कई बार उसके मन में यह विचार उठता था कि यदि उसके पास कुछ रुपये और होते तो वह एक के स्थान पर दो अथवा तीन गौएँ रखकर अपनी आय में वृद्धि कर लेता। परन्तु उसकी आय इतनी कम होती थी कि वह कुछ बचा ही नहीं पाता था। जब कुछ रुपये बचते थे तो गाय बदलने की आवश्यकता पड़ जाती थी।

अब तो कई वर्षों से वह रामनिरंजन की नौकरी के वेतन से अपने मन की योजना को कार्यान्वित करने की आशा लगाए हुए था। अतः जब वह सेठ जी से रामनिरंजन के रहने के लिए मकान और नौकरी पाने का आश्वासन लेकर आया तो उसने समझा कि जीवन का एक भाग अर्थात् उसकी तपस्या का काल समाप्त हुआ, अब उन्नति का समय आ रहा है। इससे वह अपने मन में एक विशेष प्रकार का आनन्द अनुभव कर रहा था।

वह लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ घर पहुँचा तो खुशी में अपनी पत्नी से बोला, "लो निरंजन की माँ! आज हमारे जीवन का प्रयास सफल हुआ है।"

रामनिरंजन अब भी खाट पर बैठा विचार कर रहा था कि रेखा द्वारा भेजे हुए उपहार का प्रतिकार किस प्रकार दे। जब उसका पिता कमरे में आया तो निरंजन की माँ भी, जो गाय का दूध दुह चुकी थी, उसके पीछे-पीछे भीतर आ गई। रामसुमन पुत्र के पास खाट पर बैठ गया। भगवती भूमि पर बैठ गई। रामनिरंजन का छोटा भाई बरामदे में बैठा रोटी खा रहा था। वह रोटी छोड़कर कोठरी के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। रामसुमन ने अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा, "मैंने तो अपना काम कर दिया है। यह पास हो गया है। सेठ जी ने इसे नौकरी देने का वचन भी दिया है, साथ ही इसके लिए परशुराम वाला कमरा भी दे देंगे। अब तो तुम्हारा काम शेष रह गया है।"

"क्या रह गया है?"

"बस इसके लिए एक बहू ढूँढ लाना, और क्या?"

रामनिरंजन के मुख से 'उँहुँ' का शब्द निकल गया।

"उँहुँ क्यों?"

"मुझे सेठ जी के वचनों पर विश्वास नहीं है।"

"तो न सही। यहाँ नौकरी नहीं मिलेगी तो कहीं और मिल जाएगी। लेकिन उन पर विश्वास न करने का कोई कारण भी तो नहीं प्रतीत होता।"

रामनिरंजन चुप रहा। वह कहीं अन्यत्र काम करने की योजना बना रहा था।

रामसुमन लड्डू लेकर अपने पड़ोसियों को देने के लिए चला गया। परशुराम को लड्डू देने गया तो वह सेठ जी के दिए लड्डू खा रहा था। रामसुमन ने कहा, "भैया! रामनिरंजन के पास होने की खुशी में लड्डू लाया हूँ।"

"सेठ जी ने भी लड्डू बाँटे हैं। दिखाओ तो, देखें तुम्हारे लड्डू कैसे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामसुमन ने लिफाफा देते हुए कहा, "भैया, वे बड़े आदमी हैं, मैं उनसे अपनी तुलना नहीं कर रहा। हम तो उनका दिया ही खाते हैं।"

परशुराम रामसुमन के दिए लिफाफे में से लड्डू निकालकर सेठ जी के दिए लड्डुओं से उनकी तुलना करने लगा। रामसुमन के लड्डू बड़े-बड़े थे। इस पर परशुराम ने एक लड्डू मुँह में डालते हुए कहा, "तुम्हारे बनस्पति घी के बने प्रतीत होते हैं। सेठ जी के अधिक स्वादिष्ट हैं।"

"भैया, यही हैं।" यह कहकर रामसुमन ने बात बदल दी। उसने पूछा, "तुम यह मकान छोड़ रहे हो क्या?"

"हाँ, मेरी पत्नी की अपने जेठ से नहीं पट रही। अतः उसे लखनऊ ले आना चाहता हूँ। मैं उसे लेकर इस घर में नहीं रह सकता।"

"क्यों, मैं भी तो ऐसे ही मकान में रहता हूँ। मुझे रहते हुए अठारह वर्ष हो गए हैं और दोनों लड़कों का जन्म भी यहीं हुआ है।"

"भैया! तुम इस चूहे के बिल में रह सकते हो। मैं तो अपनी पत्नी को यहाँ नहीं रख सकता। मैंने गणेशगंज में एक मकान ले लिया है।"

"कितने किराए का है?"

"हमारे गाँव के एक आदमी ने वहाँ एक मकान चालीस रुपये में लिया हुआ है। उसमें से एक कमरा मुझे दस रुपये में दे देगा।"

"दस रुपये मकान का किराया दोगे तो खाओगे क्या?"

"मैं शीघ्र ही कुछ दूसरा काम करूँगा जिससे कि मेरी आय में वृद्धि हो सके।"

"कब तक मकान बदल रहे हो?"

"क्यों पूछ रहे हो?"

"सेठ जी ने यह तुम्हारे वाला मकान रामनिरंजन के लिए देने का वचन दिया है।"

"वह इसका किराया कहाँ से देगा?"

"उसकी नौकरी लग रही है।"

"ओह! तब तो भैया, और लड्डू भी खाने को मिलेंगे।"

"किन्तु मैं तो तुमसे कह रहा हूँ कि जब तक आय बढ़ न जाए तब तक खर्च बढ़ाना बुद्धिमत्ता नहीं है।"

"तो क्या करूँ?"

"देखो परशुराम! अपनी पत्नी को लाकर यहाँ रखो। यहाँ मकान का किराया तो देना नहीं पड़ता। बिजली-पानी भी फोकट में मिल जाता है। नया मकान लेने से तो यह व्यर्थ का ही खर्च बढ़ जाएगा।"

"मेरी योजना यहाँ बैठे रहकर जीवन को गला देने की नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

पन्द्रह वर्ष की आयु में बुद्धि में वह संतुलन नहीं आता जो किसी व्यक्ति को जीवन की ऊँच-नीच पार करने के लिए आवश्यक होता है। स्कूल की दसवीं श्रेणी तक की शिक्षा तो इस संतुलन को उत्पन्न करने में किसी प्रकार भी सहायक नहीं होती। भाषा, रेखागणित, भूगोल का अल्पज्ञान, इतिहास में राजाओं के राज्यारोहण तथा युद्धों की तिथियों के अतिरिक्त स्कूलों में और कुछ मिलता ही नहीं।

हाँ, मन की भावनाओं और आशाओं में वृद्धि अवश्य होती है। इस पर भी उनकी प्राप्ति के लिए साधनों की उपलब्धि में यह शिक्षा बहुत कम आवश्यक होती है।

रामनिरंजन की अवस्था में एक विशेष बात यह हुई थी कि वह एक धनी-मानी परिवार की सुख-सुविधा को समीप से देख रहा था। इसने उसकी अभिलाषाओं में कुछ वृद्धि ही की थी। वह चाहता था कि वह साधन-सामग्री, जो सेठ कमलापति के परिवार वालों को उपलब्ध थी, उसे भी मिले।

मन की इस पूर्ण प्रक्रिया में रेखा का भारी हाथ था। बचपन से ही वह रेखा के विषय में बहुत ऊँचे विचार रखता था। उसे यह लड़की अत्यन्त मेधावी और सुन्दर लगती थी। बचपन में एक बार गुड़िया के विवाह की चर्चा के विषय में धनी और निर्धन में विवाह न हो सकने पर वार्तालाप हुआ था। उस वार्तालाप के पश्चात् रामनिरंजन के मन में कई बार उससे विवाह के विषय में विचार उत्पन्न होता था। परन्तु अपनी माँ का यह कथन सामने आते ही कि वह तो उसकी बहन है, वह शान्त हो जाता था। फिर भी आयु बढ़ने के साथ-साथ विवाह के विषय में माँ की वह युक्ति प्रभावहीन होती जाती थी। परन्तु रेखा का उसको 'निरंजन भैया' कहकर पुकारना उसके मन के संतुलन को ठीक करता रहता था।

एक बार तो बात लगभग स्पष्ट ही हो गई थी। रामनिरंजन रेखा की बड़ी बहन रानी के विवाह के अवसर पर कुछ काम कर रहा था। सेठ जी की कोठी सजाई जा रही थी। रामनिरंजन, सतीश का मामा सुन्दर और कोठी के अन्य कर्मचारी कोठी की सजावट में लगे हुए थे। रेखा इन सबको कार्य करते हुए देख रही थी। रामनिरंजन कोठी की मुँडेर पर चढ़ा हुआ पत्तों की तोरण बाँध रहा था कि उसका पाँव फिसला और वह नीचे गिरने लगा। यदि गिर पड़ता तो तीस फुट की ऊँचाई से भूमि पर आ गिरता और कितनी चोट लगती—यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

रेखा नीचे खड़ी देख रही थी। रामनिरंजन को गिरते देख उसके मुख से चीख निकल गई और उसने आँखें मूँद लीं। रामनिरंजन का हाथ मुँडेर पर पड़ गया और वह उससे लटक गया। रेखा ने आँखें खोलीं। उसने सोचा था कि वह भूमि पर गिरकर चोट से छटपटा रहा होगा। परन्तु उसको मुँडेर पर लटका हुआ देखकर उसके चित्त में भय और संशय दोनों हो रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-S
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
168J07
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

रामनिरंजन दीवार के साथ पाँव टिकाकर मुँडेर पर चढ़ने का यत्न कर रहा था। सब देखनेवाले उसके इस कठिन कार्य को देखकर भय और आशा में अवाक् खड़े थे। उस स्थान के नीचे, जहाँ वह लटक रहा था, रामसुमन उसको भुजाओं में लेने के लिए खड़ा हो गया। तब भी सब समझते थे कि रामनिरंजन की हड्डी-पसली तो टूट ही जाएगी।

रामनिरंजन नहीं जानता था कि नीचे के लोग उसकी रक्षा के लिए क्या कर रहे हैं, वह तो ऊपर चढ़ने का यत्न करता रहा। जिस पाँव को वह दीवार के साथ सटाकर कुछ ऊपर उठाना चाहता था, बार-बार नीचे खिसक जाता था। फिर भी वह निरन्तर यत्न करता रहा। एक बार पाँव थोड़ा-सा अटका तो वह लपककर मुँडेर की दीवार पर घुटनों के बल जा बैठा।

रामनिरंजन जब दीवार पर बैठ गया तो अपनी भयानक परिस्थिति, जिसमें से वह बच निकला था, को समझकर आँखें मूँदे घुटनों में सिर देकर अपनी सुरक्षित अवस्था पर विश्वास करने का यत्न करने लगा।

नीचे से लोग उसे आवाज देने लगे—"पीछे हट जाओ, पीछे हट जाओ!" उसने आँखें खोलीं तो सामने डबडबाई आँखों से रेखा को समीप बैठे देखा।

रामनिरंजन रेखा की तरल आँखों को देखकर पूछने लगा, "क्या बात है, रेखा?"

"मेरी खुशी आँखों से फूट-फूटकर निकलने लगी है।" इतना कहकर वह अपनी आँखें पोंछने लगी।

रामनिरंजन के मुख से अनायास निकल गया, "तुम मुझसे इतना प्यार करती हो रेखा?"

"हाँ।"

"ठीक है, एक बहन का भाई से स्नेह होना ही चाहिए।"

"पर मैं तो····।" वह आगे कुछ नहीं कह सकी।

इसी समय रामसुमन और सतीश वहाँ पर पहुँच गए। रामनिरंजन, जो अभी तक अपने मन के सन्तुलन को ठीक कर ही रहा था, उसे बाँह से पकड़कर वे नीचे ले गए।

इसके पश्चात् रेखा सदैव उसे 'निरंजन भैया' ही कहकर पुकारती थी और निरंजन सदा उसको 'बहन' कहकर ही सम्बोधित करता था। यदि रामनिरंजन के मन में रेखा के प्रति कभी कोमल भाव उठते तो रेखा को बहन कह वह उन्हें शान्त कर लेता था।

उसके मन में अब भी यह विश्वास था कि रेखा का उससे विवाह नहीं हो सकता क्योंकि रेखा के माता-पिता उसको निर्धन का पुत्र मानते हैं। रेखा भी उसको 'भैया' इसी कारण कहती है, जिससे उसको इस सम्बन्ध की असम्भावना का स्मरण होता रहे।

रामसुमन किसी स्कूल अथवा कालेज में पढ़ा नहीं था। वह अपने गाँव के पुरोहित से केवल रामायण पढ़ा था। तब से लेकर रामायण का पाठ उसका नित्य का काम था। जब वह स्वरसहित पढ़ता—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं,
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिम्,
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥

तो उल्लास से भरा हुआ वह आँखों से आँसू बहाने लगता था।

इस भक्ति के आश्रय ही वह निर्धनता का कड़वा घूँट पी लेता था और उसे पचाकर सन्तोष से सदा प्रफुल्लित मन रहा करता था।

रामनिरंजन के मन पर पिता की इस भक्ति और निष्ठा की जो प्रतिक्रिया होती थी उससे वह अपनी अवस्था से अत्यन्त असन्तोष अनुभव करता था। उसके असन्तोष को परीक्षा-फल के दिन सेठ जी के परिवार के व्यवहार ने और भी बल दिया था।

उसी सायंकाल जब पिता ने कहा कि सेठ जी ने न केवल नौकरी दिलाने का वचन दिया है, प्रत्युत रहने को पृथक् मकान भी वे देंगे, तो उसको विश्वास नहीं आया। उसके मन में सेठ जी के प्रति अविश्वास देखकर रामसुमन ने कहा कि नौकरी तो ढूँढनी ही होगी, यहाँ नहीं तो कहीं अन्यत्र। इससे रामनिरंजन नौकरी ढूँढने के उपायों पर विचार करने लगा था।

अगले दिन वह 'एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज' के कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ पर अपना नाम और योग्यता लिखाकर जब वह लौटने लगा तो जिस क्लर्क ने उसका नाम रजिस्टर में लिखा था, उसने कहा, "युवक! यदि नौकरी करनी है तो पहले टाइप और शॉर्टहैंड सीख लो। इनके बिना नौकरी मिलना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।"

रामनिरंजन मन में क्लर्क की बात पर विचार करता हुआ घर को लौट रहा था। यह भी सोच रहा था कि न जाने कितने काल में टाइप और शॉर्टहैंड सीखा जा सकेगा और कितना खर्च होगा उस पर। उसे भय था कि यदि पिताजी को पता लगा कि अभी एक-दो वर्ष और पढ़ने की आवश्यकता है तो उनकी निराशा का वारापार नहीं होगा। वह अपने घर की अवस्था जानता था। इस प्रकार पहले दिन की नौकरी की खोज ने निराशा ही उत्पन्न की थी।

वह कोठी के बड़े फाटक से प्रविष्ट होकर कोठी के पिछवाड़े की ओर जाने लगा तो सतीश ने, जो रेखा के साथ बरामदे में खड़ा था, उसे आवाज दे दी। रामनिरंजन उसकी आवाज को सुनकर अपने विचारों को छोड़ उनके सामने आ खड़ा हुआ। इसी समय उसने रेखा को रात के लड्डुओं के लिफाफे के लिए धन्यवाद दिया।

रेखा ने कह दिया, "लड्डू तो काका ने भी बाँटे हैं, परन्तु हमें नहीं दिए।"

"पिताजी ने मुझे कहा था कि मैं लड्डू आपको पहुँचा दूँ परन्तु मुझे कुछ लज्जा-सी लगी थी।"

"क्यों?" सतीश ने पूछ लिया।

"परशुराम कह रहा था कि आपके लड्डू असली घी के और बहुत बढ़िया हैं। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वनस्पति घी के बने घटिया लड्डू आपको देने के लिए जी नहीं किया।"

"वाह निरंजन भैया! पर हमें तो उन लड्डुओं को खाने में लज्जा नहीं हुई। हमें जब लेखराज ड्राइवर ने बताया कि लड्डू बँट रहे हैं तो हम आपके घर जा धमके और काकी से लड्डू छीनकर खा आए।"

"सच!" रामनिरंजन ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा।

"रामनिरंजन!" सतीश का कहना था, "लड्डू तो बहुत स्वादिष्ट थे और मैं समझता हूँ वे उतने ही असली घी के थे जितने कि हमारे।"

रेखा हँस पड़ी। उसने कहा, "भैया! पैसे वाले की पीतल की अँगूठी भी सोने की ही समझी जाती है।"

सतीश ने बात बदल दी। उसने कहा, "अपने पास होने के उपलक्ष्य में रेखा और रानी को सिनेमा दिखाने ले-जा रहा हूँ, तुम भी चलो।"

रामनिरंजन इनके साथ जाना नहीं चाहता था। इसलिए वह कुछ कहने ही वाला था कि रेखा ने कहा, "निरंजन भैया! अवश्य चलो, पिता जी ने गाड़ी भी भेज दी है।"

सतीश ने उसकी बाँह में अपनी बाँह डाली और 'पोर्च' में खड़ी हुई गाड़ी की ओर ले गया। रेखा भागकर रानी को बुला लाई। रानी मोटर में चढ़ने लगी। सतीश रामनिरंजन को ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठा रहा था कि रानी उसे देखकर बैठती-बैठती रुक गई। उसने पूछ लिया, "तो निरंजन भी चल रहा है?"

"हाँ।"

"तुमने पहले नहीं बताया?"

सतीश समझ गया कि रानी निरंजन के साथ चलना पसन्द नहीं करती। वह मन में निश्चय कर चुका था कि पहले दिन के अपमान का, जो रामनिरंजन का हुआ था, बदला चुका देगा। इस कारण उसने कह दिया, "पहले बताने की आवश्यकता नहीं समझी। चलो जल्दी बैठो। 'शो' का समय हो रहा है।"

रेखा ने धकेलकर रानी को गाड़ी में बैठा दिया और स्वयं उसके पीछे सवार होकर बैठ गई। सतीश उनके पास बैठा तो गाड़ी चल पड़ी।

: ६ :

इस घटना से रामनिरंजन को सेठ जी के परिवार का पिछले दिन का व्यवहार स्मरण हो आया। उस व्यवहार की प्रतीक रानी उसके पीछे बैठी हुई थी। उसके साथ रेखा थी, जो रानी की निरंजन के प्रति अरुचि को झूठी सिद्ध करने का यत्न कर रही थी।

वे सिनेमा हॉल में पहुँचे। पिक्चर आरम्भ नहीं हुई थी और हॉल में प्रकाश था। रानी और सतीश के बीच में रेखा बैठी थी। रामनिरंजन सतीश के दूसरी ओर बैठा था। रेखा रानी से बातें कर रही थी और अपने स्वभावानुसार बार-बार हँस रही थी।

रामनिरंजन झुककर रेखा की बातें और हँसना देख रहा था। प्रत्येक बार, जब रेखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसती थी, रानी के माथे पर त्यौरी चढ़ जाती थी। इसे देखकर रामनिरंजन एक गुप्त उल्लास का अनुभव करता था। उसे रेखा के बातें करने के ढंग तथा हँसने में कुछ सार प्रतीत होता था।

यद्यपि वह अनुभव करता था कि देखने मात्र से कुछ लाभ नहीं होगा, फिर भी उसे रेखा की ओर रुचिपूर्वक देखने और उसकी बातें सुनने से रानी के मुख पर रोष देखकर आनन्द आता था।

जब तक प्रकाश रहा वह रानी के मुख पर देखता रहा। उसे प्रतीत हो रहा था कि रेखा भी रानी के रोष को देखकर प्रसन्न हो रही है।

चित्र 'आवारा' था। चित्र में कुछ भद्दे दृश्य भी थे। रेखा उन्हें देख हँस देती थी। कई दृश्यों को देखकर वह मुँह मोड़ लेती थी।

रामनिरंजन भी अनुभव कर रहा था कि चित्र देखने योग्य नहीं है। जो कुछ भी शिक्षा अथवा भलमनसाहत प्रकट की गई थी वह आवारापन में छिप गई थी। पूर्ण चित्र देखने पर मन पर कुछ कड़वापन ही रह गया था।

घर लौटने पर रामनिरंजन, जो ड्राइवर के पास अगली सीट पर बैठा था, पीछे घूमकर बोला, "रेखा ! तुम्हारे हँसने की कहीं सीमा भी है अथवा नहीं ?"

रेखा को इस प्रश्न पर खूब हँसी आई। पर रानी के माथे पर त्यौरी चढ़ गई। सतीश मुस्कराता हुआ रेखा के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। रेखा ने हँसकर कहा, "क्या अच्छी बातों को भी सीमा में बन्द करने की आवश्यकता होती है ?"

"हाँ, अच्छी बात भी सीमा को लाँघकर दोषपूर्ण हो जाती है।"

"तब वह भली नहीं रहती। परन्तु मेरी हँसी तो अनायास ही निकल जाती है। यह असीम है और सर्वथा निष्कलंक भी।"

"कोई दूसरा इसे इसके विपरीत भी समझ सकता है।"

"तो वह मेरी हँसी को न सुने। मुझे हँसना व्यर्थ, असंगत अथवा असामयिक नहीं प्रतीत होता।"

"पर तुम पिक्चर के समय भी हँस रही थीं और सब लोग तुम्हारे हँसने पर विस्मय प्रकट कर रहे थे।"

"उनका विस्मय उचित ही था, क्योंकि उनको मेरे हँसने का कारण विदित नहीं था।"

"भला जब वह देहाती लड़की नाच रही थी तो तुम क्यों हँस रही थीं ?" सतीश ने पूछा।

"इस कारण कि उसके उस अस्वाभाविक मुख बनाने पर लोग वाह-वाह कर रहे थे।"

"और तुम्हारा हँसकर दूसरों की वृत्ति में विघ्न-बाधा डालना स्वाभाविक था ?" रानी का क्रोध फूट पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रानी बहन! तुम तो मुझे पागल समझती हो, इस कारण मेरी बात को अस्वाभाविक मानने पर भी विस्मय क्यों करती हो?"

"विस्मय नहीं, रेखा! तुम पर क्रोध आता है। तुम समय-कुसमय देखे बिना हँसती रहती हो। सब तुम्हें पागल समझने लगते हैं। परिणामस्वरूप माता तथा पिता जी को दुःख और क्लेश होगा।"

"उन्हें दुःख और क्लेश किस बात से होगा?"

"जब तुम्हारा विवाह नहीं हो सकेगा तो दुःख तो होगा ही। तुझ पगली से कौन विवाह करेगा?"

"तो तुम समझती हो कि मैं विवाह के बिना मरी जाती हूँ?" इतना कहकर रेखा पुनः हँसने लगी।

रामनिरंजन को बात के इतना बढ़ जाने पर अपने कहे पर खेद होने लगा। वह विचार कर रहा था कि उसने यह बात आरम्भ ही क्यों की।

रानी ने गम्भीर होकर कहा, "देखो रेखा, विवाह तो होगा ही। भय तो इस बात का है कि तुम्हारे ससुरालवाले भी बुरा मानेंगे।"

रेखा हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा, "रानी बहन! मेरा न पति होगा, न सास-ससुर। इसके लिए मुझको हँसना बन्द करने की आवश्यकता नहीं।"

"पर तुम्हारे विवाह की बात तो अभी से हो रही है। कलकत्ता से इस विषय में सन्देश आया है। पिता जी तो मान रहे हैं परन्तु माता जी ने कहा कि अभी तुम छोटी हो। सोलह वर्ष की होने पर विवाह होगा। पिता जी ने कलकत्तावालों को लिख दिया है कि यदि वे तीन वर्ष तक ठहरने के लिए तैयार हों तो विवाह के प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है।"

रेखा फिर हँस दी।

"भला अब क्यों हँस रही है?" रानी ने पूछा।

"क्योंकि कलकत्तावाले नहीं मान रहे। उन्हें तो मेरे दहेज का रुपया तुरन्त चाहिए और विवाह तीन वर्ष पश्चात् होने पर दहेज आज नहीं मिल सकता।"

"यह तुम कैसे कहती हो?"

रेखा इसका उत्तर दिए बिना हँसने लगी।

रामनिरंजन ने बात बदलने के लिए कह दिया, "भैया! अब तो इकट्ठे नहीं पढ़ सकेंगे। मैं आज नौकरी ढूँढने गया था।"

"क्यों?" रेखा ने पूछ लिया।

"मैं कॉलेज में प्रवेश नहीं ले सकूँगा।"

"पर निरंजन भैया! तुम तो फर्स्ट डिवीजन में पास हुए हो। साथ ही अंक भी इतने आए हैं! फिर भी तुम कैसे कहते हो कि तुम्हें प्रवेश नहीं मिलेगा?"

"रेखा! प्रवेश पाने के लिए अंकों के अतिरिक्त कुछ और भी चाहिए। मेरे पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलेज का व्यय वहन नहीं कर सकते।"

"वह हम कर देंगे।"

"हम···क्या मतलब?" रानी ने रेखा की ओर घूरते हुए पूछा।

रेखा हँसकर बोली, "हम से मेरा मतलब पगली के पिता जी से है।"

"असम्भव है।" रानी ने निर्णय दे दिया।

इस समय मोटर कोठी पर पहुँच गई थी। बात समाप्त हुई और वे तीनों नीचे उतरकर कोठी में जाने लगे तो सेठ जी ड्राइंगरूम से बाहर निकल आए और उनका मार्ग रोककर खड़े हो गए।

"कहाँ से आ रही हो रानी?"

"आपको टेलीफोन पर बताया तो था कि सतीश हमें पिक्चर दिखाने ले-जा रहा है।"

"रामनिरंजन भी साथ गया था?" सेठ जी के भावों से यह स्पष्ट हो रहा था कि वे भी उसका इनके साथ जाना पसन्द नहीं कर रहे हैं। रामनिरंजन ने सेठ जी के मुख की मुद्रा देखी तो चुपचाप वहाँ से खिसक जाने के लिए कोठी के पिछवाड़े की ओर जाने लगा। सेठ जी ने उसको आवाज देकर रोक लिया। रामनिरंजन के जीवन में यह पहली बार था कि सेठ जी ने बात करने के लिए उसको बुलाया था। वह आँखें नीची किए सामने खड़ा हो गया। सतीश ने कह दिया, "पिता जी! रामनिरंजन भी कॉलेज में भर्ती होगा।"

सेठ जी ने कुछ डाँटकर कहा, "सतीश! बहनों को भीतर ले जाओ। तुम्हारी माता तुम सबकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

जब सतीश, रानी और रेखा अन्दर चले गए तो सेठ जी ने रामनिरंजन को कहा, "देखो निरंजन! तुम्हारे गरीब पिता ने तुम्हारे लिए बहुत त्याग और तपस्या की है। अब अपना कर्तव्य पहचानो और अपना समय इस प्रकार की व्यर्थ बातों में मत गँवाओ। जाओ, तुम्हारे पिता तुम्हारी राह देख रहे हैं।"

रामनिरंजन भी अनुभव कर रहा था कि चार घंटे व्यर्थ ही गँवाए हैं। उसको चित्र देखने में कुछ लाभ प्रतीत नहीं हुआ था। वह चुपचाप अपने घर की ओर चल दिया।

: ७ :

सतीश रेखा और रानी के साथ कोठी में गया तो उनकी माँ ने तीनों को बैठाकर कह दिया, "तुम्हें रामनिरंजन को साथ नहीं ले-जाना चाहिए था।"

"क्यों?" सतीश ने पूछा।

"सब बातों में कारण नहीं बताया जाता। देखो सतीश! पराए लड़के के साथ लड़कियाँ सिनेमा नहीं देखतीं।"

रेखा हँस पड़ी। माँ ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कह दिया, "तुम पागलपन छोड़ोगी भी या नहीं? आज कलकत्ता से कुछ लोग तुम्हें देखने के लिए आए हुए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या करेंगे देखकर?" रेखा ने पूछा।

"तुम्हारा अचार डालेंगे।" माँ ने और भी क्रोध में कहा।

रेखा फिर हँसने लगी।

"तुम हँसती क्यों हो?"

"मैं तो यह जानकर हँसी हूँ कि बड़े लोग भी अयुक्तिसंगत बात करते हैं। रामनिरंजन पराया है, वे कलकत्तावाले अपने हैं, मुझे देखकर मेरा अचार डालेंगे!"

अब सतीश ने कह दिया, "माँ! रामनिरंजन मेरे साथ कॉलेज में भर्ती होगा। पिता जी से उसको कॉलेज का खर्चा दिलवा दो।"

"नहीं सतीश! कॉलेज में भर्ती होने का अर्थ है तुम्हारा उसके आश्रय रहकर पढ़ाई करना। इस कारण वह कोठी में आएगा और फिर रेखा से उसका परिचय बढ़ेगा। यह हम नहीं चाहते।"

"रेखा से परिचय इससे भी अधिक बढ़ेगा क्या? ये तो पहले ही एक-दूसरे को जानते हैं।"

"अब उस परिचय को कम करना होगा। अन्यथा रेखा का विवाह कठिन हो जाएगा।"

"मैं विवाह नहीं करूँगी।" रेखा ने कह दिया।

"तो भाई-भावज के ताने सहती रहोगी और फिर बड़ी आयु में कोई पूछेगा भी नहीं।"

"क्यों भैया! मुझसे लड़ोगे?" उसने सतीश से पूछा।

"इस समय इसके कहने का कुछ भी अर्थ नहीं होगा। जब बहू घर में आएगी तब उसके कहने पर ही तो यह तुम्हें घर से निकालेगा।"

"नहीं माँ!" सतीश ने कहा, "मैं ऐसा नहीं करूँगा। लेकिन रेखा का विवाह होगा और यह प्रसन्नता से अपने घर जाएगी। परन्तु माँ, कलकत्ता तो बहुत ही गन्दा नगर है। रेखा वहाँ नहीं जाएगी।"

इस समय सतीश का मामा सुन्दरदास आ गया और सतीश की माँ से बोला, "बहन, कलकत्ता से तार आया है कि वे नहीं आ रहे हैं।"

"क्यों?" सेठ जी ने पूछ लिया।

सुन्दरदास के कुछ कहने से पूर्व ही रेखा हँस पड़ी और सबका ध्यान उसकी ओर चला गया।

सतीश को रेखा का मोटर में कहना कि कलकत्तावाले मानेंगे नहीं, स्मरण हो आया। रेखा तो हँसती हुई अपने कमरे की ओर चली गई, परन्तु सतीश ने माँ को कह दिया, "रेखा तो पहले ही कह रही थी कि कलकत्तावाले विवाह तुरन्त चाहेंगे, वे मेरी पसन्द की बात नहीं करेंगे।"

सुन्दरदास अवाक् सतीश का मुख देखता रह गया। सतीश की माँ ने पूछा, "तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में क्या लिखा है सुन्दर?"

"यही कि विवाह अभी करना स्वीकार हो तो वे लड़की देखने आ सकते हैं।"

सतीश की भी हँसी निकल गई। रानी ने, जो अभी वहीं थी, माँ से कह दिया, "माँ! लिख दो कि गौना देरी से हो जाएगा।"

"यह तो तुम्हारे पिता जी ही लिख सकते हैं। मैं तो समझी थी कि सगाई अब हो जाएगी, विवाह तीन वर्ष पश्चात् होगा।"

सतीश के मन में यह अंकित हो रहा था कि रेखा की सूझ-बूझ बहुत दूर तक जाती है।

रामनिरंजन सेठ जी की डाँट खाकर अपने घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसके पिता हाथ में एक लम्बा-सा लिफाफा लिये खाट पर बैठे उसकी माँ को कुछ बता रहे हैं।

रामाश्रय बरामदे में बैठा स्कूल का काम कर रहा था। माँ भूमि पर बैठी पति की बात सुन रही थी।

रामसुमन ने रामनिरंजन को आते देखा तो भीतर बुलाया और पूछा, "कहाँ से आ रहे हो निरंजन?"

"सतीश के साथ सिनेमा देखने गया था।"

"देखो, इसमें क्या लिखा है?" उसने लिफाफा देते हुए कहा, "सेठ जी ने दिया है और कहा है कि तुम्हारी नौकरी के विषय में है।"

रामनिरंजन ने पत्र पढ़ा और उसका अर्थ अपने पिता को समझा दिया। उसने बताया, "मुझे कल आटा मिल में मैनेजर से मिलने के लिए कहा गया है। लिखा है कि मेरी नौकरी गोदाम में लगा दी गई है। वेतन पचासी रुपये मासिक होगा।"

रामसुमन खाट से उठकर खड़ा हो गया और रामनिरंजन को गले लगाकर उसका माथा चूम लिया। माँ ने रामनिरंजन को समीप बैठाकर प्यार देते हुए कहा, "बेटा! अब सतीश इत्यादि के साथ घूमने में समय गँवाना ठीक नहीं। वह मालिक का लड़का है, उससे हमारी किसी प्रकार भी तुलना नहीं हो सकती।"

"पर माँ, उसने अपने-आप ही मुझे साथ चलने के लिए कहा था।"

"यह तो ठीक है। जब तुम कहीं गए हुए थे तो वह और उसकी बहन आए थे और तुम्हारे पास होने के लड्डू माँगने लगे थे। जब मैं देने में आना-कानी कर रही थी तो रेखा कोठरी में घुसकर तलाशी लेने लगी और लड्डू निकालकर ले आई। दोनों ने खाए और बधाई देकर चले गए।....

"बाद में सेठ जी तुम्हारे रेखा के साथ जाने पर नाराज हो रहे थे।"

"माँ! मैं उनके साथ नहीं गया था। वही मुझको अपने साथ ले गए थे।"

"बात एक ही है बेटा! कुछ बिगाड़ हुआ तो उनको कोई कुछ नहीं कहेगा। हम गरीब ही दोषी माने जाएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु बिगाड़ होगा क्यों ? और उसका मेरे साथ क्या सम्बन्ध होगा ?"

"उसके विवाह की तैयारी हो रही है।"

रामनिरंजन को रेखा का विवाह होना स्वाभाविक ही प्रतीत हो रहा था। यद्यपि वह उसकी ओर आकर्षित होता जा रहा था, तो भी वह जानता था कि रेखा से उसका विवाह असम्भव है। वह अतुल धन के स्वामी की लड़की और फिर उसको भाई माननेवाली, भला कौन उससे विवाह की बात मस्तिष्क में ला सकता है !

माँ को रेखा के विवाह की बात करते सुनकर वह चुप रहा।

अगले दिन वह आटा मिल के मैनेजर सुन्दरदास के सम्मुख जा उपस्थित हुआ। सुन्दरदास ने उसका नाम रजिस्टर में लिखकर उससे लिखवा लिया कि उसे स्वीकार है। पश्चात् उसको चपरासी के साथ गोदाम के सुपरिंटेंडेंट के पास भेज दिया।

सुपरिंटेंडेंट श्यामचरण सुन्दरदास का दूर का सम्बन्धी था। वह बहुत ही शान-शौकतवाला आदमी था। उसके अधीन तीन आदमी काम करते थे। दो तो दिन के दस बजे से सायं छः बजे तक और तीसरा आदमी सायं छः बजे से प्रातः दस बजे तक।

श्यामचरण ने रामनिरंजन को देखकर सिर हिला दिया। उसने रामनिरंजन के विस्मय का समाधान करते हुए कहा, "रामनिरंजन ! यहाँ ऐसे कपड़े नहीं चलेंगे।"

"तो कैसे चलेंगे ?"

"मलेशिया का पाजामा और कुर्ता यहाँ नहीं चलेगा। अपने दूसरे साथियों के कपड़े देखो, ऐसे ही तुम्हें भी पहनने पड़ेंगे।"

"अगले मास वेतन मिलने पर मैं ऐसे ही सिलवा लूँगा।"

"हाँ, ठीक है। देखो, तुम और गोविन्दप्रसाद दोनों लिखते रहोगे कि कितना माल मिल में आता है और कितना जाता है। शाम को चार्ज देने के समय बकाया माल रजिस्टर के बकाया से मिलान कराकर चार्ज लेनेवाले व्यक्ति से हस्ताक्षर करवा लोगे। अगले दिन चार्ज लेने के समय पुनः माल की गिनती का चार्ज लेना है।"

रामनिरंजन काम समझ गया, परन्तु उसकी समझ में यह नहीं आया कि साधारण-से काम के लिए बढ़िया वस्त्र पहनने की क्या आवश्यकता है। वह चुप रहा और आदेश के अनुसार काम करने लगा।

उसने देखा कि श्यामचरण कोट, पतलून, टाई और बहुत बढ़िया बूट पहने हुए था। उसके साथ काम करनेवाला गोविन्ददास भी वैसे ही कपड़े, यद्यपि वे कुछ घटिया थे, पहने हुए था। कुली, जो बोरों को उठा-उठाकर रखते थे, साधारण मजदूरों के-से कपड़े पहने हुए थे।

काम बहुत ही सरल था। पहले ही दिन रामनिरंजन काम ठीक ढंग से करने लग गया। शाम को छः बजे वह और गोविन्दप्रसाद चार्ज देकर घर को चले तो दोनों में मित्रता हो गई। गोविन्दप्रसाद बहुत मीठा बोलनेवाला और मिलनसार युवक था। उसने रामनिरंजन से पूछ लिया, "कहाँ रहते हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सेठ जी की कोठी में।"

"उनके सम्बन्धी हो क्या?"

"नहीं जी! मैं तो उनके चौकीदार का पुत्र हूँ। पिता जी के कहने पर सेठ जी ने कृपा करके मुझे यहाँ नौकरी दिलवा दी है।"

"नौकरी दिलवा दी है तो कोई अहसान नहीं किया है। वेतन इतना कम है कि निर्वाह अति कठिनाई से होता है।"

"मैं 'एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज' में गया था। मेरा नम्बर सी-३३८५ है, अर्थात् मेरी श्रेणी के तीन हजार से ऊपर नौकरी पाने के लिए वहाँ अंकित हैं। मैं तो सेठ जी का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे तुरन्त नौकरी दे दी है।"

"यह ठीक है, रामनिरंजन! परन्तु एक बात तुम अनुभव करोगे कि काम आठ घंटे लेते हैं, उस पर वेतन इतना कम। साथ ही चुस्त पोशाक पहनने के लिए अलग कहा जाता है।...."

"दो सूती सूट सिलवाने में साठ से सत्तर रुपये तक खर्च हो जाएँगे। फिर साधारण-सी टाई भी पाँच रुपये में आती है। इसके अतिरिक्त कमीजें और अंडरवियर के लिए अलग पैसे चाहिएँ।"

रामनिरंजन इस विवरण को सुनकर घबरा उठा। फिर भी उसने मन में निश्चय कर लिया था कि धीरे-धीरे उचित कपड़े बनवा लेगा।

: ८ :

दिन व्यतीत होने लगे। रामनिरंजन को काम का ज्ञान होने लगा। उसको श्यामचरण और गोविन्दप्रसाद की शान-शौकत का रहस्य भी स्पष्ट होने लगा।

महीना समाप्त भी नहीं हुआ था कि गोविन्दप्रसाद ने उससे अपनी निर्धनता का रोना अलापना आरम्भ कर दिया। वे प्रायः सायंकाल इकट्ठे घर को जाया करते थे। गोविन्दप्रसाद के पास साइकिल थी, फिर भी वह रामनिरंजन के साथ पैदल ही जाना पसन्द करता था। कैसरबाग के चौराहे पर वे अपने-अपने मार्ग पर पृथक् हो जाया करते थे।

इन दिनों दो-तीन बार गोविन्दप्रसाद ने रामनिरंजन को चाय भी पिलाई जिस पर उसके दो रुपये प्रति बार व्यय हो गए।

आज जब गोविन्द कह रहा था कि बच्चे के दूध के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं तो रामनिरंजन ने स्पष्ट कह दिया, "तो भैया! तुम यह चाय पर इतना धन क्यों व्यय करते हो? व्यर्थ में दो रुपये गरम पानी पीने में उड़ जाते हैं।"

"क्योंकि मैं तुमको अपना मित्र बनाना चाहता हूँ।"

"मित्र बनाने का यह ढंग तो ठीक नहीं है। घर उजाड़कर दूसरों से दोस्ती बढ़ानी कहाँ की बुद्धिमत्ता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु हम जब दोनों मित्र बन जाएँगे तो परस्पर एक-दूसरे की सहायता भी तो कर सकेंगे ! क्या मैं गलत कह रहा हूँ ?"

"पर मैं तो तुम्हें अपना मित्र मानता हूँ। बताओ, मैं किस प्रकार तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

"सत्य कहते हो निरंजन ?" गोविन्द ने अपना हाथ उससे मिलाने के लिए आगे बढ़ाते हुए कहा।

निरंजन ने हाथ मिलाया और प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। गोविन्द ने केवल यह कहा, "सुख और दुःख में हम साथी रहेंगे। इकट्ठे तरेंगे और इकट्ठे डूबेंगे। ठीक है न ?"

"हाँ-हाँ, ठीक है भैया ! चाय-वाय पर व्यर्थ में पैसा गँवाने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हारा मित्र हूँ, विश्वास रखो।"

इसके पश्चात् गोविन्द चुपचाप चलता गया। रामनिरंजन विचार कर रहा था कि वह अपनी किसी कठिनाई का वर्णन करेगा और तदनन्तर विचार रखेगा कि मैं उसकी कितनी सहायता कर सकता हूँ। रामनिरंजन चुप रहा और कैसरबाग के चौराहे पर पहुँचकर जब वे दोनों पृथक् होने लगे तो रामनिरंजन ने पुनः उसको अपनी मैत्री का आश्वासन दिया। इस पर गोविन्द नमस्ते कर अपने मार्ग पर चला गया।

अगले दिन रामनिरंजन गोदाम पर पहुँचा तो सुपरिंटेंडेंट और गोविन्द धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। जब रामनिरंजन वहाँ पहुँचा तो गोविन्द चुप हो गया। सुपरिंटेंडेंट ने केवल उसको यह कहा, "धीरे-धीरे चलो, अभी और समझाओ।"

गोविन्द चला गया तो सुपरिंटेंडेंट ने रामनिरंजन से कहा, "मैं तुम्हारे काम से बहुत प्रसन्न हूँ। परन्तु कल जनरल मैनेजर श्री सुन्दरदास आए थे और कह गए हैं कि तुम्हें शीघ्र ही अच्छे कपड़े सिलवा लेने चाहिएँ। इस प्रकार के भद्दे कपड़े पहनकर आने से यहाँ आने-जानेवालों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।....

"यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें कुछ रुपये मैनेजर साहब से पेशगी दिलवा देता हूँ, उनसे कपड़े सिलवा लो। पेशगी रकम वेतन से कटवा देना।"

रामनिरंजन को यह बात पसन्द नहीं थी, परन्तु वह अपने अधिकारियों को नाराज भी नहीं करना चाहता था। इस कारण चुप रहा। सुपरिंटेंडेंट ने एक कागज पर एक सौ रुपये की रसीद लिखकर रामनिरंजन को हस्ताक्षर करने के लिए कह दिया। रामनिरंजन ने हस्ताक्षर किए तो उसने वह रसीद चपरासी के हाथ मैनेजर के पास भेज दी। एक घंटे के भीतर सौ रुपये का नोट रामनिरंजन के हाथ पर रख दिया गया।

उसी सायंकाल गोविन्द के साथ जाकर रामनिरंजन सूट का कपड़ा, दो टाइयाँ, चार कमीजों का कपड़ा, कच्छे और बनियान ले आया। इन पर उसके पचानवे के लगभग रुपये व्यय हो गए। अभी दर्जी की सिलाई शेष थी।

रामनिरंजन ने कपड़ों की बात अपने पिता को बताई तो उसने कहा, "बेटा ! चादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर पाँव पसारना चाहिए। अब जो हुआ सो ठीक है, भविष्य में उधार लेकर कोई भी आवश्यकता पूर्ण नहीं करनी चाहिए। अपनी आवश्यकताओं को कम करना ही उचित उपाय है।"

"पिता जी कपड़े अत्यावश्यक थे।"

"इन कपड़ों में निर्वाह नहीं हो सकता था?"

"सुपरिंटेंडेंट कहता था कि सुन्दरदास ने इन्हें पसन्द नहीं किया।"

इस बात ने रामसुमन की जबान बन्द कर दी। पहले महीने का वेतन आया तो पच्चीस रुपये उधार के उतारने के लिए कट गए। चालीस रुपये दर्जी को सिलाई के चले गए। पन्द्रह रुपये का नया बूट और दो रुपये में दो जोड़ी मोजे खरीद लिये गए। शेष तीन रुपयों में दो रुपये चाय में उड़ गए। रामनिरंजन ने एक बार तो गोविन्द को चाय पिलाने का निश्चय किया हुआ था। शेष एक रुपया उसकी जेब में बचा। यह उसने माँ के सामने रख दिया और कहा—शेष सब खर्च हो गया है।

अगले दिन जब वह अपना नया सूट पहन, टाई लगा तथा चमचमाता हुआ बूट पहन मिल के लिए जाने लगा तो सामने से रेखा मिल गई। रेखा उसको देखकर हँस पड़ी। रामनिरंजन समझ गया कि यह उसके कपड़ों पर हँस रही है। उसने गम्भीर भाव से हाथ जोड़कर कह दिया, "रेखा बहन! नमस्ते।"

इस पर तो वह और भी हँसी और कहने लगी, "आपको भले नहीं लग रहे हैं।"

"क्यों, मैं निर्धन हूँ इसलिए?"

"नहीं, इसलिए नहीं। इनको पहनने से तुम निरंजन भैया नहीं रहे।"

"तो क्या हो गया हूँ?"

"मिल के एक बाबू, केवल बाबू।"

रेखा की बातें सदैव ऐसी ही होती थीं। निरंजन को इस उत्तर से सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछ लिया, "तो निरंजन बाबू नहीं हो सकता था?"

"हो तो गया है, परन्तु भैया नहीं रहा।"

रामनिरंजन के मन में आया कि वह कह दे कि उसको भैया बनना पसन्द नहीं, परन्तु इस समय मोटर आ गई थी और वह उसमें सवार होकर चली गई।

सेठ जी के घर के लोग रेखा को पूर्ण पागल नहीं तो आधी तो समझते ही थे। किन्तु रामनिरंजन ऐसा नहीं समझता था। इस कारण जब वह मिल को जाता हुआ रेखा की बात पर विचार करने लगा तो उसको निरंजन बाबू बनना भला नहीं लगा। बाबू से तो भैया बनना उसको अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ।

एक दिन तो वह रेखा को बुद्धिमती लड़की ही समझने लगा। निरंजन का स्पष्ट कथन था कि पागल पढ़ाई कर श्रेणी में प्रथम नहीं आ सकता। इस युक्ति ने सतीश का समाधान कर दिया।

अब तो वह भी रेखा को बुद्धिमती लड़की समझने लगा था। उस दिन सिनेमा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटते समय उसकी यह बात कि कलकत्तावालों को दहेज की तुरन्त आवश्यकता है, सत्य सिद्ध हुई थी। सेठ जी का भी यही विचार था। इससे तो सतीश के मन पर रेखा की प्रतिभा की छाप-सी लग गई।

आज रेखा का यह व्यंग्य कि रामनिरंजन भैया-सा नहीं लग रहा, रामनिरंजन के मस्तिष्क में बराबर चक्कर काटता रहा। उसने यह समझा कि रेखा उसे साधारण वस्त्रों में ही देखकर प्रसन्न है। वह उसको उन कपड़ों में ही देखने का स्वभाव रखती है। परन्तु उसके कहने का मार्मिक अर्थ रामनिरंजन को दूसरे मास के वेतन के भी इधर-उधर व्यय हो जाने पर स्पष्ट होने लगा।

: ९ :

रामनिरंजन को मिल में नौकरी करते दसवाँ मास व्यतीत होने जा रहा था। इस मास भी उसका खर्चा इतना हो गया था कि घर बीस-पच्चीस रुपये से अधिक दे नहीं सका था।

परशुराम चपरासी अपनी कोठरी छोड़ गया था और वह रामनिरंजन ने ले ली थी। अब उसको कमरे को सजाने की धुन सवार हो रही थी। वह उसको अपनी बैठक बनाने का विचार करता था। वह विचार नहीं कर सका कि इसके लिए धन कहाँ से आएगा।

मास के अन्तिम दिन थे। उसकी जेब खाली थी। सायंकाल लौटते हुए गोविन्दप्रसाद ने चाय पीने का प्रस्ताव कर दिया। रामनिरंजन ने स्पष्ट कह दिया कि मेरे पास तो आज कुछ नहीं है।

"मेरे पास तो है, आओ।"

रामनिरंजन ने पूछ लिया, "तुम कहते हो कि तुम्हारी पत्नी है, दो बच्चे हैं और तुम्हारी माँ है। सबका खर्चा तुम अपने वेतन में से देकर, चाय के लिए रुपये कहाँ से लाते हो?"

"जानना चाहते हो?"

"हाँ, वह कौन-सी सोने की खान है, तनिक मुझे भी बता दो भाई!"

"आओ, चाय पिएँगे और बात भी करेंगे।" दोनों कैपिटल रेस्टोरेंट में चले गए। एक मेज पर बैठकर बैरा को ऑर्डर देकर गोविन्द ने बात आरम्भ कर दी, "निरंजन! स्मरण है कि हम दोनों सुख-दुःख में मित्र बने रहने का वचन ले चुके हैं?"

"हाँ, स्मरण है, मैं ऐसी बात भूला नहीं करता।"

"तो सुनो। हमारी एक मंडली है। उसमें बोरे भरने का मिस्त्री, मैं, सुपरिंटेंडेंट, चौकीदार और मैनेजर साहब भी सम्मिलित हैं।....

"बोरे भरनेवाला प्रति बोरा एक पाव आटा कम भरता है। दिन में लगभग दो हजार बोरा पीसा जाता है और पाँच सौ सेर आटा नित्य बच जाता है। इस प्रकार साढ़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच हजार रुपया हमें प्रति मास बच जाता है। इनमें से दो हजार मैनेजर साहब को, एक हजार सुपरिंटेंडेंट को और शेष अढ़ाई हजार में मेरा, बोरा भरनेवाले मिस्त्री का, चौकीदार और कर्मचारी का भाग है जो पहले तुम्हारे स्थान पर काम करता था। आठ-आठ सौ रुपया हम तीन लेते हैं और एक सौ रुपया चौकीदार को देते हैं।....

"जब से तुम आए हो, यह काम चल नहीं सका। अब तुम सब-कुछ जान गए हो, सो कल से तुम्हारा भाग चलेगा। देखो रामनिरंजन! तुम्हारे आने से पूर्व मेरा पहला साथी भी मेरे यहाँ आने से पहले यही कुछ कर रहा था। उसने मुझे इस रहस्य में सम्मिलित कर लिया। वह तो पाँच वर्ष में लखपति बन अपना कारोबार करने चला गया है। मुझे इस स्थान पर आए दो वर्ष हो गए हैं। मैं भी बहुत रुपया जमा कर चुका हूँ। अपना पृथक् व्यापार भी मैंने प्रारम्भ कर दिया है। दो-तीन वर्ष और यहाँ काम करके मैं भी अपना किनारा करूँगा। अब तुम भी धनी बनने की 'रॉयल रोड' (राजपथ) पर चल पड़े हो।"

रामनिरंजन इस रहस्योद्घाटन पर अवाक् बैठा रह गया। बैरा आया, चाय लगा गया और वह चाय पीने लगा। गोविन्द ने चुपचाप उसको चाय पीते देखकर समझ लिया कि रामनिरंजन उनके गुट में सम्मिलित हो गया है। आठ सौ रुपये का प्रलोभन साधारण बात नहीं थी। गोविन्द समझता था कि रामनिरंजन उसकी अवहेलना नहीं कर सकता।

उसने अपनी योजना की व्याख्या कर दी। उसने कहा, "होता यह है कि दिन-भर बोरों की ट्रॉली भरकर गोदाम में आती रहती हैं। प्रत्येक ट्रॉली में बीस बोरे होते हैं। कल से यह होगा कि बीच में छह-सात बार ट्रॉली में बीस के स्थान पर इक्कीस बोरे होंगे। तुम्हें नियमानुसार स्टॉक में बीस ही लिखने हैं और बीस-बीस की थइयों से जो ऊपर के बोरे होंगे, वे पृथक् कर देना और उन्हें उस स्थान पर, जो कल बता दूँगा, रखवा देना।....

"डिलीवरी मैं देता हूँ। मैं उन बोरों की डिलीवरी कर सुपरिंटेंडेंट को बता दिया करूँगा और वह उनका मूल्य प्राप्त कर मैनेजर साहब के पास जमा कर देगा और मास के पश्चात् हमारा भाग मिल जाएगा। आठ सौ रुपये से कभी कम नहीं हुआ। कभी-कभी अधिक भी हो जाता है।"

रामनिरंजन के मुख से आवाज निकली, "तो मेरे आने से आपको बहुत हानि हुई है?"

"हाँ निरंजन! पर अब तुम हमारे साथ सम्मिलित हो जाओगे तो हमारी हानि शीघ्र ही पूरी हो जाएगी। तुम भी उन्नति के पथ पर चल पड़ोगे और शीघ्र ही अपने पिता जी को एक धनी की चाटुकारिता करने से बचा सकोगे।"

रामनिरंजन का दिमाग इस बात से चक्कर खाने लगा। वह समझ नहीं सका कि इतना बड़ा धोखा और चोरी वर्षों से कैसे चल सकी है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय समाप्त हुई परन्तु रामनिरंजन के मुख से एक शब्द भी नहीं निकला। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह इस सबको सत्य माने अथवा उपहास।

वे दोनों रेस्टोरेंट से उठकर बाहर आ गए। गोविन्द ने रामनिरंजन की पीठ ठोकी और कहा, "मित्र ! सब ठीक होगा। हमारी योजना फूलप्रूफ (अभेद्य) है। वर्षों से यह चली आ रही है और इसे कोई पकड़ नहीं सका है।"

गोविन्द अपने घर को चला गया और रामनिरंजन सेठ जी की कोठी में जा पहुँचा। उसे रेखा का यह कथन समझ में आ गया कि वह बाबू हो गया है अर्थात् उसके कीमती वस्त्र उसके बेईमान होने के सूचक हैं और इसी कारण रेखा उसको भाई कहना पसन्द नहीं करती।

रामनिरंजन जब घर पहुँचा तो भीतर ही भीतर उसका मन बैठ रहा था। उसके मुख का रंग उड़ गया था। रामसुमन ने उसको इस प्रकार कान्तिहीन देखा तो उसका मुख देखता रह गया। उसने रामनिरंजन को अपने समीप बैठाकर पूछ लिया, "कुछ चित्त खराब हो रहा है, निरंजन ?"

"हाँ, पिता जी !" उसने अपने पिता को सबकुछ बता देने का निश्चय कर लिया।

"क्या है, क्या अनुभव कर रहे हो ?···· सिर दर्द हो रहा है ?"

"नहीं, यह बात नहीं पिताजी !" इसके पश्चात् उसने वह सब बात, जो गोविन्दप्रसाद से हुई थी, बता दी।

रामसुमन का मुख क्रोध से लाल हो गया। पश्चात् कुछ विचार कर बोला, "तो सुन्दरदास भी इस चोरी में सम्मिलित है ?"

"गोविन्द ने तो यही बताया है।"

"और तुम इसमें सम्मिलित होने का वचन दे आए हो ?"

"नहीं पिताजी ! मैंने किसी प्रकार का वचन नहीं दिया।"

"यह तो चोरी है !"

"मन में आता है कि सेठ जी से जाकर कह दूँ, परन्तु मेरी बात का कौन विश्वास करेगा ? सुन्दरदास का विरोध मैं कर नहीं सकूँगा, इसलिए सोचता हूँ कि क्यों न चुप रहूँ ?"

"तुम ठीक कहते हो। परन्तु बात यह है कि कोयले की दुकान पर तो तुम्हारा मुँह भी काला हो जाएगा। इन बेईमानों की मंडली में तुम्हारा निर्वाह नहीं हो सकेगा। मेरा कहा मानो, तुम कल इस नौकरी से त्यागपत्र दे दो।"

रामनिरंजन ने सोचा कि पिताजी ठीक कहते हैं। परन्तु उनकी बात मानने से उसको भी उनकी भाँति ही निर्धनता का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। उसने कह दिया, "परन्तु नौकरी छोड़कर करूँगा क्या ? जहाँ भी जाऊँगा, वहीं क्या ऐसा वातावरण नहीं होगा ? पिताजी ! कुछ दिन हुए मेरा एक अन्य स्कूल का मित्र, जो मुझसे दो वर्ष ऊँचे दर्जे में था, मुझे अमीनाबाद पार्क में मिल गया और बताने लगा कि वह रेल के स्टेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नौकर हो गया है। मैंने पूछा, 'बिहारी ! क्या वेतन मिलता है ?'

"वह बोला, 'छह मास की विशेष शिक्षा के पश्चात् पचहत्तर रुपये मासिक वेतन पर गुड्स-क्लर्क नियुक्त हो गया हूँ। नौकरी पाने के लिए पिताजी को पाँच सौ रुपया रिश्वत देनी पड़ी थी।'

"पाँच सौ का नाम सुनकर मैं भौंचक्का-सा उसका मुँह देखता रह गया। उसने मुझे विस्मित-सा देखकर कहा, 'परन्तु निरंजन ! पाँच सौ रुपये तो कुछ भी नहीं। मैं अपने वेतन के अतिरिक्त दो-तीन सौ रुपया मासिक आय कर लेता हूँ।'

"मैंने पूछा, 'कैसे ?'

"तो वह बताने लगा, 'लगभग पचास-साठ वैगन फलों के नित्य ही नगर में आते हैं। हमें आज्ञा है कि वैगन छह घंटों के अन्दर खाली कर दिए जाएँ। माल के मालिक इतनी जल्दी खाली नहीं कर सकते। वे चाहते हैं कि दिन-भर में आया माल अगले दिन प्रातः आठ बजे साइडिंग पर नीलाम कर सकें। इस रियायत के लिए हम उनसे दस रुपये प्रति वैगन लेते हैं। इस प्रकार पाँच से छह सौ रुपया नित्य मिलता है। यह एक मास में पन्द्रह से बीस हजार तक हो जाता है और दूसरे माल पर मिली टिप इसमें मिलाकर प्रति मास चालीस हजार के लगभग प्राप्त होता है। यह हम सब मालगोदाम में काम करनेवाले परस्पर बाँट लेते हैं। इसमें से दो से तीन सौ मासिक तक मेरे हिस्से में आता है।'

'परन्तु यह तुम क्यों करते हो ?'

'न करें तो जिएँ कैसे ?' उसने कहा, 'देखो निरंजन ! पिछले मास मेरा विवाह हुआ। उस अवसर पर मकान को सजाने के लिए बिजली लगवाने का खर्च एक सहस्र हो गया था। पूर्ण विवाह पर सात सहस्र से अधिक खर्च हुआ है। यदि इतनी कमाई न करता तो यह सब कहाँ से निकालता !'

"पिताजी ! सब स्थानों पर यही कुछ हो रहा है।"

इससे तो रामसुमन का रक्तचाप बढ़ने लगा। उसका मुख क्रोध से तमतमाने लगा। उसने खाट से उठते हुए कहा, "रामनिरंजन ! यह मेरे घर में नहीं होगा। यदि तुम्हें गोविन्द की बात स्वीकार है तो तुम आज ही मेरे घर से चले जाओ। जहाँ तुम्हारे सींग समाते हों, वहीं जा रहो।"

रामनिरंजन के मन में चल रहे द्वन्द्व का अन्त हो गया। उसकी आत्मा पर संस्कारों की विजय हुई। यद्यपि वह नहीं जानता था कि नौकरी छोड़ने पर क्या करेगा, फिर भी वह पिताजी की दृढ़ तथा स्पष्ट आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सका।

उसने भी उठते हुए अपने पिताजी से कहा, "कल नौकरी से त्यागपत्र दे दूँगा।"

: १० :

रामसुमन ने अपने पुत्र की आँखों में सत्य और निष्ठा की झलक देखी तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चिन्त हो गाय दुहने लगा। सायंकाल का अँधियारा फैलना आरम्भ हो गया था।

रामनिरंजन का चित्त शान्त था। वह भविष्य के विषय में विचार करना चाहता था। इस कारण उठकर कमरे से बाहर निकल आया। वहाँ से वह कोठी के लॉन में जाकर खड़ा हो गया। पूर्णिमा की रात्रि थी, चन्द्रमा क्षितिज से ऊपर उठता हुआ दिखाई दे रहा था। उसमें लाली थी। शीतल चन्द्रिका उसमें से अभी निकलनी प्रारम्भ नहीं हुई थी जो पूर्णिमा के चन्द्र की शोभा होती है। रामनिरंजन इस उगते चाँद को देखकर मन में एक कौतूहल अनुभव कर रहा था। वह जानता था कि इस समय आभाहीन चन्द्र कुछ ही क्षणों में पूर्ण यौवन को पाकर न केवल स्वयं सुन्दर हो उठेगा, प्रत्युत पूर्ण पृथ्वी को अपनी चन्द्रिका में लपेट सुन्दर बना देगा।

इन विचारों में वह स्वयं को सर्वथा भूल गया। उसको न तो वर्तमान का ध्यान रहा, न ही भविष्य की चिन्ता रही। वह प्रकृति के सौन्दर्य की, जो कुछ ही काल में पूर्ण पृथ्वी पर फैलने वाला था, प्रतीक्षा में वहीं लॉन में खड़ा पूर्वाभिमुख हो चन्द्रमा में आती आभा को निहारता रहा।

इस समय अपने कमरे से निकलते हुए सतीश ने रामनिरंजन को वहाँ खड़ा देख लिया। वे कितने ही काल से परस्पर नहीं मिले थे। इस कारण वह इसके पास आ खड़ा हुआ। रामनिरंजन को पता नहीं चला कि उसके पास आकर कोई खड़ा हो गया है। उसको चन्द्रमा की शोभा देखने में मस्त देख सतीश हँस पड़ा। रामनिरंजन का ध्यान भंग हुआ। सतीश ने कहा, "निरंजन ! क्या देख रहे हो ?"

"शोभा।"

"किसकी ?"

"ओह ! तुम ! सुनाओ सतीश भैया ! कॉलेज कैसा चल रहा है ?"

"तुम तो मिल से आकर घर पड़े रहते हो, कभी मिलते भी नहीं ?"

"मैं तो नौकर हो गया हूँ, पराधीन हो गया हूँ। किन्तु तुमने भी तो कभी स्मरण नहीं किया।"

सतीश समझ गया कि वह भी उतना ही दोषी है जितना निरंजन। इससे अपने किए का प्रायश्चित्त करने के लिए वह उसकी बाहों में बाँह डालकर उसे अपने कमरे में ले गया।

मार्ग में ही उसने रामनिरंजन को बता दिया था कि उसका चित्त वहाँ नहीं लग रहा।

रामनिरंजन ने पूछा, "क्यों ?"

"बता नहीं सकता। पढ़ाई में रुचि नहीं रही। कदाचित् तुम होते तो 'इंटर' के दुस्तर सागर को पार कर जाता। मेरे अकेले से पार होना कठिन है।"

इस समय वे कमरे में पहुँच गए। रेखा वहाँ पहले से ही खड़ी थी। वह निरंजन को देखकर हँस पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश रेखा की उपस्थिति में रामनिरंजन को वहाँ लाने में हिचकिचाहट का अनुभव करने लगा था। अतः वह कमरे के द्वार पर रामनिरंजन की बाँह में बाँह डाले खड़ा रहा। रेखा उनको वहाँ खड़े-खड़े अपनी ओर निहारते देख हँस पड़ी थी। हँसकर उसने कहा, "सतीश भैया ! खड़े क्यों रह गए हो ? मैं चली जाऊँ ?"

सतीश बताना नहीं चाहता था कि उसके माता-पिता ने रामनिरंजन से रेखा का मिलना बन्द किया हुआ है। इस कारण वह चुप था। यदि उसको विदित होता कि रेखा कमरे में आई हुई है तो वह रामनिरंजन को वहाँ नहीं लाता। अब रेखा को वहाँ खड़ी देखकर वह मन में वहाँ से टल जाने का बहाना सोच रहा था। रेखा ने भी इसे अनुभव किया। इसी कारण उसने अपने जाने के विषय में पूछा था।

रामनिरंजन इस परिस्थिति को नहीं जानता था। उसने रेखा के प्रश्न पर कह दिया, "क्यों, तुम क्यों चली जाओगी रेखा ? अब मैं निरंजन बाबू न रहकर पुनः निरंजन भैया बनने का निश्चय कर चुका हूँ।"

रेखा यह सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ी। सतीश निरंजन की बात का अर्थ नहीं समझा तो रेखा ने कह दिया, "या तो भीतर आ जाइए, नहीं तो मैं जा रही हूँ। देखो भैया !" उसने सतीश की ओर देखकर कहा, "मैं जानती हूँ कि माँ ने तुम्हें निरंजन भैया को मेरे पास लाने को मना किया है, सो इस प्रकार तुमने उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया है। तुमने ऐसा न करने का वचन दिया था। मैंने तो वचन दिया नहीं। इस कारण मैं तो दोषी हो नहीं सकती।....

"आओ निरंजन भैया, भीतर आ जाओ। बताओ, तुम बाबू कैसे नहीं रहोगे ? क्या वे बाबुओं के कपड़े फट गए हैं ?"

"नहीं, फटे तो नहीं, किन्तु मैं उन्हें उतार रहा हूँ।"

"क्यों ?"

इस समय निरंजन कमरे के भीतर चला आया था। विवश हो सतीश भी वहीं चला आया। तीनों बैठ गए तो निरंजन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मैं नौकरी छोड़ रहा हूँ।"

रामनिरंजन के इस विचार को सुन सतीश और रेखा अवाक् बैठे रहे। सबसे पहले रेखा ने ही पूछा, "तो क्या करोगे ?"

"यह अभी विचार नहीं किया। मिल से छुट्टी पाने पर ही आगे की बात विचारी जा सकती है।"

"पर छोड़ क्यों रहे हो ?" सतीश का प्रश्न था।

"आटे की धूलि मस्तिष्क को चढ़ रही है। इससे मस्तिष्क में विकार उत्पन्न होने लगा था। बुद्धि भ्रष्ट होने जा रही थी। अतः किसी ऐसे स्थान पर नौकरी करना चाहता हूँ जहाँ वायुमंडल निर्मल और शुद्ध हो।"

इस समय रेखा बोली, "मैं समझती हूँ कि निरंजन भैया ठीक कह रहे हैं। काम तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल ही जाएगा परन्तु निर्मल वायुमंडल मिलना सुगम नहीं।"

पश्चात् इधर-उधर की बातें होने लगीं। रेखा ने कहा, "मैंने पिताजी को कह दिया था कि निरंजन को मैं भाई मानती हूँ, वैसे ही जैसे सतीश है। इस कारण मुझे तुमसे मिलने में कोई संकोच नहीं होता। पर सतीश भैया को आज्ञा मिल गई कि वह तुम्हें मेरे सामने कभी न लाए। इस कारण वह डर रहा है।"

"तो मैं समझता हूँ कि मुझे यहाँ से चला जाना चाहिए। रेखा! तुम माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन कर ठीक नहीं कर रही हो। तुम अभी वयस्क नहीं हुई हो। तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि वयस्क होने तक तुम माता-पिता का कहना मानो।"

"और वे यदि इस आयु से पहले मेरा विवाह कर दें, तो?"

रामनिरंजन इस प्रश्न का उत्तर नहीं जानता था। इस कारण उसने कह दिया, "उस अवस्था में विचार कर लिया जाएगा। अभी तो वह स्थिति नहीं है।"

"यह प्रतिबन्ध उसकी तैयारी में है।"

"तैयारी तो आपत्तिजनक नहीं है न। हाँ, विवाह रचने के समय विद्रोह कर सकती हो।"

रेखा विस्मय में उसका मुख देखती रह गई। वह अभी विचार ही कर रही थी कि क्या उसका विद्रोह, रोग के पूर्व ही चिकित्सा करने के तुल्य नहीं? इस समय निरंजन उठ खड़ा हुआ और नमस्ते कर कमरे से बाहर निकल गया।

अगले दिन उसने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। सुपरिंटेंडेंट ने उसको बुलाकर पूछा, "क्या बात है? नौकरी क्यों छोड़ रहे हो?"

"यहाँ मेरा चित्त नहीं लग रहा है।"

"बहुत मुटिया गए प्रतीत होते हो?"

"नहीं श्रीमान्! अभी तो कपड़ों के लिए उधार लिये गए रुपये भी नहीं चुकाए गए। मुझे यहाँ का काम रुचिकर नहीं है।"

"तो कहीं अन्यत्र काम मिल गया है?"

"मिल जाएगा। इस बार काम स्वीकार करने के पूर्व बहुत विचार करने की आवश्यकता होगी।"

"तुम कुछ मूर्ख प्रतीत होते हो। नौकरियाँ बाजार में भीख माँगती नहीं फिरतीं कि जिसे चाहोगे उसे ही अपने श्रम की दान-दक्षिणा दे दोगे। निरंजन! कहा मानो, जाओ काम करो। तुम्हारा त्यागपत्र मैं फाड़कर फेंक देता हूँ।"

"जी नहीं। मैं इसको वापस नहीं ले रहा। यदि आप इसको आगे भेजने का विचार नहीं करते तो मैं सीधा सेठ जी के हाथ में दे दूँगा।"

"अच्छी बात है। जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

रामनिरंजन के मन में चोरी का रहस्य खोलने का विचार नहीं था। वह समझता था कि सुन्दरदास से लेकर फाटक के चौकीदर तक सब-के-सब उसी को झूठा कहेंगे। न तो वह उनको दोषी सिद्ध कर सकेगा और न ही अपने को सत्यवादी।

इसलिए उसने यही निश्चय किया था कि चुपचाप नौकरी छोड़ कहीं अन्यत्र कार्य ढूँढने का यत्न करना चाहिए। तब तक वह वैसे ही रहेगा जैसे विद्यार्थी-जीवन में रहता था।

परन्तु 'चोर की दाढ़ी में तिनका' वाली बात थी। रामनिरंजन के त्यागपत्र देने से चपरासी से लेकर मैनेजर तक, जो इस चोरी में सम्मिलित थे, भय से काँप उठे। दो दिन तक गुप्त गोष्ठियाँ होती रहीं। एक षड्यन्त्र विचार कर उसके लिए प्रमाण एकत्रित कर लिये गए। रामनिरंजन के विरुद्ध गोदाम में चोरी का आरोप लगाकर सेठ जी के सम्मुख उपस्थित कर दिया गया। यह कहा गया कि सायंकाल स्टॉक गिनने के बहाने देर तक बैठा रहता है और कुछ बोरे उस समय बिना चालान के निकाल देता है। एक दुकानदार ऐसा तैयार कर लिया गया, जिसने बयान दे दिया कि रामनिरंजन चोरी का माल उसके पास बेचने गया था।

रामनिरंजन के विपरीत आरोप मिलने पर सेठ जी आश्चर्यचकित रह गए। सुपरिंटेंडेंट की रिपोर्ट पर मैनेजर की जाँच का परिणाम भी लिखा हुआ मिल गया। इस कारण अविश्वास का तो प्रश्न ही नहीं था।

मैनेजर सुन्दरदास सेठानी जी का मौसिया भाई था। जब से वह इस पद पर नियुक्त हुआ था, सेठ जी को मिल में भारी लाभ दिखाई दे रहा था। अतः वह एक योग्य मैनेजर माना जाता था।

मैनेजर के पत्र को हाथ में लिये हुए सेठ जी अपनी पत्नी के पास पहुँचे और कहने लगे, "देख लो, जिन साँपों को तुम दूध पिला-पिलाकर बड़ा कर रही हो, वे मुझे डसने में कोई संकोच नहीं करते।"

इसके साथ ही सेठ जी ने सुन्दरदास का पत्र पढ़कर सुना दिया। माँ के पास रेखा बैठी सतीश की कमीज की मरम्मत कर रही थी। उसने भी आरोप-पत्र सुना और सुनते ही खिलखिलाकर हँस पड़ी।

सेठ जी तो पहले ही क्रोध से उबल रहे थे। अब रेखा की हँसी सुनकर उसे डाँटकर बोले, "पगली लड़की! तुझे हँसने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा एकदम गम्भीर हो गई। कुछ देर विचारकर बोली, "इसमें प्रमाण तो कुछ भी नहीं। केवल वक्तव्य मात्र है।"

"तो प्रमाण का निरीक्षण तुम करोगी? गोदाम में कुछ बोरे, लिखने से अधिक मिले हैं।"

"उनको तो कोई भी वहाँ रख सकता है। किसी ने उसको बेचते हुए देखा है?"

"दुकानदार ज्योतिस्वरूप जो कहता है।"

"वह सत्य कहता है, इसका क्या प्रमाण है? निरंजन भैया की तलाशी होनी चाहिए थी। यदि उसके पास चोरी के रुपये पकड़े जाते तो कुछ बात भी थी।"

सेठानी ने कह दिया, "लड़की ठीक तो कह रही है। उसके घर की तलाशी लेनी चाहिए।"

"अब तो उसको निलम्बित कर दिया गया है, वह सचेत हो गया होगा और सब माल छिपा दिया होगा।"

"तो सुन्दरदास को अचानक उसके घर पर छापा मारकर तलाशी लेनी चाहिए थी।"

"वह इस विषय में चूक गया प्रतीत होता है।"

"मामा जी की भूल पर ही तो मुझे हँसी आती है।" रेखा ने कह दिया, "प्रमाण एकत्रित करने से पूर्व ही गुल-गपाड़ा शुरू कर दिया।"

सेठ जी का रेखा पर क्रोध शान्त हो गया था और अब वे सुन्दरदास की भूल पर परेशानी अनुभव कर रहे थे। रेखा ने पिताजी को निरुत्तर देखा तो कहा, "मामा जी ने गोदाम की तलाशी तो ली, परन्तु उसके घर की नहीं ली। साथ ही तलाशी रात के समय ली, जब वहाँ पर वह नहीं था।"

"रेखा! तुम दूसरों के ही दोष निकाला करती हो?"

सेठानी ने पुनः कह दिया, "लड़की ठीक ही तो कह रही है! कदाचित् अभी भी समय हो। चलिए, मैं आपके साथ चलती हूँ।"

सेठ जी ने आना-कानी करते हुए कहा, "किसी के घर की तलाशी बिना सरकारी वारण्ट के नहीं ली जा सकती।"

"तो आपका विचार है कि रामसुमन तलाशी देने में आपत्ति उठाएगा?"

"उठा सकता है।"

"उठाने दीजिए। इससे तो वह स्वयं ही दोषी बन जाएगा। हम जान जाएँगे कि पिता-पुत्र दोनों चोर हैं और उनको घर से निकालते समय मन में संकोच नहीं होगा।"

"पिताजी!" रेखा ने कमीज को एक ओर रखकर कहा, "वे लोग तलाशी देने से इन्कार नहीं करेंगे।"

"कैसे जानती हो?"

"चलकर देख लीजिए, रामनिरंजन ने चोरी नहीं की।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम पगली की पगली ही रहीं !"

सेठ जी सेठानी को लेकर तलाशी लेने चल पड़े। रेखा भी उनके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँची।

सेठ, सेठानी और रेखा जब रामसुमन के घर पहुँचे तो रामनिरंजन अपने निलम्बित किए जाने का समाचार बता रहा था। उसने बताया था, "मैंने त्यागपत्र दे दिया था और मैनेजर साहब ने मुझे निलम्बित कर दिया है। मानो मैंने कोई अपराध किया हो !"

"तुम्हें बताया क्या गया है ?"

"पत्र में तो केवल यह लिखा है कि मुझे चार्ज तुरन्त गोविन्दप्रसाद को देना चाहिए। मेरे अपराधों का निर्णय सेठ जी करेंगे। बस, मैं चार्ज देकर घर चला आया हूँ।"

इस समय सेठ जी वहाँ पहुँच गए। इन्हें देखकर रामसुमन खाट से उठ हाथ जोड़कर नमस्कार कहने लगा। रामनिरंजन भी उठकर बाहर चला आया।

सेठ जी ने रामनिरंजन से पूछ लिया, "निरंजन ! मैनेजर ने तुम्हें निलम्बित कर दिया है ?"

"जी हाँ।"

"क्यों ?"

"मुझे बताया नहीं। मैंने परसों नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था और आज मुझे उन्होंने निलम्बित कर दिया है।"

"अच्छा, हम लोग तुम्हारे घर की तलाशी लेने आए हैं। हमारी एक वस्तु चोरी हो गई है, हमें सन्देह है कि वह तुमने चुराई है।"

यह आरोप सुनकर रामसुमन का मुख पीला पड़ गया। उसको एक क्षण के लिए रामनिरंजन पर सन्देह हुआ, परन्तु तुरन्त ही राम जी पर भरोसा कर उसने कहा, "सेठ जी ! यह घर आपका है, मैं भी तो आपके ही अन्न से पला हूँ और इन बच्चों का तो रोम-रोम आपका आभारी है। 'गोली किसकी और गहने किसके', आप तलाशी ले सकते हैं।"

सेठ जी ने रामसुमन की जेब देखी, रामनिरंजन के कपड़ों को टटोला और पश्चात् घर की एक-एक वस्तु देखनी आरम्भ कर दी।

रामसुमन को इस घर में रहते हुए अठारह वर्ष से अधिक हो गए थे। इस पर भी उसने इस घर को कभी भी अपना नहीं समझा था। अतएव उसने घर में बहुत ही कम सामान रखा हुआ था। कदाचित् उसके पास सामान खरीदने के लिए कभी कुछ बचता ही नहीं था। चार खाट, तीन रजाइयाँ, दो कम्बल, चादरें, चटाई तथा पहनने के कपड़े, बस यही कुछ उसके पास था। इसके अतिरिक्त बर्तन, मसाला पीसने के लिए सिलबट्टा था। बरामदे में एक ओर चूल्हा बना था और उसके समीप परछत्ती पर बर्तन रखे थे। बरामदे में दूसरे कोने में गाय के लिए दाना तथा भूसा बोरों में भरा हुआ रखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलाशी लेने में दस मिनट से अधिक नहीं लगे। सेठ जी को सन्देह हुआ कि कहीं रजाई में रुपये न सी रखे हों। उन्होंने तीनों रजाइयों को खूब टटोला। जब इस प्रकार सेठ जी देख रहे थे तो उस समय रेखा की हँसी निकल गई। सेठानी ने घूरकर रेखा की ओर देखा और कहने लगी, "चुप रह पगली !"

"न डाँटो माँजी !" रामसुमन ने कहा, "बिटिया हमारी दुर्दशा देखकर हँस रही है।"

इन शब्दों ने रेखा का मुख बन्द कर दिया। जब सेठ जी कमरे का कोना-कोना और खाटों के नीचे-ऊपर तथा चटाई तक को झाड़कर देख चुके तो बाहर निकल आए। सेठानी और रेखा भी उनके पीछे-पीछे आ गईं।

रामनिरंजन तो कमरे के बाहर ही खड़ा था। रामसुमन सबके पश्चात् बाहर निकला। सेठ जी गर्दन झुकाए कोठी की ओर चल पड़े। सेठानी जी के मुख पर घृणा दिखाई दे रही थी। कोई नहीं जान सका कि घृणा किसके प्रति है। रेखा की आँखों से आँसू टपक रहे थे।

रामनिरंजन ने रेखा को कभी रोते नहीं देखा था। आज उसके आँसू देखकर उसको अत्यन्त विस्मय हुआ। वह अवाक् उसको देखता रह गया। रेखा आँखें नीची किए अपने माता-पिता के साथ कोठी की ओर चली गई।

रामसुमन, उसकी पत्नी तथा दोनों लड़के चुपचाप एक-दूसरे का मुख देखते रहे। एकाएक रामसुमन को चेतना हुई और उसने अपने कर्त्तव्यों की ओर ध्यान किया। उसने गर्दन सीधी कर छाती को फुलाकर ऊँचे स्वर में गा दिया—

जय राम रमा रमणं सुमनं, भव ताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेश सुरेश रमेश विभो, सहसागत माँगत पाहि प्रभो।
दस सीस विनाशन बीस भुजा, कृत दूरि महा महि भूरि रुजा।
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, सर पावक तेज प्रचण्ड दहे।
महि मण्डल मंडन चारु तरे, धृत सायक चाप निपंग वरे।
मद मोह महा ममता रजनी, तम पुंज दिवाकर तेज अनी।
हरि नाथ अनाथिन पाहि हरे, विषया बन पाँवर धूरि परे।
भव सिन्धु अगाध परे नर ते, पद पंकज प्रेम न जे करते।
तव नाम जपामि नमामि हरि, भव रोष महा मद मान अरि।
गुण शील कृपा परमा मलनं, प्रणमामि निरन्तर श्री रमणं।
रघुनन्द निकन्दन द्वन्द्व घने, महिजाल विलोकत दीन जने।

रामसुमन इन छन्दों को गाता खाट पर उथल-पुथल किए कपड़ों के ढेर को ठिकाने पर रखने लगा। रामनिरंजन पिता के इस काम में हाथ बँटाने लगा। जब सब सामान ठीक प्रकार से रख दिया गया तो रामनिरंजन ने पूछा, "पिता जी ! अब क्या होगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होगा यह कि मैं आज सेठजी की नौकरी छोड़कर और कल घर को छोड़ कहीं अन्यत्र ठिकाना करूँगा।"

"पर पिताजी ! जब तक अगला पाँव जम न जाए, उससे पहले पिछला पाँव उठाना ठीक नहीं होगा।"

"परन्तु मेरा अगला पाँव तो जमा हुआ है, मैं राम जी के चरणों में अपना पाँव जमाए हुए हूँ। तुम लोग बैठो, मैं कहीं घर देखने जा रहा हूँ।"

जाने से पहले रामसुमन ने अपनी पत्नी से कहा, "तनिक गाय का दूध दुह लो, रामनिरंजन ग्राहकों को दे आएगा।"

: २ :

रेखा अपने माता-पिता के साथ कोठी में आई तो सीधी अपने कमरे में चली गई। उसने कमरा भीतर से बन्द कर लिया। सतीश और रेखा सायंकाल चाय पिया करते थे। वे प्रायः इस समय ही मिल सकते थे। पश्चात् सतीश स्टूडैंट्स-क्लब में बैडमिंटन खेलने चला जाया करता था और रेखा अपने स्कूल का काम करती थी।

आज रेखा चाय पीने नहीं आई। सेठ जी तो रामसुमन के कमरे की तलाशी लेने के पश्चात् मोटर में सवार हो किसी काम से चले गए थे। सेठानी चाय पीने डाइनिंग हॉल में आ गई थीं। रानी अपनी ससुराल में थी।

चाय समाप्त हुई, परन्तु रेखा नहीं आई। इस कारण सतीश ने पूछ लिया, "माँ ! रेखा अभी तक स्कूल से नहीं आई क्या ?"

"आई है परन्तु आज उसके पागलपन का दौरा तेज हो गया है।"

"पागलपन का ? माँ ! किन्तु वह पागल तो नहीं है।"

"आज तो वह सत्य ही पागल हो गई है। आज तक तो हम उसको हँसते ही देखा करते थे किन्तु आज वह रोई भी है।"

"क्यों रोई है ?"

"यह तुम अपने पिताजी से पूछना।"

"तो क्या उन्होंने उसे पीटा था ?"

"नहीं, पीटा नहीं। सेठ जी रामसुमन की तलाशी लेने गए थे। मैं और रेखा साथ ही थीं। वहाँ से लौटते समय से ही रेखा रो रही है।"

"तलाशी क्यों ली थी ?"

"सुन्दरदास ने रामनिरंजन पर चोरी का आरोप लगाया है। उसका कहना है कि वह मिल में चोरी करता था। विचार था कि चोरी का धन घर में छिपा रखा होगा। इस कारण उसके घर की तलाशी लेनी अत्यावश्यक हो गई।"

"तो कुछ निकला उसके घर से ?"

"नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश को इस समाचार से दुःख हुआ। वह माँ को कुछ कह नहीं सका। बड़ों की बात में बोलने का उसका स्वभाव नहीं था। डाइनिंग हॉल से निकल वह रेखा के कमरे की ओर गया। कमरा भीतर से बन्द था। उसने द्वार खटखटाया, परन्तु भीतर से रेखा ने उत्तर नहीं दिया। यह समझकर कि वह सो रही होगी, कुछ समय पश्चात् पुनः आने का विचार कर वह चला आया।

आज वह क्लब नहीं जा सका। उसका मन खिन्न था। वह विश्वास नहीं कर सका था कि मामा सुन्दरदास की बात सच्ची है। वह रामनिरंजन के चोर होने का विचार मात्र भी नहीं कर सका। वह उसको बचपन से ही जानता था। उसके साथ खेला और पढ़ा था। रामनिरंजन उनकी कोठी में आता-जाता रहता था। कोठी-भर में घूमता रहता था। कभी उसके विरुद्ध चोरी की शिकायत नहीं हुई। उसे मिल में नौकरी पाए अभी दो मास भी नहीं हुए थे कि इन दो महीनों के भीतर ही उसका स्वभाव बिल्कुल बदल गया था। क्या इस अल्पकाल में ही वह इतनी बड़ी चोरी करने का अभ्यासी हो गया है? इन प्रश्नों पर विचार करते उसका मन कहता था कि कहीं कुछ भूल हो रही है।

इस पर उसके मन में आया कि रामनिरंजन से पूछना चाहिए। वह उसके सामने सत्य बात कह देगा। उसी दम उसे रामनिरंजन की दो दिन पूर्व की यह बात कि वह नौकरी छोड़ने वाला है, स्मरण हो आई। उसने समझा कि इस चोरी के आरोप का उसके त्यागपत्र के साथ सम्बन्ध हो सकता है। फिर भी इस बात पर रामनिरंजन ही प्रकाश डाल सकता है, ऐसा विचारकर वह अपने कमरे से निकल कोठी के पिछवाड़े रामसुमन के उपगृह की ओर चल पड़ा। वह अभी वहाँ पहुँचा नहीं था कि रामनिरंजन हाथ में दूध का बर्तन लिये कोठी के फाटक की ओर जाता मिला।

"कहाँ जा रहे हो निरंजन?" सतीश ने पूछा।

"ग्राहकों को दूध देने के लिए।"

"पिताजी कहाँ हैं?"

इस बात का उत्तर देने की अपेक्षा रामनिरंजन ने उससे ही पूछा, "कुछ काम है क्या?" उसने सोचा शायद सेठ जी बुला रहे हों।

"उनसे तो नहीं, हाँ तुमसे है। कब तक काम से निबट जाओगे?"

"आधा घण्टा तो लग ही जाएगा। यह साथ की कोठियों में दूध देने जा रहा हूँ।"

"मैं अपने कमरे में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"पर भैया!"

"क्यों, क्या बात है?"

रामनिरंजन अपने पाँवों की ओर देख रहा था। उसने धीरे से कहा, "भैया, मैं कोठी में नहीं आऊँगा। सुना है आपकी कोई वस्तु चुराई गई है और सेठ जी मुझ पर सन्देह कर रहे हैं।"

"परन्तु चोरी तो मिल में हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे कुछ भी विदित नहीं वह कहाँ हुई और क्या हुई।"

वास्तविकता का सतीश को भी पता नहीं था। इसलिए उसने कह दिया, "तुमने चुराई नहीं तो डरते क्यों हो?"

"नहीं भैया! जिसने मुझ पर यह आरोप लगाया है वह उस वस्तु को मेरी जेब में डालकर मुझे पकड़वा भी सकता है।"

"किसने शिकायत की है?"

"यों तो मुझे बताया नहीं गया, फिर भी मेरा अनुमान है कि मिल के मैनेजर सुन्दरदास ने ही की होगी।"

"मैं बीस मिनट में लॉन में आऊँगा, वहाँ तो मिल सकोगे?"

"हाँ।"

सतीश चला गया। रामनिरंजन अभी कोठी के बाहर ही निकला था कि उसका पिता लौट आया। उसने रामनिरंजन को बता दिया कि वह रहने के लिए दूसरी जगह का प्रबन्ध कर आया है। उसने बताया, "सेठ सोमेश्वर जी ने मुझे अपने पीछे की कोठरी देना स्वीकार कर लिया है। पिछले वर्ष मैं उनके पास दूध बेचता रहा हूँ। मकान का भाड़ा दस रुपया दूध में से काट लिया करेंगे। कल से हम उनकी कोठी में चले जाएँगे।"

"यहाँ की नौकरी छोड़ दी है?"

"तुम यह दूध मुझे दे दो, मैं दूध पहुँचाकर सेठ जी के पास जाकर छुट्टी माँग लूँगा।"

रामनिरंजन दूध अपने पिता को देकर लौटा तो सतीश अब भी लॉन में ही खड़ा था। उसने उसे बताया, "पिताजी आ गए थे, वे स्वयं ही दूध लेकर चले गए हैं।"

"पर तुम तो कह रहे थे कि तुम नौकरी छोड़ रहे हो?"

"हाँ, परसों मैंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था। मैंने उसमें लिखा था कि मुझे शीघ्रातिशीघ्र कार्य से मुक्त कर दिया जाए। आज मुक्त करने के स्थान पर मुझे बिना कारण बताए निलम्बित कर दिया गया है। यह तो सेठ जी ने तलाशी लेते समय बताया कि उनकी चोरी हो गई है।"

"तो अब क्या करोगे?" सतीश ने चिन्ता प्रकट करते हुए पूछा।

"इस तलाशी के उपरान्त तो यहाँ रहना हम अपना अपमान समझते हैं। अतः पिताजी सेठ जी से छुट्टी लेने जा रहे हैं। हम कल प्रातःकाल यह स्थान छोड़ देंगे।"

सतीश समझ नहीं सका कि यह क्यों हुआ? उसका मन कहता था निरंजन ने चोरी नहीं की। इसमें कहीं भारी भूल हो रही है। फिर भी वह इस विषय में कुछ कर नहीं सकता था। उसने निरंजन से कहा, "जब से रेखा यहाँ से गई है, वह रो रही है। उसने अपने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द किया हुआ है।"

"देखो सतीश! मैं रेखा के मन के भावों को समझता हूँ। कदाचित् वह मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्दोष समझती है, पर कुछ सहायता न कर सकने के कारण वह रो रही है। मेरी ओर से उसे कह देना कि रोने की आवश्यकता नहीं, इसमें किसी का दोष नहीं। हमारा भाग्य ही कारण है। मेरा स्नेह तुम लोगों के प्रति वैसा ही बना रहेगा, जैसा अब तक था।"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हें इतनी जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए। एक-दो दिन में असली बात का पता चल जाएगा, तब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।"

"सतीश भैया! तुम ठीक कहते हो, परन्तु मैं तो अपने पिताजी के साथ ही रह सकता हूँ। यदि उनकी नौकरी से छुट्टी मिल गई तो हम कल चले जाएँगे।"

"तुम मेरे साथ कोठी में चलो। पिताजी आ गए प्रतीत होते हैं। मैं सभी बात अभी उन्हें स्पष्ट कहे देता हूँ और बात कुछ दिन के लिए टल जाएगी।"

"नहीं भैया! मैं वहाँ जाना नहीं चाहता।"

विवश सतीश अकेला ही लौट गया। उसे सूझा कि रेखा को लेकर पिताजी से बात करे, कदाचित् वे दोनों उनको समझा सकें।

वह पुनः रेखा के कमरे के दरवाजे पर आ पहुँचा। उसने दरवाजे पर थाप दी तो रेखा ने अन्दर से पूछा, "कौन?"

"सतीश।"

"क्या बात है भैया?"

"तुम मेरे साथ चलो, जरा रामनिरंजन के विषय में पिताजी से बात करनी है।"

"कुछ लाभ नहीं होगा, मैं जानती हूँ कि वह निर्दोष है किन्तु हम कुछ नहीं कर सकेंगे।"

"परन्तु दरवाजा तो खोलो!"

"किसी का मुख देखने को चित्त नहीं करता। चित्त स्थिर होने पर भोजन करने आऊँगी।"

: ३ :

सतीश चित्त में चंचलता अनुभव कर रहा था। वह समझता था कि घोर अन्याय हो रहा है। सत्रह-अठारह वर्ष का विश्वस्त कर्मचारी साधारण-सी बात के लिए निकाला जा रहा है।

उसने पुस्तक पढ़ने को उठाई। परन्तु उसका मन ही नहीं लगा। पुस्तक रख दी, उठा और पिताजी से मिलने चला गया। वे ड्राइंगरूम में बैठे थे। सुन्दरदास भी वहाँ था और रामसुमन उनके सामने खड़ा गले में कपड़ा डाले कह रहा था, "हम सब आपके बहुत आभारी हैं, हमारा रोम-रोम आपका कृतज्ञ है, फिर भी मैं समझता हूँ कि अब हमें जाना ही चाहिए।"

"बहुत मुटिया गए प्रतीत होते हो रामसुमन!"

"नहीं सेठ जी! अपनी विवशता से बाध्य होकर ही जा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, रामनिरंजन की चोरी की बात प्रमाणित हो चुकी है। मैं अभी गोदाम का रजिस्टर देखकर आया हूँ। इन प्रमाणों की उपस्थिति में यदि उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया तो उसे दण्ड मिल जाएगा। यह तो केवल तुम्हारी सेवाओं का विचार कर मैं उसको पुलिस में नहीं दे रहा हूँ। परन्तु तुम्हारा व्यवहार तो ऐसा है कि 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'!"

"मालिक! मैं भला आपको कैसे डाँट सकता हूँ? फिर भी मेरा यही कहना है कि मैं अपने चोर पुत्र को लेकर आपके घर में रहना कृतघ्नता समझता हूँ। अब छुट्टी मिलनी ही चाहिए।"

"तुम हठ करते हो तो मैं क्या कर सकता हूँ! मैं फिर भी कहता हूँ कि तुम्हें यहाँ से जाने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि जाते हो तो सुन लो, तुम जब भी चाहो पुनः सेवा में आ सकते हो।"

"मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मेरी प्रार्थना सुन ली। मैं कल प्रातःकाल यहाँ से चला जाऊँगा।"

रामसुमन दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार कर कमरे से बाहर चला गया। जब वह चला गया तो सतीश ने पूछा, "पिताजी! क्या हुआ है?"

"रामनिरंजन आस्तीन का साँप निकला। अब तक हम साँप को दूध पिलाते रहे हैं। मैंने उसे अपना विशेष तथा विश्वस्त आदमी समझकर गोदाम में लगाया था, परन्तु उसने वहीं चोरी करनी आरम्भ कर दी! जिस दुकानदार के पास वह चोरी किए आटे की बोरी बेचता था, उसी ने उसको पकड़वा दिया है। ऐसा अनुमान है कि पिछले दो मास में वह पाँच हजार का माल चुरा चुका है।"

सतीश इस आरोप को सुनकर भौंचक्का-सा बैठा रह गया। उसकी बुद्धि कहती थी कि इन प्रमाणों की उपस्थिति में निरंजन अपराधी सिद्ध हो चुका है। वह जानता था कि सुन्दरदास बहुत समझदार व्यक्ति है और वह भला अकारण निरंजन को क्यों पकड़वाएगा! फिर भी उसका मन कहता था कि निरंजन ऐसा नहीं हो सकता। सेठ जी उठकर जाने लगे तो सतीश ने कह दिया, "पिताजी! निरंजन निर्दोष है।"

सेठ जी जाते-जाते रुक गए। सुन्दरदास व्यंग्यात्मक हँसी हँसकर बोला, "सतीश! तुम अभी बच्चे हो। यह बात तुम्हारी सूझ-बूझ से ऊपर की बात है। वह तुम्हारा मित्र अवश्य है, परन्तु तुम्हारा मित्र होना उसके चोर न होने का प्रमाण नहीं माना जा सकता।"

एकाएक सेठ जी खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले, "तुम बहन-भाई दोनों पर उसने जादू कर रखा है। जाओ, बहन को बुला लाओ, भोजन का समय हो रहा है।"

डाइनिंग हॉल में रेखा और उसकी माँ दोनों पहले ही बैठी हुई थीं। सुन्दरदास भी आज वहीं भोजन करने बैठ गया। सेठ जी और सतीश बैठे तो भोजन परोसा जाने लगा।

भोजन के समय सुन्दरदास ने कहा, "जीजाजी! ये बाप-बेटे दोनों चोर हैं। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा न होता तो बाप गिड़गिड़ाकर आपके सामने लड़के को निर्दोष सिद्ध करने का यत्न अवश्य करता। ऐसा प्रतीत होता है कि चोरी का धन इन्होंने कहीं छुपा रखा है और अब नौकरी छोड़कर आनन्द से उसका भोग करेंगे।"

सतीश ने पुनः अपने विश्वास को दोहराते हुए कहा, "मामाजी ! क्या आप भूल नहीं कर सकते ?"

"मैंने प्रमाण जो देखे हैं !"

"यदि बाद में आपको पता चला कि आपको धोखा हुआ तो बहुत हेठी होगी।"

"क्या हेठी होगी ? मैंने जो कुछ किया वह पूरी जानकारी एवं प्रमाणों के आधार पर किया है। यदि किसी और बात का पीछे पता चलेगा, जिससे कि वह निर्दोष सिद्ध हो सके तो मैं अपनी भूल स्वीकार कर लूँगा। इसमें हेठी किस बात की है ?····

"मुझे विश्वास है कि उसने चोरी की है और अब पिता-पुत्र सहज छूट जाने पर ईश्वर का धन्यवाद कर रहे होंगे। वे निर्दोष नहीं हैं।"

"यह सब झूठ है !" रेखा ने क्रोध से कह दिया।

"तुम यह कैसे कहती हो ? तुम्हें इस विषय में क्या विदित है ?"

"निरंजन भैया ऐसे नहीं हैं।"

"चुप रहो रेखा !" सेठ जी ने कह दिया, "प्रमाणों को घोलकर नहीं पिया जा सकता।"

"प्रमाण तो घड़े भी जा सकते हैं।"

"इसकी किसी को क्या आवश्यकता हो सकती है ?" सुन्दरदास ने पूछ लिया।

"तो आप उस पर मुकद्दमा चला दो न !"

"क्या पागलों की-सी बात करती हो ! मुकद्दमा न चलाकर तो हमने उस पर दया की है। निरंजन का पिता तो स्वयं कह गया है कि वह चोर पुत्र को लेकर इस कोठी में नहीं रहना चाहता।"

भोजन समाप्त हुआ तो सुन्दरदास ने सुख की साँस ली। वह यही जानने आया था कि निरंजन का मित्र सतीश उसके पक्ष में क्या कहता है और सेठ जी पर उसके कथन की क्या प्रतिक्रिया होती है।

जब सतीश अपने कमरे में जा रहा था तो रेखा, जो उसके पीछे-पीछे आ रही थी, उसको आवाज देकर पूछने लगी, "भैया ! क्या तुम भी निरंजन को चोर समझते हो ?"

"नहीं, परन्तु रेखा ! हमारे पास प्रमाण भी तो नहीं हैं कि मामा जी झूठ बोल रहे हैं।"

: ४ :

अगले दिन रामसुमन और उसका परिवार सेठ कमलापति की कोठी से अपना सामान एक बैलगाड़ी में लादकर गाय और बछड़े को साथ लेकर सेठ सोमेश्वर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी के पिछवाड़े वाले भाग में चले गए।

सेठ सोमेश्वर सेठ कमलापति से कुछ अन्तर पर रहता था। पिछले वर्ष रामसुमन उसके पास दूध बेचा करता था। दूध तो सेठानी जी को देना होता था परन्तु दूध का दाम सेठ जी दिया करते थे।

सोमेश्वर इतना धनी नहीं था जितना कि कमलापति। फिर भी वह अपने ढंग से अधिक उदार था। उसकी उदारता बोलचाल में और अपने अधीनस्थों को वेतन देने के समय प्रकट हुआ करती थी। वह सुमन का हिसाब प्रति सप्ताह निपटा दिया करता था और दूध अच्छा होने के कारण बाजार-भाव से दो पैसे सेर अधिक मूल्य देता था। रामसुमन की गाय ने जब दूध देना बन्द किया और वह नई गाय का तुरन्त प्रबन्ध नहीं कर सका तो सेठ सोमेश्वर ने एक अन्य ग्वाले से दूध लेना आरम्भ कर दिया था।

अतः रामसुमन जब उसके पास रहने के लिए स्थान की समस्या लेकर पहुँचा तो खालिस दूध पाने के लोभ में उसे अपनी कोठी के पीछे की एक कोठरी, जो उस समय खाली पड़ी थी, देने के लिए तैयार हो गया।

रामनिरंजन और उसका छोटा भाई रामाश्रय जब वहाँ पहुँचे और घर की सफाई करने लगे तो रामनिरंजन ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा, "पिताजी! आय बहुत कम हो गई है और खर्चा बढ़ गया है, निर्वाह कैसे होगा?"

"निरंजन! तुम अब कहीं नौकरी ढूँढने का यत्न करो। मुझे विश्वास है कि रामजी की कृपा से तुम्हें शीघ्र ही काम मिल जाएगा। एक बार पहले भी ऐसी अवस्था हुई थी। परन्तु मुझे तो सदा भगवान का आश्रय रहा है।....

"मेरे विवाह की घटना है। भाई ने विवाह बहुत धूमधाम से किया था। उसमें पन्द्रह सौ रुपया व्यय हो गया था। पास तो कुछ भी नहीं था। अधिकांश ऋण लेकर ही किया गया था। विवाह के पश्चात् जब तुम्हारी माँ घर में आई तो भाभी ने उसे उलाहना दिया कि उसे पन्द्रह सौ रुपये में मोल लाए हैं। मुझे इससे भारी ठेस-सी लगी। मैंने अपने भाई को भूमि से अपने भाग की फारखती लिखकर दे दी और घर छोड़कर लखनऊ चला आया। उस समय मैं और तुम्हारी माँ केवल पहने हुए कपड़े ही लेकर आए थे। हमारी जेब में, जब हम लखनऊ पहुँचे तो एक फूटा पैसा भी नहीं था। भगवान का नाम लेकर मैं नौकरी ढूँढने निकला और पहले ही दिन नौकरी मिली और पेशगी दो रुपये भी मिले।....

"अब तो परिस्थिति पहले से अच्छी है। रहने का स्थान है, पहनने को कपड़े हैं। तुम्हारी माँ के पास चालीस-पचास तोले के आभूषण भी हैं। तुम भी मेरी सहायता के लिए तैयार हो गए हो। साथ ही भगवान की कृपा भी बनी हुई है; न बनी होती तो यह मकान इतनी जल्दी न मिल जाता। यह उससे अच्छा ही है जो हम छोड़कर आए हैं। शेष काम भी हो जाएँगे। इस समय जहाँ पर भी काम मिले, कर लो।"

रामनिरंजन जब स्कूल में पढ़ता था और सतीश के कमरे में बैठकर पाठ स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करता था, तो वह अपने भावी जीवन के बहुत ही मधुर चित्र बनाया करता था। वे चित्र पिछले तीन मास की नौकरी के अनुभव से निर्मित होते दिखाई नहीं देते थे। वर्तमान घटना से तो उनकी पूर्ति और भी कठिन हो गई प्रतीत होती थी।

उसने समय व्यर्थ गँवाने की अपेक्षा कुछ यत्न करना आवश्यक समझा। वह घर से निकलकर स्थान-स्थान पर नौकरी की खोज करने लगा। मैट्रिक-पास विद्यार्थी की दृष्टि में कहीं क्लर्की की नौकरी का ही विचार आ सकता था। वास्तव में स्कूलों के वातावरण और शिक्षा से उत्पन्न व्यक्ति के मन में क्लर्की के अतिरिक्त अन्य आ भी क्या सकता है!

एक बात स्वयंसिद्ध है कि देश में क्लर्कों की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी उनकी पैदावार है। अतः सबको नौकरी मिलनी सम्भव नहीं।

एक मास की भाग-दौड़ के पश्चात् हज़रतगंज में एक शृंगार-प्रसाधन की दुकान पर विक्रेता-रूप में एक सौ रुपये मासिक वेतन पर नौकरी मिल गई। यह वेतन आटा-मिल से अधिक था।

यहाँ पर भी निरंजन के सम्मुख वही समस्या उपस्थित हुई जो आटा-मिल में नौकरी के समय हुई थी। दुकान का मालिक रामनाथ बत्रा था। वह पंजाब का रहनेवाला था और पंजाबियों के आचार-विचार के अनुरूप बढ़िया वस्त्र पहनने के पक्ष में था। साथ ही उसकी दुकान पर धनी श्रेणी की महिलाएँ ही प्रायः आया करती थीं। उसका विचार था कि दुकान पर बिक्री करनेवाला व्यक्ति अति चुस्त और सभ्य पोशाक में होना चाहिए। जब उसने रामनिरंजन को एक योग्य उम्मीदवार मानकर नौकर रखा तो उसे कहने लगा, "तुम्हें वस्त्र जरा अच्छे बनवाने होंगे।"

"मेरी पोशाक अच्छी नहीं है?"

"ऊँहूँ।" रामनाथ ने सिर हिला दिया, "यह आजकल की ऋतु में नहीं चलेगी। गर्म कपड़े का सूट बनवाओ।"

निरंजन समझ गया कि यहाँ भी नौकरी चल नहीं सकेगी। इस कारण पहले ही उसने स्पष्ट बात कह दी, "श्रीमान्! जैसे कपड़े आप चाहते हैं, उनके लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

"तो काम कैसे चलेगा? यहाँ तो धनी वर्ग की महिलाएँ आती हैं और वे भद्दी पोशाक में किसी से बात करना भी पसन्द नहीं करेंगी।"

"मैं विवश हूँ। आप कोई अन्य व्यक्ति खोज लीजिए। इतने वेतन में, जो आप दे रहे हैं, दो सूट बनवाऊँ तो चार मास का वेतन तो उनके दाम को लौटाने में ही खर्च हो जाएगा। अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति फिर कहाँ से करूँगा?"

बत्रा रामनिरंजन की युक्ति को समझ रहा था। उसने एक बात कही, "इस दुकान में दो अन्य युवक भी काम कर रहे हैं। उनका भी वही वेतन है जो तुम्हें मिलेगा। एक तो विवाहित भी है और उसका एक बच्चा भी है। वह कैसे निर्वाह करता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो वही बता सकता है। मैं एक आपबीती जानता हूँ। मैं लखनऊ आटा-मिल में गोदाम-क्लर्क के रूप में नौकर था। वहाँ के मैनेजर ने भी मुझे वही कुछ कहा, जो आप कह रहे हैं। मैंने तीन मास का वेतन व्यय कर कुछ कपड़े बनवा लिये थे। वहाँ पर एक साथी था जो मुझसे बढ़िया कपड़े पहनकर आता था। कुछ दिनों में मेरे साथी ने अपनी शान-शौकत से रहने का रहस्य बताया और मुझे भी वही कुछ करने के लिए कहा। वह चोरी करता था तथा मुझे भी चोरी करने के लिए प्रेरित करता था। मैंने चोरी करने की अपेक्षा नौकरी से त्यागपत्र देना उचित समझा। परन्तु मेरा त्यागपत्र स्वीकार करने के स्थान पर मुझे नौकरी से निकाल दिया गया और मुझपर चोरी का आरोप लगा दिया। मैनेजर ने बिना जाँच-पड़ताल किए वह आरोप सत्य मान लिया और मुझे नौकरी से निकाल दिया।....

"यदि आप भी कुछ काल के पश्चात् वही कुछ करनेवाले हैं तो मैं क्यों अपना वेतन फोकट में ऐसे कपड़ों में लगाऊँ?"

"तुम्हारा आशय यह है कि दूसरे बिक्री-क्लर्क चोरी करते हैं? मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता।"

"मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही। मैंने तो केवल आपबीती बताई है।"

"लखनऊ आटा-मिल, जिसमें सुन्दरदास मैनेजर है?"

"जी हाँ।"

"अच्छी बात। आज तुम ऐसे ही काम करो। शाम को तुम्हारे बारे में विचार करूँगा।"

रामनिरंजन दुकान का काम समझने लगा। मिस्टर बत्रा का स्टोर एक बहुत बड़ी दुकान में था। दुकान के मुख्य हॉल में अल्मारियाँ लगी थीं। उनमें सैकड़ों प्रकार का शृंगार का सामान सजाया हुआ था। अल्मारियों के आगे काउँटर बने हुए थे और उनके पीछे बिक्री करनेवाले क्लर्क खड़े होते थे। बिक्री करनेवाले सामान दिखाते थे। क्रय किए हुए सामान का बिल वहीं बिक्री करनेवाला बनाता था और वह बिल एकाउंटेंट के पास जमा करवाकर माल ले जाता था।

रामनिरंजन को वस्तुओं का परिचय और उनकी कीमतों का ज्ञान कराने के लिए एक बिक्री करनेवाले क्लर्क के साथ लगा दिया गया। इसका नाम जनार्दन मिश्र था। यह बहुत ही चुस्त और योग्य युवक था, और ग्राहक उससे बहुत प्रसन्न थे।

रामनाथ बत्रा ने जनार्दन मिश्र को बुलवाया। उसे रामनिरंजन के कथन से कुछ चिन्ता होने लगी थी। सुन्दरदास के विषय की बात सुनकर उस पर विश्वास आ गया था क्योंकि सुन्दरदास के व्यवहार का कुछ ज्ञान उसको था।

रामनिरंजन के यह कहने पर कि आटा-मिल में कर्मचारी बढ़िया कपड़े, चोरी करके पहनते थे, उसे जनार्दन के विषय में भी संशय होने लगा था। जब जनार्दन उसके सामने आकर खड़ा हुआ तो उसने उससे पूछ लिया, "मिश्रा! तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनका स्वर्गवास हो चुका है।"

"वे क्या काम करते थे?"

"रेलवे एकाउंट्स ऑफिस में ११० रुपये वेतन पर क्लर्क थे।"

"तुम कितने भाई-बहन हो?"

"दो भाई हैं, एक मुझसे छोटा है, वह इस समय कॉलेज में पढ़ रहा है। दोनों बहनों का विवाह हो चुका है।"

"तुम्हारे पिताजी कुछ सम्पत्ति छोड़ गए हैं?"

"कुछ विशेष नहीं, उनके रिटायर होते समय कुछ ग्रेच्युटी मिली थी। उससे हमने बहनों का विवाह कर दिया। मैंने अपना विवाह तो अपनी कमाई से ही किया है।"

"तुम्हारा घर अपना है?"

"जी नहीं, उसका तीस रुपया किराया देता हूँ।"

"कभी सिनेमा भी देखते हो?"

"कभी-कभी।"

"जनार्दन! यह सूट कितने का सिलवाया है?"

"इस पर एक सौ पचहत्तर रुपये खर्च हुए हैं।"

यह सब वृत्तान्त रामनाथ को परेशान करने के लिए पर्याप्त था। उसने जनार्दन को काम पर भेज दिया।

दुकान के हॉल के बराबर में एक कमरे में दुकान का कार्यालय था और वहीं पर बैठा बत्रा विचार कर रहा था कि एक सौ रुपये मासिक वेतन पानेवाले की माँ है, पत्नी है, कॉलेज का विद्यार्थी भाई है और एक बच्चा है। इतने कम वेतन में वह किस प्रकार निर्वाह करता है? परन्तु यह केवल सन्देह मात्र ही तो था! बिना प्रमाण के वह किसी पर आरोप नहीं लगा सकता था।

सुन्दरदास रामनाथ बत्रा का मित्र था। लगभग एक मास हुआ कि उसने आटा-मिल से एक कर्मचारी को चोरी का आरोप लगाकर निकलवाने की बात बताई थी। रामनिरंजन ने उसी घटना का रहस्य बता दिया।

यद्यपि सुन्दरदास से घटना का वृत्तान्त सुनकर वह हँस पड़ा था, तो भी वह नहीं चाहता था कि मैं भी ऐसी घटना का शिकार बनूँ।

: ५ :

उसी सायंकाल बत्रा ने रामनिरंजन को बुलाकर कहा, "मैं तुम्हारे स्पष्ट कथन से बहुत प्रसन्न हूँ। फिर भी एक बात निश्चित ही है कि तुम्हारा वेतन इतने से अधिक नहीं हो सकता, और तुम्हें वस्त्र भी बढ़िया पहनने चाहिएँ । इस कारण मेरा एक प्रस्ताव है। मैं तुम्हें एक सूट अपने खर्चे से बनवा दूँगा और दस रुपये मासिक वेतन में से काट लिया करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु दस रुपये मासिक की काट से तो एक सूट का मूल्य डेढ़ वर्ष में पूरा होगा। फिर ग्रीष्म ऋतु के कपड़े भी तो आपकी रुचि के अनुसार ही बनवाने होंगे।"

"यह सब मैं देख लूँगा।"

रामनिरंजन चुप रहा और बत्रा ने अगले दिन दर्जी को बुलाकर उसका नाप दिलवा दिया। साथ ही अपनी पसन्द का कपड़ा ले दिया। इस प्रकार काम चलने लगा।

इस प्रबन्ध से रामसुमन अति प्रसन्न था। उसका विश्वास परमात्मा पर और भी बढ़ गया। आज वह और भी अधिक श्रद्धा और प्रेम से रामायण का पाठ करने लगा।

इस नई परिस्थिति में एक बात और हुई। उसको लगभग पचास रुपये मासिक बचने लगे। रामनिरंजन के वेतन से वह मकान का भाड़ा और रामाश्रय के स्कूल का खर्च दे देता था। उसमें से दस रुपये के लगभग वह रामनिरंजन को जेब-खर्च भी देता था। घर का खर्च दूध की आय से चलता था।

यह एक नई परिस्थिति थी जो रामसुमन को जीवन में प्रथम बार प्राप्त हुई थी। वह इस बचत के रुपये से अपनी आय बढ़ाने के विषय में विचार करने लगा। उसने यही उचित समझा कि दूध के व्यापार में ही वृद्धि करनी चाहिए।

जब उसके पास एक सौ रुपया एकत्रित हो गया तो वह एक गाय और मोल ले आया। दोनों का दूध बारह सेर हो जाता था। इसकी बिक्री से छः रुपये नित्य मिलने लगे। इसका अर्थ यह हुआ कि उसको इस व्यवसाय से गउओं पर सब प्रकार का खर्च निकालकर दूध की बिक्री से दो रुपये प्रतिदिन और रामनिरंजन के वेतन से पचास रुपये मासिक की बचत होने लगी। जो कुछ बचत होती, वह गउओं की खरीद पर लगाने लगा। सेठ सोमेश्वर की कोठी के पिछवाड़े वाले उपगृह में आए उसको छः मास हो गए थे। इस समय उसके पास पाँच गाएँ हो गई थीं और उनमें से चार दूध देती थीं। इस प्रकार रामनिरंजन के वेतन के अतिरिक्त लगभग दो सौ रुपये मासिक की आय होने लगी।

सेठ जी की कोठी के नौकरों के गृहों में से एक में सेठ जी का चपरासी महेश सिन्हा रहता था। उसके लिए सेठ जी ने दो काम नियत कर रखे थे, एक तो सेठ जी की कोठी को झाड़-पोंछकर साफ-सुथरा रखना, तथा दूसरा, घर के लिए बाजार से सौदा लाना।

महेश आठवीं श्रेणी तक पढ़ा था और घर के खर्चे का हिसाब-किताब भलीभाँति रख सकता था। रामसुमन और महेश पड़ोसी होने के नाते अच्छे परिचित हो गए थे। प्रातः-सायं जब भी महेश कोठी से छुट्टी पाकर आता तो रामसुमन के पास बैठ गप्पें हाँका करता था।

कमलापति की कोठी में तो रामसुमन एकाकी जीवन व्यतीत करता था। वहाँ उसके साथवाले गृहों में रहनेवाले परशुराम और लेखराज अकेले ही रहते थे। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे मेल-जोल केवल व्यावहारिक ही रहा था। यहाँ पर पड़ोसी महेश सिन्हा अपने परिवार-सहित रहता था। उसके तीन बच्चे थे और पत्नी थी।

रामसुमन सर्वथा निरामिष-भोजी था और महेश मांस, अंडे, मछली सब-कुछ खाता था। फिर भी दोनों में मेल-जोल था। सिन्हा बहुत ही मधुरभाषी था। सदा रामसुमन से उसका सद्व्यवहार रहता था। अतः दोनों में मेल-जोल दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया।

सिन्हा की एक लड़की उषा चौथी श्रेणी में पढ़ती थी और रामाश्रय उसको पढ़ा दिया करता था।

इस घनिष्ठता का एक परिणाम यह हो रहा था कि रामसुमन महेश के घर का खर्च देखकर विस्मय करने लगा था कि वह अपने पचास रुपये मासिक वेतन में परिवार का खर्च कैसे चला सकता है? वह पड़ोसी के परिवार की कठिनाई का अनुमान अपनी उन दिनों की अवस्था से लगाता था जब रामनिरंजन की नौकरी नहीं लगी थी और रामसुमन को अपना निर्वाह केवल एक गाय का दूध बेचकर ही करना पड़ता था। अब जबकि उसकी अपनी अवस्था सुधर रही थी तो कभी-कभी वह पाव या आधा सेर दूध सिन्हा के बच्चों के लिए भेज दिया करता था।

एक दिन बातों ही बातों में सिन्हा अपने घर की व्यवस्था पर बोल पड़ा। सिन्हा ने कहा, "भैया! पचास रुपये में निर्वाह हो नहीं सकता। इस कारण कुछ चतुराई से निर्वाह करना पड़ता है।"

रामसुमन का विचार था कि निर्वाह में मितव्ययिता का कोई ढंग वह जानता होगा। इस कारण उसने पूछ लिया, "मैं भी तो विस्मय करता था कि इतनी कम आय में तुम किस प्रकार निर्वाह कर पाते हो?"

"बात सरल है।" सिन्हा ने रहस्योद्‌घाटन कर दिया, "एक ओर तो मैं अपनी आय में वृद्धि का यत्न करता हूँ और दूसरी ओर खर्चे में कमी।....

"खर्चे में कमी के विषय में तो तुम जानते हो। तुम कभी दूध भेज देते हो। उस दिन मैं बाजार से दूध नहीं मँगाता और इससे चार आने तक की बचत कर लेता हूँ। इसी प्रकार सेठ जी के घर अंडे देनेवाला मुझे तीन अंडे नित्य दे जाता है। इससे प्रति दूसरे दिन सब्जी के मोल में भी आठ आने बचा लेते हैं। कपड़ेवालों से कपड़ा और अनाजवालों से अनाज मिल जाता है। इस प्रकार वेतन के पचास रुपयों में से बहुत-कुछ बच जाता है।"

"परन्तु वे लोग तुम्हीं को ये वस्तुएँ बिना मूल्य के क्यों देते हैं?"

"वे मुझ पर किसी प्रकार का एहसान नहीं करते। अब अंडेवाले की बात ही सुन लो। सेठ जी के घर में एक दर्जन अंडे नित्य आते हैं। बाजार में भाव है पौने दो रुपये दर्जन। मैं उसको सवा दो रुपये के भाव से दाम दिला देता हूँ। और वह मुझे तीन अंडे बिना मूल्य के दे जाता है। इसी प्रकार दूसरे लोग भी करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामसुमन महेश सिन्हा की बात सुनकर भौंचक्का-सा हो गया। वह विचार कर रहा था कि यह तो स्पष्ट चोरी कहलाएगी।

"कुछ भी कहो, पेट माँगता है और आय का मार्ग बनाना ही चाहिए। परन्तु कोई ईमानदारी का मार्ग बनाओ न!"

"यह तो सम्भव नहीं है। कोई भी व्यक्ति ईमानदारी से इस संसार में नहीं रह सकता।"

रामसुमन समझ गया कि यह तो अति भयंकर व्यक्ति है। अपनी कार्य-सिद्धि में धर्माधर्म, न्याय-अन्याय और उचित-अनुचित में भेदभाव ही नहीं करता। वह उसे समझाना चाहता था कि उसका उपाय गलत है। इस कारण उसने अपनी अवस्था का वर्णन करते हुए कहा, "भैया! यह जो तुम करते हो, ठीक नहीं है। एक समय मैं भी ऐसी ही परिस्थिति में पड़ गया था जिसमें कि तुम हो। मैं गाँव से लखनऊ में आया तो सेठ कमलापति जी की कोठी में पच्चीस रुपये मासिक पर चौकीदारी की नौकरी मिल गई।....

"जब बच्चे नहीं हुए थे तो पच्चीस रुपये में निर्वाह होता रहा। परन्तु जब रामनिरंजन हुआ तो उसके दूध के लिए पैसे नहीं बचते थे। बच्चा दूध के लिए रोने लगा तो मैंने भी एक मार्ग निकाला। बच्चा होने से पहले साठ रुपये बचाकर रखे हुए थे। उनसे एक गाय मोल ले आया। इससे बच्चे के दूध के साथ-साथ बचा हुआ दूध बेचकर गाय का खर्च भी निकालने लगा। पश्चात् मैं अच्छी नस्ल की गाय मोल ले आया और उसके दूध से मेरी आय में और भी वृद्धि हो गई। इस प्रकार रामनिरंजन के मैट्रिक पास करने तक निर्वाह होता रहा।....

"जब मुझे कमलापति जी की नौकरी छोड़नी पड़ी तो फिर वही कठिनाई आ उपस्थित हुई और दो मास, जब तक रामनिरंजन की नौकरी नहीं लगी, हम नमक-मिर्च से ही रोटी खाते रहे। पेट माँगता था और उसने ही रामनिरंजन को प्रेरणा दी कि वह शीघ्र नौकरी ढूँढे और मुझे प्रेरणा दी कि मैं और अधिक गौवें ले आऊँ।....

"देखो भाई! तुम भी खर्च में कमी कर सकते हो। सिगरेट पीना बन्द कर दो। दो डिबिया सिगरेट नित्य फूँक देते हो अर्थात् पन्द्रह रुपये मासिक की बचत तो हो ही सकती है।"

यह तो महेश ही जानता था कि सिगरेट पर भी दाम खर्च नहीं होते। वह दुकानदार, जिससे सेठ जी के यहाँ सामान आता था, महेश को सिगरेट कमीशन में दे देता था।

महेश चुप रहा। उसके मुख से यह प्रकट होता था कि उसको रामसुमन की योजना स्वीकार नहीं। रामसुमन के मन पर इसका दूसरा ही प्रभाव पड़ा था। वह समझ गया कि सिन्हा भला आदमी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

रामनिरंजन को रामनाथ बत्रा के 'ब्यूटी पैलेस' में कार्य करते हुए छः मास व्यतीत हो गए थे। वह नित्य प्रातः दुकान पर नौ बजे उपस्थित हो जाता था। सायं पाँच बजे उसको दुकान से छुट्टी हो जाती थी। उस समय उसके स्थान पर जनार्दन मिश्र काम करने आ पहुँचता था। वह चार घंटे सायंकाल और चार घंटे प्रातःकाल दुकान पर कार्य करता था। उसका मध्याह्न का समय खाली होता था।

एक दिन रामनिरंजन पाँच बजे दुकान से घर लौट रहा था कि उसको अमीनाबाद पार्क में एक भिखारी दिखाई दिया जो उसे कुछ देखा-भाला प्रतीत हुआ। वह एक कोने में बैठा हाथ और पाँव पर तेल में सिंजी मिट्टी बाँधे स्वर-सहित आवाज दे रहा था, 'कोढ़ी को दो पैसा देकर दुआ लेते जाओ! भगवान सबका भला करे! देनेवाले का भी भला! कोई दाता दुखिया की भी सुनते जाओ!' इत्यादि।

रामनिरंजन जाता-जाता खड़ा हो गया और एक पैसा उसके प्याले में डालकर उसे ध्यानपूर्वक देखने लगा। भिखारी ने एक युवक को खड़ा हो अपनी ओर ध्यानपूर्वक निहारते देखकर उसकी ओर देखा और रामनिरंजन को पहचानकर अपनी आँख चुरा दूसरी ओर देखने लगा। रामनिरंजन उसको आँख चुराते देख और भी उत्सुकता से देखने लगा। वह विचार कर रहा था कि कौन ऐसा कोढ़ी हो सकता है जो उसका जाना-बूझा हो और जो उससे आँख चुराने में कुछ कारण रखता हो? कई मिनट तक विचार करने पर उसने भिखारी को पहचान लिया। यह परशुराम चौकीदार था जो सेठ कमलापति की कोठी में उनके साथवाली कोठरी में रहता था और जिसके गृह को खाली होने पर सेठ जी ने उसे दे दिया था।

उसे पहचानते ही वह उसके सामने जा खड़ा हुआ और पूछने लगा, "परशुराम, यह कैसे हुआ है?"

"कौन हो भाई तुम? मैं तो तुमको नहीं जानता?"

इस प्रश्न से तो रामनिरंजन के मन में पुनः सन्देह हो गया कि कहीं उसके पहचानने में भूल तो नहीं हो गई? उसने उसको ध्यानपूर्वक देखा तो उसके संशय का निवारण हो गया। वह परशुराम ही था। एक बात वह समझ नहीं सका था कि वह अपने को उससे अपरिचित क्यों प्रकट कर रहा है? रामनिरंजन ने उसके सामने होते हुए कहा, "तुम सेठ कमलापति की कोठीवाले चौकीदार परशुराम नहीं हो क्या? देखो, मैं रामनिरंजन हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए पूछ रहा हूँ।"

"मुझ भाग्यहीन की यही सहायता कर सकते हो कि मुझे दो पैसे प्रतिदिन दे जाया करो। जीवन के जो कुछ भी दिन शेष हैं उनमें भरपेट रोटी खा सकूँ, बस यही अभिलाषा रह गई है।"

"यह तो साधारण बात है। पर मैं तो पूछ रहा हूँ कि तुम्हें यह रोग कहाँ से लगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बताने पर ही तो लज्जा आती है। न पूछो तो अच्छी बात है। मैं बताऊँगा भी नहीं। बताने का लाभ ही क्या?"

"अच्छी बात है, न बताओ। मैं पूछने का आग्रह भी नहीं करता। यह तो बताओ तुम किसी अस्पताल में जाकर चिकित्सा क्यों नहीं करवाते?"

"बाबू! गया था। डॉक्टरों ने मेरे रोग को कोढ़ बताकर मुझे वहाँ रखने से इन्कार कर दिया।"

रामनिरंजन ने उसे एक आना और दिया और कहा, "मैं कल फिर आऊँगा और बताऊँगा कि तुम्हारी चिकित्सा किस प्रकार हो सकती है।"

रामनिरंजन ने घर पर अपने पिता को परशुराम की कथा बताई तो उसने उसे महेश सिन्हा की बात, जो उसी दिन उसने सुनी थी, बता दी। सिन्हा की कथा सुनाकर उसने बताया, "निरंजन! एक बार मैंने परशुराम को भी बताया था कि अपनी चादर देखकर पाँव फैलाओ, पर उस मूर्ख ने समझा नहीं। पाँव तो फैला दिए परन्तु चादर को बड़ा करने का उपाय नहीं किया। अब यही बात सिन्हा कर रहा है। इसका परिणाम अच्छा नहीं दिखाई देता।"

"यह बात तो ठीक है पिताजी! पर क्या हम इनकी कुछ सहायता नहीं कर सकते?"

"बेटा! इनकी सहायता तो परमात्मा ही कर सकता है। वही सबको सुमति देने की सामर्थ्य रखता है। सुनो, मैं तुम्हें परशुराम के विषय में अपना अनुभव बताता हूँ। मैं उससे मिल चुका हूँ और उसकी कथा भी जान चुका हूँ।....

"उसने बताया था कि वह जब अपनी पत्नी के साथ सीताराम के घर में जा बसा था तो खर्चा बढ़ना स्वाभाविक था। उसे पूरा करने को उसने चोरी करनी आरम्भ कर दी। वह कोठी की वस्तुएँ चुरा-चुराकर बाजार में बेचने लगा। सेठजी को पता चला तो उसे निकाल दिया। वह बेकार हो गया। तब उसकी पत्नी उसको छोड़ गई और अब वह भीख माँगने लगा है। वह बीमार नहीं है। उसकी पट्टियाँ लोगों को धोखा देने को हैं। भीख माँगने का यह एक ढंग है।....

"निरंजन! ये लोग अपनी आय में वृद्धि के लिए गलत उपाय प्रयोग में ला रहे हैं, बस भूल यहीं पर है। हम भी तो निर्धन हैं। हमारा खर्च भी तो दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। फिर भी हम अपनी आय-वृद्धि में वे उपाय प्रयोग में ला रहे हैं जो धर्म और कानून से वर्जित नहीं। हमारे विपरीत ये लोग धर्म-विरुद्ध उपाय प्रयोग में ला रहे हैं। परशुराम की तो अवस्था बिगड़ ही चुकी है। मुझे भय है कि महेश की भी यही दशा न हो जाए।"

रामनिरंजन को परशुराम की कहानी सुनकर जहाँ विस्मय हुआ वहाँ घृणा भी। एक विचार, जो इन कथाओं को सुनने से उसके मन में उत्पन्न हुआ वह यह था कि उसे अपनी आय-वृद्धि के उपायों को और विस्तृत करना चाहिए। उसने पूछा, "पिताजी! क्या हम अपने काम को और विस्तार नहीं दे सकते?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विषय में मैं विचार कर रहा हूँ। इस व्यवसाय में और अधिक उन्नति करने के लिए हमें कोई बड़ा स्थान लेना पड़ेगा। यहाँ पर तो और गौओं को रखने के लिए स्थान नहीं है।....

"मैं इसके लिए कई दिन से नगर का चक्कर काट रहा हूँ। ज्योंही हमें कोई ऐसा स्थान मिला कि जहाँ पचास जानवर साथ रखे जा सकें तो हम इस जगह को छोड़ देंगे।"

: ७ :

रामनाथ बत्रा जनार्दन मिश्र से सतर्क तो तभी हो गया था जब रामनिरंजन ने उसको आटा-मिल की बात बताई थी। वह जानने को उत्सुक था कि जनार्दन अपना इतना खर्चा कैसे चलाता है। जब भी वह कोई नई नेकटाई अथवा सूट पहनकर आता था तो बत्रा को यह अनुभव होता था कि उसकी दुकान से चोरी के धन से यह खरीदा गया है। फिर भी सन्देह के अतिरिक्त उसके पास किसी प्रकार का प्रमाण नहीं था।

बत्रा के पास कुछ अधिक देखभाल के लिए समय भी नहीं था। उसने सुन्दरदास के साथ मिलकर ठेकेदारी का व्यवसाय आरम्भ कर दिया था। इस कार्य में जहाँ बहुत-सा रुपया लग गया था वहाँ अधिक भाग-दौड़ भी करनी पड़ रही थी। इससे वह दिन-प्रतिदिन दुकान की देखभाल बहुत कम कर पा रहा था। मुख्य रूप से देखभाल एकाउंटेंट को ही करनी पड़ रही थी।

सुन्दरदास एक दिन बत्रा से मिलने को दुकान पर आया तो वहाँ रामनिरंजन से उसका साक्षात् हुआ। रामनिरंजन को यह तो पता था कि सुन्दरदास, बत्रा का मित्र है परन्तु उसे अभी यह पता नहीं था कि दोनों ने मिलकर कोई नया व्यवसाय भी शुरू किया है।

रामनिरंजन ने सुन्दरदास को हाथ जोड़कर नमस्कार किया तो सुन्दरदास ने यह समझा कि वह भय से ऐसा कर रहा है। इस कारण उसने रामनिरंजन को थोड़ा और डराने के विचार से कह दिया, "तो तुम अब यहाँ आ पहुँचे हो? तनिक सावधानी से काम करना, कहीं यहाँ से भी न निकलना पड़े।"

"यहाँ तो आप चोरी नहीं कर रहे," निरंजन ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, "जो मैं किसी को बता सकूँ!"

सुन्दरदास खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसकी हँसी की आवाज सुनकर बत्रा कार्यालय से बाहर निकल आया और सुन्दरदास से पूछने लगा, "अपने पुराने कर्मचारी से क्या मीठी-मीठी बातें हो रही हैं?"

"वही जो मैंने बताई थीं।"

रामनाथ सुन्दरदास को भीतर ले गया और थोड़े समय पश्चात् रामनिरंजन को भीतर बुला लिया गया। रामनिरंजन अपने सत्य कथन की प्रतिक्रिया नौकरी से निकाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना समझता था। इस कारण वह तो बुरी-से-बुरी बात सुनने के लिए तैयार होकर भीतर गया था।

रामनिरंजन दोनों के सामने जाकर खड़ा हो गया तो बत्रा ने उससे पूछा, "क्या कहा है तुमने इन्हें?"

रामनिरंजन ने गर्दन सीधी कर कहा, "जो सत्य था। मैं इनके आधीन लखनऊ आटा-मिल में कार्य करता था। ये और इनके कुछ अन्य साथी अपने स्वामी के सहस्रों रुपये प्रतिमास चुराया करते थे। किसी प्रकार वह मुझे विदित हो गया। इनके साथियों में से एक ने मुझे भी अपने गुट में सम्मिलित करने का यत्न किया। परन्तु मैं सम्मिलित नहीं हुआ। इससे इन्हें भय हो गया कि मैं कहीं इनकी चालों का भंडा न फोड़ दूँ, अतः मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र कर मुझे ही चोर कहकर नौकरी से निकाल दिया। यही मैंने अभी इनसे कहा है।"

दोनों हँसने लगे। रामनिरंजन इस हँसने का अर्थ नहीं समझ सका। मतलब की बात रामनाथ ने कही। उसने कहा, "देखो निरंजन! तुम्हारी बात से मैं अप्रसन्न नहीं हूँ। फिर भी तुम्हें एक बात समझ लेनी चाहिए। मालिक की इच्छा के अनुसार ही किसी कर्मचारी को रहना चाहिए। उसकी इच्छा के विपरीत आचरण करने पर नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।"

"मैं इस बात को समझता हूँ। मैंने मालिक की इच्छा के विपरीत कुछ नहीं किया था और न ही अब कुछ करने का विचार कर रहा हूँ। उस समय ये मालिक नहीं थे।"

"यही तो तुम भूल कर रहे थे। यदि ये मालिक न होते तो तुम्हें निकाल न सकते। वहाँ के वास्तविक मालिक यही हैं।"

रामनिरंजन इस रहस्योद्‌घाटन से विस्मित-सा हो गया। उसके अपने विचारों से तो आटा-मिल के मालिक सेठ कमलापति थे। हो सकता है कि वास्तविक स्वामी और नाम के स्वामी में अन्तर हो! एक बात उसने कह दी, "आपका कथन भी ठीक हो सकता है, किन्तु यहाँ तो वह उलझन नहीं है। यहाँ तो जो नाम के मालिक हैं वे ही वास्तविक मालिक हैं।"

"हाँ, यही बात बताने के लिए तुम्हें बुलाया गया है। यहाँ का मालिक तुम्हें चोरी करने के लिए नहीं कह रहा, प्रत्युत तुम्हें सतर्क करता है कि यहाँ किसी द्वारा भी चोरी न होने पाए।"

"मैंने तो पहले दिन ही आपसे निवेदन किया था कि चोरी की सम्भावना यहाँ भी है। जहाँ आय और व्यय में सन्तुलन नहीं वहाँ कहीं-न-कहीं कुछ-न-कुछ, हेरा-फेरी होती है। यह सम्भव है कि इस चोरी से आपको कुछ भी हानि न होती हो। इनकी चोरी से भी सेठ जी को कुछ हानि न होती हो, फिर भी थी तो वह चोरी ही।"

"जब तक मुझे हानि नहीं होती, मैं सन्तुष्ट हूँ। मुझे दूसरों की रखवाली के लिए किसी ने नियुक्त नहीं किया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बत्रा की बात यहाँ तक तो ठीक थी। परन्तु कोई तो चोरी रोकने के लिए नियुक्त था। वही इसको रोकने के लिए आ गया।

उक्त वार्तालाप के कुछ दिन पश्चात् की बात है। जनार्दन मिश्र दुकान से अनुपस्थित हो गया! यह विचार था कि वह बीमार हो गया होगा। परन्तु उसकी अनुपस्थित्ति का रहस्य अगले दिन पता चला। समाचार-पत्रों में बहुत मोटे-मोटे शीर्षकों में समाचार छपा, 'लखनऊ में चोरों का बड़ा गिरोह पकड़ा गया'।

इस शीर्षक के नीचे लिखा था, 'पुलिस ने कार्ल्टन हाउस के एक दुकानदार को चोरी का माल बेचते पकड़ा है। यह कहा जाता है कि इस दुकानदार ने बीसियों एजेन्ट रखे हुए हैं जो नगर की बड़ी-बड़ी दुकानों से सामान चोरी कर लाते हैं और इस दुकानदार के द्वारा बचते हैं। पुलिस ने इस गुट के तीस-चालीस व्यक्तियों को पकड़ लिया है जिनमें कई लड़कियाँ भी हैं।"

बत्रा ने यह समाचार दुकान पर आने से पहले ही पढ़ा था। वह दुकान पर आया तो जनार्दन को फिर अनुपस्थित देख उसे सन्देह हो गया कि कहीं वह भी इस गुट का सदस्य न हो। रामनिरंजन दुकान पर उपस्थित था, उसने उससे पूछा, "जनार्दन आया है क्या?"

"जी नहीं, कदाचित् वह आज भी नहीं आएगा।"

"क्यों?"

"वह चोरों के गुट में पकड़ा गया है।"

"कैसे जानते हो?"

"जनार्दन की माँ कल यहाँ उसका पता लेने आई थी। इसका अर्थ यह था कि वह घर पर नहीं है। आज जब मैं दुकान पर आया ही था तो एक औरत उसके विषय में पूछताछ करने आई थी। एकाउंटेंट साहब तब तक नहीं आए थे। वह मुझे ही एकाउंटेंट जान पूछने लगी, 'पुलिस अभी जाँच करने आई है अथवा नहीं?'

"मैंने पूछा, 'कैसी जाँच?'

"तो वह बोली, 'जनार्दन के विषय में।'

"मेरा प्रश्न था, 'क्या हुआ जनार्दन को?'

"वह औरत विस्मय में मेरा मुख देखने लगी। एकाएक उसकी समझ में आया कि मैं वह नहीं हूँ जो वह समझती थी। इसका ज्ञान होते ही वह बोली, 'क्षमा करना, मैंने आपको लाला चन्द्रभानु समझा था।'

"यह कहकर वह चली गई।"

रामनाथ बत्रा इस समाचार से स्तब्ध रह गया। एकाउंटेंट अपने काउँटर पर बैठा पिछले दिन की 'बिक्री' मिला रहा था। रामनिरंजन को ही ग्राहकों से निबटना पड़ता था। उस समय दुकान पर कोई अन्य कार्यकर्त्ता नहीं था। अतः बत्रा इस विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए रामनिरंजन से अधिक बातचीत नहीं कर सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रभानु हिसाब देख रहा था और ग्राहकों से दाम भी प्राप्त कर रहा था।

विवश बत्रा कार्यालय में जाकर विचार करने लगा कि उस औरत का चन्द्रभानु से पूछने का क्या अर्थ हो सकता है? अर्थ तो यह निकलता है कि चन्द्रभानु भी इन चोरों के गुट से सम्बन्ध रखता है। वह क्या सम्बन्ध हो सकता है, उसकी समझ में नहीं आ रहा था। बत्रा दस-दस मिनट पश्चात् बाहर आता था और रामनिरंजन से पूछ जाता था कि वह औरत फिर आई है अथवा नहीं। उसने उसको कह रखा था कि यदि वह चन्द्रभानु से बात करने आए तो वह तुरन्त खबर दे।

लगभग दोपहर के ग्यारह बजे वह औरत पुनः आई और एक शीशी पोंड्स की क्रीम लेने के लिए उसके सामने खड़ी हो गई। रामनिरंजन शीशी को लिफाफे में डालकर बिल बनाने लगा। इस समय उस स्त्री ने पूछ लिया, "आपका क्या नाम है?"

"रामनिरंजन। क्यों, क्या बात है?"

"मैं प्रातः आपके पास आई थी और आपसे भूल से बातचीत करने लगी थी।"

"कुछ हानि नहीं हुई। आप चन्द्रभानु जी से बात करना चाहती हैं न! वे वह बैठे हैं।" उसने एकाउँटेंट की ओर संकेत कर दिया। साथ ही कहा, "इसका दाम उन्हीं को देना होगा और वहीं से आपको यह वस्तु भी मिलेगी।"

वह जब चन्द्रभानु के पास मूल्य देने गई तो रामनिरंजन कार्यालय में जाकर बत्रा को इसकी सूचना दे आया। बत्रा लपककर बाहर आ गया। परन्तु तब तक वह औरत वहाँ से जा चुकी थी। बत्रा और रामनिरंजन मुख देखते रह गए।

बत्रा ने चन्द्रभानु के पास जाकर पूछा, "यह औरत क्या कहती थी?"

"कुछ नहीं, क्रीम की शीशी लेने आई थी और ले गई है।"

"तुम इसको जानते हो?"

"जी हाँ, यह जनार्दन मिश्र की पत्नी है।"

"कैसे जानते हो कि यह उसकी पत्नी है? क्या पहले भी कभी यहाँ आ चुकी है?"

"जी नहीं, वह तो यहाँ पहली बार ही आई है, किन्तु जाते समय वह कह गई है कि वह उसकी पत्नी है।"

बत्रा को यह सब कथन रहस्यमय प्रतीत हुआ। उसने चन्द्रभानु को कार्यालय में बुला लिया और पूछा, "वह क्या कहने आई थी?"

"जी, मैं नहीं जानता, मैं स्वयं भी विस्मय कर रहा था कि उसने स्वयं ही अपना परिचय क्यों दिया।"

बत्रा को चन्द्रभानु की बात पर विश्वास नहीं हुआ। इतना तो उसके मन में स्पष्ट था कि वह औरत चन्द्रभानु को पहचानती नहीं। पहचानती होती तो निरंजन को चन्द्रभानु समझकर बात न करती। फिर भी वह इससे मिलने तो आई थी। वह कुछ न कुछ सन्देश इस समय इसको दे गई होगी जो यह बता नहीं रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बत्रा ने अपने मन का संशय निवारण करने के लिए कहा, "देखो चन्द्रभानु ! मैं तुम्हारी तलाशी लेना चाहता हूँ।"

"क्यों, मैंने क्या किया है ?"

"तुमने क्या किया है इसी के जानने के लिए तो तलाशी आवश्यक हो गई है। बताओ, तलाशी देते हो अथवा नहीं ?"

"मैं समझता हूँ कि यह आपकी अनधिकार चेष्टा है।"

"यदि तुम तलाशी नहीं देते हो तो तुम इसी समय छुट्टी कर दो, मैं तुम्हें नौकरी से निकालता हूँ।"

"बिना नोटिस के ?"

"हाँ, उसके स्थान पर एक मास का वेतन दे दूँगा।"

"अच्छी बात है, मुझे अब तक का हिसाब गिन लेने दीजिए, पाँच-दस मिनट लगेंगे।"

"यह सब कुछ बाद में हो जाएगा।"

चन्द्रभानु कार्यालय से निकला तो अपने काउँटर की ओर जाने लगा, परन्तु बत्रा उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह बत्रा को धकेलकर एक ओर करने लगा तो रामनिरंजन जो यह सब झगड़ा सुन रहा था, आगे आकर चन्द्रभानु को दोनों भुजाओं से पकड़कर खड़ा हो गया। जब उसने चन्द्रभानु को पकड़ा तो बत्रा को एक बात सूझी, उसने उसकी जेबें टटोलनी आरम्भ कर दीं।

चन्द्रभानु की कोट की जेब से एक कागज निकला जिस पर कुछ पंक्तियाँ हिन्दी में लिखी थीं। बत्रा हिन्दी नहीं जानता था। उसने रामनिरंजन को कहा, "यह पढ़ लो, मैं समझता हूँ कि वह औरत इसको पत्र दे गई है।"

: ८ :

रामनिरंजन ने पत्र पढ़ने के लिए चन्द्रभानु को छोड़ दिया तो वह भागकर ग्राहकों को इधर-उधर धकेलता हुआ दुकान से बाहर चला गया।

रामनिरंजन ने पत्र पढ़ा, उसमें लिखा था—

"मैं जनार्दन मिश्र की पत्नी हूँ, आज मैं हवालात में उनसे मिलने गई थी। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपको मिलकर यह कह दूँ कि दुकान के रजिस्टर गुम कर दो। पुलिस किसी समय भी दुकान की तलाशी ले सकती है और हिसाब की किताबों पर अधिकार कर सकती है। मैं प्रातःकाल आपसे मिलने आई थी, आप नहीं थे। एक भूल के कारण दुकान पर काम करनेवाले क्लर्क को मुझपर सन्देह हो गया है। इस कारण अब मैं यह पत्र लिखकर ले आई हूँ जिससे बिना मुख से बात किए आपको उनका सन्देश बता दूँ।"

जब रामनाथ ने वह पत्र सुना तो उसे समझते देर न लगी कि दुकान में भारी गबन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है। पर उसका निश्चय जाँच का विषय था। बत्रा ने रामनिरंजन को कहा, "तुम स्वयं बिलों के दाम लेना आरम्भ कर दो और चन्द्रभानु के हिसाब की मैं पड़ताल करता हूँ।"

इसी समय सुन्दरदास आ गया। रामनाथ उसको अपने कार्यालय में ले गया। वहाँ उसने जनार्दन और चन्द्रभानु की पूर्ण बात बता दी। सुन्दरदास ने इस विषय में अपने सुझाव देते हुए कहा, "रामनाथ ! मेरी सम्मति यह है कि सब रजिस्टरों को गुम कर दो और इस मामले को पुलिस के हाथ में न जाने दो। कह दो कि चन्द्रभानु सभी रजिस्टर लेकर भाग गया है।"

"क्या लाभ होगा इससे ?"

"मामला पुलिस के हाथ में जाने से, दुहरे रजिस्टर, जो इन्कमटैक्स वालों के लिए अलग बनाए गए हैं, वे सब बेकार हो जाएँगे। साथ ही यदि असली रजिस्टर पुलिस में गए तो वही मान्य होंगे और इनमें लिखित आय पर इन्कमटैक्स की राशि देनी पड़ेगी।"

"तो फिर चोर कैसे पकड़ा जाएगा ?"

"तुम्हें चोर पकड़वाना है अथवा अपनी इन्कमटैक्स की चोरी जो तुम प्रतिवर्ष करते हो, उसे छुपाना है ?"

बत्रा सुन्दरदास को प्रथम श्रेणी का बेईमान समझता हुआ भी उसकी सूझबूझ की मन ही मन प्रशंसा करने लगा। वह स्वयं तो चन्द्रभानु और जनार्दन के विरुद्ध कार्यवाही करना चाहता था, परन्तु अपने अनियमित व्यवहार को छुपाने के लिए उनकी चोरी छुपाने को भी उसे उद्यत होना पड़ा।

उसके सौभाग्य से उस दिन पुलिस नहीं आई। अगले दिन प्रातःकाल ही उसकी दुकान घेरे में ले ली गई और पुलिस दुकान खुलते ही तलाशी लेने लगी।

बत्रा, रामनिरंजन, चपरासी इत्यादि के अतिरिक्त सुन्दरदास भी उस समय वहाँ पर आ गया था। पुलिस ने दुकान के हिसाब के रजिस्टर माँगे तो बत्रा ने बताया कि चन्द्रभानु कल से लापता है और वह सभी रजिस्टर आदि उड़ाकर ले गया है।

पुलिस ने बत्रा और निरंजन के बयान लिख लिये। दोनों ने यह बताया कि चन्द्रभानु रजिस्टर अपने पास ही रखता था। हमने उसे जाते समय कुछ भी ले-जाते नहीं देखा, किन्तु फिर भी किताबें यहाँ पर नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वही ले गया है या छिपा गया है।

बत्रा ने स्वयं किताबों की पड़ताल की तो उसको पता चला कि जब से जनार्दन उस दुकान पर काम कर रहा है, प्रतिवर्ष माल में कमी होती रही है। उसमें कमी होने पर भी लाभ तो होता रहा है, यद्यपि यह इतना नहीं था जितना कि होना चाहिए था।

मुकद्दमे में पकड़े हुओं में एक लड़की बच गई थी और उसने चोरी का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया, "हमारे गुट में तीन प्रकार के कार्यकर्त्ता थे। एक वे थे जो दुकानों पर माल क्रय करने जाते थे। ये लोग उन दुकानों पर से ही माल लेने जाते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ माल दिखाने और देनेवाले नौकर हमारे गुट के होते थे। पाँच रुपये का माल माँगने पर बीस रुपये का माल बाँध देते थे, किन्तु बिल पाँच रुपये का ही बनाया जाता था। माल बाँधनेवाले और मूल्य लेनेवाले हमारे गुट में सम्मिलित होते थे। अतः कम मूल्य देकर अधिक माल ले-जाने में कठिनाई नहीं होती थी। कई दुकानों पर तो वार्षिक आय-व्यय का ब्यौरा तैयार करनेवाले भी हमारे ही गुट के थे, और वे हानि का ब्यौरा ऐसे ढंग से बनाते हैं कि मालिक को कम लाभ होने पर आश्चर्य भले ही हो जाए, परन्तु सन्देह नहीं होता था। हमारे पास इस प्रकार हिसाब रखने की विधि को सिखाने के लिए भी योग्य हिसाबदान रखे हुए थे। वे इन्हें हिसाब रखने का ढंग बताते रहते थे। यह सब माल हम कार्ल्टन होटल वाली दुकान पर बेचते थे। लाभ की राशि सब बाँट लेते थे।"

पुलिस ने बहुत सावधानी से मुकद्दमा तैयार किया और इसको चलाया। यद्यपि रामनाथ बन्ना ने अपने हिसाब की किताब पुलिस को नहीं दी, तथापि उसने अपनी साक्षी दी और उसने रामनिरंजन से भी साक्षी दिलवाई।

परिणाम यह हुआ कि सब पकड़े हुए अपराधी सिद्ध हो गए और एक से पाँच वर्ष तक के दण्ड के भागी बने। इन्होंने सेशन कोर्ट में अपील कर दी और वहाँ पर इनके कारावास की अवधि में कुछ कमी हो गई। पुनः उन्होंने हाईकोर्ट में अपील कर दी तो वहाँ पर कार्ल्टन हाउस वाला दुकानदार छूट गया। कुछ लड़कियाँ भी छूट गईं। जनार्दन को उतने काल के कारावास का दण्ड हुआ जितना कि मुकद्दमे में लगा था।

इस अन्तर में सुन्दरदास और रामनाथ में भी तनाव आरम्भ हो गया था। रामनिरंजन द्वारा सुन्दरदास के विषय में बताए वृत्तान्त ने रामनाथ को सतर्क कर दिया और वह सदा सुन्दरदास के कामों की, जिनसे उसका सम्बन्ध रहता था, देखरेख करने लगा। इससे सुन्दरदास चिढ़ने लगा था। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता जा रहा था सुन्दरदास किसी प्रकार का धोखा न कर सकने के कारण लाचार था और रामनाथ सुन्दरदास को साझे धन्धे की आय छुपाते देखकर उससे सशंक और सतर्क होता चला जाता था।

परिणामस्वरूप एक दिन सुन्दरदास ने रामनाथ को कह दिया, "पिछले वर्ष का हानि-लाभ का चिट्ठा देखकर तो यह बात स्पष्ट हो गई है कि नियमित आय अनियमित आय से कम है। अनियमित आय में मुख्य रूप में मेरा भाग है। इस कारण उस लाभ का दो-तिहाई भाग मैं लूँगा और एक-तिहाई तुम्हें दूँगा।"

"क्यों ?"

"बस यही होगा, अन्यथा हम अलग हो जाएँ और अपना-अपना काम करें।"

रामनाथ समझ गया कि सुन्दरदास से एकदम झगड़ा मोल लेना उचित नहीं। इस कारण समझौता करने के विचार से बोला, "यदि तुम अपने और मेरे भाग में अन्तर रखना चाहते हो तो रख लो, परन्तु इतना नहीं जितना तुम कह रहे हो। मेरा सुझाव है कि चालीस प्रतिशत मेरा और साठ प्रतिशत तुम्हारा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतना तब हो सकता है जबकि रुपया-पैसा मेरे हाथ में रखो।"

"तो क्या तुम समझते हो कि मैं कुछ हेराफेरी कर रहा हूँ?"

"मैंने यह नहीं कहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि हेराफेरी हो सकती है। इस कारण बाद में झगड़ा करने के स्थान पर पहले ही सावधान रहूँ तो ठीक रहेगा।"

रामनाथ का मन इस बात से बैठ गया। उसने अभी तक किसी प्रकार से भी अपने पत्तीदार को धोखा नहीं दिया था। यद्यपि सुन्दरदास सन्देह से ऊपर नहीं था, फिर भी जो काम चल रहा था उसमें सुन्दरदास की ही बात मानी जाती थी। इस कारण वह यह भी मान गया।

भीतर ही भीतर उसका मन डर रहा था कि कहीं सारी पूँजी ही समाप्त न हो जाए। वह पूर्ण लेन-देन के हिसाब-किताब की नकल अपने पास रखकर जान लेता था कि कितना लाभ हो रहा है।

अब बैंक में हिसाब सुन्दरदास के नाम से हो गया। चैक वह काटने लगा और अनियमित आय का हिसाब नकद अपने पास रखने लगा।

: ९ :

जब रामसुमन के पास अधिक गौएँ लेकर, दूध का व्यवसाय बढ़ाने के लिए धन आ गया तो उसने एक खुला स्थान किराए पर लेने का प्रबन्ध कर लिया। ऐशबाग में एक खुला अहाता, जो चार एकड़ भूमि पर था, पचास रुपये मासिक किराए पर ले लिया। अहाता नगर की आबादी के ठीक किनारे पर था। इसमें कोई इमारत नहीं थी और रामसुमन को न केवल पशुओं के लिए छावन डालने थे, प्रत्युत अपने रहने के लिए भी कच्ची मिट्टी का मकान बनाना पड़ा।

इस सब प्रबन्ध के करने में चार-पाँच मास लग गए। रामनिरंजन को बत्रा की दुकान की नौकरी करते दो वर्ष के लगभग हो चुके थे। रामसुमन को इस समय तक व्यवसाय का रहस्य विदित हो चुका था। वह अपने घर का खर्च बढ़ाए बिना व्यापार में धन डालता चला जाता था।

जब रामसुमन अपने परिवार को लेकर ऐशबाग वाले मकान में गया तो उसके पास पाँच गौएँ थीं। परन्तु इस समय उसके पास एक सहस्र रुपया नकद जमा था। अतः वहाँ जाते ही उसने दस दुधारू गौएँ खरीद लीं। साथ ही वह व्यवसाय में उन्नति के लिए रामनिरंजन को नौकरी छोड़कर व्यवसाय में सहयोग देने के लिए कहने लगा।

रामनिरंजन अपने पिता की योजना को समझ गया। यद्यपि इसमें से एकदम एक सौ रुपये मासिक की आय की सम्भावना नहीं थी, तथापि वह समझता था कि शीघ्र ही इससे भी अधिक आय होने की सम्भावना है। इस कारण उसने दुकान के मालिक को कह दिया, "मैं चाहता हूँ कि आप मुझे शीघ्रातिशीघ्र काम से मुक्त कर दें।"

"क्यों?" विस्मय में बत्रा ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अपने पिताजी के काम में सहयोग देना चाहता हूँ।"

"क्या काम है उनका ?"

"हम गौएँ पालते हैं और उनका दूध बेचते हैं। पिताजी का विचार है कि वे अकेले काम नहीं सम्भाल पा रहे हैं। इसलिए किसी को नौकर रखने की अपेक्षा मैं उनकी सहायता करने लग जाऊँ तो हमारे व्यवसाय में शीघ्र ही उन्नति हो जाएगी।"

रामनाथ निरंजन की बात सुनकर हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "तुम्हारा पिता कितना पढ़ा-लिखा है ?"

"वे किसी स्कूल में तो पढ़े ही नहीं।"

"तभी तो एक सौ रुपये मासिक वेतन लेनेवाले बेटे को एक कुली के काम पर, जिसको करने के लिए तीस-चालीस रुपये का आदमी मिल सकता है, लगाना चाहते हैं।"

"उनका कहना है कि आदमी तो चालीस रुपये मासिक पर मिल जाएगा, परन्तु वह बेईमानी भी कर सकता है। उसकी हमारे काम को उन्नति देने में अरुचि भी हो सकती है।"

"परन्तु निरंजन ! मासिक आय में से एकदम एक सौ रुपये की कमी तो हो ही जाएगी।"

"पिताजी का विश्वास है कि कुछ ही वर्षों में हम एक सौ क्या, कई सौ रुपये मासिक आय में वृद्धि करने लगेंगे।"

"उनके विश्वास की तो बात छोड़ो। तुम पढ़े-लिखे आदमी हो, तुम स्वयं विचार करो कि क्या उनकी गिनती-मिनती ठीक है ?"

"जी, मैं भी यही समझता हूँ। इस समय हमारे पास पन्द्रह गौएँ हैं। उनका एक समय का दूध लगभग डेढ़ मन होता है। वह दूध अभी हम नगर के हलवाइयों को ही देते हैं। हमारी योजना यह है कि उसे लोगों के घर पर ही पहुँचाया जाए। इस प्रकार तीन-साढ़े तीन रुपये अधिक लाभ होने लगेगा। दो समय का लाभ सात रुपये प्रतिदिन का हो जाएगा, अर्थात् एक मास में दो सौ रुपये का अधिक लाभ हो जाएगा। परन्तु यह काम हम नौकर के हाथ में नहीं दे सकते। वह मार्ग में दूध को क्या करे, क्या न करे—इसका कोई भी विश्वास नहीं। वह उसमें पानी भी मिला सकता है।....

"अभी तक तो पिताजी ही उसे बाँटने जाते हैं। वे हलवाइयों को ही दूध देकर लौट आते हैं। जानवरों की देखभाल माँ प्रातः तथा सायं मैं करता हूँ। पर हम भी सब काम कर नहीं सकते। न ही दूधवालों के पास सीधा बेचने का प्रबन्ध हो सकता है। अतः मैं दूध ग्राहकों के पास ले-जाकर बेचने का काम करूँगा।"

बत्रा अभी भी मुस्करा रहा था। उसने व्यंग्यात्मक भाव में कहा, "निरंजन ! यह तुम्हारी काल्पनिक योजना कभी सफल नहीं होगी। मेरा कहा मानो, अपने स्थान पर एक आदमी नौकर रख लो। इधर मैं तुम्हारे वेतन में वृद्धि कर दूँगा। मैं अगले मास की पहली तारीख को तुम्हारा वेतन एक सौ से डेढ़ सौ कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्षमा करें, मुझे अपनी योजना पर इतना विश्वास है कि मैं इस वेतन-वृद्धि के प्रलोभन को स्वीकार नहीं कर सकता। मुझे शीघ्रातिशीघ्र कार्य से मुक्त कर दीजिए।"

रामनिरंजन को हठ करते देख बत्रा ने नीति से काम लेने का विचार किया। उसने कहा, "अच्छी बात है, मैं तुम्हारे स्थान पर कार्य करने के लिए अन्य कर्मचारी ढूँढ लूँ तो उसके मिलते ही तुम्हें छुट्टी दे दूँगा। फिर भी मैं चाहता हूँ कि कम से कम जनार्दन के मुकद्दमे के निर्णय तक तो तुम रहो ही।"

यद्यपि रामनिरंजन ने कोई वचन नहीं दिया था, फिर भी वह यत्न कर रहा था कि जैसे-तैसे भी वह मुकद्दमे के निर्णय तक बत्रा की नौकरी न छोड़े। परन्तु मुकद्दमा समाप्त होते-होते एक नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई।

सुन्दरदास को पिछले वर्ष सोने के सट्टे में कुछ लाभ हुआ था। उससे उत्साहित होकर वह इस वर्ष उसमें अधिकाधिक भाग लेने लगा। उसे अब इस व्यापार में ज्यों-ज्यों अधिक हानि होने लगी, त्यों-त्यों वह उस हानि की पूर्ति के लिए उसमें अधिकाधिक ही भाग लेने लगा।

बत्रा ठेकेदारी के काम में अधिक रुचि लेने लगा था। उसने रामनिरंजन को दुकान का मैनेजर नियुक्त कर दिया और उसका वेतन दो सौ रुपया कर दिया। फिर भी रामनिरंजन ने नौकरी छोड़ने का विचार न छोड़ा। वह देख रहा था और साथ ही उसमें आशा के अनुसार उन्नति भी नहीं हो रही थी।

जनार्दन छूट गया तो बत्रा के पास पुनः नौकरी पाने के लिए चक्कर काटने लगा और अपने अनुभव से भी बत्रा को चोरी-चकोरी से बचाने की आशा देने लगा था। फिर भी बत्रा उसको पुनः नौकरी पर रखने के लिए तैयार नहीं होता था।

इस प्रकार एक वर्ष निकल गया। रामाश्रय ने मैट्रिक पास कर लिया। निरंजन का कहना था कि रामाश्रय को डेरी-फार्म का कार्य सीखने के लिए सरकारी स्कूल में भर्ती करा दिया जाए। यद्यपि रामसुमन इसकी आवश्यकता नहीं समझता था, तो भी रामनिरंजन के आग्रह पर रामाश्रय को स्कूल में भर्ती करा दिया गया। इससे रामसुमन को एक और आदमी की आवश्यकता पड़ गई। उसको रखने से रामसुमन के परिश्रम में तो कमी हो गई, परन्तु नौकरों के प्रमाद के कारण काम में त्रुटि रहने लगी। गौवों को दाना-भूसा कम और समय-कुसमय मिलने लगा। परिणामस्वरूप गौएँ दुर्बल होने लगीं। कोई-कोई बीमार भी रहने लगी और दूध कम होने लगा।

इस परिस्थिति से रामसुमन घबरा गया। उसका विचार था कि वह अकेला नौकरों से न तो ठीक प्रकार से काम ले सकता है और न ही वह स्वयं सब काम कर सकता है। अतः उसका यह निश्चित मत था कि रामनिरंजन को नौकरी छोड़कर घर के काम में लग जाना चाहिए।

रामनिरंजन ने इस बार लिखित त्यागपत्र में एक मास का नोटिस दे दिया। विवश होकर उसके जाने की तिथि से पहले रामनाथ को कोई नौकर रखना पड़ गया। कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य अनुभवी व्यक्ति न मिलने के कारण उसने पुनः जनार्दन को ही अपनी दुकान पर रख लिया।

रामनिरंजन के आने पर पूर्ण काम को दो भागों में बाँट दिया गया। एक बाहर का काम और दूसरा गौशाला का भीतरी काम। गौशाला का काम रामसुमन ने अपने ऊपर ले लिया और बाहर का काम रामनिरंजन को दे दिया।

अब रामनिरंजन प्रातः दूध ग्राहकों के घर बाँटने चला जाता था! हलवाइयों को वह सात आने प्रति सेर देता, परन्तु पीनेवालों के पास यह नौ आने बिक जाता था। इसके लिए रामनिरंजन को दूध घोड़ा-ठेले पर रखकर कोठी-कोठी जाना पड़ता था। इस प्रकार प्रातः ६ बजे से लेकर आठ बजे तक वह अधिकांश दूध बेच देता था। कभी कुछ बच जाता तो वह सात आने सेर के भाव से हलवाइयों को दे देता था। वहाँ से लौटते समय वह भूसा-दाना तथा अन्य आवश्यक सामान बाजार से मोल लेकर ठेले पर लाद कर ले आता था। सायंकाल भी यही कार्यक्रम था।

रामसुमन स्वयं और नौकरों से पशुओं की देख-भाल और दूध दुहने का काम करता-करवाता था। गौशाला की सफाई तो नौकर करता था, परन्तु गोबर थापने का काम भगवती करती थी। इस प्रकार पूर्ण परिवार इस व्यवसाय में जुट गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

यह लोकोक्ति है कि नीम के पेड़ और लड़की के बढ़ने में देर नहीं लगती। रेखा ने मैट्रिक पास किया तो माता-पिता की दृष्टि में विवाह के योग्य दिखाई देने लगी। उसके विवाह के लिए माँगें तो पहले ही आ रही थीं, परन्तु उन पर बहुत ध्यान नहीं दिया गया। किन्तु अब तो उसके माता-पिता को भी चिन्ता लगने लगी।

सतीश 'इन्टर' में अनुत्तीर्ण हुआ तो आगे पढ़ने का विचार छोड़ बैठा। उसको निकम्मा देखकर सेठ कमलापति ने उसे सुन्दरदास के पास काम सीखने के लिए भेज दिया। सतीश इससे प्रसन्न नहीं था। जब से उसके मामा ने रामनिरंजन के विपरीत चोरी का आरोप लगाकर उसे निकाला था, वह उसके विषय में बहुत ही हीन विचार रखने लगा था। उसको मामा के प्रमाणों पर विश्वास नहीं हुआ था। उसकी आत्मा कहती थी कि अवश्य कुछ दाल में काला है। वह रामनिरंजन के नौकरी छोड़ने की बात भूला नहीं था और समझता था कि अवश्य उसके त्यागपत्र और निकाले जाने में परस्पर कोई सम्बन्ध है।

फिर भी जब उसके पिता ने कहा कि उसको सुन्दरदास के साथ रहकर काम समझना चाहिए तो वह इन्कार नहीं कर सका। वह नियमपूर्वक नौ बजे कार्यालय में उपस्थित होने लगा। परन्तु सुन्दरदास तो पूर्ण समय कार्यालय में उपस्थित नहीं रहता था। उसको अपने काम पर भी भाग-दौड़ करनी पड़ती थी। फिर भी उसने प्रबन्ध ऐसा कर रखा था कि मिल का काम सुचारु रूप से चलता रहता था।

सतीश का विचार था कि वह सुन्दरदास के काम को सम्भालेगा। अतः वह कार्यालय में सुन्दरदास के कमरे में उसकी कुर्सी के समीप कुर्सी लगवाकर बैठने लगा। यद्यपि वह सुन्दरदास की अनुपस्थिति में कोई आदेश नहीं देता था, तो भी सब पत्र-व्यवहार उसके सामने होने लगा। इससे सतीश की कार्य में रुचि होने लगी। परन्तु सुन्दरदास को यह बात नहीं भाई। उसने कुछ दिन तक तो सतीश को वहाँ बैठने दिया, परन्तु एक दिन उसे सुन्दरदास के हस्ताक्षरों-सहित एक आज्ञा-पत्र मिल गया। इसमें लिखा था, 'सतीश कुमार को पत्रों के डिस्पैच करने के काम पर नियुक्त किया जाता है। उसे बाहर कामताप्रसाद डिस्पैचर के स्थान पर बैठकर काम करना चाहिए।'

सतीश उस दिन समय पर नौ बजे कार्यालय में पहुँचा तो चपरासी ने उसको वह आज्ञा-पत्र दे दिया। सुन्दरदास अभी नहीं आया था। सतीश ने वह आज्ञा पढ़ी और उसका मुख लज्जा से लाल हो गया। डिस्पैच का काम तो कोई भी कर सकता था, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चाहता था कि मालिक का लड़का होने के नाते उसको चपरासी के हाथ आज्ञा न भेजकर स्वयं मौखिक रूप से कहना चाहिए था। वह समझता था कि यदि वह अब उठकर कामताप्रसाद के स्थान पर बैठता है तो कार्यालय के सब कर्मचारी समझेंगे कि उसको आज्ञा देकर मैनेजर के कमरे से निकाल दिया गया है।

फिर भी कार्यालय में नियंत्रण का विचार कर वह वहाँ से उठा और कामताप्रसाद के स्थान पर जा बैठा। कामताप्रसाद की उन्नति कर दी गई थी और उसको चैक काटने के स्थान पर लगा दिया गया था। जब वह कामताप्रसाद के स्थान पर जाकर बैठा तो कामताप्रसाद उसको काम समझाने के लिए उसके पास आया और कहने लगा, "सेठजी ! जो भी डाक बाहर जाती है उसे पहले रजिस्टर में दर्ज करना चाहिए। रजिस्टर में चिट्ठी का नम्बर, विषय, पानेवाले का नाम और पता, डाक द्वारा अथवा चपरासी के हाथ, डाक-व्यय अथवा चपरासी का नाम लिखना होता है।"

काम अति सरल था, परन्तु नीरस था। सुन्दरदास की डाक देख-देखकर तो वह मिल के काम को कुछ समझने भी लग गया था, पर यहाँ पर तो भार-वाहक का-सा काम था। वह एक कुली की भाँति बोझा ढोता था, यह जाने बिना कि बोझे में क्या है। वह चिट्ठियाँ भेजता था, बिना जाने कि उनमें क्या लिख रखा है।

सतीश यह काम कर तो रहा था, परन्तु वह इससे सर्वथा असन्तुष्ट-सा रहने लगा। एक दिन उसने अपने पिता से कहा भी, "पिता जी ! मुझे डिस्पैचर के काम पर लगाया हुआ है। इससे क्या लाभ होता है ?"

"बेटा ! यह सब काम सीखना चाहिए। धीरे-धीरे सब कामों का अनुभव करा दिया जाएगा।"

"परन्तु पिता जी ! काम इतना सरल है कि मेरे जैसे पढ़े-लिखे युवक के लिए यह अपमानजनक है।"

"कोई भी कार्य अपमानजनक नहीं होता।"

"मैं समझता हूँ कि मैं वहाँ पर अपना जीवन व्यर्थ गँवा रहा हूँ।"

"धीरज रखो सतीश ! मैं तुम्हें मिल का मैनेजर बनाने की तैयारी कर रहा हूँ। उतावली में कच्चे रह जाओगे।"

सतीश का धीरज टूट रहा था। एक तो उसको सुन्दरदास पर विश्वास नहीं हो रहा था, दूसरे वह इस प्रकार के काम पर अपना समय व्यर्थ गँवाना नहीं चाहता था। साथ ही काम इतना कम था कि वह सायं तीन बजे से चार बजे तक दिन-भर की डाक निकाल देता था। उसकी युवा-मनोवृत्ति काम और समझदारी के काम के लिए तड़पने लगी।

वह मिल में घूम-घूमकर कर्मचारियों से परिचय प्राप्त करने लगा। उसका यह नित्य का काम हो गया कि वह नौ बजे कार्यालय में पहुँचता और अपनी उपस्थिति लगाकर मिल को देखने चल देता। दो घन्टे तक भिन्न-भिन्न प्रकार का काम देखकर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यालय में आता तो उसकी मेज पर जानेवाली चिट्ठियाँ पड़ी होतीं। वह पन्द्रह-बीस मिनट में उनको रजिस्टर कर चपरासी अथवा डाक द्वारा भेज देता। साढ़े ग्यारह बजे वह इस कार्य से अवकाश पाकर पुनः कार्यालय से निकल जाता और मिल के कर्मचारियों का काम देखने लगता। उन कर्मचारियों से मिलकर उनकी आवश्यकताओं को सुनता। कर्मचारी भी उसको मालिक का लड़का मान अपने मन की बातें बताने लगे थे।

उसको ऐसा करते हुए एक सप्ताह ही हुआ था कि कर्मचारियों ने उससे बातचीत करनी बन्द कर दी। वह जब उनसे किसी विषय पर कोई बात पूछता तो कर्मचारी मुस्करा देते और चुपचाप अपने काम पर लग जाते।

सतीश समझ गया कि एकाएक उससे बातचीत बन्द करने में कुछ तो कारण है ही। क्या इनको उससे बात करने से मना नहीं कर दिया गया?

एक दिन उससे नहीं रहा गया। वह गोदाम में बोरों की थइयाँ लगती देख रहा था। बीस-बीस बोरों की थइयाँ थीं, परन्तु कहीं-कहीं बीस के स्थान पर इक्कीस और बाईस-बाईस की भी थीं। गोदाम में श्यामचरण काम कर रहा था। सतीश ने उससे पूछ लिया, "ये कहीं-कहीं इक्कीस और बाईस-बाईस की थइयाँ क्यों लगी हैं?"

इस प्रश्न पर श्यामचरण ने सतीश के मुख पर विस्मय में देखा, पश्चात् हँस दिया। इससे तो सतीश चिढ़ गया। परन्तु गम्भीरतापूर्वक उसने पूछा, "तुम हँसे क्यों हो?"

श्यामचरण के मुख से निकल गया, "मैनेजर साहब से पूछ लीजिए।"

सतीश समझ गया कि सुन्दरदास ने सबको आज्ञा दे रखी है कि उसको कुछ भी जानकारी न दी जाए। इस विचार के आने पर तो वह और भी आग्रह करने लगा, "भाई! इसमें क्या रहस्य है? इस सरल-सी बात को छिपाकर रखने में क्या कुछ रहस्य है?"

"बात तो सरल है, परन्तु बताने में समय जो व्यर्थ जाता है।" श्यामचरण ने कहा।

"और तुम यहाँ कर क्या रहे हो? अभी ठेला आया नहीं। शायद तीन-चार मिनट तक और नहीं आएगा।"

श्यामचरण हँस पड़ा और सतीश को वहीं छोड़कर एक ओर चला गया। जिस रजिस्टर में माल लिखा जाता था वह श्यामचरण की बगल में था। एकाएक सतीश को स्मरण हो आया कि रामनिरंजन गोदाम में ही काम करता था।

इस छोटी-सी घटना से सतीश को रामनिरंजन की याद हो आई। रामनिरंजन को भूल जाने के लिए आज उसको लज्जा लगने लगी। वह अपनी इस भूल पर अपने पर ग्लानि अनुभव करने लगा और उसी समय उससे मिलने जाने का विचार करने लगा।

एक दिन सुन्दरदास ने ही सेठजी को बताया था कि रामनिरंजन हजरतगंज की दुकान 'ब्यूटी पार्लर' में नौकरी करता है। अतः सतीश हजरतगंज को चल पड़ा।

'ब्यूटी पार्लर' हजरतगंज में एक विख्यात दुकान थी। इस कारण उसको ढूँढने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशानी नहीं हुई। सतीश दुकान के भीतर घुसा तो जनार्दन मिश्र काउँटर पर खड़ा था। सतीश ने उसके पास पहुँचकर पूछा, "रामनिरंजन कहाँ है ?"

"यहाँ कोई रामनिरंजन नहीं है।"

सतीश विस्मय में जनार्दन का मुख देखने लगा। वह दुकान के बाहर जाकर दुकान का बोर्ड पढ़ने लगा। नाम पढ़कर वह पुनः भीतर पूछने आया। वह पूछने ही वाला था कि सुन्दरदास भीतर के कमरे से निकल आया। उसके पीछे-पीछे रामनाथ बत्रा था। सतीश सुन्दरदास को देखकर झेंप गया। वह पिछले पाँव वहाँ से चला जाना चाहता था, परन्तु सुन्दरदास ने उसको देख लिया था। उसने सतीश को आवाज दी, "सतीश ! किस काम से आए थे ?"

"रामनिरंजन से कुछ काम था।" सतीश ने सुन्दरदास के पास आकर कहा। बत्रा भी वहीं खड़ा था। उत्तर उसने दिया, "वह नौकरी छोड़ गया है।"

"क्यों ?" सतीश को सन्देह हो गया कि कदाचित् सुन्दरदास ने यहाँ भी उसके चोर होने की बात बता दी हो। "क्या कुछ अपराध किया था उसने ?" उसने पूछ लिया।

"नहीं, वह स्वयं नौकरी छोड़ गया है। उसके पिता ने अपना काम बढ़ा लिया है और वह उसके साथ काम करने चला गया है।"

"क्या काम कर रहा है उसका पिता ?"

सुन्दरदास अभी भी सतीश को रामनिरंजन के विषय में रुचि रखते देखकर खीझ रहा था। इस कारण उसने बात बदल दी और सतीश से पूछ लिया, "सतीश ! तुम्हारा इस तरह काम छोड़कर आवारागर्दी करना मुझे पसन्द नहीं है।"

सतीश को इस पर क्रोध चढ़ आया, परन्तु क्रोधवश वह समझ नहीं सका कि इसका क्या उत्तर दे। उसने बत्रा की ओर घूमकर पूछा, "क्या आप बताएँगे कि रामनिरंजन कहाँ रहता है ?"

"मैं ठीक-ठीक पता तो नहीं जानता। हाँ, ऐश बाग में उसके पिता ने जमीन ली हुई है। वहीं उसने गौवें रखी हुई हैं। कदाचित् स्वयं भी वहाँ ही रहता होगा।"

सुन्दरदास ने कह दिया, "सतीश ! यहाँ से सीधे मिल में पहुँच जाओ। मैं भी आ रहा हूँ।"

"मामाजी ! मुझे भी मोटर में ले चलो न ! मैं पैदल आया हूँ।"

"तो बहुत देर के वहाँ से चले हुए हो ?"

"हाँ, वहाँ से साढ़े बारह बजे चला था। अब अढ़ाई बज रहे हैं।"

"बाहर गाड़ी में जाकर बैठो। मैं इनसे बात करके आता हूँ।"

सतीश दुकान के बाहर गया तो बत्रा ने सुन्दरदास से पूछ लिया, "यह सेठ जी का लड़का है ?"

"हाँ, यह और इसकी छोटी बहन, दोनों नीमपागल हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या पागलपन है इसमें ? बात ठीक तरह से कर रहा था।"

"इसके पिता ने इसका मस्तिष्क ठीक करने के लिए इसे मेरे पास काम पर भेजा हुआ है और यह है कि काम छोड़कर समय इधर-उधर व्यर्थ गँवा रहा है।"

"तुमने जब उसे आवारागर्द कहा था, तो उसका मुख क्रोध से लाल हो गया था, परन्तु न जाने क्यों रुक गया।"

"यह सारा का सारा ही परिवार ऊल-जलूल है। कोई भी मतलब की बात तो करता नहीं, बे-सिर-पैर की बातें करते रहते हैं।"

"अच्छा जाने दो इस बात को, बताओ मेरे भाग का रुपया कब दोगे ?"

"जब मेरे पास होगा।"

"पर तुमने मेरा रुपया मुझसे पूछे बिना क्यों खर्च कर दिया है ?"

"मैं बैंक वालों से उधार लेने की बातचीत कर रहा हूँ। मैंने उनसे पाँच लाख उधार माँगा है। उसके मिलते ही तुम्हारा सभी पावना चुकता कर दूँगा।"

"परन्तु तुम्हें कोई पाँच लाख देगा भी ?"

"मेरे पास गिरवी रखने के लिए सब-कुछ है।"

"पर मुझे अपना रुपया तुरन्त चाहिए।"

"इस समय तो है नहीं।"

"परन्तु सरकार से सभी बिलों का भुगतान ले चुके हो तो मेरा भाग मुझे मिलना चाहिए।"

"देखो मिस्टर बत्रा ! यह एक मित्र का वचन समझो। एक मास के भीतर रुपया दे दूँगा।"

वास्तव में सुन्दरदास को बहुत हानि उठानी पड़ी थी और उसका न केवल ठेका-कम्पनी का सारा का सारा रुपया सट्टेबाजी में लगा हुआ था, प्रत्युत आटा-मिल का रुपया भी बैंक से निकालकर हार चुका था।

बत्रा चाहता था कि सुन्दरदास उसको प्रोनोट लिखकर दे क्योंकि उसमें बहुत-सा धन, जिसमें आधा बत्रा का था, ठेकेदारी में बेईमानी से प्राप्त हुआ था और उसे नालिश कर वह नहीं ले सकता था। इस कारण वह चाहता था कि सुन्दरदास अपने नाम से उसको प्रोनोट लिखकर दे दे। परन्तु सुन्दरदास ने इन्कार कर दिया।

इस पर रामनाथ बत्रा को क्रोध चढ़ आया। उसने कह दिया, "मैं तुम्हें सचेत कर रहा हूँ कि मेरा रुपया अथवा उसका प्रोनोट चौबीस घण्टे के भीतर मुझे मिल जाना चाहिए, अन्यथा मुझे कोई दूसरा उपाय करना पड़ेगा !"

सुन्दरदास ने कोई उत्तर नहीं दिया और दुकान से बाहर निकल गया। बाहर सतीश मोटर में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। सुन्दरदास ने बैठते ही पूछ लिया, "रामनिरंजन की क्या आवश्यकता पड़ गई है तुम्हें ?"

"वह मेरा मित्र है। मेरा सहपाठी रहा है। उससे मिलने को मन कर आया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस समय ! कार्यालय का काम छोड़कर ?"

"क्या काम है कार्यालय में मेरे लिए ? दस-बीस चिट्ठियों को रजिस्टर में लिखने के लिए दिन-भर कार्यालय में बैठे मक्खियाँ मारना मुझे पसन्द नहीं।"

"तो तुम्हें और काम दिया जा सकता है।"

"हाँ, दीजिए। तब तो बैठे रहने का कुछ अर्थ भी होगा।"

सुन्दरदास मिल न जाकर सेठ कमलापति की कोठी पर जा पहुँचा। सतीश समझा शायद वह उसकी शिकायत करने पिताजी के पास आया है। उसने मन में निश्चय कर लिया कि यदि इस विषय में बात हुई तो वह सुन्दरदास को पिता जी के सामने खूब सुनाएगा।

जब सुन्दरदास कोठी में जाने लगा तो सतीश भी कोठी के अंदर चला गया। कुछ और स्त्रियाँ बैठी हुई थीं। सतीश समझ गया कि ये रेखा को देखने आई हैं। रेखा अपने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द करके बैठी हुई थी। सतीश को आया देख माँ ने कहा, "सतीश ! जाओ, रेखा को बुला लाओ।"

सतीश कुछ देर तक विचारता रहा कि उसको बुलाकर लाए अथवा न। फिर वह रेखा के कमरे के बाहर जाकर उसका दरवाजा खटखटाने लगा। रेखा ने भीतर से उत्तर दे दिया, "मैं बाहर नहीं आऊँगी।"

"रेखा ! बाहर आने में कुछ भी हानि नहीं। अभी तो वे देखने आई हैं। विवाह की बात तुमसे पूछे बिना नहीं हो सकती। उस समय तुम इन्कार कर देना।"

"सतीश भैया ! मैंने उन औरतों को खिड़की में से देखा है। उनकी सूरत से मुझे घृणा है। मैं उनको पसन्द नहीं कर सकती।"

"उन औरतों से हमारा क्या सम्बन्ध हो सकता है ? जिससे सम्बन्ध होना है, प्रेम अथवा घृणा तो उनसे करनी चाहिए। देखो रेखा ! ऐसा ठीक नहीं है। तुम बाहर आ जाओ।"

रेखा सतीश का बहुत आदर करती थी। वह जानती थी कि घर-भर में केवल सतीश ही उसके मन के भावों को समझता है। इससे वह कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर निकल आई। सतीश उसको माँ के पास ले गया। रेखा की माँ ने उसे समीप बैठा लिया और उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरकर कहा, "रेखा ! इन्हें नमस्कार करो।"

रेखा ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और आँखें नीची किए बैठी रही। वे कानपुर से आई थीं। कुछ देर बाद वे उठ खड़ी हुईं। उनमें से एक, जो जरा मोटी-सी और भद्दी-सी सूरत की थी, कहने लगी, "अच्छा बहिन जी ! अब तो हमारी गाड़ी का समय हो रहा है। हमारी तो भगवान से यही प्रार्थना है कि आपके घर का खाएँ। आगे आपकी इच्छा पर निर्भर है।"

रेखा की माँ ने कहा, "इस लड़की के मामा और पिता जी सेठ जी से मिलकर बात करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ-हाँ, वह तो होगा ही। दिल्ली से कलकत्ता तक ऐसा प्रतिष्ठित घराना आपको कहीं नहीं मिलेगा।"

इतना कहकर वे औरतें नमस्कार कर कोठी से बाहर निकल गईं। रेखा की माँ ने रेखा का माथा चूमते हुए कहा, "बस, भगवान की तुम पर दया प्रतीत होती है। मेरा अनुमान है कि तुम इन्हें पसन्द आ गई हो। अब एक दिन तुम्हारे पिता जी और मामा जाएँगे और यदि उनको लड़का पसन्द आ गया तो तुम्हारी सगाई पक्की कर आएँगे।"

रेखा ने कहा, "ऊँह, मैं विवाह नहीं करूँगी।"

"चुप-चुप, रेखा बेटी! भद्र घरानों की लड़कियाँ अपने विवाह के विषय में बोलतीं नहीं।"

"पर माँ! क्या वे मेरी तरह पागल भी होती हैं?"

"क्या मतलब?" सुन्दरदास ने, जो अब वहाँ आ पहुँचा था, पूछ लिया। रेखा के कहने का अर्थ रेखा की माँ ने बता दिया।

"इसीलिए तो हम इसको पागल कहते हैं।" सुन्दरदास ने कह दिया।

"ठीक है मामा जी! मुझ पागल का इनके घर विवाह नहीं होगा।"

"ये बहुत धनी आदमी हैं रेखा! ऐसा परिवार कहीं अन्यत्र नहीं मिलेगा।"

"मुझे धन नहीं चाहिए।"

"तुम तो पागल हो!"

रेखा बिना उत्तर दिए अपने कमरे में चली गई। सतीश भी पास ही खड़ा था। उसको सब-कुछ फीका-फीका लग रहा था। मामा का व्यवहार देख के तो वह उससे घृणा करने लग गया था। उसका यह कहना कि रेखा पागल है, उसको बहुत बुरा लग रहा था।

रेखा गई तो सुन्दरदास ने कहा, "मैं सेठ जी से कह रहा था कि हमको शीघ्र ही चलकर उन्हें तसल्ली दे देनी चाहिए।"

"मामा जी! बिना रेखा की इच्छा के यहाँ विवाह नहीं होगा।" सतीश बोल पड़ा।

"उसकी इच्छा का कैसे पता चलेगा?"

"उससे पूछने पर।"

"देखो सतीश! लड़के-लड़कियाँ जब विवाह के लिए 'न' करें, तो समझ लो वे 'हाँ' कर रहे हैं। यह हम सब का अनुभव है।"

"और यदि वे 'हाँ' करें तो?"

सुन्दरदास इस बात का उत्तर नहीं दे सका। उसे चुप देखकर सतीश हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "मामा जी! यह पगली रेखा का प्रश्न है। उत्तर दीजिए न!"

इस समय सेठ जी भीतर आ गए। उन्होंने कहा, "सुन्दरदास! मैं कल कलकत्ता जा रहा हूँ। परसों वहीं सीमेण्ट ट्रस्ट के डायरेक्टरों की मीटिंग है। मैं उसमें सम्मिलित होना आवश्यक समझता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहाँ से कब तक लौटिएगा?"

"यदि मीटिंग स्थगित न हुई तो चौथे दिन चलकर पाँचवें दिन यहाँ पहुँच जाऊँगा।"

"तब तो मुझे कानपुर वालों के लिए लिख देना चाहिए कि अगले बृहस्पतिवार को हम कानपुर पहुँचेंगे। वे लड़के को वहाँ बुला लें।"

सतीश ने कहा, "पिताजी! रेखा बाहर नहीं आती थी। वह एक शर्त पर ही आई थी कि उसका विवाह बिना उसकी इच्छा के नहीं किया जावेगा।"

सेठ जी ने डाँटकर कहा, "तुम चुप रहो सतीश!"

"मैंने उसकी बात बता दी है। पीछे न कहियेगा कि मैंने बताया नहीं था।"

"वह कब बताएगी अपनी इच्छा?"

"लड़के को देखकर।"

"यह नहीं हो सकेगा।"

"तब विवाह भी नहीं हो सकेगा।"

"तुम मत बोलो। मैं उससे निबट लूँगा।"

: ३ :

सुन्दरदास मिल को जाने लगा तो सतीश से बोला, "चलो मेरे साथ।"

"चलिए! मैं अपनी इच्छा से तो घर आया नहीं था।"

"आया तो अच्छा ही हुआ, अन्यथा रेखा बाहर न आती। वे औरतें निराश लौट जातीं।"

"कदाचित् वही अच्छा होता। मुझे खेद यह है कि मैंने व्यर्थ में ही उसे बाहर बुलाया।"

"पर सतीश! एक बात तुम बताओ। यदि रेखा यहाँ विवाह नहीं करना चाहती तो क्या कहीं और करना चाहती है?"

"यह मैंने नहीं पूछा। यह माता जी को पूछना चाहिए था। वे उससे कुछ पूछती तो हैं नहीं। अपने मन की करती जाती हैं। इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।"

"बात यह है कि वह अभी बच्ची है। अपना भला-बुरा जान नहीं सकती।"

"मैं समझता हूँ कि वह आप सबसे अधिक बुद्धि रखती है। जब आप सबको अयुक्तिसंगत करते देखती है तो वह हँस देती है। मैंने कई बार उससे उसके हँसने का कारण पूछा है और वह कारण ठीक ही प्रतीत होता है।"

"तुम्हें न?"

"जी नहीं! जो भी सुनता है उसी को। जब आपने रामनिरंजन को नौकरी से निकाला था तो वह उसके घर की तलाशी पर रोई थी, परन्तु उसके पिता को कोठी की नौकरी छोड़कर जाते देखकर खूब हँसी थी। मैंने उससे इस परस्पर विपरीत भावों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ पूछा था तो उसने जो अर्थ बताया था वह सर्वथा ठीक था। मामा! सुनना चाहते हो उसने क्या कहा था?"

"हाँ, बता दो। मुझे तो इसमें बचपन के अतिरिक्त कुछ समझ नहीं आता।"

"उसने बताया था कि उसको पिताजी की सरलता पर रोना आया था। उन जैसा सरल व्यक्ति धूर्त मामा से बुरी तरह ठगा जा रहा था। उसने अगले दिन हँसने का कारण भी बतलाया था। बताऊँ?"

सुन्दरदास का मुख क्रोध से लाल हो गया था। सतीश ने यह देखा तो हँस पड़ा। इस पर उसने क्रोध में सतीश से पूछ लिया, "अब तुम क्यों हँसे हो?"

"इसलिए कि सचाई सुनने का साहस झूठों में नहीं होता।"

"तो तुम मुझे झूठा समझते हो?"

"आपका मुख ही रेखा की सचाई का प्रमाण उपस्थित कर रहा है।"

"तुम बहुत ही उच्छृंखल होते जा रहे हो।"

"आपने ही तो कहा था कि मैं आपको रेखा की बुद्धिमत्ता का प्रमाण दूँ।"

"क्या प्रमाण दिया है तुमने? क्या मुझको धूर्त कह देने से मैं धूर्त हो गया हूँ?"

"हाँ, क्योंकि आप पिता जी के साथ सरलता का व्यवहार नहीं कर रहे हैं।"

"कैसे कहते हो यह?"

"आप मिल के कर्मचारियों को मना कर रहे हैं कि मुझसे, जो मिल के स्वामी का पुत्र हूँ, बात भी न करें। इसका मैं स्वयं पता कर चुका हूँ।"

"किसने कहा है तुम्हें?"

"एक ने नहीं, कितनों ने ही कहा है और मैं यह बात स्वयं भी अनुभव कर रहा हूँ।"

"तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह नहीं हो सकेगा।"

"ठीक है। मुझे अभी मोटर से उतार दीजिए। मुझे मिल में ले जाने की आवश्यकता नहीं।"

"तो उतर जाओ।" सुन्दरदास ने मोटर खड़ी कर दी और सतीश नीचे उतरकर खड़ा हो गया।

सतीश इस बात को भली-भाँति समझ गया था कि सुन्दरदास का उसको काम सिखाना तो दूर रहा, वह उसको बदनाम करने का प्रयत्न कर रहा है। आज उसको विश्वास-सा हो रहा था कि मिल में कुछ न कुछ गड़बड़ हो रही है, जिसको छिपाने के लिए पहले उसको चिट्ठियों की डिस्पैच करने पर नियुक्त कर दिया और पश्चात् मिल में आज्ञा कर दी कि कोई उसके प्रश्नों का उत्तर न दे। इस समय उसको पुनः रामनिरंजन का मिल से निकाला जाना स्मरण हो आया। वह मोटर से उतर सड़क के किनारे खड़ा विचार कर रहा था कि किधर जाए। अब रामनिरंजन का विचार आते ही वह ऐश बाग की ओर घूम पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे रामसुमन का स्थान ढूँढने में कुछ कठिनाई तो हुई, परन्तु वह स्थान खोजता-खोजता वहाँ पहुँच ही गया। कई स्थानों पर से उसे पूछना पड़ा कि क्या यहाँ किसी ने दूध बेचने का नया कारोबार आरम्भ किया है ?

पूछता हुआ वह रामसुमन की गौशाला के पास तक पहुँच गया था कि रामनिरंजन सामने से आता मिल गया। सतीश उसके सामने जा खड़ा हुआ।

"ओह सतीश भैया !" रामनिरंजन ने कहा और लपककर उससे गले जा मिला—"किधर घूम रहे हो ?"

"बहुत दिन हो गए थे मिले हुए। आज विचार आया कि मिलना चाहिए। हजरतगंज की दुकान पर भी गया था। वहाँ से पता चला कि तुम नौकरी छोड़कर काका के साथ यह काम करने लगे हो। सो तुम्हारा पता पूछते-पूछते यहाँ भटक रहा था।"

"तो आओ, तुम्हें अपनी कारगुजारी दिखाएँ। जब मैं पढ़ता था, तब ही पिता जी का विचार था कि वे कोई स्वतन्त्र कारोबार करेंगे।"

दोनों बातें करते हुए गौशाला की ओर चल पड़े। मार्ग पर चलते हुए रामनिरंजन ने बताया, "पिताजी का विचार था कि कुछ धन एकत्रित हो जाए तो वे अपने व्यवसाय को बढ़ाएँ। उन दिनों न तो उनके पास कुछ बचता था और न ही वे सेठ जी की नौकरी छोड़ सकते थे। छोड़ने से मेरी पढ़ाई में बाधा पड़ने की सम्भावना थी। मेरी पढ़ाई समाप्त होने पर सेठ जी ने मुझे मिल में नौकर रख लिया। इस प्रकार वे और भी कोठी के साथ बँध-से गए। उस कोठी में रहते हुए वे इस व्यवसाय को बढ़ा नहीं सकते थे।....

"सौभाग्य से मेरी नौकरी छूटी और पिता जी ने भी नौकरी छोड़ दी। इस पर भी कार्य में तब तक वृद्धि नहीं हो सकी जब तक मैं पुनः नौकरी नहीं पा गया। मेरी और पिताजी की आय मिलाकर और घर का खर्चा निकालकर हमारे पास कुछ धन एकत्रित होने लगा। वह धन हमने व्यवसाय में डालना आरम्भ कर दिया। एक से दो और दो से चार गौएँ हुईं और इस प्रकार उनकी संख्या बढ़ने लगी। जब पाँच गौएँ हो गईं तो सेठ सोमेश्वर जी के पिछवाड़े का घर, जो हमें मिला हुआ था, छोटा पड़ गया। हमने यहाँ एक खुला स्थान ले लिया। तबेला बनाया, मकान बनाया, दाना-भूसा रखने का स्थान बनाया और व्यवसाय में उन्नति करने लगे। जब हमारे पास बीस गौएँ हो गईं तो इस व्यवसाय में से ही उन्नति करने के लिए धन बचने लगा। अब मैं नौकरी छोड़कर पिताजी की सहायता करने के लिए यहाँ आ गया हूँ। मैं समझता हूँ कि जितना वेतन मिस्टर बत्रा मुझको देते थे, यहाँ उससे अधिक बना लेता हूँ।"

"अब कितनी गौएँ हो गई हैं ?"

"इस समय हमारे पास तीस गौएँ तो दूध देने वाली हैं। दस दूध नहीं देतीं। वे ब्याने वाली हैं। बीस बछड़ियाँ और दस बछड़े हैं। तीन साँड भी हैं।"

"कितनी आय हो जाती है इनसे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऋतु-सम्बन्धी तथा अन्य बाधाओं से आय घटती-बढ़ती रहती है। फिर भी एक सहस्र रुपया मासिक की आय तो होती ही है। यह पिछले छः मास से हो रही है। इस काल में हमने अपना व्यवसाय बढ़ाया नहीं। हमने मलीहाबाद में पाँच हजार रुपए में तीस एकड़ भूमि मोल ली है और उस पर एक बड़े स्तर पर डेयरी खोलने का विचार कर रहे हैं। उस स्थान पर जानवरों के लिए 'शेड' और अपने रहने के लिए मकान बना रहे हैं।"

इस समय वे रामसुमन के अहाते में जा पहुँचे। एक ओर फूस के छावन डलवाए हुए थे और उनके नीचे जानवर बँधे थे, दूसरी ओर रहने का कच्चा मकान था। एक कोने में भूसा-दाना इत्यादि का गोदाम था।

अहाते के फाटक में प्रवेश करते ही सतीश को सुव्यवस्था के लक्षण दिखाई देने लगे थे। रामसुमन दो अन्य कर्मचारियों की सहायता से दूध दोह रहा था। रामाश्रय घोड़ा-ठेला तैयार कर रहा था। वह घोड़े को लाकर ठेले में जोत रहा था। रामनिरंजन की माँ गोबर के उपले, जो सूख गए थे, एकत्रित कर रही थी।

रामनिरंजन सतीश को अपने पिता के पास ले गया। रामसुमन एक गाय की धारें निकाल रहा था। उसने एक क्षण रुककर सतीश को देखा तो प्रसन्नता में कहा, "आओ सतीश! सुनाओ कैसे हो?"

"ठीक हूँ काका!"

"निरंजन! सतीश को भीतर ले चलो। मैं अभी निपटकर आता हूँ।"

रामनिरंजन उसे मकान के भीतर ले गया। भगवती ने सतीश को देखा तो हाथ धोकर वह भी पीछे-पीछे अन्दर जा पहुँची। उसने दूध गर्म करने के लिए चूल्हे पर रख दिया और अलमारी में से खोआ की मिठाई लेकर तश्तरी में रखने लगी।

रामनिरंजन सतीश को मकान की बैठक में ले गया। यद्यपि मकान कच्चा था, फिर भी फर्श पक्का बनवाया गया था और दीवारों पर सफेदी की हुई थी। एक मेज, चार कुर्सियाँ और दो-तीन स्टूल रखे हुए थे। बैठक की दीवारों पर दो-तीन तस्वीरें भी लगी थीं।

सतीश को यह स्थान स्वच्छ और सादा प्रतीत हुआ। उसे यह स्थान उस कोठरी से, जो रामसुमन को उसके पिता ने दे रखी थी, अच्छा लगा।

रामनिरंजन ने उसको घर के अन्य कमरे दिखाए। एक कमरे में रामनिरंजन और रामाश्रय सोते थे। एक में उनके माता-पिता सोते थे। बैठक और कार्यालय, जिसमें बैठकर रामनिरंजन गौशाला का हिसाब-किताब किया करता था, एक ही था। रसोई थी, गुसलखाना था और टट्टी भी थी।

सतीश रामनिरंजन के परिवार की उन्नति देखकर बहुत प्रसन्न था। यद्यपि उसके और रामनिरंजन के परिवारों में आर्थिक दृष्टि से बहुत अन्तर था, फिर भी जो घर इन्होंने बनाया था, वह बहुत ही सुखप्रद मालूम होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिरंजन ने उसको बैठक में लाकर बिठाया तो भगवती हाथ में मिठाई की तश्तरी लिये हुए आ गई। सतीश ने हाथ जोड़कर नमस्कार कर कहा, "काकी! रेखा तुम्हें बहुत याद करती है।"

"वह बहुत ही अच्छी लड़की है। भगवान उसका सुख-सौभाग्य बनाए रखे! सुनाओ, सेठानी जी कैसी हैं? सतीश, तुम्हें रामनिरंजन से मिलने आते देखकर चित्त बहुत ही प्रसन्न हुआ है।"

"काकी! मिलने को चित्त तो कई दिन से कर रहा था, परन्तु अवसर आज ही मिला है। यह देखकर कि आप लोगों ने बहुत उन्नति कर ली है, चित्त बहुत ही प्रसन्न हुआ है।"

इस समय रामाश्रय आ गया। सतीश ने उसको देखकर कहा, "रामाश्रय! तुम तो रामनिरंजन से भी ऊँचे हो गए हो!"

"हाँ भैया! इसका भी कारण है। निरंजन भैया चाय पीते हैं और मैं दूध पीता हूँ।"

"और तुम क्या पीते हो सतीश?" भगवती ने पूछ लिया।

"कॉफी····चाय।"

"तब तो चाय ही बना देती हूँ। मैंने तो दूध गर्म करने के लिए रख दिया था।"

"तो दूध ही आने दो। कदाचित् मैं भी रामाश्रय जितना लम्बा हो जाऊँ!"

निरंजन ने कहा, "माँ! मैं तो चाय पिऊँगा, मुझे दुकान पर चाय पीने का स्वभाव-सा हो गया है।"

माँ चाय बनाने चली गई तो रामनिरंजन ने सतीश से पूछा, "रेखा तो अब काफी बड़ी हो गई होगी?"

"हाँ, लम्बी तो हो गई है, परन्तु पहले की भाँति पतली-दुबली है।"

"क्या अब भी वैसे ही हँसती है, जैसे पहले हँसा करती थी?"

"हाँ, किन्तु उसके हँसने का कारण होता है। जब तुम लोग कोठी छोड़कर जा रहे थे तो वह अपनी खिड़की में खड़ी आपको जाते देख खिलखिलाकर हँस रही थी। मैंने उससे इसका कारण पूछा तो बोली, 'ये लोग दासता से मुक्त हो उन्नति के पथ पर जा रहे हैं।'

"पहले तो मैं, वे उसके मनोद्गार मात्र समझता था, परन्तु आज यह सब-कुछ देखकर उसकी सूझ-बूझ पर विस्मय होने लगता है।"

"मैं तो तब भी कहा करता था कि वह पागल नहीं है, प्रत्युत हम सबसे कुछ विलक्षण है। सतीश! अब तो मैं भी अनुभव करने लगा हूँ कि वहाँ का वातावरण और सेठ जी इत्यादि का व्यवहार प्रायः अयुक्तिसंगत रहा करता था। उनके व्यवहार पर हँसी आनी स्वाभाविक ही थी।"

उस समय सतीश को सुन्दरदास की बात स्मरण हो आई। उसने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निरंजन ! मेरे आज यहाँ आने का एक विशेष कारण है। तुम बता सकते हो कि तुमने क्यों आटा-मिल से त्याग-पत्र दिया था ?"

निरंजन विचार करने लगा कि बताए अथवा न बताए। प्रोत्साहन देने के लिए सतीश ने कह दिया, "अब तो तुम्हें नौकरी छोड़े काफी समय हो गया है। साथ ही तुम्हारा स्वतंत्र अच्छा जीवन है। मैं समझता हूँ कि तुम्हें बात बताने में संकोच नहीं होना चाहिए।"

निरंजन ने कह दिया, "अपने हानि-लाभ का विचार कर मैं चुप नहीं रहा था। बात यह है कि मेरे कहने का कोई विश्वास न करता। इस कारण कहने में कुछ लाभ न समझकर मैं चुप था। अब तुम कहते हो तो बताता हूँ।"

तब रामनिरंजन ने मिल में से माल चुराने, उसे भी उसमें सम्मलित करने के प्रस्ताव तथा सम्मिलित होने से इन्कार करने की पूर्ण कथा सुना दी। पश्चात् उसने कहा, "उस चोरी में मैनेजर से लेकर चपरासी तक का एक गुट बना हुआ था। मैंने और पिता जी ने यही समझा कि किसी को बताकर झूठा समझे जाने से यह अच्छा है कि कहीं अन्यत्र नौकरी करने के लिए यहाँ से किनारा कर लें।....

"परन्तु सुन्दरदास को भय था कि यदि मैं पूर्ण बात सेठ जी से कह दूँगा तो भंडा फूट जाएगा। इस कारण मुझे बदनाम कर वहाँ से निकालना ही उसने ठीक समझा।"

"निरंजन ! तुम्हें उसी समय सभी कुछ पिता जी को बता देना चाहिए था।"

"यदि मुझे किंचिन्मात्र भी आशा होती कि मेरी बात सुन्दरदास के विपरीत सत्य मानी जा सकती है, तो मैं अवश्य सेठ जी को समझाने का यत्न करता। मुझे तो अब भी विश्वास है कि एक धनी आदमी के समक्ष निर्धन कभी विश्वासयुक्त नहीं हो सकता।"

"निरंजन ! अब तो तुम लोग भी धनी होने के मार्ग पर चल पड़े हो। क्या तुम भी ऐसा ही करने का विचार रखते हो ?"

"नहीं भैया सतीश !" रामसुमन ने, जो इस समय तक वहाँ आ गया था और उनका वार्तालाप सुन रहा था, कह दिया। उसने कहा, "इसमें कारण है कि मेरी भगवान पर और मानव की श्रेष्ठता पर अभी निष्ठा बनी है। जब तक यह निष्ठा बनी रहेगी, तब तक मैं अकारण किसी के प्रति अविश्वास नहीं करूँगा।"

रामनिरंजन ने अपने पिताजी के कथन की व्याख्या कर दी। उसने कहा, "सतीश ! तुमने अंग्रेजी की यह कहावत सुनी होगी—'टेक एवरी बडी ए रोग टिल ही प्रूव्ज हिमसेल्फ टु बी ए जैन्टलमैन,' अर्थात् प्रत्येक को शैतान समझो जब तक कि वह अपने को एक भला आदमी सिद्ध न कर दे। यह यूरोपियन सभ्यता की प्रतिछाया है। इसमें मानवता और मानव की श्रेष्ठता पर अविश्वास की झलक है। हमारे यहाँ तो ऐसा नहीं माना जाता। हम प्रत्येक में आत्मा की उपस्थिति मानते हैं और आत्मा परमात्मा का प्रतिबिम्ब-मात्र है।"

सतीश हँस पड़ा। जिस प्रयोजन से वह आया था, वह सिद्ध हो गया था। हँसकर उसने कहा, "काका ! रेखा के विवाह कां प्रबन्ध हो रहा है, परन्तु वह इन्कार कर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"यह तो वह बताती नहीं। केवल यही कहती है कि वह विवाह नहीं करेगी।"

इस समय भगवती दूध और चाय ले आई। सतीश चाय पीता हुआ विचार कर रहा था कि क्या ये लोग अपनी सुधरी अवस्था को प्रकट करने के लिए ऐसा ढोंग रच रहे हैं अथवा वास्तव में ही वे उसका मान करते हैं?

रामाश्रय ने दूध पिया और सतीश को यह कहकर कि उसे ग्राहकों को दूध देने जाना है, चला गया। इसी काम के लिए वह घोड़ा-ठेला तैयार कर रहा था। वह गया तो भगवती ने पुनः रेखा की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "रेखा को कभी यहाँ ले आना सतीश!"

"यत्न करूँगा काकी! वह तो आना चाहेगी, परन्तु माता-पिता जी उसका यहाँ आना पसन्द नहीं करेंगे।"

"क्यों ?"

सतीश ने इस क्यों का उत्तर नहीं दिया। उसने बात बदलते हुए कहा, "रामनिरंजन। तुम कभी शहर की ओर आते हो अथवा नहीं ?"

"भैया! एक-न-एक चक्कर तो नित्य लगता है। अब रामाश्रय मलीहाबाद की भूमि पर इमारत बनवाने के लिए उधर जाया करेगा तो मुझे दो बार नगर जाना पड़ेगा। आजकल प्रातः दूध बाँटने को मैं जाता हूँ और शाम को रामाश्रय।"

"तब तो ठीक है। मुझे बताओ किस समय, कहाँ मिल सकते हो ?"

"प्रातःकाल सात से साढ़े सात बजे मैं अमीनाबाद के चौराहे पर खड़ा हो नकद दूध बेचता हूँ। लगभग आधे घण्टे में सारा दूध बिक जाता है।"

"कितना दूध होता है एक समय का ?"

"अढ़ाई-तीन मन हो जाता है। भैया! दूध शुद्ध होता है। उसमें हम रत्ती-भर भी जल नहीं मिलाते। गौओं को खाने के लिए भी दाना और खली देते हैं जिससे दूध बहुत बढ़िया, गाढ़ा और स्वादिष्ट होता है। जो ग्राहक एक बार दूध ले जाता है, वह सदा का ग्राहक बन जाता है। अब मैं पेशगी दाम लेकर कूपन जारी करने लगा हूँ। परिणाम यह हो रहा है कि सारा दूध पहले ही बिका होता है। दूध तो तीन मन के लगभग होता है, पर कूपन मैं एक समय अढ़ाई मन के ही बेचता हूँ। इससे कभी दूध कम हो जाए तो भी कूपन वालों को मिल ही जाता है।"

सतीश रामनिरंजन की कार्य-कुशलता देखकर चकित रह गया। वह समझ रहा था कि पढ़ाई में अच्छा होना और व्यवसाय में कुशल होना पर्यायवाचक हो रहे हैं।

: ५ :

सतीश उस रात खाने के समय रामसुमन के कार्य का वृत्तान्त अपने माता-पिता को बता रहा था। सेठ कमलापति को इस उन्नति का विश्वास नहीं आया। उसने कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया, "सतीश ! यह सब वितंडावाद है। आज एक आदमी, जिसने जीवन-भर तीस रुपये की नौकरी की हो, कुछ ही वर्षों में इतनी उन्नति नहीं कर सकता। मुझको पूरा विश्वास है कि बाप-बेटा दोनों ने जी भरकर हमारी चोरी की है और इससे अपना व्यवसाय चलाया है।"

"पिता जी ! रामनिरंजन ने मुझको अपने कारोबार का पूरा इतिहास बता दिया है कि किस प्रकार एक गाय से अब उनके पास तीस गौएँ हो गई हैं। किस प्रकार अब उन्होंने मलीहाबाद में बीस एकड़ भूमि खरीदी है और अब अपनी गौशाला वहाँ ले जाने वाले हैं।"

"और तुमको उसके इस वृत्तान्त पर विश्वास आ गया है ?"

"पिता जी ! रामनिरंजन ने यह भी बताया है कि मामा जी ने क्यों उसके विपरीत झूठे आरोप लगाए थे।"

"क्यों लगाए थे ?"

इस पर सतीश ने वह सब बता दिया, जो रामनिरंजन ने उसे सुनाया था। सेठ कमलापति यह बात सुन खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने खूब हँसकर कहा, "इस कहानी पर कौन मूर्ख विश्वास करेगा !"

सतीश को रामनिरंजन का कहना स्मरण हो आया कि यदि उसे किंचिन्मात्र भी आशा होती कि उसकी बात पर विश्वास किया जाएगा, तो वह बता देता। उसने केवल इतना कहा, "मुझे उसकी बात पर विश्वास है। जो कुछ मेरे साथ मिल में बीती है, उससे विश्वास पक्का हो गया।"

"तो तुम अपने मामा को चोर समझते हो ?"

"बिल्कुल।"

"तभी उसने तुम्हें मिल से निकाल दिया है। देखो सतीश ! तुम मिल में जाने के स्थान पर आवारागर्दी पसन्द करते हो। मुझे यह पसन्द नहीं।"

"मुझे कोई ऐसा नया काम करवा दीजिए, जो मामा से स्वतन्त्र हो।"

"विचार करूँगा। परन्तु मैं तुमसे निराश होता जाता हूँ। तुम इण्टर तो पास नहीं कर सके। आटा-मिल के काम में तुम्हारी रुचि नहीं है। तुम्हारी सूझ-बूझ में गलती हो रही है। तुम चोर को भला और भले को चोर समझ रहे हो।"

रेखा भी भोजन करती हुई सतीश और पिता जी का वार्तालाप सुन रही थी। जब से उसकी सगाई की चर्चा चली थी, वह प्रायः चुप रहती थी। हँसती और बोलती कम थी। आज वह बहुत यत्न करने पर भी अपनी हँसी को रोक नहीं सकी। उसके मुख में ग्रास था और हँसी रोकने के प्रयास में वह मुख से उछलकर निकल आया। इस पर वह उठ खड़ी हुई। उसके इस व्यवहार पर सेठ जी को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने कहा, "रेखा ! यह पागलपन तुम कब छोड़ोगी ? यदि सतीश ऐसा करता तो एक तमाचा उसके मुख पर पड़ता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा इससे गम्भीर हो गई और नैपकिन से मुख पोंछकर बोली, "पिताजी, आप जब अयुक्ति-संगत बातें करते हैं तो हँसी आ ही जाती है। मैं हँसने के लिए विवश हो जाती हूँ।"

"क्या अयुक्ति-संगत बात की है मैंने?"

"निरंजन और सतीश ने मामा जी पर भारी आरोप लगाए हैं। आपने जाँच तो की नहीं और आरोप लगानेवाले पर बरसने लगे हैं!"

"तुमको तो मामा से चिढ़ हो गई है।"

रेखा को फिर हँसी आ गई, परन्तु वह वहाँ से टल जाने के लिए डाइनिंग हॉल से बाहर को चल पड़ी। इस पर रेखा की माँ ने उसको डाँटकर बुलाया, "रेखा! इधर आओ।"

रेखा घूमकर खड़ी हो गई। माँ ने कहा, "इधर आओ और खाना खाओ!"

रेखा बैठी तो बैरा ने पहली प्लेट, जिसमें उच्छिष्ट पड़ा था, उठा ली और नई प्लेट लगा दी। रेखा ने खाने का सामान उसमें रख लिया और चुपचाप खाने लगी।

तब तक कमलापति अपनी लड़की के मुख की ओर देखता रहा। पश्चात् एकाएक कहने लगा, "मैं पूछने जा रहा था कि तुमको सुन्दरदास से चिढ़ क्यों है?"

"वह कानपुर में विवाह के लिए क्यों जिद कर रहे हैं?"

"वह इसमें तुम्हारी भलाई समझता है।"

"मैं ऐसा नहीं समझती।"

"पर तुम अल्प-वयस्क हो। तुम अपना भला-बुरा नहीं समझ सकती।"

"ठीक है, परन्तु विवाह को इतनी जल्दी भी क्या है?"

"हम, जो तुम्हारे संरक्षक हैं, उसे जल्दी करना चाहते हैं।"

"बस इसी बात पर मुझे चिढ़ है।"

"तुम्हें यहाँ विवाह स्वीकार करना ही होगा।"

रेखा अब पुनः उठी और खाना छोड़ डाइनिंग हॉल से निकल गई। इसका अर्थ था कि युद्ध आरम्भ हो गया। सतीश रेखा के विचार का था, परन्तु वह जानता नहीं था कि किस प्रकार रेखा की सहायता करेगा।

रात-भर वह सो नहीं सका। वह मन में सोच रहा था कि पिता जी और मामा जी क्यों इतनी हठ कर रहे हैं? अगले दिन सवेरे वह उठा तो माँ उसके कमरे में आ गई। उसने सतीश के पास बैठते हुए कहा, "बेटा! रेखा को समझाओ। वह तुम्हारी बात मानती है। इस प्रकार तो घर में भारी झगड़ा खड़ा हो जाएगा और तुम्हारे पिता जी इसके परिणामों को सह सकेंगे अथवा नहीं, कहना कठिन है। रात को उन्हें फिर दिल का दौरा हुआ था।"

सतीश जानता था कि पिछले एक-दो वर्षों से पिता जी को हृदय-गति-अवरोध होने लगा है। इससे उसे भी चिन्ता लग रही थी, परन्तु वह समझता था कि पिता जी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कष्ट का कारण रेखा का व्यवहार नहीं है। इसका कारण कुछ और है। रेखा अभी सोलह-सत्रह वर्ष की ही तो थी। शिष्ट परिवारों की लड़कियाँ एम० ए० तथा इससे भी अधिक पढ़ाई करती हैं।

सतीश ने माँ से कहा, "रेखा का विवाह करने की जल्दी क्यों है? फिर यह जल्दी किसको है? इन बातों का उत्तर ही पिता जी की चिन्ता का कारण बता सकता है।....

"माँ! रेखा के विवाह की चर्चा कुछ काल तक बन्द क्यों नहीं कर दी जाती?"

सत्यवती, सतीश की माँ, सतीश और रेखा की बातों को समझती तो थी, परन्तु वह अपने पति को समझा नहीं सकती थी। जीवन-भर वह उन्हें बहुत ही समझदार और कार्यकुशल समझती रही थी। आज एकाएक पुत्र की बात को पति की बात से अधिक युक्तियुक्त समझकर परेशान हो रही थी। उसने केवल यह कहा, "दुविधा से उनके जीवन पर कोई संकट न आ बने बेटा! तुम रेखा को ही समझा दो।"

माँ के आग्रह को वह टाल नहीं सका। उसने कह दिया, "मैं रेखा को समझाने का यत्न करूँगा।"

आज सतीश को आटा-मिल में नहीं जाना था। वह प्रातः अल्पाहार के बाद एक पुस्तक लेकर कोठी के बरामदे में बैठकर उसे पढ़ने लगा। सेठ जी सामान मोटर में लदवाकर स्टेशन चले गये। उनके जाने के कुछ ही काल पश्चात् सुन्दरदास आया और सतीश को शान्ति से बैठकर पुस्तक पढ़ते देखकर उसके पास आया और पूछने लगा, "क्या पढ़ रहे हो?"

सतीश ने पुस्तक से आँख उठाकर सुन्दरदास को देखा और उसका उत्तर देने के स्थान पर कहने लगा, "पिता जी कलकत्ता के लिए चले गये हैं।"

"मैं उनसे मिलने नहीं आया। मैं तुमसे एक बात कहने आया हूँ।"

सतीश ने पुस्तक बन्द कर एक ओर रख दी और सावधान हो मामा की ओर देखने लगा। सुन्दरदास समीप की एक कुर्सी पर बैठकर कहने लगा, "सेठ जी ने तुम्हें मेरे पास काम सीखने के लिए मिल में भेजा था। तुम रुष्ट होकर चले आये हो। यह तुमने ठीक नहीं किया। अब यहाँ व्यर्थ समय नष्ट कर रहे हो।"

"मैंने पिता जी से कहा था कि मैं आपके साथ काम नहीं करना चाहता। मुझे उन्होंने कहा है कि कलकत्ता से लौटकर विचार करेंगे।"

"सेठ जी स्वयं तो स्वतन्त्रता-पूर्वक काम कर नहीं सके और तुम कैसे कर लोगे?

"जैसे रामसुमन और रामनिरंजन ने कर लिया है।"

"उन्होंने क्या कर लिया है?"

"किसी दिन मेरे साथ चलकर देखिएगा। पता चल जाएगा।"

"वे तो चोर हैं। उन्हें देखने से क्या लाभ होगा? मैं तुम्हें कहता हूँ कि चलो मेरे साथ, किसी और अच्छे स्थान पर लगा दूँगा।"

"मैं आटा-मिल में काम नहीं करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय सतीश की माँ बाहर आ गई और वह सुन्दरदास को भीतर बुलाकर ले गई। कदाचित् वह अपने भाई को समझाना चाहती थी कि सेठ जी के सामने कोई झगड़े की बात न की जाए। इसके पश्चात् जब सुन्दरदास गया तो रेखा बाहर आ गई और सतीश के पास बैठकर कहने लगी, "सुना है पिताजी को रात फिर हृदय-रोग का दौरा पड़ा था?"

"हाँ, माता जी कहती तो थीं। परन्तु वे आज कलकत्ता चले गए हैं।"

"माता जी ने उनको जाने से मना किया था, परन्तु वे यह कह गए हैं कि काम इतना आवश्यक है कि रुक नहीं सकते।"

रेखा और सतीश अभी इस नवीन परिस्थिति पर विचार ही कर रहे थे और अपने-अपने विचार में लीन थे कि एक युवक फर्स्ट क्लास सूट पहने हुए, सिर पर हैट लगाए कोठी के बाहर ताँगे में से उतरा और कोठी में चला आया। दोनों उसकी ओर देखने लगे।

वह युवक वस्त्र तो बहुत बढ़िया पहने हुए था, परन्तु रूपरेखा में साधारण था। रंग का साँवला और शरीर का ठिगना था, परन्तु हाथ में हीरे की बड़ी-सी अँगूठी और कान में 'वीर वली' पहने था।

वह सतीश और रेखा के सामने आ खड़ा हुआ। सतीश ने उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो वह पूछने लगा, "यह कोठी किनकी है?"

"आप कहाँ आए हैं?" सतीश ने मुस्कराते हुए पूछा।

"सेठ कमलापति सिंघानी की कोठी है क्या?"

"हाँ, पधारिये। कहाँ से आये हैं? क्या काम है?"

वह युवक बैठ गया। बैठकर जेब में से सोने का पालिश किया हुआ सिगरेट-केस निकाला और उसमें से एक सिगरेट निकालकर केस सतीश के सामने कर दिया।

सतीश ने सिर हिलाकर कहा, "क्षमा कीजिए, मैं नहीं पीता।"

"ओह! खैर, कुछ हानि नहीं।" उसने जेब में से लाइटर निकाला और सिगरेट जलाने लगा। सिगरेट जलाकर, कश खींच, धुआँ आसमान की ओर छोड़ते हुए उसने पूछा, "यदि मैं भूल नहीं कर रहा तो आप सेठ जी के लड़के हैं न?"

"जी, फरमाइये?"

इस समय रेखा उठकर कोठी के भीतर जाने लगी तो उस युवक ने कहा, "बैठिये, मुझे तो खेद है कि मैं आपकी मीठी-मीठी बातों में विघ्न बन गया हूँ। ये आपकी पत्नी हैं क्या?"

रेखा खड़ी हो गई और उस युवक की ओर देखकर हँसने लगी। उसने प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर पूछ लिया, "क्या मैं आपके पधारने का कारण पूछ सकती हूँ?"

"बात यह है कि मैं कानपुर से आया हूँ और आपके पिता अथवा मामा जी से मिलने की इच्छा रखता हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानपुर का नाम सुन रेखा पुनः कुर्सी पर बैठ गई और ध्यान से उस युवक की ओर देखने लगी। उसको युवक की रूपरेखा उस मोटी और भद्दी स्त्री से मिलती-जुलती प्रतीत हुई, जो पिछले दिन कानपुर से आई हुई स्त्रियों में थी। सतीश कुछ कहने लगा था कि रेखा ने उसे कहने से पहले ही कह दिया, "सेठ जी लखनऊ से बाहर गए हुए हैं। कुछ काम हमारे योग्य हो तो बताइए?"

"मेरा नाम कमलचन्द्र है। मैं सेठ केसरचन्द सोमानी का सबसे छोटा लड़का हूँ। मैं आपकी ननद के दर्शन करने आया हूँ।"

रेखा मुस्कराती हुई कहने लगी, "वह तो कॉलेज में पढ़ने गई है। क्या हम जान सकते हैं कि आपको क्या काम है उससे?"

"बताया तो है कि देवी जी के दर्शन करने हैं। किस कॉलेज में पढ़ती हैं? क्या मैं उनको वहाँ जाकर देख सकता हूँ?"

"आप उसे पहचान सकेंगे!"

"नहीं, यदि आप साथ चलें तो आसानी रहेगी।"

सतीश समझ गया कि यही लड़का है, जिससे रेखा को विवाह के लिए कहा जा रहा है। वह समझ गया कि रेखा उसकी हँसी उड़ा रही है। उसने इस विषय में चुप रहना ही उचित समझा।

रेखा ने कहा, "हम तो इस समय जा नहीं सकते। हमें किसी आवश्यक काम से कहीं जाना है। हाँ, हम उसकी रूपरेखा बता सकते हैं। वह यूनिवर्सिटी आर्ट्स कॉलेज में सेकेण्ड ईयर में पढ़ती है। उसका रंग कुछ-कुछ काला, बिल्कुल आप जैसा है। साढ़े चार फुट कद की लड़की है। आँखें गोल-गोल, नाक भी आप जैसा चपटा और लाल रंग की साड़ी-जम्पर पहने होगी। उसके सैंडल सुनहरी हैं।....

"मैं समझती हूँ कि इतने वर्णन से आप उसको पहचान जाएँगे।"

"परन्तु मुझे तो बताया गया है कि वह लम्बे कद की दुबली-पतली, गंदमी रंग की है। उसकी नाक लम्बी और गोल आँखें कमल की पंखड़ियों की भाँति बड़ी-बड़ी हैं।"

"कुछ भूल हो गई प्रतीत होती है। आप किस लड़की को देखने आए हैं?"

"सेठ कमलापति सिंघानी जी की कितनी लड़कियाँ हैं? एक ही तो है और उसको देखना चाहता हूँ।"

"मैंने तो उसी के विषय में बताया था। एक और लक्षण बता देती हूँ जिससे पहचानने में कष्ट नहीं होगा। एक बार गिरने से उसकी कमर पर चोट आई थी। इस कारण चलने के समय कमर टेढ़ी करके चलती है।"

कमलचन्द्र ने एक लम्बा-सा कश सिगरेट का खींचा और उठ खड़ा हुआ। वह वहाँ से भाग जाना चाहता था, परन्तु इसी समय भीतर से सुन्दरदास और सत्यवती निकल आए। वे बरामदे में एक अपरिचित लड़के को रेखा से बातचीत करते देख स्तब्ध रह गए। सुन्दरदास ने आगे बढ़कर उस युवक से पूछ लिया, "कौन हैं आप?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने अपना परिचय इनको दे दिया है।"

सतीश ने बता दिया, "ये साहब कानपुर से आए हैं। सेठ केसरचन्द्र के सबसे छोटे लड़के श्रीमान् कमलचन्द्र हैं। मेरी बहन को देखने आए हैं।"

"बैठिए!" सुन्दरदास ने बात समझकर कहा, "आपको आने से पहले सूचना भेजनी चाहिए थी। खैर! कुछ हानि नहीं हुई। बैठिए, जलपान का प्रबन्ध करता हूँ।"

"जी नहीं, जिस काम से आया था, वह पूरा कर शीघ्र ही मुझे जाना है।"

"बहुत देर नहीं लगेगी। आपके आने का प्रयोजन तो सिद्ध हो ही गया है। अब हमारी यह प्रार्थना भी मान लीजिए।...."

"रामू! ओ रामू!!" सुन्दरदास ने नौकर को आवाज दी और सामने बैठे युवक से कहा, "बस पाँच मिनट ही तो लगेंगे और फिर आपको मोटर में स्टेशन छोड़ आऊँगा।"

"पर मैंने तो अभी यूनिवर्सिटी जाना है।"

"वहाँ क्या काम है?"

"लड़की देखने।"

"कौन लड़की?"

इन प्रश्न पर वह युवक सुन्दरदास का मुख देखने लगा। इस पर रेखा तथा सतीश, जो अभी तक वहीं खड़े थे, खिलखिलाकर हँस पड़े। सुन्दरदास समझ गया कि दोनों भाई-बहन कमलचन्द्र की हँसी उड़ाते रहे हैं। उसने बात स्पष्ट करने के लिए कहा, "देखिए, जिसे आप देखने आए हैं, वह यही तो है!" इतना कह उसने हँस रही रेखा की ओर संकेत कर दिया।

अब कमलचन्द्र भी हँसने लगा। मन ही मन वह खीझ गया था, परन्तु प्रकट में वह बोला "खैर।" उसने रेखा की ओर, जो अभी भी खड़ी थी, देखकर कहा, "मुझे यह पसन्द है। अब आप जलपान का प्रबन्ध कर सकते हैं। मैं तो अब इस घर का दामा...."

"दामाद तो विवाह के बाद बनेंगे श्रीमान्! और वह आपसे होने का नहीं। मेरा विचार है कि यदि आपमें कुछ भी स्वाभिमान है तो सीधा घर का रास्ता पकड़िए और यह हीरे की अँगूठी किसी अन्य को जाकर दिखाइएगा।"

इतना कहकर रेखा अपने कमरे की ओर चली गई। कमलचन्द्र भौंचक्का होकर उसको जाते देखता रह गया। वह मन ही मन विचार कर रहा था कि बहुत ही तीखे स्वभाव की है। विवाह के पश्चात् इसको सीधा करना पड़ेगा। इस पर भी वह गम्भीर बना बैठा रहा। सुन्दरदास ने सतीश से पूछा, "क्या बात हुई है?"

"कुछ विशेष नहीं। मैं तो केवल यही समझ सका हूँ कि इन्होंने रेखा को पसन्द कर लिया है, परन्तु रेखा ने इनको पसन्द नहीं किया।"

"वह ठीक हो जाएगी। मैं उसको मना लूँगा।" कमलचन्द्र ने कह दिया।

इस समय रामू भीतर से मिठाई और दूध का गिलास ले आया।

रेखा यह अनुभव कर रही थी कि उसके गले में फंदा पड़ गया है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरे-धीरे कसा जा रहा है। समय पर उसका गला घुट जाएगा। आज वह अपने कमरे में बैठी विचार कर रही थी कि इस फंदे से छूटने का प्रयत्न करे या नहीं? यदि करे भी तो क्या घर से भाग जाए? गोमती में डूब मरे? विष खा ले? इस प्रकार की अनेक बातें उसके मस्तिष्क में भयानक रूप बनाकर नाचने लगीं।

जब कमलचन्द्र विदा हो गया तो सतीश रेखा के कमरे में आ गया। वह स्वयं तो कमलचन्द्र को पसन्द नहीं करता था, परन्तु वह रेखा के समीप आकर एक कुर्सी पर बैठ गया और पूछने लगा, "रेखा, क्या समझा है?"

"भैया! मेरे गले में जो बाँधा जा रहा है वह तो महामूर्ख होने के साथ असभ्य भी है। मेरा इससे निर्वाह नहीं हो सकेगा।"

"तो क्या करोगी?"

"मैंने कल रात पिता जी से कहा था कि अभी विवाह की जल्दी न की जाए, परन्तु वे माने ही नहीं।"

"विवाह हो जाने दो, जो कठिनाई आएगी, उसके आने पर विचार कर लिया जाएगा।"

"नहीं भैया! यह नहीं होगा।"

"क्यों? क्या··· ?" वह आगे कह नहीं सका।

रेखा सतीश के भाव को समझ गई। वह स्वयं भी जान न पाई वह कारण जिससे वह उससे विवाह नहीं करना चाहती थी। उसने अपने मन के भावों का विश्लेषण करते हुए कहा, "देखो भैया! मेरी विवाह में रुचि नहीं है। हाँ, कभी-कभी मैं भी विवाहित जीवन के स्वप्न लिया करती हूँ, परन्तु उन स्वप्नों में यह कमलचन्द्र नहीं होता।"

"तो कौन होता है?"

"एक है, परन्तु उससे विवाह असम्भव है।"

"क्यों असम्भव है?"

"हमारा और उसका समाज भिन्न है। उसका नाम ही माता-पिता सुनेंगे तो विष खा लेंगे। एक अन्य कारण भी है।"

"क्या है वह दूसरा कारण?"

"देखो सतीश, मैं समझती हूँ कि विवाह के लिए उत्कट इच्छा होते हुए भी बिना विवाह के रहना असम्भव नहीं। इस कारण यह मार्ग माता-पिता और अपने समाज को, कम-से-कम दुःख पहुँचाने वाला होने से मुझे पसन्द है।"

"मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ कि तुम सुखी रह सको?"

"मैंने बता दिया है। यत्न करो कि मेरे विवाह का कार्य स्थगित कर दिया जाए।"

"यदि पिता जी न मानें तो?"

"तो मैं कुछ नहीं जानती। अभी मैं अपने मन में मरने की बात विचार कर रही थी, परन्तु मेरा जीवन से मोह इतना है कि मरने को चित्त नहीं चाहता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश को यद्यपि कुछ भी समझ में नहीं आया कि रेखा क्या करना चाहती है, फिर भी वह यह तो समझ ही रहा था कि रेखा के मन का अन्तर्द्वन्द्व सर्वथा स्पष्ट है। वह मरना नहीं चाहती। परन्तु अपनी रुचि के किसी के साथ विवाह के लिए तैयार भी हो सकती है। इससे उसे अपने प्रयत्नों के लिए मार्ग मिल गया। उसने समझ लिया कि विवाह के लिए किसी अन्य वर की खोज होनी चाहिए।

सतीश ने आटा-मिल नहीं जाना था। दिन में कुछ काम न होने से वह उकता रहा था। वह मन में सुन्दरदास की बात पर विचार कर रहा था। उसने कहा था कि रामसुमन चोर है और चोरों की बातों पर विचार नहीं किया जा सकता। साथ ही वह अपने पिता जी की बात पर विचार कर रहा था। उसके पिता ने पिछली रात कहा था कि रामसुमन ने चोरी के रुपयों से अपने कारोबार की वृद्धि की है। परन्तु इसके प्रतिकूल उसका मन कहता था कि उन दोनों की बातें भ्रममूलक हैं।

इससे उसके मन में एक विचार उठा कि यदि रामसुमन छोटे-से काम से इतना बड़ा काम बना सकता है, तो वह क्यों नहीं बना सकता? क्या ही अच्छा हो, यदि वह अपना स्वतन्त्र कारोबार कर उन्नति के मार्ग पर चल पड़े! तब न मामा जी का दबाव रहेगा और न ही पिता जी की अधीनता।

इस विचार के मन में उठते ही वह अनेकानेक योजनाएँ बनाने लगा और उनको कार्यान्वित करने के विषय में विचार करने लगा।

वह उठकर कोठी से निकल गया। आज वह अनुभव करने लगा था कि उसके पंख निकलने लगे हैं और वह असीम आकाश में स्वतन्त्र उड़ सकने की शक्ति प्राप्त करने वाला है।

जब संसार में अनेक काम करने को हैं तो काम के अभाव के कारण आदमी बेकार नहीं रह सकता। सतीश मन में विचार कर रहा था कि बेकारी के दो ही कारण हो सकते हैं—उचित पूँजी का अभाव अथवा उस काम में अरुचि अथवा अयोग्यता।

पूँजी के विषय में उसका मत था कि अपनी पूँजी के अनुसार काम तो ढूँढा जा सकता है, परन्तु उस ढूँढे हुए काम को करने की योग्यता तो करनेवाले पर निर्भर है। इस प्रकार वह इन दोनों बातों पर विचार करता हुआ सड़क के किनारे फुटपाथ पर चला जा रहा था। उसके पास बीस रुपए ही जेब में थे। अतः वह कोई ऐसा काम करना चाहता था कि जिसको वह बीस रुपए से आरम्भ कर सके। जहाँ तक योग्यता का प्रश्न था, वह किसी निर्माणात्मक कार्य करने के योग्य नहीं था। उसकी शिक्षा उसमें बाधक थी।

चलते-चलते उसको एक बात सूझी। वह विचार कर रहा था कि कोई छोटा-सा व्यापार कर ले तो कैसा रहे? यह बात उसको पसन्द आई। वह व्यापार के अर्थ समझता था। व्यापार के अर्थ हैं किसी वस्तु को उत्पादन के स्रोत से ले-जाकर आवश्यकता के केन्द्र में उसे प्रयोग करनेवालों को देना। ले-जाने का मूल्य होता है। इस प्रकार उसके मन में उठ रही योजना की एक रूपरेखा बनने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि किस वस्तु का उत्पादन-स्रोत समीप हो सकता है और किस वस्तु का आवश्यकता-केन्द्र लखनऊ में ही हो सकता है?

आज विचारोपरान्त उसके मन में एक योजना बन गई। उसको विदित था कि लखनऊ में पैन्सिलें कहाँ बनती हैं। वह यह भी जानता था कि पैन्सिलें बिकती हैं स्कूलों में। प्रश्न यह था कि वह बेचेगा कैसे? वह धनी बाप का बेटा आवाज दे-देकर पैन्सिलें बेचे, यह उसको कुछ विलक्षण प्रतीत हुआ। अपने माता-पिता के मान का प्रश्न भी उत्पन्न हुआ था।

जितना यत्न इस बात के विचार करने में लगा था कि वह पैन्सिलों तथा कापियों को स्कूलों में ले-जाकर बेचे, उससे अधिक परिश्रम उसको इस काम को करने के लिए मन को तैयार करने में लगा। वह अपने माता-पिता के धनवान होने का विचार अपने मन से निकाल सकने में भारी कठिनाई अनुभव करने लगा था। इस कठिनाई को पार करने में उसको कई दिन लग गए। आखिर एक दिन वह एक थैला लेकर उसमें कई प्रकार की दो-दो तीन-तीन कापियाँ, और शिक्षार्थियों के प्रयोग की पैन्सिलें तथा रबर, चाकू आदि डालकर डी०ए०वी० स्कूल के बाहर आ खड़ा हुआ। पहले दिन तो वह अपने थैले को कन्धे से लटकाकर हाथ में दर्जन पैन्सिलें और दो-चार कापियाँ लिये खड़ा रहा। किसी ने पूछा तक नहीं। परन्तु वह निराश नहीं हुआ। अगले दिन वह पुनः अपने स्थान पर जा खड़ा हुआ। इस दिन तीन आने की बिक्री हो गई। दो पैन्सिलें और एक कापी बिकी। फिर अगले दिन लड़कों का ध्यान आकर्षित करने के लिए वह थोड़ी ऊँची आवाज में पुकारने लगा, "पैन्सिल कापियाँ, पैन्सिल कापियाँ!" इस दिन एक रुपए की बिक्री हुई।

उसके लिए समस्या यह थी कि वह अपना सामान छिपाकर कहाँ रखे? वह प्रायः अँधेरा हो जाने पर घर आता और वह थैला, जिसमें उसका बिक्री का सामान रखा रहता था, छिपाकर कोठी में ले जाता। फिर अपने पलँग के नीचे उसे छिपा रखता। प्रायः नौ बजे से पहले ही वह थैले को छिपाकर ले जाता और स्कूल खुलने से पहले ही वहाँ जा पहुँचता। वह यह अनुभव करने लगा था कि स्कूल के विद्यार्थियों को यह विश्वास होने लगा है कि उनकी इस दशा में आवश्यकताएँ उस द्वारा पूरी हो सकती हैं। इस विश्वास का परिणाम था कि उसकी बिक्री धीरे-धीरे बढ़ रही थी।

: ८ :

सेठ जी कलकत्ते से लौटे तो पुनः रेखा के विवाह की चर्चा चलने लगी। इस चर्चा में एक बात विशेष हो गई। सेठ कमलापति को जब यह पता लगा कि कानपुर वालों का लड़का कमलचन्द्र एक दिन चुपचाप रेखा को देखने चला आया था, तो यह बात उनको पसन्द नहीं आई। उन्होंने इस विषय पर अपनी नाराजगी सेठ केसरचन्द्र को लिख दी। कमलचन्द्र की इस हरकत को उसके पिता ने भी पसन्द नहीं किया और उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलापति से क्षमा माँगी। इस क्षमा के पश्चात् बात पुनः आरम्भ हो गई। इस बातचीत में सुन्दरदास विशेष रुचि प्रकट कर रहा था।

एक दिन सतीश सायंकाल आकर अपना थैला पलँग के नीचे छिपा रहा था कि रेखा उसके कमरे में आ गई। रेखा ने पूछ लिया, "यह क्या कर रहे हो भैया?"

सतीश पलँग के नीचे से निकलकर रेखा की ओर मुस्कराते हुए देख कहने लगा, "अपने भविष्य की योजना को अपने विरोधियों की आँखों से छिपा रहा हूँ।"

रेखा इसका अर्थ नहीं समझी। वह प्रश्न-भरी दृष्टि से सतीश की ओर देखती रही। सतीश स्वयं कुर्सी पर बैठा और रेखा को बैठाकर कहने लगा, "मामा से मेरा झगड़ा हो गया था। उसके अधीन कार्य करने में मैं अपने जीवन को व्यर्थ गँवाने के समान समझता हूँ। पिता जी का कहना है कि जब तक मैं मामा जैसे चतुर मैनेजर के अधीन काम नहीं कर लेता, मुझ पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अतः मैंने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय बिना मामा तथा पिता जी को बताए आरम्भ कर दिया है—केवल बीस रुपए की पूँजी से। यह काम करते हुए मुझे एक मास के लगभग हो चुका है और बीस रुपए के अब तक पचास रुपए हो गए हैं।"

रेखा सतीश को विस्मय में देखती रह गई। उसने कुछ विचार कर पूछा, "क्या बेचते हो भैया?"

"पैन्सिलें, कापियाँ, रबड़, रूल इत्यादि। अब तो छः-सात रुपए नित्य की बिक्री होने लगी है।"

"यह तो कुछ नहीं।"

"परन्तु इससे मेरा अनुभव बढ़ रहा है। मैं माल खरीदने स्वयं जाता हूँ और कौन-सा माल बढ़िया और वह कहाँ से सस्ता मिल सकता है, जान गया हूँ। इसी प्रकार किस माल की अधिक माँग है, पता चलता जाता है। मैं स्कूल अधिकारियों से कहकर अपना सामान वहाँ पर ही रखने का प्रबन्ध कर रहा हूँ।"

"वे जानते हैं कि तुम कौन हो?"

"नहीं, मैंने नहीं बताया। वे तो केवल यह समझते हैं कि मैं एक निर्धन युवक हूँ और अपने परिश्रम से अपनी जीविकोपार्जन कर रहा हूँ।"

"पर मैं तो तुमसे एक और बात कहने आई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि कानपुर वाले मेरी डाँट-डपट पड़ने पर भी विवाह के लिए राजी हो गए हैं। मामा नित्य कानपुर जाते हैं और लेन-देन की बात कर रहे हैं। ऐसे कमीने परिवार से संबंध बनाना तो मुझे और भी घृणित बात प्रतीत हो रही है।"

"रेखा, तुम क्या चाहती हो?"

"मैं यहाँ विवाह करना पसन्द नहीं करती। यदि पिताजी नहीं माने तो मैं अनशन करके प्राण दे दूँगी।"

सतीश यह सुन काँप उठा। उसने कहा, "नहीं, यह नहीं होगा। तुम चुप रहो। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विवाह में बाधा खड़ी करने का यत्न करूँगा।"

रेखा को इससे सन्तोष हुआ। परन्तु सतीश की समझ में नहीं आया कि किस प्रकार बाधा खड़ी करे। वह भोजन के लिए गया तो सुन्दरदास भी वहाँ आया हुआ था। सेठ कमलापति ने सुन्दरदास से पूछा, "क्यों सुन्दरदास! अब तो सतीश ठीक चल रहा है?"

"ठीक कहाँ चल रहा है? मैं तो इसका मुख आज एक महीने के बाद देख रहा हूँ।"

"तो यह नित्य कहाँ जाता है?"

"क्यों, घर पर नहीं रहता?"

सतीश आँखें नीची किए भोजन कर रहा था। रेखा भी समझ रही थी कि सतीश का भेद खुलने वाला है।

सेठ जी ने कहा, "यह नित्य सवेरे नौ बजे से पहले निकल जाता है और रात को घर आता है।"

"सतीश!" सेठ ने डाँटकर पूछा, "कहाँ जाते हो?"

सतीश ने आँखें उठाईं और नपे-तुले शब्दों में कह दिया, "काम सीखने के लिए एक दुकान पर काम करने जाता हूँ।"

"क्या मिलता है वहाँ से?"

"जी, मैं नौकरी नहीं करता। उस दुकान पर काम सीखता हूँ—माल खरीदना और बेचना।"

"तो तुम दुकानदार बनोगे?" सुन्दरदास ने पूछ लिया।

"विचार तो यही है।"

"यह भी ठीक है। जब काम की समझ आ जाएगी तो बताना। सेठ जी से कहकर एक अच्छी-सी दुकान का प्रबन्ध कर दूँगा।"

सतीश ने सुख की साँस ली। वह बिना झूठ बोले छूट गया था। इससे उसको बात करने का साहस आ गया। उसने कहा, "मामा जी को काम समझाने के लिए अवकाश नहीं था। ये तो दिन-रात रेखा की सगाई के लिए कानपुर बैठे रहते हैं। इस कारण मैंने किसी अन्य स्थान पर अनुभव प्राप्त करने के लिए काम करना आरम्भ कर दिया है।"

"हाँ," सेठ जी ने सुन्दरदास की हिमायत करते हुए कहा, "रेखा का विवाह हो जाए तो सिर से भारी बोझ उतरे।"

"परन्तु पिता जी! क्या रेखा का बोझ बहुत है? कितना महीने में खा जाती होगी वह?"

"खाने की बात नहीं सतीश! खाली बैठे रहने से मन की दशा बिगड़ जाती है और बिगड़ा मन क्या कर लेगा, कहना कठिन है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कर सकती है वह? पिताजी! वह कानपुर वालों के घर नहीं जाना चाहती।"

"क्यों, क्या बुराई है उनमें?"

"वे लोभी, मूर्ख और सब के सब कुरूप हैं।"

"ऐसा तो सब संसार है।" सुन्दरदास ने कह दिया।

"मामा जी! अन्धे को सब अन्धे प्रतीत होते हैं। आप रेखा को सज्ञान हो जाने दीजिए। तब वह स्वयं अपने अनुरूप वर ढूँढ लेगी।"

"अपने-आप?"

"मैं सहायता कर दूँगा। और भी लोग हैं जो भले लोगों की सहायता करने को तैयार रहते हैं।"

"रामनिरंजन की बात कह रहे हो क्या?"

"देखिए मामा जी! रामनिरंजन का मैंने नाम भी नहीं लिया और वह रेखा को तो बहिन समझता था। आप यह समझते हैं कि उसके अतिरिक्त संसार में अन्य कोई भला व्यक्ति है ही नहीं?"

"हमें तो दिखाई नहीं देता।"

"हाँ, कुएँ के मेंढक के लिए तो संसार कुएँ की दीवारों तक ही सीमित दिखाई देता है। पिताजी! मैं तो यही कहूँगा कि विवाह करने में जल्दी न की जाए।"

"देखो सतीश! हमने निश्चय किया है कि सगाई अगले सप्ताह में हो जाए। विवाह एक वर्ष पश्चात् होगा। इस काल में हम इस परिवार के विषय में भली-भाँति ज्ञान प्राप्त कर लेंगे।"

"मेरा सुझाव है कि दो वर्ष पश्चात् हो। एक वर्ष में ठीक ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।"

सुन्दरदास हँस पड़ा। उसने कहा, "न मालूम करना हो तो पचास वर्ष में भी कुछ पता नहीं चल सकता और यदि जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हो तो एक दिन में हो सकती है।"

इस वाद-विवाद से एक बात का निश्चय हो गया कि विवाह, सगाई के पश्चात् एक वर्ष तक नहीं होगा। सतीश का विचार था कि यह उसके प्रयत्नों का फल है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था।

जब सेठ जी कलकत्ते से लौटे थे, उनकी आर्थिक अवस्था बिगड़-सी रही थी। बैंकों का "ओवर ड्राफ्ट" पूरा हो चुका था। बैंक इसकी सीमा को बढ़ाने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। भिन्न-भिन्न कम्पनियों के हिस्सों की कीमतें कम हो गई थीं। कुछ ऐसी कम्पनियों में रुपया लग चुका था, जो चल नहीं रही थीं अथवा घाटे में चल रही थीं।

आटा-मिल भारी आय देने वाली वस्तु थी, परन्तु दो वर्षों से वह भी घाटे में जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी। हिसाब की जाँच-पड़ताल के लिए सेठ जी ने "चार्टर्ड अकाउँटेंट" नियुक्त किए थे और उनकी रिपोर्ट की उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी।

इस अवस्था में रेखा के विवाह के लिए सुन्दरदास ने ऐसा परिवार ढूँढा था, जो सगाई और विवाह पर बहुत-कुछ माँग रहा था। वे चाहते थे कि सगाई पर उनको सवा लाख मिलना चाहिए और विवाह पर पाँच लाख नकद। लड़की के भूषण-वस्त्र पृथक्।

सुन्दरदास ने भाग-दौड़कर सवा लाख का प्रबन्ध कर दिया था और सगाई की तैयारियाँ वेग से चल रही थीं।

ये सब बातें रेखा और सतीश को विदित नहीं थीं, इस कारण दोनों प्रसन्न हो रहे थे कि उन्होंने पिता जी को विवाह एक वर्ष के लिए स्थगित करने पर तैयार कर लिया है।

उस रात खाने के पश्चात् रेखा ने सतीश को कहा, "भैया! धन्यवाद। यदि इसी ढंग से कुछ दिन तक बात चलती रही तो हम सफल हो जाएँगे।"

सतीश निश्चिन्त हो अपने व्यवसाय की वृद्धि में लीन हो गया। अभी तक वह स्कूल के ही बाहर खड़ा होकर दुकानदारी करता था। इस पर भी उसके पास माल, जो आरम्भ से बीस रुपए में खरीदा गया था, अब साठ-सत्तर रुपए के मूल्य का हो गया था। वह सब का सब नित्य उठाकर लाना न तो संभव था और न ही कंधे से लटकाकर बेचना आसान था।

स्कूल के हैडमास्टर से बातचीत करने पर उसे स्कूल के बरामदे में पाँच रुपए मासिक भाड़े पर एक अल्मारी मिल गई। स्कूल खुलने से पूर्व वह अल्मारी से सामान निकालकर बाहर स्कूल के लॉन में अथवा बरामदे में रख लेता था और बेचता था। बिक्री दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी और वह पूर्ण लाभ को पूँजी में परिवर्तित कर रहा था। इस कारण दुकान बड़ी से बड़ी हो रही थी।

रेखा की सगाई चुपचाप दोनों परिवारों के कुछ मित्रों और सम्बन्धियों के समक्ष हो गई। सेठ कमलापति ने सेठ केसरचन्द्र के नाम सवा लाख रुपए का चैक लड्डुओं की एक परात पर रखकर दे दिया।

: ९ :

स्कूल के अधिकारियों को सतीश की दुकानदारी में विद्यार्थियों का हित प्रतीत हुआ। सतीश बाजार से वस्तुएँ सस्ती बेचता था और फिर जिस प्रकार का सामान अध्यापक लड़कों के लिए चाहते थे, उसी प्रकार का वह लाकर देता था। अतः स्कूल के पीछे चपरासियों के क्वार्टरों में उसे दुकान खोलने की स्वीकृति दे दी गई और बीस रुपए मासिक भाड़ा नियत कर दिया गया।

सतीश को दुकान खोले चार मास व्यतीत हो चुके थे। उसकी पूँजी बीस रुपए से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़कर पाँच सौ के लगभग हो चुकी थी। नित्य चालीस-पचास की बिक्री होने लगी थी। सतीश अब पाठ्य-पुस्तकें भी लाकर रखने लगा था। पाठ्य-पुस्तकें उधार पर मिल जाती थीं और अच्छा लाभ देती थीं।

एक दिन सतीश सामान खरीदकर ताँगे में ला रहा था कि सामने से रामनिरंजन दूध बेचकर नगर से आता हुआ मिल गया। वह सतीश को आता देख खड़ा हो गया और उसको हाथ के संकेत से खड़ा करके पूछने लगा, "सतीश! यह क्या हो रहा है?"

"तुम लोगों की नकल।"

"क्या मतलब?"

"मैंने पिताजी से छुपे-छुपे एक दुकान कर ली है। उस दुकान में बीस रुपए की पूँजी डालकर कार्य आरम्भ किया था। अब उसकी पूँजी पाँच सौ के लगभग हो चुकी है और एक सहस्र की पुस्तकें और कुछ अन्य सामान उधार पर मिला है। स्कूल में बारह-तेरह सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं और सब मेरे व्यवहार तथा दुकानदारी से प्रसन्न हैं।"

"तो तुम नित्य यहाँ आते हो?"

"हाँ, दुकान सवेरे साढ़े नौ बजे से तीन बजे तक खोलता हूँ। पश्चात् मैं सामान खरीदने बाजार चला जाता हूँ। अब सामान खरीदकर ला रहा हूँ। लाभ एक आना प्रति रुपया से चार आने तक हो जाता है और पचास-साठ रुपए की बिक्री लगभग रोज हो जाती है। इससे सात-आठ रुपए रोज के बच जाते हैं। मैं अभी अपने खर्च के लिए दुकान में से कुछ नहीं निकाल रहा। खाने-पहनने के लिए घर से मिल ही जाता है।"

"अब सामान रखकर कहाँ जाओगे?"

"घर जाऊँगा।"

"हमारे घर चलो तो वहाँ बैठें। यहाँ से समीप ही है।"

सतीश ने कुछ विचार कर कहा, "ठीक है, चलता हूँ, देखूँगा आपने कितनी प्रगति की है?"

"तो सामान छोड़ आओ। मैं स्कूल के बाहर प्रतीक्षा करूँगा।"

सतीश रामसुमन के व्यवसाय में और भी अधिक उन्नति देख चकित रह गया। रामसुमन ने बताया, "पाँच बछड़ियाँ और बियाई हैं। हमने पाँच नई गौएँ भी मोल ली हैं। इस प्रकार हमारे पास इस समय दूध देने वाली गौओं की संख्या चालीस हो गई है।"

रामसुमन ने यह भी बताया कि मलीहाबाद वाली भूमि के चारों ओर तार लगवा दी है। उसमें जानवरों के लिए तबेले और अपने रहने के लिए मकान बनवाने आरम्भ कर दिए हैं। लगभग एक वर्ष तक वहाँ सारा प्रबन्ध पूर्ण हो जाएगा और पश्चात् वे वहाँ चले जाएँगे।

"कितनी लागत आ जाएगी उस इमारत पर?" सतीश का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"काम चालू करने के लिए पन्द्रह हजार लग जाएँगे। रामाश्रय की पूर्ण योजना तो एक लाख रुपए की है। उसका विचार है कि हमारी वह गौशाला सब आधुनिक ढंग के उपकरणों से युक्त हो।"

इसकी तुलना सतीश अपने काम से कर रहा था। वह समझता था कि उसका काम तो इनके सम्मुख एक बच्चों का खेल है। फिर भी वह हतोत्साह नहीं हो रहा था।

सतीश को आया देख भगवती आ गई। उसने सेठानी जी और रेखा का सुख-समाचार पूछा तो सतीश ने रेखा की सगाई का समाचार सुना दिया। साथ ही उसने बताया कि रेखा इस स्थान पर विवाह नहीं करना चाहती।

भगवती ने छूटते ही कह दिया, "तो उसका विवाह नहीं होना चाहिए। यदि कोई उसकी इच्छा के बिना विवाह करेगा तो भारी अनिष्ट हो सकता है। वह साक्षात् लक्ष्मी है, उसको रुष्ट करने का फल ठीक नहीं हो सकता।"

सतीश रेखा के विषय में यह भाव सुन अवाक् रह गया। उसको चुप देख भगवती ने भोजन करने के लिए कह दिया। रामनिरंजन ने भी कहा, "सतीश भैया! यदि हम निर्धनों का खाना खा सको तो खाओ। मकई की मोटी-मोटी रोटी और बथुए का साग होगा।"

"डरो नहीं सतीश! साथ कुछ मीठा भी दूँगी।" भगवती ने कहा।

सतीश हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "काकी! कुछ भी दो, सब खा सकता हूँ। अब तो मैंने भी आपकी भाँति अपना काम शुरू कर लिया है।"

"सत्य?"

"हाँ काकी! और यह जानकर तुमको प्रसन्नता होगी कि बीस रुपए की पूँजी से काम आरम्भ कर अब हजारों का माल बेच लेता हूँ।"

"बहुत खूब!" रामसुमन ने उसको उत्साहित करने के लिए कह दिया, "हमने एक बात निश्चय कर रखी है कि किसी दिन भी आय से अधिक व्यय नहीं करेंगे। हमारी अवस्था में तो एक दिन की इकाई ठीक कार्य कर रही है। परन्तु कभी-कभी महीने अथवा वर्ष की इकाई मानकर भी आय-व्यय का संतुलन रखा जा सकता है। यह संतुलन ही है जो हमारी उन्नति में सहायक होता है।"

रामनिरंजन ने पूछा, "सतीश! जब पिताजी को पता चलेगा कि उन जैसे लखपति का बेटा यह दुकान कर रहा है तो वे क्या कहेंगे?"

"वे बहुत नाराज होंगे। परन्तु मैं तो एक परीक्षण कर रहा हूँ और उस परीक्षण में लगभग सफल हो गया हूँ। यह ठीक है कि अपनी सारी आय मुझे पूँजी में परिवर्तित करनी पड़ रही है। यदि इसमें से मैं अपने निर्वाह के लिए निकालने लगता तो यह परीक्षण वहीं असफल हो जाता।....

"वैसे इस समय मेरी आय इतनी है कि अपने निर्वाह के लिए निकाल सकता हूँ, परन्तु ऐसा करने पर उन्नति का वेग रुक सकता है। फिर भी यह परीक्षण इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल समझा जाना चाहिए कि एक निर्धन व्यक्ति स्वतन्त्र रूप से कार्य करता हुआ भी धनवान बन सकता है।"

इस पर भगवती ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "सतीश! यह तुमको किसने बताया है कि धनी और निर्धन ऐसी जातियाँ हैं, जो भेड़-बकरियों की तरह एक-दूसरे में बदल नहीं सकतीं? धनी निर्धन हो सकते हैं और निर्धन धनवान—यह बात तो हम बहुत पहले से ही जानते थे।"

"और तब से ही," रामसुमन ने गम्भीर होकर कहा, "हम धनवान बनने का यत्न कर रहे थे। देखो सतीश, जब मैं तुम्हारे पिताजी के घर नौकर हुआ तो उसी दिन विचार करने लगा था कि इस बीस रुपए मासिक में मैं क्या कर सकूँगा। रामजी की कृपा से, मेरे मन में तब ही यह स्फुरित हुआ था कि कुछ भी हो, धनवान बनना असम्भव नहीं। मुझे उचित ढंग से उपाय करना चाहिए। जानते हो मैंने क्या किया था? मैंने अपनी आय को बीस रुपए से अधिक करने का यत्न किया। दो-तीन रुपए मासिक से मैं अधिक नहीं बचा सकता था। मैंने निरंजन की माँ से कहा था—"देखो भाग्यवान! बीमार नहीं होना। नहीं तो पूर्ण योजना असफल हो जाएगी। अतः हमने संयम से नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया और धैर्य से धन जमा करने लगे। डेढ़ वर्ष में मेरे पास साठ रुपए जमा हुए तो मैं एक गाय मोल ले आया और उसका दूध तथा गोबर के उपले बेच-बेचकर अपनी आय में वृद्धि करने लगा।····

"यह वृद्धि रामनिरंजन और पश्चात् रामाश्रय के उत्पन्न होने से रुक गई। इनका पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा में मेरी पूर्ण आय व्यय होने लगी। बहुत कठिनाई से एक गाय को रख सका। जब गाय दूध देना बन्द कर देती तो उसको कम दाम पर बेचकर एक नई ब्याई गाय ले आता था। वास्तव में मैं जानता था कि लड़कों का पालन-पोषण करके मैं अपनी पूँजी बढ़ा रहा हूँ। मेरा विचार ठीक निकला। रामनिरंजन ने मैट्रिक पास की तो परिवार की आय बढ़ गई। मैंने उस बढ़ी हुई आय से अपनी पूँजी में वृद्धि की। परिणाम तुम देख रहे हो। अब रामाश्रय मलीहाबाद में गौशाला निर्माण करा रहा है। उसका ज्ञान और इस गौशाला में प्राप्त अनुभव दोनों पूँजी का काम कर रहे हैं। यदि भगवान की कुदृष्टि न हुई तो मैं अपने युवावस्था के स्वप्न इस जीवन में ही साकार कर सकूँगा।"

सतीश ने एक बात, जो बार-बार उसके मन में आ रही थी, कह दी, "काका! क्या इतना-कुछ करने पर भी तुम धनियों की बिरादरी में जा सकोगे?"

रामसुमन हँस पड़ा। उसने एक बात कही, "नहीं! मैं भगवान से सदा प्रार्थना करता रहता हूँ कि वह मुझको उन-जैसा कभी न बनाए। मैं तो धनवान बनकर धन का उपयोग, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में करना चाहता हूँ, न कि वर्तमान धनियों की भाँति मूर्ख, गँवार, अभिमानी, लोभी और स्वार्थी बनना।"

सतीश अपने मामा तथा पिता का चित्र इस प्रकार खेंचा जाता देख लज्जा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल हो गया। किन्तु वह जानता था कि यह कितना सत्य है। उसे चुप देखकर रामनिरंजन को ज्ञान हुआ कि सतीश को धनियों के विवेचन से दुःख हुआ है। इस कारण उसने बात बदलने के लिए कह दिया, "सतीश! रविवार को तुम काम पर नहीं जाते?"

"नहीं, उस दिन स्कूल बंद होता है और मेरे लिए कुछ काम नहीं होता।"

"तो इस रविवार को तुम हमारे साथ मलीहाबाद चलो। मैं तुमको रामाश्रय का निर्माण-कार्य दिखाऊँगा। आजकल वह वहाँ पर ही रहता है और अति वेग से काम करवा रहा है।"

"काकी!" सतीश ने बात बदल दी, "रेखा की तुमसे मिलने की बहुत इच्छा है, परन्तु पिताजी उसको यहाँ आने की स्वीकृति नहीं देते।"

"यह तो मिलने में बाधा नहीं हो सकती। रेखा को यहाँ आने की आवश्यकता नहीं। एक निश्चित दिन तथा समय पर अमीनाबाद में मिल सकते हैं।"

"यह ठीक है।"

: १० :

किन्तु रेखा और काकी का मिलन नहीं हो सका। घटना-चक्र तीव्र गति से घूम गया।

ज्यों-ज्यों रेखा के विवाह का प्रबन्ध किया जा रहा था, सुन्दरदास की आँखें बदलती जाती थीं। जिस दिन सेठ कमलापति और सुन्दरदास सगाई कर कानपुर से लौटे तो सुन्दरदास ने एक कागज पर सेठ जी के हस्ताक्षर माँगे। सेठ जी ने पूछा, "यह क्या है?"

"यह एक प्रतिज्ञा-पत्र है जिसके द्वारा मिल की इमारत और मशीनरी बैंक वालों की संरक्षा में रहेगी और बैंक वाले एक लाख के 'ओवर ड्राफ्ट' को बढ़ाकर अढ़ाई लाख कर देंगे।"

"परन्तु इतने रुपए के 'ओवर ड्राफ्ट' की आवश्यकता क्या है?"

"कदाचित् आवश्यकता पड़ जाए। इस वर्ष गेहूँ की उपज का दाम बढ़ जाने की संभावना है। इस कारण गेहूँ फसल पर क्रय करने की आवश्यकता पड़ सकती है।"

"इस समय बैंकों में कितना रुपया है?"

"यह तो देखकर ही बता सकता हूँ।"

"मेरे विचार में पाँच-छः लाख होना चाहिए।"

"जी नहीं, मैं समझता हूँ कि बैंक से रुपया उधार आ चुका है।"

"अच्छी बात है। कल हिसाब दिखाना और बैंक की पासबुक ले आना।"

"मुझको भय है कि यदि यह प्रतिज्ञा-पत्र आपने बैंक वालों को जल्दी न भेजा तो कानपुर वालों को दिए चैक का भुगतान न हो सकेगा। बैंक वाले चैक लौटा देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुन कमलापति घबरा गया। कई मास के यत्न से इस सगाई का प्रबन्ध हुआ था और यदि उनको दिए हुए चैक का रुपया न मिला तो सगाई टूट जाएगी। कमलापति ने चुपचाप उस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

इस हस्ताक्षर करने के पश्चात् कमलापति ने सोचा कि मिल की ओर ध्यान न देने के कारण प्रबन्ध ठीक नहीं हो रहा। उसने निश्चय किया कि वह अगले दिन मिल में जाकर हिसाब-किताब का स्वयं निरीक्षण करेगा। इस समय उसको सतीश का स्मरण हो आया। सतीश घर पर नहीं था। सेठानी से पूछने पर पता चला कि वह अपनी दुकान से अभी लौटा नहीं। अब सेठजी को स्मरण हो आया कि वह किसी दुकान पर काम सीखने जाता है। आज सेठजी के ध्यान में आया कि जब इतना बड़ा काम अपना है तो उसके काम सीखने के लिए किसी अन्य की दुकान पर जाने की आवश्यकता क्यों पड़ गई? वह उत्सुकता से सतीश के दुकान से लौटने की प्रतीक्षा करने लगा।

सतीश उस दिन रामनिरंजन के साथ उसके घर चला गया था और उसने वहीं भोजन किया था। अतएव वह रात के दस बजे घर लौटा।

सेठ जी चिन्ता में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनको विश्वास था कि सतीश भोजन के समय तक अवश्य आ जाएगा, परन्तु सतीश नहीं आया। जब वह रात को लौटा तो सेठजी उसके कमरे में जा पहुँचे। सतीश कपड़े बदल रहा था। वह पिताजी को वहाँ आया देखकर विस्मय में पड़ गया। ऐसा बहुत कम होता था।

रेखा और उसकी माँ भी आ गईं। दोनों अपने-अपने स्थान पर चिन्तित थीं। सतीश भोजन के समय कभी अनुपस्थित नहीं रहा था। जब सतीश ने अपने कमरे में बिजली जलाई तो दोनों वहाँ आ पहुँचीं। वहाँ सेठजी को पहले ही पहुँचा देखकर वे दरवाजे पर खड़ी हो गईं।

सेठजी ने पूछ लिया, "सतीश, आज भोजन के समय नहीं आए। कहाँ गए थे?"

"काम से आ रहा था कि रामनिरंजन मिल गया और अपने घर ले गया।"

"वहाँ क्या था?"

"उनका काम-धन्धा था। उसमें प्रगति देखने की इच्छा हो रही थी।"

"क्या प्रगति हुई है उनके काम में?"

"मलीहाबाद की भूमि पर वे नई गौशाला बना रहे हैं। उस पर एक लाख रुपए की लागत का अनुमान है।"

"यह सब रुपया उनके पास कहाँ से आ रहा है?"

"उनके व्यवसाय में से निकल रहा है।"

"सब बकवास है! रामसुमन अठारह वर्ष तक मेरी नौकरी में रहा है और उस समय भी गाय का दूध बेचता था। उन अठारह वर्षों में उसके पास एक पैसा एकत्रित नहीं हुआ। अब पाँच वर्षों में लाखों एकत्रित हो गए। यह कैसे हो सकता है!"

"रामसुमन का कहना है कि तब भी वह अपने व्यवसाय के लिए पूँजी एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा था। रामनिरंजन और रामाश्रय को शिक्षा देकर योग्य बनाना भी वह पूँजी एकत्रित करने के तुल्य मानता है।"

सेठजी को सतीश के विषय में स्मरण हो आया। उन्होंने कहा, "और हमने जो अपने लड़के को शिक्षा दी है, वह पूँजी नहीं है क्या?"

इसका उत्तर सतीश ने दिया। उसने कहा, "है तो वह भी पूँजी।" सतीश यह कहते हुए अपने व्यापार का विचार कर रहा था। उसने यह बात साथ जोड़ दी, "परन्तु जब पूँजी का प्रयोग न किया जाए तो वह केवल धन रह जाता है, ज़ो लाभ नहीं देता।"

"तुमको भेजा तो था आटा-मिल में काम करने के लिए।"

"एक ऐसे व्यक्ति के पास, जिसने आपके धन को मिट्टी का ढेला मात्र ही समझा है। वह, जहाँ तक मेरा ज्ञान है, आपके धन को व्यर्थ बरबाद कर रहा है।"

"सतीश! इसका प्रमाण क्या है?"

"प्रमाण तो वहाँ का हिसाब-किताब देखने से ही प्राप्त हो सकते हैं।"

सेठजी आज इस आरोप का इतने बल से प्रतिरोध नहीं कर सके जितना एक बार पिछले दिनों किया था। इस कारण उन्होंने कहा, "तो कल तुम मेरे साथ चलना। मैं उसका हिसाब-किताब देखने जा रहा हूँ।"

"परन्तु पिता जी! मेरे पास अवकाश नहीं है। मैं अपने उन्नत व्यापार को बिगाड़ना नहीं चाहता।"

"तुम्हारा व्यापार! कौन-सा व्यापार?"

"मैंने एक छोटी-सी दुकान का आयोजन किया है।"

"कहाँ? कैसे? रुपया कहाँ से लाए हो?"

"डी० ए० वी० स्कूल में कापियाँ, पैन्सिलें और अन्य पढ़ाई का सामान बेचता हूँ। बीस रुपये की पूँजी से काम आरम्भ किया था। अब पाँच सौ रुपया तो मेरा अपना है। एक सहस्र से अधिक का माल उधार का है। लगभग चालीस-पचास रुपये नित्य की बिक्री हो जाती है।"

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

"आपके पास मेरे इस प्रयोग के सुनने के लिए समय ही कहाँ था?"

"अच्छा, कल मेरे साथ चलना होगा।"

सतीश चुप रहा। माँ ने कहा, "सतीश, भोजन करो।"

"माँ! मैं खा आया हूँ।"

"खा आए हो? कहाँ से?"

"निरंजन की माँ ने बहुत आग्रह किया तो अस्वीकार नहीं कर सका।"

उसके पिता ने कहा, "क्या अब इतना साहस हो गया है उसका कि जिनका नौकर था उसी के लड़के को निमन्त्रण दे? क्या खिलाया था उन्होंने?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मकई की रोटी थी और खोए की मिठाई थी। यूँ तो बथुए का साग भी था, परन्तु मुझे तो मिठाई बहुत पसन्द आई थी।"

"देखो सतीश!" सेठजी ने उठते हुए कहा, "तुम उनके यहाँ न जाया करो। हैसियत का भी विचार करना चाहिए।"

सेठजी यह कहकर कमरे से बाहर चले गए।

सतीश को अपने पिता का कथन सुनकर रामसुमन की बात याद आ गई। रामसुमन ने कहा था, "मैं वर्तमान काल के धनियों की भाँति मूर्ख, गँवार, अभिमानी, लोभी और स्वार्थी बनना नहीं चाहता। सतीश यह सोचकर अपने पिता के अभिमान पर लज्जा अनुभव करने लगा।

सेठजी के साथ सतीश की माँ भी चली गई। रेखा अभी भी वहाँ एक कुर्सी पर बैठी थी। सतीश कपड़े बदलकर सोने के लिए तैयार बैठा था। रेखा ने पूछ लिया, "निरंजन भैया कैसे हैं?"

"बिल्कुल ठीक हैं। उसके माता-पिता भी अब बहुत प्रसन्न और सम्पन्न मालूम होते हैं।"

"भैया! क्या धन आते ही सब लोग अभिमानी और मूर्ख हो जाते हैं?"

सतीश रेखा के इस प्रश्न को सुनकर इसका अर्थ समझने का यत्न करता हुआ चुप रहा। रेखा ने अपने कहने का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कह दिया—

"पिताजी ने कैसी अयुक्ति-संगत बात की! जो कभी अपने यहाँ नौकर रह चुका है, क्या उसके यहाँ खाने में लज्जा आनी चाहिए?"

सतीश ने कहा, "रेखा! मुझे वहाँ खाना खाने में तनिक भी लज्जा नहीं आई। उनकी मकई की रोटी गाय के शुद्ध घी के साथ ऐसी स्वादु वस्तु लगी थी कि तुम्हें क्या बताऊँ!"

"भैया निरंजन से मिलने को जी चाहता है।"

"काकी का कहना था कि अपने माता-पिता को नाराज़ कर वहाँ आने की आवश्यकता नहीं। वे स्वयं एक निश्चित दिन और समय पर तुमसे अमीनाबाद पार्क में मिलने आ जाएँगे।"

"भैया! समय और दिन निश्चित कर उनसे कह दो।"

"कल तो पिताजी के साथ मिल में जाना है। वहाँ से लौटकर ही बात कर सकूँगा।"

: ११ :

अगले दिन सेठजी सतीश को लेकर प्रातः आठ बजे ही आटा-मिल में जा पहुँचे। मिल चालू हो चुका था। कार्यालय नौ बजे खुलता था। इस कारण सेठ तथा सतीश मिल का निरीक्षण करने चले गए। मिल में कई चक्कियाँ बन्द थीं। उनका कोई-न-कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुर्जा टूट चुका था। सेठजी के पूछने पर पता चला कि उनमें से कई चक्कियाँ तो एक-एक महीने से बन्द हैं और उनकी मरम्मत नहीं हो रही। कर्मचारियों ने यह भी बताया कि कभी तो चक्कियाँ गेहूँ न होने के कारण भी बन्द रहती हैं।

सेठजी इस सूचना से क्रोध से भर गए। इस पर भी कर्मचारियों के सम्मुख कुछ न कहते हुए वे पिता-पुत्र मिल देखते रहे।

ठीक नौ बजे वे कार्यालय में जा पहुँचे। कार्यालय खुल चुका था, परन्तु सुन्दरदास अभी नहीं आया था। सेठ जी ने पूछ लिया, "मैनेजर साहब कहाँ हैं?"

हैड क्लर्क ने कहा, "वे प्रायः दस बजे आया करते हैं।"

हैड क्लर्क ने झूठ बोला था। सुन्दरदास प्रायः ग्यारह-बारह बजे से पहले नहीं आता था। उसकी अनुपस्थिति में हैड क्लर्क ही काम किया करता था।

सेठ जी सुन्दरदास की कुर्सी पर बैठ गए और सतीश उनके पीछे एक अन्य कुर्सी लेकर बैठ गया। सेठजी ने क्लर्क से पूछ लिया, "बैंक की पासबुक कहाँ है?"

"वह तो उनके अपने दराज़ में रहती है।"

"तुम लेजर दिखाओ।"

हैड क्लर्क सेठजी को इन्कार नहीं कर सका। यदि सतीश माँगता तो वह इन्कार कर देता। परन्तु सेठजी को 'न' करना तो भयरहित नहीं था। उसने लेजर लाकर मेज़ पर सेठजी के सामने रख दी। बैंक का खाता निकाला गया। उसमें रकमें भरी हुई नहीं थीं। उस दिन से पन्द्रह दिन पूर्व तक की ही रकमें लिखी थीं, पश्चात् कुछ नहीं था।

यह देखकर सेठजी चकित रह गए। वह सुन्दरदास से ऐसी बुरी अव्यवस्था की आशा नहीं रखते थे। सेठ जी ने स्टॉक-रजिस्टर माँगा। स्टॉक में गेहूँ नहीं था और अभी मिल चल रहा था तथा गेहूँ पिस रहा था। सेठजी ने हैड क्लर्क से पूछ लिया, "क्या एक-आध दिन के भीतर गेहूँ आया है?"

"मैं नहीं जानता।"

"इसका क्या अर्थ है? क्या बिना कार्यालय में सूचना आए भी कभी अनाज आता है?"

"मैं नहीं जानता। यहाँ से जो कुछ भी सूचना प्राप्त होती है, किताबों में लिख ली जाती है।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि क्या एक-दो दिन में कहीं से गेहूँ आने की सूचना कार्यालय में मिली है?"

हैड क्लर्क उत्तर देने के लिए विवश हो गया। उसने कहा, "जी, यहाँ कोई सूचना नहीं आई।"

"तो मिल में क्या पिस रहा है? स्टॉक में तो एक बोरा भी गेहूँ नहीं है?"

"मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। मैनेजर साहब आने ही वाले हैं और वे इस बात पर प्रकाश डाल सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात का निश्चय हो गया था कि सुन्दरदास बहुत ही निकृष्ट प्रबन्धक था। सतीश, जो अभी तक चुपचाप देख और सुन रहा था, कहने लगा, "पिताजी ! आज तो आपको मेरे कहने का प्रमाण मिल गया है न?"

"तो तुम कहते हो कि वह चोर है ?"

"जी, और यह अनियमितता यही प्रकट करती है।"

"उसे आने दो। कदाचित् वह यह सब समझा सके।"

सतीश चुप रहा। पिता-पुत्र, दोनों कार्यालय में बैठे सुन्दरदास की प्रतीक्षा करने लगे। वे बारह बजे तक बैठे रहे, किन्तु सुन्दरदास नहीं आया। इस समय सेठजी ने यही विचार किया कि वे कोठी में लौट जाएँ और सायं तीन बजे पुनः आएँ। जाने से पूर्व एक बार पुनः मिल देखने गए। वहाँ अभी भी काम चल रहा था। सेठजी गोदाम में भी गए। आटा भी था और दुकानदार उठवा भी रहे थे।

सेठ और सतीश चौकीदार के पास पहुँचे। उससे आटा ले-जाने के परमिट माँगे। उसने दिखा दिए अर्थात् आटा बिक रहा था और उसको बाहर ले-जाने के स्वीकृति-पत्र भी जारी किये गए थे।

यह सब देखकर सेठजी को सतीश की बात पर विश्वास-सा हो रहा था। इस पर भी वे चाहते थे कि सुन्दरदास आ जाए तो उसकी बात सुनकर उसके बाद ही अपना व्यवहार निश्चय करें।

अतएव वे पुनः कार्यालय को लौट आए। वहाँ आटे की खरीद हो रही थी। लोग रुपया जमा कराकर रुपए की रसीद ले और आटा मिल से बाहर ले-जाने का स्वीकृति-पत्र ले-जा रहे थे। इससे सेठ जी के मन में पुनः विश्वास बैठ गया। वे समझ गए कि सतीश की बात सत्य नहीं हो सकती। इतनी लूट नहीं हो सकती।

सुन्दरदास अभी नहीं आया था। मध्याह्न के बारह बज चुके थे। अतः सेठजी सतीश को लेकर कोठी को लौट गए।

सुन्दरदास कोठी पर उनकी खोज में आया था और चला गया था। इस समाचार से सेठजी को पुनः चिन्ता लग गई। उन्होंने टेलीफोन से मिल में पूछा कि सुन्दरदास वहाँ आया है कि नहीं? सुन्दरदास वहाँ नहीं था।

भोजन कर सतीश स्कूल में अपनी दुकान पर चला गया। वह दुकान पर से अनुपस्थित रहना नहीं चाहता था, परन्तु इस लोभ में कि सुन्दरदास की बेईमानी के रहस्योद्घाटन में सहायक हो सके, वह प्रातःकाल पिताजी के साथ मिल को चला गया था।

वह सायंकाल घर आया तो सुन्दरदास और सेठ जी घुल-मिलकर बातें कर रहे थे। उन्हें देख सतीश अपने कमरे में चला गया। रेखा उसके कमरे में उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

सतीश ने पूछा, "क्या बात है रेखा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कानपुर वालों का पुरोहित आया था और विवाह की तिथि निश्चित कर गया है।"

"परन्तु पिताजी ने तो कहा था कि विवाह एक वर्ष पश्चात् होगा?"

"एकाएक कुछ हुआ है और मामाजी के साथ पुरोहित आया और बात करके चला गया है। आज रानी आई थी और बधाई देती हुई कह गई है कि माघ सुदी पंचमी का मुहूर्त निकला है।"

उस दिन पौस बदी सप्तमी थी, अर्थात् बारह-तेरह दिन ही बाकी रह गए थे। सतीश यह समाचार सुनकर अवाक् बैठा रह गया। रेखा के मुख पर दृढ़ता की मुद्रा स्पष्ट दिखाई देती थी। उसने केवल यह कहा, "भैया! पिताजी को बता दो कि मैं यहाँ विवाह नहीं कराऊँगी।"

"वे नहीं माने तो क्या करोगी?"

"विचार कर लूँगी। जितना निश्चय हो चुका है उतना तो बता दो। मैंने माताजी को भी कह दिया है।"

सतीश ने समझा कि कदाचित् सुन्दरदास और सेठजी में रेखा के विवाह के विषय में ही बातचीत हो रही है। अतएव वह उठा और जैसा आया था वैसा ही पिताजी के कमरे में उनके पास जा पहुँचा। सुन्दरदास जा चुका था और पिताजी गम्भीर मुद्रा में वहाँ बैठे थे। सतीश एक कुर्सी समीप कर, उस पर बैठ पूछने लगा, "पिताजी, मामा ने बात समझा दी है?"

"हाँ।"

"और आपको उसकी बात का विश्वास हो गया है?"

"हाँ, क्यों?"

"वह बहुत ही धूर्त है।"

"बिना प्रमाण के दोषारोपण मूर्खता है।"

"एक प्रमाण तो मिल ही गया है।"

"किस बात का?"

"उसके कुप्रबन्ध का।"

"उसका उसने कारण बता दिया है। वह आजकल रेखा की सगाई और विवाह के प्रबन्ध में कानपुर आता-जाता रहा है।"

"रेखा का विवाह तो अभी नहीं हो रहा न?"

"विवाह की तिथि निश्चित हो गई है। माघ सुदी पंचमी को विवाह होगा।"

"आपने तो कहा था कि विवाह एक वर्ष पश्चात् होगा?"

"परन्तु मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। इस कारण यही उचित समझा है।"

"परन्तु रेखा तो यहाँ विवाह पसन्द नहीं करती।"

"देखो सतीश! यदि तुम लोगों ने मुझे मारना ही निश्चय कर लिया है तो जो इच्छा हो सो करो। जाओ, बहन-भाई इस बात को समझ लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश उठकर कमरे से बाहर निकल गया। उसने रेखा को, जो कमरे में उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, पूर्ण परिस्थिति और पिताजी की बात सुना दी।

इस पर रेखा चुपचाप उठी और अपने कमरे में चली गई। सतीश उस नई परिस्थिति को विचारकर स्तब्ध बैठा रह गया। जब रात के भोजन का समय आया तो उस समय रेखा अति प्रसन्न दिखाई दी। वह बात-बात पर खुलकर हँस रही थी। सेठ तथा सेठानी रेखा की इस प्रसन्नता को देख सन्तोष अनुभव कर रहे थे।

सतीश चिन्तित था। वह जानता था कि रेखा परिवार की मूर्खता पर हँस रही है। कदाचित् वह अपने व्यवहार का निश्चय कर चुकी है। आज रानी भी वहीं थी और रेखा के समीप बैठी थी। एक बार रेखा की माँ किसी बात पर हँसी तो रानी ने अपना मुख उसके कान के समीप ले-जाकर पूछ लिया, "रेखा ! बहुत प्रसन्न प्रतीत होती हो आज ?"

"हाँ, मेरा विवाह जो हो रहा है !" और वह पुनः हँस पड़ी।

रानी ने कुछ ऐसा समझा कि उसका मस्तिष्क विकृत हो गया है। पागलपन का दौरा उग्र हो रहा है। चिन्तित भाव में उसने कह दिया, "विवाह हो रहा है तो तुम्हें लज्जा लगनी चाहिए।"

"क्यों ? यदि यह लज्जा की बात है तो किया क्यों जा रहा है ?"

एक क्षण के लिए तो रानी निरुत्तर-सी हो उसका मुख देखती रह गई। पश्चात् कहने लगी, "तुम कुछ पागल-सी होती जा रही हो।"

रेखा गम्भीर हो गई। उसने कहा, "सो तो मैं हूँ ही और तुम्हें ही तो सबसे पहले मेरे पागल होने का ज्ञान हुआ था।"

"पगली ! ससुराल जाओगी तो वहाँ भी ऐसे ही व्यर्थ हँसती रहोगी ?"

"वहाँ जाऊँगी तो चुप हो जाऊँगी। बिल्कुल चुप ! यही चाहती हो न ? पर अब तो हँस लूँ।"

रानी ने देखा कि आज तो वह वास्तव में पागलों की-सी बातें कर रही है। इस कारण वह चुप रही।

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
168007

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

रेखा के विवाह की तैयारियाँ धूमधाम से होने लगीं। विवाह में पाँच-छः दिन शेष थे कि मिल से टेलीफोन आया कि सुन्दरदास प्रोनोटों पर बनावटी हस्ताक्षर करने के अपराध में पकड़ लिया गया है।

सेठजी इस समाचार को सुनकर घबराकर दौड़े-दौड़े मिल को गए। सतीश इस विवाह के प्रबन्ध के कारण अपनी दुकान पर नहीं जा रहा था। वह विवाह-कार्य में संलग्न था। उसे कोठी की पुताई, सफाई तथा सजावट का काम दिया गया था। बरामदे में बैठा हुआ वह बिजली लगानेवालों से पूर्ण कोठी में प्रकाश और सजावट के लिए भाव-ताव कर रहा था। सेठजी को घबराकर जाते देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

सतीश बिजलीवालों से भाव-ताव कर सफेदी करनेवालों को जल्दी-जल्दी काम समाप्त करने के लिए कहने लगा। पश्चात् रोगनवालों से उसने बातचीत की। इस प्रकार वह काम में लगा हुआ था।

इधर सुनार भूषण लेकर आया था और रेखा की माँ, भाभी, रानी और अन्य स्त्रियाँ भूषणों को देख पसन्द कर रही थीं। कपड़ेवाले बरामदे में बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे कि सेठानी जी भूषण देख लें तो कपड़े दिखाए जावें।

इस समय सेठजी मिल से लौट आए और टेलीफोन पर मिस्टर माथुर सब-जज से बातचीत करने लगे। सतीश सेठजी का विवर्ण मुख देख उनके समीप आ खड़ा हुआ। सेठजी कह रहे थे, "जितनी भी आप जमानत माँगें, मैं देने को तैयार हूँ।"

जमानत का शब्द सुनकर सतीश के कान खड़े हो गए। वह सतर्कता से सुनने लगा। सेठजी ने टेलीफोन में कुछ सुनकर पूछा, "तो कुछ नहीं हो सकता?····कब तक? ····एक सप्ताह····एक-एक लाख की दो····प्रोनोट कितने के हैं?····दो लाख से ऊपर के हैं?"

सेठजी ने टेलिफोन बन्द किया और वे आराम करने के लिए कुर्सी पर बैठ गए। सतीश ने पूछा, "क्या बात है पिताजी?"

"सुन्दरदास पकड़ा गया है। उसने बैंक के कुछ प्रोनोट ज़मानत के लिए देकर दो लाख रुपए उधार लिये थे। वे प्रोनोट रामनाथ बत्रा के हस्ताक्षर पर हैं। रामनाथ बत्रा ने हस्ताक्षरों से इन्कार कर दिया है। वे हस्ताक्षर बनावटी हैं और सुन्दरदास ने स्वयं किए प्रतीत होते हैं।····

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज प्रातःकाल सुन्दरदास के घर की तलाशी हुई और उसकी मेज़ की दराज़ में से बत्रा के हस्ताक्षरों सहित दस-बारह प्रोनोट और निकले जिन पर अभी रकमें नहीं भरी गई थीं। जाली हस्ताक्षर करने के अपराध में सुन्दरदास पकड़ लिया गया है।"

"पर मामी तो भीतर हैं। उनको किसी ने बताया तक नहीं!"

"मामी और रमा को जाकर बता दो।"

रमा सुन्दरदास की पन्द्रह-वर्षीया लड़की थी। जब रमा और उसकी माँ को सुन्दरदास के विषय में बताया गया तो वे विह्वल होकर वहीं रोने लगीं।

अगले दिन सेठ कमलापति ने सेशन कोर्ट में जमानत के लिए प्रार्थना कर दी और दो लाख की जमानत पर सुन्दरदास को छुड़ा लाए।

सुन्दरदास सेठजी की कोठी पर आया और घर की सुध लेने के लिए अपनी पत्नी और लड़की को लेकर अपने घर चला गया।

सेठ कमलापति सायंकाल को सुन्दरदास से मिलने उसके घर गए। वे इस मुकद्दमे और रेखा के विवाह के विषय में बातचीत करना चाहते थे। वहाँ रामनाथ बत्रा बैठा क्रोध में बातें कर रहा था। सेठ कमलापति वहाँ पहुँचे तो उसने अपनी पूर्ण कथा सेठजी को सुना दी। रामनाथ ने बताया, "मैंने और सुन्दरदास ने साँझे में ठेकेदारी का काम किया था। रुपया मेरा था और काम प्राप्त करना इसका कार्य था। एक वर्ष तक तो काम सरलता से चलता गया, परन्तु बाद में सुन्दरदास लाभ का दो-तिहाई भाग माँगने लगा। मैं मान गया। उसके पश्चात् इसने हिसाब-किताब भी अपने पास रख लिया। एक वर्ष तक यह मुझे एक-तिहाई लाभ देता रहा, परन्तु बाद में हिसाब बताने में आनाकानी करने लगा। एक दिन जबरदस्ती मैंने हिसाब की किताबों को अपने अधिकार में कर लिया। काम में काफी लाभ हुआ था और एक-तिहाई लाभ की मेरी पूँजी मिलाकर अढ़ाई लाख रुपया बनता था जो बैंक में जमा नहीं था। मैंने इसको पुलिस के हवाले करने की धमकी दी तो यह बक गया। इसने जुआ खेलना आरम्भ कर दिया था और उसमें यह पूर्ण धन गँवा चुका था। इसने मुझे दो दिन में सारी रकम देने का वचन दिया। दो दिन के पश्चात् इसने तीन चैक—दो एक-एक लाख रुपए के और एक पचास हजार का दिया। मैंने रुपया बैंक से प्राप्त कर लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि इसने वे झूठे प्रोनोट जो कई लाख के हैं, बैंक में रखकर बैंक से रुपया उधार लेकर दिया था। आठ प्रोनोटों की रकम बैंकवालों ने मुझसे माँगी। मैंने प्रोनोटों को स्वीकार नहीं किया। इस पर उन्होंने सुन्दरदास से धन माँगा। यह दे नहीं सका। इसको धारा ४२० में पकड़वा दिया।....

"मैं अब इससे यह कहने आया हूँ कि बैंक का रुपया चुका दे, अन्यथा इसके कारण आप भी बरबाद हो जाएँगे।"

"क्यों सुन्दरदास! तुम क्या कहते हो?"

"मैंने आपको कचहरी में बताया ही था कि मेरे पास रुपया है और मैं कल तक रुपया अदा कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक तो है, रामनाथ ! अब क्यों नाराज हो रहे हो ?"

"मेरा तो कहना है कि इसी समय प्रबन्ध कर देता तो ठीक था। कहाँ रखा हुआ है इसका रुपया ? इसे सब रहस्य अब खोल देना चाहिए।"

"जीजा जी !" सुन्दरदास ने बहुत ही नम्रता से सेठजी को कहा, "मुझे रात-भर का अवसर दीजिए, मैं कल दिन में सारा प्रबन्ध कर दूँगा।"

"रेखा के विषय में भी !" सेठजी ने बात बदलकर कहा, "तुमको एक बार कानपुर जाकर सब कार्यक्रम निश्चय करना है। मैं चाहता हूँ कि कल नहीं तो परसों तुम अवश्य ही वहाँ चले जाओ।"

इसके पश्चात् सेठजी वहाँ से चले तो रामनाथ भी बाहर आ गया। जब सेठजी अपनी कार में सवार होने लगे तो रामनाथ ने कह दिया, "सुन्दरदास बहुत बेईमान आदमी है। जब मैंने सुना कि आपने इसकी जमानत दी है मुझे आप पर दया आने लगी थी। इसी कारण मैं इसको विवश करने आया था कि बैंकों को रुपया देकर मुकद्दमा वापस करवा ले। मैंने आपको सचेत कर दिया है। आगे आप स्वयं ही विचार कर लीजिएगा।"

अगले दिन सुन्दरदास अपनी पुत्री तथा पत्नी के साथ लापता हो गया। इस पर बैंकवालों को सेठ कमलापति के भी दिवालिया हो जाने का सन्देह हो गया। बैंक का हिसाब-किताब देखा गया तो कमलापति के नाम तीस लाख रुपए से अधिक था। बैंकों ने नोटिस दे दिया और दूसरी ओर सुन्दरदास के भाग जाने से दो लाख की जमानत में कमलापति पकड़ लिया गया। उससे भी इतनी ही रकम की जमानत माँगी गई।

इस समय इतनी बड़ी जमानत देने वाला, विशेष रूप से लखनऊ में, कोई नहीं था। कमलापति ने पुलिस-थाने से ही कानपुर के केसरचन्द्र को जमानत देने के लिए टेलिफोन द्वारा प्रार्थना की। उनका उत्तर था, "मैं विचार कर आपको सूचित करूँगा।"

विवश कमलापति को वकीलों के द्वारा दिवाले की प्रार्थना करनी पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि सेठजी की पूर्ण सम्पत्ति पर पुलिस ने अधिकार कर लिया और सेठजी को छोड़ दिया गया।

जब पुलिस मिल को बन्द कर तथा मुद्रांकित कर कोठी पर अधिकार करने आई तो प्रायः सब सम्बन्धी, जो रेखा के विवाह के सम्बन्ध में आए थे, जा चुके थे। अब तो कोठी में केवल सतीश, रेखा और उनकी माँ तथा कोठी के नौकर ही थे।

पुलिस ने सेठजी की पत्नी तथा बच्चों से कहा कि वे अपने कपड़े लेकर बाहर निकल आवें। तीनों इसका अर्थ न समझकर बाहर आए तो कोठी को बन्द कर मुद्रांकित कर दिया गया। नौकरों के गृह में से एक, जिसमें कभी रामसुमन रहता था, खाली कराकर इन्हें रहने के लिए दे दिया गया।

कोठी पर पुलिस बैठ गई। पश्चात् सेठजी को छोड़ा गया। सेठजी हवालात से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूटकर कोठी पर आए तो वहाँ पुलिस बैठी देख विस्मित-से रह गए। उन्होंने पुलिस वालों से पूछा, "घर के लोग किधर गए हैं ?"

पुलिसवालों ने नौकरों के गृहों की ओर संकेत कर दिया। सेठजी को यह सुनकर चक्कर-सा आने लगा। इसी समय टेलीफोन, जो बरामदे में रख दिया गया था, खड़का। एक पुलिसमैन ने उठाकर सुना। उसने सेठजी को बताया कि कानपुर से ट्रंककाल है।

सेठजी के मन में धीमी-सी आशा जग पड़ी। उन्होंने फोन हाथ में पकड़कर पूछा, "कौन है ?"

उत्तर आया, "केसरचन्द्र। देखिए कमलापति जी! विवाह तो अब हो ही नहीं सकता। साथ ही मैं समझता हूँ कि आपको दिवाले की प्रार्थना कर देनी चाहिए और बाद में पुनः लड़के के नाम पर काम करने का यत्न करना चाहिए।"

सेठ कमलापति को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह निराधार आकाश में लटक रहा है। उसने फोन बन्द कर दिया और नौकरों के मकान की ओर चल पड़ा। वहाँ अपनी पत्नी, रेखा और सतीश को रामसुमन वाले मकान में बे-सरो-सामान बैठे देख वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। उसके गिरने का शब्द सुनकर रेखा और सतीश भागकर उठाने लगे। परन्तु सेठजी की गर्दन लटक चुकी थी। हृदय की गति रुक जाने से उनका देहान्त हो गया था।

: २ :

रामनिरंजन बाजार में जानवरों के लिए दाना खरीदने आया हुआ था। मध्याह्न का समय हो चुका था। सेठ कमलापति के हृदय की गति बन्द होने से मृत्यु हो जाने का समाचार पूर्ण नगर में फैल चुका था। उसके पास ही बाजार में खड़े दो व्यक्ति बात कर रहे थे। एक ने कहा, "जैसी करनी वैसी भरनी! प्रत्येक बोरी में आधा सेर आटा कम आता था।"

"फिर भी अच्छा नहीं हुआ। एक ही सप्ताह में लखनऊ के रईसों के शिरोमणि की यह दशा! अब सुना है उसके बाल-बच्चे अनाथ हो गए हैं। पहने हुए कपड़ों के अतिरिक्त उनके पास कुछ भी नहीं रहा।"

"यह भी सुना है उसकी लड़की की सगाई कानपुर में हुई थी। सगाई पर उसने सवा लाख रुपया शकुन का दिया था। अब जब यह रेत का महल गिरा तो वे लोग सवा लाख का सवा लाख डकार गए और सगाई तोड़ दी।"

"अब तो भगवान का ही बेचारों को आसरा है।"

ऐसी बातों को सुनकर रामनिरंजन को सन्देह हुआ कि कहीं सतीश की बहन की बात तो नहीं हो रही। इसलिए उसने पूछा, "किसकी बात कर रहे हैं आप लोग ?"

"अरे वही, सेठ कमलापति ने दिवाला निकाला है न अपना। उसका आज हृदय-गति बन्द होने से देहान्त हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिरंजन को अब आटे की प्रत्येक बोरी में आधा सेर आटा कम होने की बात समझ में आ गई। वह पूर्ण स्थिति समझ गया। उसने दुकानदार को कहा, "मैं दाना सायंकाल को आकर ले लूँगा।" इतना कहकर वह अपने रेढ़े में चढ़कर सेठ कमलापति की कोठी की ओर चल दिया।

वहाँ पहुँचकर उसने सतीश को कोठी से बाहर निकलते देखा। उसने उसको आवाज दी।

सतीश की आँखें लाल हो रही थीं। सेठजी के विषय में कुछ पूछने की आवश्यकता तो रही नहीं थी। पहले ही पता लग गया था। रामनिरंजन ने पूछा, "किधर जा रहे हो?"

"संस्कार का सामान लेने जा रहा हूँ, तुम अपना ठेला ले चलो तो सुविधा रहेगी।"

रामनिरंजन ने सतीश को ठेले में बैठाया तो उसने कहा, "पहले किसी सर्राफ की दुकान पर चलो।"

"क्यों?"

सतीश ने हिचकिचाते हुए कहा, "कोठी पर तो पुलिस ने ताला लगा दिया है और हम केवल पहने हुए कपड़ों के साथ ही बाहर निकले हैं। दुकान खोले आज पन्द्रह दिन हो गए हैं। वहाँ पर भी नकद कुछ नहीं है। अतः यह रेखा की कण्ठी बेचना चाहता हूँ।"

"दिखाओ कौन-सी कण्ठी है?"

सतीश ने जेब से कण्ठी निकालकर उसके हाथ में दे दी। देखकर कण्ठी लौटाते हुए रामनिरंजन ने कहा, "कितने रुपए की आवश्यकता होगी?"

"दो सौ तो चाहिएँ?"

"यह रेखा बहन को वापस कर देना। इतने तो मेरी जेब में ही होंगे।"

"तो तुम यह कण्ठी अभी अपने पास रखो, न्यूनाधिक का हिसाब बाद में कर लेंगे।"

"सतीश!" रामनिरंजन ने भर्त्सना के स्वर में कहते हुए उसकी ओर देखा। सतीश की आँखों में आँसू आ रहे थे। रामनिरंजन की आँखें भी तरल थीं। उसने अपना ठेला रकाबगंज की ओर घुमा दिया। वहाँ अन्तिम संस्कार का सब सामान मिलता था।

रामनिरंजन ने सेठजी के परिवार को उस मकान में ठहरे देखा, जिसमें वह और उसका पिता रहते थे। वहीं से सेठजी की अर्थी को निकलते देखकर भाग्य की विषमता का स्मरण करने लगा।

जिस कोठरी में रहनेवालों से उन्हें घृणा होती थी, उसी में उनका देहान्त हुआ।

सेठजी की अर्थी के साथ जानेवाले तो सहस्रों एकत्रित हो गए, किन्तु उनकी तेरहवीं के दिन कुछ समीप के सम्बन्धी ही आए। सेठजी के भाग्य को अस्त होते देखकर प्रायः सभी स्वार्थी मित्र, सम्बन्धी तथा परिचित जन उनके परिवार से कतराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे। सतीश की माँ का विचार तेरहवें दिन तक तो उसी गृह में रहने का था, किन्तु विचारना यह था कि उसके पश्चात् कहाँ जाकर रहेंगे ?

बैंक के मैनेजर ने कहा था कि जब तक कोठी नीलाम नहीं होती, तब तक उसका एक कमरा वह उनके लिए खुलवा सकता है। सतीश की माँ ने यह स्वीकार नहीं किया। वह नहीं चाहती थी कि कोठी अथवा उसका सामान नीलाम होता हुआ देखे।

रामनिरंजन यह जानने के लिए उत्सुक था कि अब सतीश इत्यादि कहाँ रहना पसन्द करेंगे ? वह उनकी वर्तमान अवस्था में कोठी में रहना ठीख नहीं समझता था। तेरहवीं के दिन जब सब लोग विदा हो गए तो रामनिरंजन ने प्रश्न किया, "सतीश ! अब कहाँ जाकर रहने का विचार है ?"

"मैं तो माँ के पीछे-पीछे चल रहा हूँ।"

"तो चलो माँ जी से पता कर लें, क्योंकि इस स्थान पर रहना भला नहीं प्रतीत होता।"

जब वे दोनों वहाँ पहुँचे तो रामनाथ बत्रा और बैंक के मैनेजर वहाँ पर विद्यमान थे। वे कोठी का एक कमरा खुलवा देने की बात कर रहे थे। पर सतीश की माँ अब इस कोठी में रहना नहीं चाहती थी।

बत्रा ने पूछा, "कहाँ जाएँगी आप ?"

"एक-दो दिन में निश्चय करके ही बता सकती हूँ।"

"यदि आपको आपत्ति न हो तो मेरी कोठी में आपको दो कमरे मिल सकते हैं।"

"इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। परन्तु मैं अभी कुछ भी निश्चय नहीं कर सकी।"

"कोई बात नहीं, मैं कल आकर पता कर लूँगा।"

रामनाथ जाने लगा तो उसकी दृष्टि रामनिरंजन पर पड़ गई। बैंक का मैनेजर तो चला गया किन्तु रामनाथ निरंजन से बात करने लग गया। उसने पूछा, "कहाँ रहते हो आजकल निरंजन ?"

"ऐशबाग में पिताजी के साथ, और उनके साथ ही काम भी करता हूँ।"

"कितनी आय हो जाती है इस धन्धे में ?"

"यह बताना तो बहुत ही कठिन है कि मेरे परिश्रम से कितना प्राप्त होता है और परिवार के अन्य सदस्यों के परिश्रम से कितना। हम सब एक ही उद्देश्य से अपने-अपने कार्य को कर रहे हैं। परिवार का संयुक्त लाभ एक सहस्र से अधिक हो जाता है।"

"तो तुम इस कार्य से सन्तुष्ट हो ?"

"सन्तोष का सबसे बड़ा कारण यह भी है कि मैं अब किसी का नौकर नहीं हूँ। पराधीन न होने से स्वावलम्बन की प्रेरणा और सान्त्वना नित्य प्राप्त होती रहती है।"

रामनाथ खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "मैं तो अब भी कहूँगा कि यदि तुम मेरे पास रहते तो अब तक पाँच सौ रुपया पाते होते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, परन्तु पिताजी जो परीक्षण कर रहे हैं उसके सम्मुख पाँच सौ तो क्या, हजार की भी गणना नहीं हो सकती।"

"अच्छा, कभी-कभी तो मिलते रहा करो। मैं तुम्हारे साहस की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता।"

निरंजन जब बत्रा से बातें कर रहा था और सतीश उनकी बातें सुन रहा था तो कमलचन्द्र, जो तेरहवीं में शोक प्रकट करने वहाँ आया हुआ था, अवसर पा रेखा और उसकी माँ के पास जा पहुँचा। हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए पूछने लगा, "अब क्या विचार है आपका ?"

"किस विषय में ?" रेखा की माँ ने पूछा।

"रहना कहाँ होगा ? साथ ही सतीश के भविष्य का विषय भी विचारणीय है। इस सम्बन्ध में एक मेरा भी विचार है।"

"रहने की बात पर तो अभी विचार ही नहीं किया। सतीश अपने कारोबार के विषय में स्वयं बता सकता है। अब तुम बताओ, तुम्हारा क्या विचार है ?"

"यदि रेखा का विवाह मेरे साथ हो जाए तो आपके रहने तथा सतीश के कारोबार का भी प्रबन्ध कर सकता हूँ।"

"तुम्हारे पिताजी ने तो यह कहा था कि विवाह अब सम्भव नहीं ?"

"उन्होंने ठीक ही कहा था, विवाह तो अभी हो नहीं सकता। आप स्वीकार कर लें तो कुछ समय में मैं पिताजी को मना लूँगा। पर रेखा को हमारे मकान में चलकर रहना होगा।"

"ऐसा क्यों ?" रेखा ने बीच में ही टोककर पूछा।

"इसलिए कि मैं तुम्हारा वियोग नहीं सह सकता।"

"अच्छा ?"

"हाँ, दिन-रात मस्तिष्क में खुमार-सा चढ़ा रहता है।"

"ओह !" रेखा ने यह कहते-कहते कमलचन्द्र के मुख पर अपने पूरे बल से एक चाँटा मारते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि अब तो खुमार कम हो जावेगा।"

चाँटे की आवाज सुनकर बत्रा, रामनिरंजन और सतीश उधर देखने लगे। रेखा की नासिका क्रोध से फूलती देखकर वे कमलचन्द्र की ओर लपके और कमलचन्द्र पाँव सिर पर रखकर वहाँ से भाग गया।

सतीश समीप आकर पूछने लगा, "क्या हुआ था रेखा ?"

"इसको प्रेम-ज्वर हो गया था। मेरा विचार है कि अब इस उपचार से उतर गया होगा।"

बत्रा हँस पड़ा और यह कहकर कि कल फिर आऊँगा, वहाँ से चला गया। अब सतीश ने माँ से कहा, "माँ ! रामनिरंजन कह रहा है कि यहाँ रहना ठीक नहीं।"

"हाँ बेटा ! यह तो मैं भी समझती हूँ। अब मैं तुम्हारे ही आश्रय में हूँ। तुम्हें शीघ्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी मकान का प्रबन्ध करना चाहिए। हाँ, रानी कल आई थी, और कहती थी कि हम उसके घर चलें। मैंने उत्तर दिया था कि पहले अपने घरवालों से तो पूछ ले। यदि वे चाहेंगे तो कुछ दिन के लिए वहीं चले जावेंगे। वह आज तो आई नहीं, मालूम होता है किसी ने इस पर कोई आपत्ति उठाई होगी।"

रामनिरंजन बोला, "माँ जी ! क्या लड़की के घर जाने की अपेक्षा लड़के के घर में जाना ठीक नहीं ?"

"इसी कारण तो सतीश को कह रही हूँ कि शीघ्र ही कोई प्रबन्ध कर ले।"

"परन्तु माँ जी ! आपका एक और लड़का भी है। उसके घर आप अभी चलकर रह सकती हैं।"

"अपने घर की बात कर रहे हो निरंजन ?"

"हाँ, सतीश मेरा परम मित्र है, और भाई है। अतः सतीश की माँ तथा बहन मुझ पर वही अधिकार रखती हैं जो कि उनका सतीश पर है। मेरा तो यही कहना है कि आपको आज ही चलना चाहिए।"

सतीश की माँ को विदित था कि रामनिरंजन ने ही उन्हें सेठजी के अन्त्येष्टि-संस्कार तथा खाने-पीने के खर्चे के लिए रुपए दिए हैं। उसका विचार था कि तेरहवीं के दिन सम्बन्धियों की ओर से जो कुछ मिलेगा, उससे रामनिरंजन का ऋण चुका देंगे। इस नए प्रस्ताव से तो वह गम्भीर हो गई। वह देख रही थी कि उसके सम्बन्धियों में से एक ने भी उसे इस समय सहायता देने की बात तक नहीं की थी। कदाचित् वे समझते थे कि दिवाले का प्रार्थना-पत्र देने से पूर्व अवश्य सेठजी ने लाखों रुपए इधर-उधर कर लिये होंगे। अतः वे यह समझकर कि सतीश अपनी मार्ग बनाने में साधन-हीन नहीं है, किसी प्रकार का प्रस्ताव लेकर नहीं आए।

केवल दो व्यक्तियों ने सहायता का प्रस्ताव किया था—एक रामनाथ बत्रा ने और दूसरे रामनिरंजन ने। रामनाथ धनी आदमी था। वह सुन्दरदास का मित्र था। दूसरा अपेक्षाकृत निर्धन था किन्तु सतीश का मित्र था। इस कारण उसका मन तो रामनिरंजन का प्रस्ताव स्वीकार करना चाहता था, फिर भी उसने सतीश से पूछना उचित समझा। उसने कहा, "सतीश ! तुम क्या कहते हो ? रामनाथ बत्रा की बात भी तो तुम सुन ही चुके हो।"

"माँ, मैं तो समझता हूँ कि आज ही रामनिरंजन के मकान में चले चलना चाहिए।"

"परन्तु इसने अपने पिता की तो स्वीकृति ली नहीं ?"

"माता जी ! पिताजी का आदेश तो कई दिन से मिल चुका है। वे तो अभी भी अपने को आपका सेवक ही मानते हैं। यदि उन्हें कुछ सन्देह था तो इस बात का कि आप कदाचित् एक निर्धन की सेवा स्वीकार न करें।"

रेखा ने माँ को कहा, "माँ ! निरंजन भैया ठीक कहते हैं, हमें आज ही यहाँ से चला जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

सतीश की माँ और बहन के लिए निरंजन वाला कमरा दे दिया गया। निरंजन, रामाश्रय और सतीश एक ही कमरे में रहने लगे। वहाँ पहुँचते ही सतीश की माँ ने तेरहवीं को दिये गए रुपयों में से निरंजन का ऋण चुकाना चाहा, परन्तु रामसुमन ने वह धन नहीं लिया। उसने कहा, "यह रुपया आपके सम्बन्धियों ने आपके आश्रय के लिए दिया है। मैंने जो कुछ दिया है वह भी इसी निमित्त था। अतः इसमें से कुछ भी लेना उचित नहीं। हाँ, प्रश्न यह है कि इसका प्रयोग कहाँ किया जाय जिससे कि यह वास्तव में आपके लिए आश्रय बन सके।"

अगले दिन सतीश अपनी स्कूल वाली दुकान पर गया तो रामनिरंजन उसके साथ चला गया। दुकान, उसके अन्दर का माल और उस कार्य-क्षेत्र का अध्ययन कर रामनिरंजन ने कहा, "सतीश! यह काम तो ठीक है, परन्तु इसकी एक सीमा है, जिससे आगे उन्नति नहीं हो सकती।"

"यह मैं जानता हूँ, परन्तु यह काम तो मैंने अपने मामा और पिताजी के समक्ष यह सिद्ध करने के लिए आरम्भ किया था कि उनको विदित हो कि मनुष्य अपने पाँवों पर खड़ा हो सकता है। दुर्भाग्य तो यह है कि इस समय उन दोनों में से कोई भी यहाँ पर विद्यमान नहीं है।"

"तो यह काम छोड़ दो।"

"यदि इसे छोड़ दूँ तो फिर करूँ क्या? साथ ही निर्वाह का प्रश्न है। एक बात और है, अभी कुछ दिन तो मुकद्दमे के झंझट भी मेरे पीछे लगे हुए हैं।"

"सतीश, यह काम तो ऐसा है कि इसमें से निर्वाह होना कठिन है। मेरे मन में एक योजना है। वह घर चलकर माताजी के सामने वर्णन करूँगा। इस धन्धे को तुम समेटने का यत्न करो।"

रामनिरंजन और रामसुमन की योजना यह थी कि सतीश को अपने परिवार में सम्मिलित कर लें। परिवार में सम्मिलित होते ही वह परिवार के कारोबार में भी भागीदार बन जाएगा।

पिछली रात उसने इस विषय पर अपने पिता से पूर्णतया विचार-विमर्श किया था। रामसुमन को केवल एक आपत्ति थी कि सतीश के लिए अभी गौशाला के कारोबार में कोई काम नहीं। कदाचित् मलीहाबाद में काम ले-जाने पर कुछ काम निकल सके। इस पर रामनिरंजन का कहना था कि गौशाला के आरम्भ के दिनों में तो उसके लिए भी काम नहीं था। इस पर भी परिवार का सदस्य होने से व्यवसाय का पत्तीदार बना हुआ था। अपने पिताजी से इस योजना को स्वीकार करवाकर ही उसने सतीश तथा उसकी माँ के समक्ष वह बात रखी थी।

रामनिरंजन ने कहा, "माताजी! मेरी योजना है कि आप हमें अपने परिवार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मिलित कर लें।"

"हँसी करते हो निरंजन?"

"नहीं माताजी! मैं सत्य कहता हूँ कि यह योजना बहुत ही लाभप्रद प्रतीत हुई है।"

"सुनो निरंजन! मैंने सतीश को कहा है कि वह कचहरी में बयान दे दे कि मुझे अपने पिता की सम्पत्ति से किसी प्रकार का सरोकार नहीं। एक वकील, जो सेठजी का अदालती काम किया करता था, एक दिन आया था और कहता था कि सतीश अपना प्रार्थनापत्र दे दे कि उसके पिताजी अयोग्य और व्यर्थ व्यय करनेवाले थे, अतः उसका अपने बाबा की सम्पत्ति पर अधिकार स्वीकार कर वह धन उनकी सम्पत्ति में सम्मिलित न किया जाय। उस वकील का कहना था कि इस प्रकार अदालत कुछ-न-कुछ सम्पत्ति सतीश और उसकी माता के लिए दिवाले की रकम में से निकाल देगी।....

"परन्तु न तो मैंने इसको माना है, न ही सतीश ने इस प्रकार के प्रार्थना-पत्र देने में रुचि प्रकट की है। इसका परिणाम यह होगा कि हम सर्वथा अकिंचन हो जावेंगे। ऐसे लोगों के परिवार में सम्मिलित होकर तुम लोग भी हमारे-जैसे ही हो जाओगे।"

"पर माताजी! मैं आज सतीश की दूकान पर गया था। उसे बीस रुपए की पूँजी से इतनी उन्नति करते देखकर मैं चकित हो गया। वास्तव में धन तो केवल मानव-परिश्रम का फल ही है। परिश्रम का फल मिलेगा ही। हम यही चाहते हैं कि आप और हम एक परिवार हो जाएँ। इससे सतीश की योग्यता और हमारा परिश्रम सम्मिलित होकर ऐसे परिणाम निकालेंगे कि आप दंग रह जाएँगी। सुना ही होगा, एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाते हैं।"

सतीश की माँ अब तक समझ रही थी कि रामनिरंजन इस कठिन समय में उनकी सहायता करना चाहता है। परन्तु उसके इस प्रस्ताव से तो केवल सामयिक सहायता ही नहीं, परन्तु जन्म-मरण का बन्धन उत्पन्न करने की बात प्रतीत होती थी। इस कारण वह चुप थी। इस समय रेखा, जो समीप ही बैठी थी, बोल उठी, "अपने प्रस्ताव का अर्थ समझते हो निरंजन?"

"हाँ रेखा बहन! भली प्रकार जानता हूँ। सतीश और मैं स्कूल की प्रथम श्रेणी में प्रविष्ट होने के पूर्व से ही मित्र हैं और अब भाई-भाई बन जावेंगे। एक ही पग तो आगे का है। तुम तो पहले ही बहन थीं, अब भी बहन रहोगी। तुम्हारे में अन्तर न आएगा।" यह कहकर हँस पड़ा।

रेखा भी हँस पड़ी। आज कई दिन के पश्चात् वह हँसी थी। उसने कहा, "मेरा बोझ भी तो बाँटना ही होगा।"

"हाँ-हाँ, क्या मैं यह नहीं जानता?"

"निरंजन!" रेखा की माँ ने कहा, "यह प्रस्ताव केवल मेरे मानने अथवा न मानने की बात नहीं। मेरे लिए अन्धे को दोनों आँखों के वरदान के तुल्य है, तुम अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता-पिता और भाई से पूछ लो। साथ ही सतीश से भी परामर्श करना होगा।"

सतीश वकील के पास गया हुआ था। रामनिरंजन ने कह दिया, "सतीश को तो मैं मना लूँगा। केवल आपकी स्वीकृति चाहिए। रही बात माता-पिता की, वे पहले ही सहमत हैं।"

इस प्रकार बात तय हो गई।

उसी रात सतीश आया तो उससे बातचीत होने लगी। इस पारिवारिक योजना के बन जाने से अब प्रत्येक बात में रामसुमन से परामर्श आवश्यक हो गया। सतीश ने बताया, "काका! वकील का कहना है कि मैं उसको वकालतनामा लिख दूँ और एक प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर कर दूँ, इस प्रकार वह बैंकवालों से कुछ-न-कुछ तो मेरे और माताजी की आजीविका के लिए दिलवा ही देगा।"

"और तुमने क्या कहा है?"

"मैंने जो कुछ कहा था वह तब था जब मुझे इस सम्मिलित परिवार की योजना का ज्ञान न था, अब इस बात में आपकी इच्छा ही सर्वमान्य होगी।"

"देखो सतीश! इससे यदि तुम्हें कुछ मिलने की आशा है तब तो मैं इसमें बाधा नहीं बनूँगा, और यह सम्मिलित परिवार की योजना उसके पश्चात् ही विचार करने की होगी। इस कारण तुम बताओ कि वकील को क्या कह आए हो।"

"काका! मुझे तो उनकी योजना भली प्रतीत नहीं हुई। एक तो मुझे जो लिखकर देना होगा वह झूठ होगा। दूसरे, अपने पिताजी का अपमान करना होगा। इसके अतिरिक्त वर्षों कचहरी की मिट्टी छाननी होगी। मैं उस धन से कुछ भी सम्बन्ध रखना नहीं चाहता। कहीं काम कर ईमानदारी से पेट भरना चाहता हूँ।"

"मेरी भी यही धारणा है जो तुम्हारी है। मुझे मुकद्दमे करने से तो निर्धन बना रहना अधिक हितकर है। शरीर के अतिरिक्त हममें आत्मा भी तो है! शरीर के पोषण के लिए आत्मा का हनन तो किसी भी अवस्था में क्षम्य नहीं।""

"तुम कचहरी के काम से शीघ्र मुक्ति पा लो। पश्चात् नौकरी ढूँढ लो। मैं समझता हूँ कि तुम्हें सौ-डेढ़ सौ रुपया तो मिल ही जाएगा। तुम्हारे वेतन का धन हम पूँजी में लेते जाएँगे। जब हम मलीहाबाद चले जाएँगे और काम को विस्तार देंगे, उस समय तुम्हें गौशाला के धन्धे में ले लेंगे।"

अगले दिन सतीश ने बैंकवालों से मिलकर यह समझौता कर लिया कि सेठ कमलापति की पूर्ण सम्पत्ति नीलाम कर बैंक अपना पावना चुका ले। सतीश तथा उसकी माँ सेठजी की सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं चाहेंगे। इस समझौते के अनुसार सतीश ने वचन दे दिया कि सेठजी की कुछ भी सम्पत्ति छिपाकर नहीं रखेंगे।

दो सप्ताह में ही सब-कुछ निर्णय हो गया और सतीश नौकरी ढूँढने लगा। सतीश ने अपनी स्कूलवाली दुकान का सब माल बेच दिया और वहाँ से अवकाश पाकर काम ढूँढने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केसरबाग में एक दवाइयों की दुकान पर वह एकाउँटेण्ट के रूप में काम करने गया। वेतन डेढ़ सौ रुपए मासिक निश्चित हो गया।

: ४ :

सतीश अपने वेतन के धन को, केवलमात्र थोड़ा-सा उसमें से अपने जेब-खर्च के लिए निकालकर शेष रामसुमन के पास जमा कर देता था। उसके बदले में सतीश और उसकी माँ तथा बहन के लिए वस्त्र और भोजन की व्यवस्था हो जाती थी।

रेखा और उसकी माँ भी उस परिवार के अंग होकर काम में भगवती का हाथ बँटाने लगीं। एक दिन वे बहुत प्रातःकाल उठीं और दोनों भगवती के काम में जुट गईं। रेखा की माँ तो पशुओं को दाना-चारा देने में लग गई और रेखा गौशाला में पहुँचकर गोबर एकत्रित करने लगी।

जब रामसुमन एक कर्मचारी के साथ दूध दुहने आया तो वह गौशाला को इतनी साफ-सुथरी देख चकित रह गया। पहले तो यह होता था कि भगवती इस समय तक कठिनाई से गौओं को दाना-भूसा ही डाल पाती थी। दाना तो रामनिरंजन रात को ही भिगो दिया करता था। भगवती भूसा कुरली में डालकर उस पर एक बाल्टी पानी भर, भीगा हुआ दाना डालकर उसे मिलाकर गाय को वहाँ ला बाँधती थी। इस प्रकार गौओं को चारा देने में ही दो घण्टे लग जाते थे। जब उसे इसका कारण मालूम हुआ तो वह स्तब्ध खड़ा रह गया। रेखा बुहारी लिये जानवरों के नीचे की भूमि को पानी से धो रही थी। रेखा की माँ एकत्रित किए गोबर को टोकरी में डाल-डालकर गौशाला के बाहर ले-जाकर एक स्थान पर ढेर कर रही थी। रामसुमन ने रेखा से कहा, "यह क्या कर रही हो, बिटिया ?"

"अपना काम सीखने का प्रयत्न कर रही हूँ, काका !"

"परन्तु और सब काम हो चुके हैं क्या ?"

"इस समय तो यही काम करना है न ? काका, तुम अपना काम करो, हमको अपना काम करने दो।"

रामसुमन विचार कर रहा था कि भगवती क्या कर रही है। घर पर जाकर उसको देखने के लिए लौट गया। भगवती स्नान कर रसोई में जा चुकी थी। रामसुमन ने वहाँ पहुँच पूछा, "क्यों, आज भूख जल्दी लग गई क्या ?"

"गौशाला में गई थी, परन्तु वहाँ रेखा की माँ कुछ करने ही न देती थी। उसका कहना था कि इतना गरिष्ठ खाना खाकर उसे हजम करने के लिए कुछ मेहनत का काम करना आवश्यक है। जब वह काम माँ-बेटी करने लगीं तो मैंने समझा कि उनके लिए कुछ खाना बना देना चाहिए।"

रामसुमन यह तो चाहता था कि घर के सब प्राणी कोई-न-कोई काम अवश्य करें। इस पर भी वह गोबर इकट्ठा करने का काम रेखा और उसकी माँ से नहीं कराना चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। भगवती ने कह दिया, "रेखा के साथ विवाद असम्भव है। तुम उनके लिए कुछ और काम नियत कर दो। यदि नहीं तो फिर मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ?"

मध्याह्न का भोजन रेखा की माँ बनाने लगी और भगवती गोबर थापने लग गई। रेखा ने परिवार के प्राणियों के कपड़े सीने तथा मरम्मत करने का काम आरम्भ कर दिया।

इस प्रकार सतीश भी नौकरी पर जाने से पूर्व प्रातःकाल और नौकरी से लौटने के पश्चात् सायंकाल हिसाब-किताब रखने का काम करने लगा। सतीश का वेतन आया तो वह काम में लगा दिया गया।

इस प्रकार कार्य चलाते हुए एक वर्ष के लगभग हो गया। मलीहाबाद वाली गौशाला तैयार हो गई थी। परन्तु वहाँ जाने के लिए रामाश्रय की योजनानुसार कुछ मशीनें और बिजली तथा पानी का प्रबन्ध शेष था। उसमें कुछ देरी हो रही थी। रामसुमन उधार लेकर रुपया लगाना नहीं चाहता था। वह आय में से ही धन बचाकर पूँजी बढ़ाने के पक्ष में था। इस समय बीस हजार के लगभग रुपया और जुटाने में उसे समय लग रहा था।

इस समय एक दुर्घटना हो गई। एक दिन एक गाय ने चारा खाना बन्द कर दिया। उसको रुग्ण समझ रामसुमन ने अपने अनुभव के आधार पर कुछ जड़ी-बूटियों का काढ़ा-सा बनाकर उसे पिला दिया। इससे गाय का रोग और भी बढ़ गया। अगले दिन ग्वाला भी ज्वर-ग्रस्त हो गया और नहीं आया। सभी को इससे चिन्ता हुई। रामाश्रय गाय को जानवरों के हस्पताल में ले गया। वहाँ डॉक्टर ने गाय को इंजैक्शन दे दिया। अगले दिन सूचना मिली की ग्वाले को चेचक निकल आई है और गाय भी इसी रोग से ग्रस्त है। रामाश्रय ने इस रुग्ण गाय को अन्य पशुओं से पृथक् कर दिया, परन्तु इसका कुछ भी लाभ नहीं हुआ। अगले दिन ही शेष सब गौवें बीमार हो गईं। दो दिन में ही सबको चेचक निकलने के लक्षण दिखाई देने लग गए।

इसके परिणामस्वरूप दूध निकालना और बेचना बन्द कर दिया गया। एक सप्ताह के भीतर ही गौवें मरने लगीं। उस समय उनके पास दूध देनेवाली पैंतालीस गौएँ थीं, तीन साँड थे और लगभग इतने ही बछड़े-बछड़ियाँ थीं। इस बीमारी से एक मास में दो गउओं और तीन बछड़ों के अतिरिक्त सबका प्राणान्त हो गया।

इस पर एक विकट समस्या उत्पन्न हो गई। व्यवसाय पूर्ण रूप से विनष्ट हो गया। मलीहाबाद में गौशाला को आधुनिक यन्त्रों से युक्त करना तो पृथक्, अपना निर्वाह भी कठिन हो गया।

ज्यों-ज्यों पशु मरते गए परिवार के लोग विवर्णमुख हाथ की मुट्ठी में से खिसकती रेत की भाँति सब-कुछ जाता देख उत्साहहीन होते गए। रामसुमन के अतिरिक्त सब समझ रहे थे कि उनके भाग्य में धनी होना नहीं लिखा है। केवल एक रामसुमन था जो इस पूर्ण दुर्घटना के समय भविष्य की ओर आँखें जमाए दिखाई दिया। वह सदा कहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाई देता था कि यह तो पिछले जन्म के कृत्यों का फल मिल रहा है। इसके पश्चात् सब बाधाएँ हट जावेंगी और हम उन्नति के राज-पथ पर फिर अग्रसर होंगे।

सब सुनते थे, परन्तु इससे उत्साह पाते हुए भी आशाहीन हो रहे थे। रामनिरंजन तो यह कहा करता था कि कार्य करना हमारा कर्त्तव्य है, सो करेंगे।

डेढ़ मास उपरान्त जब बीमारी से पीछा छूटा तो सभी विचार करने लगे कि यह हुआ क्या? तथा, अब इस कठिनाई को दूर करने के लिए क्या किया जाय?

सरस्वती कह रही थी कि उसने अपना दुर्भाग्य लेकर उनके घर में आने की भारी भूल की है। अतः रामसुमन से वह वहाँ से जाने की स्वीकृति माँग रही थी।

रामसुमन ने पूछा, "कहाँ जाओगी मालकिन?"

"जहाँ सींग समाएँगे। रामसुमन! हमारे नक्षत्र मन्द हैं। मैं नहीं चाहती कि हम औरों को भी साथ ले डूबें।"

"परन्तु यह कष्ट आपके कारण हुआ—भला यह कैसे सोच लिया?"

"कोई और कारण भी तो दिखाई नहीं देता!"

"दिखाई तो दे रहा है।" रामनिरंजन ने कह दिया।

"लखन ग्वाले को चेचक की बीमारी हुई थी। उसने न तो घर पर परहेज किया और न ही यहाँ। यह रोग छूत का है। परिणाम हुआ कि वह स्वयं तो बीमार हुआ ही, साथ ही हमारे पशुओं में भी छूत फैल गया।...."

"ये तो दैवी दुर्घटनाएँ हैं। किसी के रहने न रहने से रुक नहीं सकतीं। इसे रोकने का उपाय और ही है, और हम अब करेंगे।"

"मैं कहता हूँ...." रामाश्रय ने कहा, "भाग्य-दुर्भाग्य की बात तो कोई जानता नहीं, पर मैं पूछता हूँ कि कभी दुर्दिन आने पर क्या परिवार में परस्पर दोषारोपण करना उचित है? परिवार में तो सभी, एक-जैसे उत्तरदायी होते हैं।"

रामसुमन ने कह दिया, "देखो मालकिन! इस प्रकार की बातों से वास्तविक समस्या नहीं सुलझती। उल्टे ध्यान दूसरी ओर जाता है। प्रश्न यह है कि अब आगे को क्या किया जाए?"

रामनिरंजन ने अपना सुझाव उपस्थित किया। उसने कहा, "इस समय तो सबके लिए काम नहीं रहा। इसलिए पिताजी तथा घर की स्त्रियाँ तो गौशाला का काम करें। हम तीनों नौकरी कर लेते हैं। सतीश भैया तो पहले ही वेतनधारी हैं। इधर मैं और रामाश्रय भी काम ढूँढ लेंगे। मेरा विचार है कि दूध की बिक्री से तो घर का खर्च चल जावेगा, और हम तीनों का वेतन पुनः पूँजी उत्पन्न करने में सहायता देगा।"

"यही ठीक है, कल से ही काम ढूँढना आरम्भ करो।"

रामनिरंजन तो बत्रा की दुकान पर जा पहुँचा। बत्रा रामनिरंजन के वहाँ आने का कारण जानकर हँस पड़ा। उसने कहा, "अब तुम समझे कि व्यवसाय में हानि भी हो सकती है! नौकरी में तो लाभ ही लाभ होता है। यही भेद है व्यापार और नौकरी में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, यह तो मैं पहले भी जानता था। परन्तु कोई भी धन्धा बिना जोखों के किया नहीं जा सकता।"

बत्रा इस रहस्य को जानता था। उसका यही विचार था। इसी आधार पर सुन्दरदास से मिलकर उसने ठेके का काम किया था। किन्तु वह ताड़ गया कि अब रामनिरंजन को आवश्यकता है नौकरी की, अतः क्यों न इसकी विवशता का लाभ उठाया जाए! उसने कहा, "वेतन कितना लोगे?"

"जो आप प्रसन्न होकर दे देंगे।"

"डेढ़ सौ लोगे?"

"मैंने तो निवेदन किया ही है कि जो देंगे ले लूँगा।"

"ठीक है, कल से काम पर आ जाना।"

"एक बात और है। मेरा भाई रामाश्रय भी नौकरी करना चाहता है।"

"घर का काम कौन करेगा?"

"पिता जी हैं, माता जी हैं और फिर हम भी अपने अवकाश के समय गौशाला के काम में उनका हाथ बँटा सकते हैं।"

इस प्रकार दोनों बत्रा के पास नौकर हो गए। रामनिरंजन डेढ़ सौ रुपया मासिक पर और रामाश्रय सवा सौ पर। उसने रामाश्रय को ठेकेदारी के काम पर लगा दिया और रामनिरंजन को दुकान के काम पर।

दो गौओं के दूध की बिक्री से दो रुपए नित्य बच जाते थे जिससे रोटी-कपड़े का काम चल जाता था। प्रति मास साढ़े तीन सौ से ऊपर पुनः व्यवसाय में डाले जाने लगे। परिणाम यह हुआ कि प्रति मास तीन नई गौएँ लाई जाने लगीं।

एक वर्ष में फिर स्थिति पूर्ववत् हो गई।

सबसे पहले रामाश्रय ने नौकरी छोड़ी और मलीहाबाद वाले स्थान पर गौशाला को ले गया। यद्यपि यंत्रादि अभी नहीं लगे थे, तो भी यही समझा गया कि कारोबार को वहाँ से चलाया जाए।

इसके छः मास पश्चात् रामनिरंजन ने भी नौकरी छोड़ दी। बत्रा को क्रोध तो आया, किन्तु यह बात उसको उस समय विचार कर लेनी चाहिए थी जब उसने इनको नौकरी पर रखा था। रामनिरंजन ने भी कहा, "हम आपके अत्यन्त आभारी हैं कि आपने हमारी कठिनाई के समय सहायता की है।"

"मुझे आशा नहीं थी कि तुम लोग इतनी जल्दी पुनः अपने पाँव पर खड़े हो जाओगे।"

"पर मुझे तो इसका पूरा भरोसा था। इसी कारण आपने जितना भी वेतन दिया था, मैंने स्वीकार कर लिया था।"

मलीहाबाद में जाकर जीवन की प्रत्येक सुविधा को प्राप्त करने में एक वर्ष और लगा। तब तक वहाँ बिजली, पानी और गौओं के लिए स्वास्थ्यप्रद वातावरण बना लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था। इसके पश्चात् वे पुनः दूध देनेवाली गौओं की संख्या बढ़ाने, उनकी संतति को उन्नत करने और आवश्यक यंत्रादि लगवाने में अपनी आय का उपयोग करने लगे।

: ५ :

सतीश इत्यादि को रामसुमन के परिवार में रहते हुए तीन वर्ष से अधिक हो गए थे। मलीहाबाद में पक्का मकान बनवाकर नीचे के भाग में कार्यालय तथा ऊपर के भाग में रहने का प्रबन्ध कर लिया था। ऊपर बैठक के अतिरिक्त छः कमरे थे। एक में रेखा और उसकी माँ रहती थीं। रामनिरंजन, सतीश और रामाश्रय पृथक् कमरे में रहते थे। रामसुमन और भगवती पृथक् कमरे में रहते थे। एक कमरा सामान आदि रखने के लिए था। इनके अतिरिक्त रसोई, स्नानागार, शौचालय अलग थे।

जीवन अत्यन्त सुखमय बन गया था। फिर भी सब लोग सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक काम करते रहते थे। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि वृद्धि होने लगी।

सतीश नौकरी ही करता था। एक दिन सेठ कमलापति का एक मित्र उसको ढूँढता हुआ उसके दवाईखाने में जा पहुँचा। सतीश उसको नहीं जानता था। वह आकर पूछने लगा, "क्या तुम सेठ कमलापति के पुत्र सतीश हो?"

"जी हाँ, आज्ञा कीजिए?"

"तुमसे एकान्त में बात करनी है।"

सतीश ने अपनी किताबें बन्द कर दीं। रुपए-पैसे की संदूकची को ताला लगाकर उस आदमी के साथ दुकान के बाहर आ गया। बाहर आकर आगंतुक ने बताया कि, "मेरा नाम करोड़ीमल है। मैं तुम्हारे पिताजी का बचपन का मित्र हूँ। एक समय मुझे पाँच सहस्र रुपए की आवश्यकता पड़ी थी और तुम्हारे पिता ने मित्रता के नाते वह रुपया बिना किसी लिखा-पढ़ी के दिया था। मैंने लखनऊ में कुछ काम आरम्भ किया था, किन्तु उसमें बहुत हानि हुई थी। तदनन्तर मैं कलकत्ता चला गया। वहाँ पर मैंने दलाली का काम प्रारम्भ कर दिया। धीरे-धीरे काम चल निकला। कुछ वर्ष हुए मैंने अपना व्यापार भी आरम्भ कर दिया है और पिछले तीन वर्षों में मुझे बहुत लाभ हुआ है।....

"मुझे तुम्हारे पिताजी के रुपए वापस करने की चिन्ता लगी रहती थी। अतः कुछ दिन हुए रुपए वापस देने के विचार से लखनऊ आया था। यहाँ आकर विदित हुआ कि सेठ कमलापति का देहान्त हो चुका है। पश्चात् किसी तरह पूछताछ कर तुम्हारा पता मिला और मैं यहाँ चला आया। अब तुम ये रुपए ले लो जिससे कि मैं अपने को ऋणमुक्त समझूँ।"

सतीश खड़ा-खड़ा उस आदमी का मुख देखता रह गया। उस भले आदमी को जेब से चैक-बुक निकालकर उस पर अपना नाम लिखते देख सतीश की आँखें तरल हो गईं। उसकी सज्जनता और ईमानदारी की वह मन ही मन भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस आदमी ने दस हजार रुपए का चैक लिखकर कहा, "ब्याज-सहित यह इतना रुपया बन गया है। कदाचित् तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारी माता से इन रुपयों का ज़िक्र किया हो। इसलिए उनको बता देना।"

इतना कहकर वह नमस्कार कर चला गया। सतीश खड़े-खड़े उसको देखता रह गया।

घर आकर माँ के सम्मुख चैक रखते हुए सतीश ने पूर्ण विवरण बताया। उसकी माँ का मुख खिल गया। उसने कहा, "तुम्हारे पिताजी ने मुझे बताया था और मैंने यही कहा था कि यह रुपया वापस नहीं आएगा। उस समय मैंने गुस्से में यह भी कहा था कि एक स्मृति के लिए प्रोनोट तो लिखवा लेते! इस पर तुम्हारे पिताजी ने कहा था, मुझे करोड़ीमल पर पूर्ण विश्वास है। फिर भी यदि उसका मन बेईमान हो गया अथवा वह देने में असमर्थ हुआ तो फिर लिखा हुआ प्रोनोट ही किस काम का! मुझे उस पर दावा तो करना नहीं है।

"मैंने कहा था—'तो रुपए से हाथ धो बैठिए।'

'मैं इतना मात्र देने से निर्धन नहीं हो जाऊँगा।'

"तुम्हारे पिताजी बड़े सज्जन थे। अपनों पर विश्वास करते रहे। यदि तुम्हारे मामा ने बेईमानी न की होती तो यह दिन हमें देखना न पड़ता। संसार कैसा विचित्र है जिसमें कि सुन्दरदास-से धोखेबाज और करोड़ीमल-से ईमानदार दोनों हैं!"

"माँ! अब इस रुपए का क्या किया जाए?"

"तुम ही बताओ, क्या चाहते हो?"

"माँ," सतीश ने रेखा की ओर टेढ़ी दृष्टि से देखकर कहा, "इससे रेखा का विवाह कर दिया जाए।"

रेखा खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने कहा, "सतीश! लड़कियों का विवाह रुपयों के साथ होता है अथवा मानवों के साथ?"

"इन रुपयों से ही तो वे मानव मिलते हैं।"

"पिताजी के लाखों रुपयों से तो पशु ही मिला था। अब इतने रुपयों से मानव कैसे मिल जाएगा? सतीश भैया, मेरे भाग्य में विवाह लिखा होता तो अब तक हो चुका होता।"

"तो फिर इन रुपयों का क्या करूँ?"

"करना क्या है! काका जो रुपया भी पाते हैं गौशाला में लगा रहे हैं। इस कारण हमें यह धन भी उन्हीं को दे देना चाहिए।"

"ठीक है।" सतीश की माँ ने कहा, "जैसे अपना वेतन रामसुमन को देते हो, उसी प्रकार यह रुपया भी उसी के हाथ में रख दो।"

सतीश रामनिरंजन के पास जा पहुँचा। रुपया जमा करना और उसका हिसाब रखना उसी का काम था। सतीश ने दस हजार का चैक उसको देते हुए कहा, "पिताजी ने किसी को ऋण दिया था, आज वह लौटा गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिरंजन चैक को देखकर तथा पढ़कर चकित हो गया। उसकी अन्तरात्मा उन रुपयों को लेने के लिए राजी नहीं हो रही थी। रामनिरंजन ने पूछा, "यह रुपया तो माता जी का है सतीश ! इसे उन्हें दे दो।"

"दिया था, उन्होंने ही कहा है कि इसे गौशाला के हिसाब में जमा करवा दो।"

रामनिरंजन वह रुपया लेकर अपने पिताजी के पास पहुँचा। रामसुमन अपने कमरे में बैठ हाथ में तम्बाकू मसल रहा था। रामनिरंजन और सतीश वहाँ पर आए तो रामाश्रय भी आ गया। रामाश्रय एक विशेष बात कहने आया था। वह विशेष बात भी सतीश के विषय में ही थी। इस कारण उसे अपने पिताजी के कमरे की ओर जाते देखकर वह उनके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचा।

रामनिरंजन ने अपने पिता को चैक की बात बताई तो वह भी इससे विस्मित ही हुआ। सतीश इस विस्मय का अर्थ नहीं समझ सका। अतः रामसुमन के कहने की प्रतीक्षा करता रहा। रामसुमन ने अपने मन के भावों को शब्दों में प्रकट करते हुए कहा, "सतीश ! यह रुपया तुम्हारा है क्या ?"

"हाँ काका ! करोड़ीमल ने कहा था कि मेरा ही है।"

"यह तो ठीक है, परन्तु बैंकवालों से समझौता करते समय तुमने वचन दिया था कि तुम और तुम्हारी माताजी सेठ जी की कुछ भी सम्पत्ति छिपाकर नहीं रखेंगे। मैं समझता हूँ कि यह दस हजार रुपया बैंकवालों का है, कल जाकर उनको दे आना।"

इससे सतीश के मुख पर एक विशेष प्रकार का ओज आ गया। उसके मन में प्रकाश हो गया। उसने उस चैक को लपेटकर जेब में रख लिया और कहा, "काका ! तुम्हारी इस सीख के लिए मैं बहुत आभारी हूँ।"

अगले दिन सतीश वह चैक लेकर बैंकवालों को देने के लिए जा पहुँचा। बैंक के सेक्रेटरी के पास पहुँचकर उसने चैक की कहानी बताते हुए कहा, "पिताजी की सम्पत्ति में यह भी सम्मिलित कर लीजिए।"

सेक्रेटरी सतीश का प्रस्ताव सुनकर चकित रह गया। उसने पूछा, "क्या काम करते हो ?"

"केसरबाग में मैडिकल स्टोर में अकाउँटेंट का काम करता हूँ।"

"कितना वेतन मिलता है ?"

"डेढ़ सौ रुपया।"

"सतीश ! एक बात सुनो। इस संसार में धन एक बहुत बड़ी शक्ति है। इसके बिना तो जीवन व्यर्थ है। मेरा कहा मानो, ये रुपए तुम अपने हिसाब में जमा करा दो, किसी समय काम आएगा। दिवाला निकालते समय लोग लाखों रुपया छिपा लेते हैं।"

"जी नहीं ! मैंने यह लिखकर दिया हुआ है कि पिताजी का धन हम छुपाकर नहीं रखेंगे। मैं पिताजी की आत्मा को कष्ट नहीं देना चाहता। आप इसे लेकर मुझे इसकी रसीद दे दीजिए। दूसरे लोग कुछ भी करें, मुझे क्या ! मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम अभी अनुभवहीन बालक हो युवक! इस प्रकार आया धन दुत्कारा नहीं जाता।"

उस समय सतीश को रामसुमन का यह कथन स्मरण हो आया कि मानव-जीवन का उद्देश्य धनी बनना मात्र नहीं है। परमात्मा ने मोक्ष-प्राप्ति के लिए यह एक सीढ़ी बनाई हुई है; यदि धन इसमें बाधक हो जाए तो वह त्याज्य है।

: ६ :

सतीश का अपनी माता को यह कहना कि करोड़ीमल का रुपया रेखा के विवाह में व्यय किया जाए, सरस्वती के मन में बैठ-सा गया। रात-भर इस पर विचार करती रही।

एक दिन वह घर की बैठक में बैठी थी कि रामसुमन वहाँ आ गया। रामसुमन तो यह कहने आया था कि पिछले वर्ष का हिसाब रामनिरंजन सुनाना चाहता है। इस कारण बैठक में पूर्ण परिवार सम्मिलित है।

इस समाचार से सतीश की माँ ने अपना प्रस्ताव इस लाभ-हानि का ब्यौरा सुनने के पश्चात् ही रामसुमन के सम्मुख रखने का निश्चय किया।

सतीश और रामाश्रय को साथ लेकर रामनिरंजन वहाँ आ गया। रामसुमन ने रामाश्रय को भेजकर भगवती को भी बुलवा लिया और सतीश को रेखा के बुलाने के लिए भेज दिया। रेखा की माँ ने कहा भी कि रेखा की क्या आवश्यकता है? रामसुमन ने कह दिया, "मालकिन! रेखा भी तो हमारे परिवार की भलाई-बुराई में साझीदार है!"

जब सभी एकत्रित हो गए तो रामनिरंजन ने वर्ष-भर के आय-व्यय का विवरण सुना दिया। उस वर्ष उनको पन्द्रह हजार रुपया घर के सब प्रकार के खर्च निकालकर, लाभ हुआ था। तीस हजार रुपया बैंक में जमा था।

इसके अतिरिक्त गौओं की संख्या बढ़कर दो सौ हो गई थी। इसमें दूध देने योग्य गौओं की संख्या साठ थी और एक सौ तीस बछड़े-बछड़ियाँ और कुछ साँड थे। बीस के लगभग बछड़ियाँ दो-तीन मास में ब्याने वाली थीं। तीस बैलों को देहातों में किसानों के पास बेचने का प्रबन्ध हो रहा था।

इस प्रकार हिसाब का ब्यौरा बताने के पश्चात् रामसुमन ने कहा, "मेरा यह प्रस्ताव है कि इस समय जो रुपया जमा हो गया है उसे परस्पर बाँट लिया जाए। वैसे ही भविष्य में भी इस प्रकार बाँटा जाए। इसके ग्यारह भाग बनाकर दो-दो भाग पुरुषों को और एक-एक भाग स्त्रियों को दिया जाए। इस प्रकार मेरा, सतीश, रामनिरंजन और रामाश्रय के दो-दो भाग होंगे और मालकिन, रेखा तथा भगवती का एक-एक भाग। यदि आप स्वीकार करें तो तीस हजार में से बाईस हजार के दो-दो हजार के ग्यारह भाग कर लें। हमें चार-चार हजार और स्त्रियों को दो-दो हजार मिल जाएँ।"

सरस्वती ने कहा, "रामसुमन! यह बाँटने का प्रश्न क्यों उपस्थित हो गया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसलिए कि सभी बच्चे विवाह योग्य हो गए हैं। लड़कों की बहुएँ आएँगी। बिटिया किसी के घर में चली जाएगी। अतः सबको विदित भी हो जाए कि उसे क्या-क्या मिल सकता है। बाद में क्या जाने किसी की बहू कैसी हो, वह व्यवसाय में सहयोग दे अथवा नहीं। इसी प्रकार हमारा दामाद कौन और कैसा होगा, वह क्या करना चाहेगा। इसलिए मेरा विचार है प्रत्येक को ज्ञान हो कि इस व्यवसाय में उसका कितना भाग है।"

रेखा ने कहा, "काका! मेरी चिन्ता मत करो। मेरा विचार तो विवाह करने का है ही नहीं।" फिर हँसकर कहा, "मैं तो आपके घर की ही रोटियाँ तोड़ूँगी। निकाल तो न दोगे काका?"

सतीश की माँ ने कहा, "मेरा प्रस्ताव है कि यह सब धन अब जैसा है पड़ा रहे। यह एक स्थिर निधि रहे जिसमें से सभी विवाह आदि के खर्च चलाए जाएँ। व्यवसाय के लिए फिर रुपयों की आवश्यकता पड़ गई तो कहाँ से लेंगे?"

"मुझे तो इसमें कोई आपत्ति नहीं है।"

"पर काका!" सतीश ने कहा, "मैं समझता हूँ कि जितना कुछ मैंने दिया है, उससे कई गुना अधिक हमें मिलने जा रहा है, यह अन्याय है!"

"नहीं सतीश! ऐसा नहीं है। मनुष्य के परिश्रम का कुछ भी मूल्य नहीं है। जो कुछ बाँट रहे हैं वह हमारे परिश्रम का मूल्य नहीं है। यह तो परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार कुछ दे रहे हैं। यदि आगे को किसी की आवश्यकता कुछ बढ़ गई तो उसे अधिक भी मिल सकता है, यदि निधि में धन हो तो।"

"मेरा तो यह कहना है कि अभी न तो इसे बाँटने का अवसर है न आवश्यकता ही। हाँ, बच्चों के विवाह का प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए।" सरस्वती ने कहा।

"सबसे पहले रेखा का विवाह होना चाहिए।"

"मेरा ही क्यों? मैं तो सतीश और निरंजन भैया दोनों से छोटी हूँ। अपनी बात तो कह चुकी हूँ कि पहले सतीश का, फिर निरंजन का, तदनन्तर रामाश्रय का। मुझे विवाह करना ही नहीं है।"

इस पर सब गम्भीर विचार में पड़ गए। सतीश ने कहा, "काका, पहले तो रेखा का ही विवाह होना चाहिए। लड़कियों की बात और है। आपको अथवा माता जी को इस विषय में यत्न आरम्भ कर देना चाहिए। इसके पश्चात् ही तो मैं विवाह करूँगा। मैंने अपने विवाह का निश्चय किया हुआ है, परन्तु वह होगा रेखा के विवाह के पश्चात् ही।"

"पर ऐसा क्यों, मैं तो तुमसे बहुत छोटी हूँ?"

"इसलिए कि लड़कियों का विवाह लड़कों से पहले होना चाहिए। ऐसा ही शास्त्र में लिखा है।" सतीश का कहना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्थात् जिसका विवाह होता हो उसका भी रोक दिया जाए।" रेखा ने उद्विग्न होकर कहा।

रामसुमन चिन्ता प्रकट करते हुए बोला, "सतीश! यदि तुमने अपने लिए कोई जगह पसन्द कर ली है तो पहले तुम्हारा ही विवाह होगा। रेखा का कहना ठीक है कि जिनके विवाह का संयोग नहीं बनता, उनको दूसरों के विवाह में बाधा नहीं बनना चाहिए।"

सतीश चुप रहा तो उसकी माँ ने कहा, "परन्तु वह है कौन? कहाँ रहती है, किसकी लड़की है?"

"माँ! जब तुम रेखा से पूर्व मेरा विवाह उचित समझोगी तो सब-कुछ बता दूँगा। मेरा तो अब भी यह विचार है कि पहले रेखा का विवाह होना चाहिए।"

"नहीं-नहीं, मेरा विवाह नहीं होगा।" इतना कह रेखा वहाँ से उठकर जाने लगी, तो उसकी माँ ने कहा—"रेखा, बैठो। इस प्रकार भाग जाने से समस्या का हल नहीं निकलेगा।....

"रामसुमन! आज का कार्य समाप्त हुआ। हमने हिसाब सुन लिया है। मेरा प्रस्ताव भी सुन लिया गया है, पहले उसका ही निर्णय हो जाए।"

सबने सरस्वती के प्रस्ताव का अनुमोदन किया। यह निश्चय हो गया कि अभी रुपया बाँटा न जाए। बच्चों के विवाह आदि का खर्च इसी एकत्रित धन से किया जाए। बँटवारा जब हो तब इसकी आवश्यकता पड़ेगी। गौशाला की उन्नति सबका पहला लक्ष्य है।"

अन्त में यह निश्चय हुआ कि विवाह के विषय में कुछ दिन पश्चात् विचार होगा। रामसुमन ने सतीश की बातों से समझ लिया था कि सतीश ने किसी जगह बहू नियत कर ली है। इस कारण अब रामनिरंजन और रामाश्रय के लिए बहुएँ ढूँढनी चाहिएँ।

रेखा और उसकी माँ जब रात को अपने कमरे में सोने के लिए आईं तो माँ ने बात चला दी। उसने रेखा को अपने बिस्तर पर बुलाकर उसकी पीठ पर प्यार करते हुए कहा, "क्या बात है रेखा! तुम्हें विवाह से इतनी चिढ़ क्यों है?....

"देखो रेखा! अब वह समय नहीं रहा जब तुम्हारे मामा तुम्हारा विवाह करने की मनमानी करते थे। तब तुम अनजान और अल्पवयस्क थीं। मैं तो तुमको सज्ञान और पूर्ण वयस्क लड़की मानती हूँ। मैं यह भी कहती हूँ कि इस अवस्था में तुम्हारा विवाह बिना तुम्हारी स्वीकृति के नहीं होगा। इस कारण अब तुम्हें विवाह न करने में कारण बताने में संकोच नहीं करना चाहिए।"

रेखा चुपचाप बैठी माँ की बातें सुन रही थी। उसने कुछ कहा नहीं। उसकी माँ ने प्यार करते हुए और उसकी ठुड्डी को ऊँचा कर उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "क्या बात है, कहती क्यों नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा की आँखें तरल हो रही थीं। उनमें आँसू देख उसकी माँ को अत्यन्त विस्मय हुआ। उसने उसको छाती से लगा लिया। रेखा की माँ ने रेखा को इस प्रकार चूम लिया मानो वह कोई पाँच वर्ष की बच्ची हो। इस पर तो रेखा विह्वल हो रोने लगी।

इससे माँ को स्पष्ट हो गया कि वह किसी से विवाह तो करना चाहती है, परन्तु किसी कारण से विवाह में कठिनाई अनुभव कर रही है। जब कुछ देर तक रेखा खुलकर रो चुकी तो माँ ने उसकी आँखें पोंछते हुए कहा, "आखिर क्या बात है, जो तुम मुझसे भी छिपाकर रखे हुए हो? देखो बेटी! तुम बता दो और विश्वास रखो कि मैं तुम्हारी कामना-पूर्ति के लिए वह सब-कुछ करूँगी, जो मेरे वश में होगा।"

उस रात दोनों माँ-बेटी एक ही बिस्तर पर लेट गईं। सर्दी की ऋतु थी और रजाई में दोनों देर तक बातें करती रहीं। पूर्ण बात कह देने पर रेखा का चित्त हल्का हो गया और माँ को इस नवीन परिस्थिति को जानकर रातभर नींद नहीं आई।

प्रातः जब दोनों बिस्तर पर से निकलीं तो माँ का मुख उतरा हुआ था। रेखा वैसी ही थी जैसी सदा होती थी। वह गोबर एकत्रित करने चली गई। आज उसकी माँ जानवरों को चारा देने के लिए नहीं जा सकी। यह काम सतीश को करना पड़ा। रेखा ने उसको बता दिया कि माँ का चित्त ठीक नहीं है और वे काम पर नहीं जा सकतीं।

: ७ :

वार्षिक हानि-लाभ का विवरण सुनाने के पश्चात् सतीश ने सोचा कि अब नौकरी छोड़ देनी चाहिए। जब रामसुमन ने स्वीकृति दे दी तो सतीश ने अपने काम से त्याग-पत्र दे दिया और यथासमय नौकरी से मुक्त हो गौशाला के प्रबन्ध में लग गया। साथ रेखा आदि से भी गोबर उठाने का कार्य छुड़ाकर उन्हें कार्यालय में और काम दे दिया। गोबर उठाने, सफाई के काम आदि के लिए कुछ कर्मचारी रख लिये।

ज्यों-ज्यों जानवरों की संख्या बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों उनको चराने के लिए जंगल में ले-जाना, दाना-भूसा देना, दुहना इत्यादि कार्य भी बढ़ते जाते थे। दूध को बेचना, बचे दूध की क्रीम निकाल घी बनाना और बछड़े-बछड़ियों को, जिनकी संख्या बढ़ रही थी और जिनकी गौशाला में आवश्यकता नहीं होती थी, देहातों में ले-जाकर बेचना आदि बहुत काम थे। बूढ़ी गौओं और साँडों के पालने का कार्य भी विकट होता जाता था। इन सबका सन्तोषजनक प्रबन्ध करने के लिए पर्याप्त भाग-दौड़ करनी पड़ती थी।

रामाश्रय तो गौशाला और उससे सम्बन्धित कार्यों का प्रबन्ध करता था। रामनिरंजन ताजे दूध की बिक्री का प्रबन्ध करने में लगा रहता था। वह प्रातःकाल उठ मोटर वैन को, जो दूध ले-जाने तथा दाना-भूसा इत्यादि खरीदकर लाने के लिए ली गई थी, ठीक करने में लग जाता था। दूध ले-जानेवाले बर्तन तो रात को ही धो-पोंछ और सुखाकर रख दिए जाते थे। प्रातः ही दूध दुहकर उनमें डाला जाता और उन्हें वैन में रख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर के तीन मुख्य-मुख्य स्थानों पर जाकर बेच दिया जाता था। एक-एक स्थान पर आधा-आधा घंटा वैन खड़ी रहती थी। प्रायः दूध के कूपन पहले ही बिक जाया करते थे और उन कूपनों के बदले में दूध दिया जाता था।

दूध बेचकर रामनिरंजन दिन के समय नौ बजे तक और सायंकाल सात बजे तक घर लौट आता था। यदि किसी दिन सब दूध नहीं बिकता तो उससे क्रीम निकाल ली जाती थी, और उससे घी बना लिया जाता था।

सेपरेटिड दूध (क्रीम-निकला दूध) बहुत सस्ते दाम पर मलीहाबाद में बेच दिया जाता था। यह सब काम निरंजन करता था। जब से सतीश अपनी नौकरी से मुक्त हो गौशाला में काम करने लगा था, हिसाब-किताब का काम उसे रखना होता था। रेखा को कर्मचारियों पर निरीक्षण का काम दिया गया था। साथ ही जब कभी कोई सरकारी अधिकारी अथवा बाहरी दर्शक गौशाला देखने आता तो रेखा उसका स्वागत करती और कार्यविधि समझाती थी।

भगवती और सरस्वती अन्नपूर्णा-रूप से घर के प्रबन्ध में रहती थीं। रामसुमन तथा दो अन्य ग्वाले दूध दोहने तथा उसको छान-साफ कर बर्तनों, जिनमें बेचने के लिए ले-जाना होता था, में भरने का काम करते थे। रामाश्रय की सम्मति से दूध दुहने को 'वैक्यूम सकर्ज' मँगवा लिये गए थे। इस प्रकार एक ही की देख-भाल में दस गौएँ एकदम दुही जा सकती थीं।

रेखा और रेखा की माँ में विवाह के विषय पर जब बात हो गई तो उसकी माँ ने कहा था कि वह इसे गुप्त रखेगी और किसी को नहीं बताएगी। इस वार्तालाप के कई दिन बाद तक सरस्वती का चित्त स्थिर नहीं रहा। धीरे-धीरे उसको अपने कर्त्तव्य का ज्ञान होने लगा।

दूसरी ओर रामसुमन रामनिरंजन के विवाह के लिए यत्न करने लगा था। एक दिन पुनः यह प्रश्न घर की गोष्ठी में उपस्थित हुआ। बात यह थी कि उस दिन सतीश के साथ एक लड़की वहाँ आई थी। वह मोटे और साधारण ढंग से सिले कपड़े पहने हुए थी। उसकी बाहें लम्बी थीं। उसका शरीर सुदृढ़ तथा पुष्ट था। रूप-रेखा साधारण और रंग गन्दमी था। भूषणादिक पहने हुए नहीं थी।

माँ से परिचय कराते हुए सतीश ने कहा, "माँ, इसका नाम सोमा है, तुम इसे देख-भाल लो।"

सरस्वती ने उसको सिर से पाँवों तक देखा। पर वह सिर से पाँव तक काँप रही थी। उसकी आँखें अपने पाँवों पर गड़ी थीं। उसकी माँ अपने अच्छे दिनों में जिस पतोहू का स्वप्न ले रही थी, देखकर वह सर्वथा विलीन होता था। माँ को पुत्र का निर्वाचन जँचा नहीं। इस पर भी उसने लड़की को अपने पास बिठाकर पूछा, "कहाँ रहती हो बेटी?"

अपराधी की भाँति न्यायकर्त्ता के सम्मुख बयान देती हुई-सी सोमा बोली, "यहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी दूर, गाँव के एक कोने में एक जद्दी मकान है, उसमें माँ के साथ रहती हूँ। पिताजी अत्यन्त बीमार पड़े हैं। परन्तु हम उनके लिए कुछ कर नहीं सकते, हम बहुत निर्धन हैं।"

सोमा की कथा सुनने के पश्चात् सरस्वती के मन में निर्धनता का कोई अभिशाप नहीं रहा था। इस पर भी वह सोमा के अन्य गुणों के विषय में जाँच करना चाहती थी। अतः उसने और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए पूछ लिया, "सोमा बेटी! सतीश तुम्हें कहाँ और कैसे मिला था?"

इस प्रश्न से तो वह बिल्कुल घबरा-सी गई, फिर भी किसी प्रकार साहस बटोर कर उसने कहा, "माँ जी, मैं तो उन्हें कभी न मिल पाती। वे अपने हाथों मुझे पकड़कर यहाँ ले आए हैं।....

"शेष विवरण आप उनसे ही पूछ लीजिए। वे ही बता सकते हैं कि क्यों मुझे यहाँ ले आए हैं।"

"कुछ घर का काम-काज कर सकती हो?"

"हाँ, एक निर्धन के घर की सब आवश्यकताएँ समझती हूँ और उन्हें पूर्ण भी कर सकती हूँ।"

माँ ने रेखा को बुलवा लिया। वह उस समय कर्मचारियों का साप्ताहिक वेतन वितरित करने में व्यस्त थी। रेखा आई तो माँ ने उससे सोमा का परिचय करा दिया।

रेखा ने परिचय सुनकर बहुत ही ध्यान से उसे देखा और फिर उसका हाथ पकड़ अपने कमरे में ले गई। सोमा पहले तो घबराई, फिर भी वह भयभीत-सी रेखा के साथ उसके कमरे में चली गई। उसे इस जाँच-पड़ताल पर बहुत संकोच हो रहा था। वहाँ ले जाकर रेखा ने उसको एक कुर्सी पर बैठाकर मुस्कराते हुए उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "पसन्द हो। तुम्हारी आँखों में ईमानदारी की चमक विद्यमान है। बताओ, इस घर में आना पसन्द करोगी?"

इससे सोमा को सान्त्वना मिली। उसकी जान में जान आई और वह साहस पकड़कर बोली, "घर का परिचय तो अभी बहुत ही अल्प है। परन्तु आपके भाई के विषय में जो कुछ जानती हूँ उससे तो यही चाहती हूँ कि उनकी सेवा करते-करते जीवन को मधुर बनाती रहूँ।"

"और वे भी तुम्हें पसन्द करते हैं?"

"दीदी, यह तो उनसे पूछने का प्रश्न है। मैं तो समझती हूँ कि मुझ पर और मेरे माता-पिता पर दया कर ही वे यह सब आयोजन कर रहे हैं।"

"कितना पढ़ी हो?"

"स्कूल अथवा कालेज में तो बिल्कुल नहीं पढ़ी। परन्तु घर पर माता-पिता ने कुछ पढ़ा दिया है।"

सोमा के उत्तर सर्वथा उपयुक्त और संक्षिप्त थे। इनका रेखा के मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने कहा, "क्या मुझे अपने घर आने का निमंत्रण दोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमा ने साहस पकड़कर कहा, "देखो दीदी ! घर तो है, किन्तु वहाँ कुछ देखने के लिए नहीं है। पिताजी अधरंग से पीड़ित चारपाई पर पड़े हैं। माँ उनकी सेवा में दिन-रात एक कर रही हैं। शेष मैं हूँ। इसके अतिरिक्त कदाचित् और कुछ देखने को नहीं है।"

इतना कहते-कहते सोमा की आँखें तरल हो आईं। परन्तु वह उन उमड़नेवाले आँसुओं को भीतर ही भीतर पी गई। उसने फिर कहा, "अपने भाई साहब को कहिएगा कि वे आपको और माताजी को एक दिन वहाँ ले आएँ। बिना माताजी की स्वीकृति के तो कुछ हो नहीं सकता।"

"तो उनको अभी पूछा नहीं ?"

"नहीं, मेरे सम्मुख तो अभी ही इन्होंने इस सम्बन्ध में इच्छा व्यक्त की है। आज ही वे घर गए थे और माताजी को साप्ताहिक सहायता देकर मुझे अपनी माता और बहन से परिचय करवाने को ले आए। मैं भी विचरती उनके साथ चली आई। मार्ग में ही इन्होंने बताया है कि वे मुझे अपने घर में सदा के लिए लाना चाहते हैं।"

"अच्छी बात है, यह समय हमारे भोजन का है। हम सब भोजन करते हैं, पश्चात् हम तुम्हारे साथ चलेंगे।"

इस प्रकार भोजन के समय पूर्ण परिवार से सोमा की जान-पहचान हो गई। रामनिरंजन सतीश के पास बैठा था। उसने कान में पूछ लिया, "कहाँ पा गए हो इसे ?"

"मलीहाबाद के घूरे पर पड़ी मिली है।"

"तुम्हारी पसन्द अच्छी है। कोई विशेष गुण ?"

"यह बहुत ही भली, कर्त्तव्य-परायण और मितभाषिणी है।"

"मालूम होता है मेहनत-मजदूरी से जी नहीं चुराती।"

"ऐसी तो चाहिए ही। क्यों, क्या विचार है तुम्हारा ?"

"ठीक है, हम राजा-रईस तो हैं नहीं, जो अपनी पत्नियों को रेशमी वस्त्रों में लपेटकर रखेंगे। यहाँ तो मेहनत करके ही खाना-पीना और कपड़े मिलेंगे।"

"इस बात का विचार करके ही यह निर्वाचन हुआ है। यदि रेखा और माँ को पसन्द आ गई तो अगले सप्ताह विवाह हो जावेगा।"

"और यदि पसन्द नहीं आई तो ?"

"तो क्या ? विवाह नहीं होगा।"

"बस, इतने से चुप हो जाओगे ? यही इससे तुम्हारा प्रेम है ?"

"प्रेम की बात मत पूछो। मालूम नहीं क्या आकर्षण है इसमें ! विवाह हो गया तो मेरा जीवन सफल हो जाएगा।"

"ओह ! तब तो माताजी से तुम्हारी सिफारिश करनी ही होगी।"

सतीश ने बात बदलकर पूछा, "तुम्हारी बारी भी तो आ गई है। मैं तो चाहता हूँ कि परिवार में नए रक्त का संचार होना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जितना नया रक्त तुम ला रहे हो वह पर्याप्त नहीं? यदि कुछ कमी रह गई तो उसे रामाश्रय पूरा कर देगा।"

"और तुम क्यों नहीं सहायता करोगे?"

"सतीश! क्या संसार में और कुछ करने को नहीं रह गया? यह रक्त-संचार की बात सबके वश की तो है नहीं।"

रामसुमन ने सरस्वती से पूछा, "मालकिन! बहू पसन्द आई है?"

"काका!" रेखा ने कहा, "पसन्द आने के पहले भी बहू कही जा सकती है क्या?"

"सतीश के पसन्द की हुई तो बहू बन गई।"

"काका! सोमा बहुत भली लड़की है।" सतीश ने कह दिया।

"अब तो माता जी का निर्णय शेष है कि इन्होंने इसे बहू बनाना है अथवा नहीं। वैसे इनका हमसे अब सम्बन्ध तो रहेगा ही।"

रेखा हँस पड़ी। सभी उसके हँसने का अर्थ समझने के लिए उसके कुछ कहने की प्रतीक्षा करने लगे। परन्तु आज वह हँसकर चुप ही रह गई। उसने उसकी व्याख्या नहीं की। रेखा की माँ रेखा के भावों को समझती थी। उस रात से, जब माँ-बेटी में रातभर बातें होती रही थीं, दोनों में एक-दूसरे को समझने की स्थिति बन गई थी। इस प्रकार रेखा की माँ ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं आज ही सोमा के साथ इसकी माँ से मिलने जा रही हूँ। विवाह लड़के-लड़की की पसन्द से ही तो नहीं हो जाता। यह तो एक प्राणी का दूसरे के परिवार में सम्मिलित होने का एक द्वार है। इस कारण इसकी माँ के विचार भी तो जानने चाहिएँ जिसने इसे अब तक पाला-पोसा और इतना बड़ा किया है। उसका भी निर्णय में अधिकार है।"

यह बात सबकी समझ में आ रही थी।

: ८ :

सतीश का सोमा से परिचय दवाइयों की दुकान पर हुआ था। एक दिन एक कम्पाउँडर एक लड़की को लेकर एकाउँटेण्ट के पास आया और कहने लगा, "बाबू! इस लड़की ने दवा तो बनवा ली है, पर उसका मूल्य इसके पास नहीं है। कहती है फिर दूँगी।"

सतीश ने लड़की की ओर देखकर कह दिया, "उधार पर देने का तो हमारे यहाँ नियम नहीं है।"

"पर मेरे पास तो मूल्य देने को एक कौड़ी भी नहीं है।"

"दाम नहीं थे तो दवा लेने ही क्यों आई थी?"

"दवा तो एक मास से नकद दाम देकर ले-जा रही हूँ। आज मेरे पास मूल्य नहीं है। विचार था कि इस बार आप लोग विश्वास कर दवा उधार में दे देंगे। हमें ग्वाला, बनिया सभी उधार पर दे देते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप ठीक कहती होंगी। किन्तु हमारे यहाँ तो उधार देने का कोई नियम नहीं है।"

यह सुन उस लड़की का मुँह उतर-सा गया। सतीश उसके मुख पर निराशा के भाव देख रहा था। लड़की की आँखें तरल हो गईं। उसे देख सतीश ने पूछ लिया, "किसके लिए दवा ले-जा रही हो ?"

"मेरे पिताजी बीमार हैं। हस्पताल के डॉक्टर को दिखाया था, उसका कहना था कि इस मूल्य की दवा हस्पताल में नहीं है। उसने नुस्खा लिख दिया और इस दुकान का पता देकर यहाँ भेज दिया।....

"एक मास हो गया है। एक-एक सप्ताह की दवा ले जाती हूँ, दाम दे जाती हूँ। दवा से इतना लाभ हुआ है कि पहले वे अचेत थे, अब कुछ सचेत हैं। परन्तु हिल-डुल नहीं सकते, न ही बोल सकते हैं।"

"अगले सप्ताह दाम कहाँ से ले आओगी ?"

"हम माँ-बेटी गोबर एकत्रित कर थापती हैं, और उपलों को बेचती हैं। इस सप्ताह वर्षा होती रही है, गोबर सूखा नहीं। आशा है अगले सप्ताह तक सूख जाएगा और मैं बेचकर दाम दे जाऊँगी।"

सतीश को रेखा स्मरण हो आई। उसने अपनी जेब से एक सप्ताह की दवाई का मूल्य, तीन रुपए छः आने, जमा कर दवा उसको दे दी। किन्तु वह अगले सप्ताह भी दाम नहीं ला सकी थी, क्योंकि वर्षा के बन्द होने पर भी उपले सूखे नहीं थे। सोमा आई और उसने चुपचाप दवा की बोतल सतीश के सामने रखकर तरल नेत्रों से उसकी ओर देखा। सतीश समझ गया। उसने चुपचाप इस बार भी दाम अपनी जेब से देकर दवा दे दी।

इसी सप्ताह सतीश ने नौकरी छोड़ दी और गौशाला में काम करने लगा। सोमा अगले सप्ताह दाम लेकर दवाईखाने में पहुँची तो सतीश वहाँ नहीं था। वह उसका पिछला ऋण चुकाने सतीश का नाम-धाम पूछकर उसे गौशाला में ढूँढती हुई आ पहुँची।

सतीश ने उसको देखा तो उसके पिता का समाचार पूछा। वह रोने लगी। उसने केवल यह बताया, "आपके छः रुपए बारह आने लाई हूँ।"

उसने काँपते हाथों से अपने आँचल की गाँठ खोली और रुपए गिनने लगी तो सतीश को प्रतीत हुआ कि कदाचित् उसके पिता का देहान्त हो गया है। इस कारण उसने पुनः पूछा, "क्या हाल है उनके रोग का ?"

"वे वैसे ही हैं।"

"दवा दे रही हो ?"

"बहुत कठिनाई से आपके रुपए इकट्ठे करके लाई हूँ। पिछले सप्ताह से उनको दवा नहीं दी जा सकी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ऐसा करो, जाकर दवा ले लो। मेरे रुपए तो फिर भी आ जाएँगे।"

"क्या जाने क्या होगा, आप तो अपने रुपए ले लीजिए।"

"नहीं, क्या नाम है तुम्हारा?"

"सोमावती। पर मुझे सोमा ही कहते हैं।"

सतीश ने उसको रुपए वापस कर दिए और उसे कहा कि वह औषध लेकर अपने पिताजी को दे दे।

कुछ समय बाद एक दिन सतीश प्रातःभ्रमण के लिए नियम से कुछ पूर्व ही घर से निकल गया। मार्ग में उसे सोमा गोबर एकत्रित करती हुई मिल गई। सोमा ने पहचाना तो हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगी। सतीश ने उसके पिता का समाचार पूछा और उसके घर का पता पूछा। उसने बताते हुए कहा, "आप डॉक्टर हैं क्या?"

"नहीं, क्यों?"

"हम किसी डॉक्टर को दिखाना चाहते हैं। डिस्पेंसरी का डॉक्टर जिसकी दवा से आरम्भ में कुछ लाभ हुआ था, दो रुपया फीस के लेता है।"

"चलो, जरा तुम्हारे पिताजी को ही देख लूँ।"

वास्तव में सतीश यह जानना चाहता था कि क्या वास्तव में वे बहुत ही निर्धन हैं। यदि ऐसा ही है तो इनकी सहायता करना उसका कर्तव्य हो जाएगा।

सोमा सतीश को अपने घर ले गई। घर की साधन-विहीन अवस्था देखकर सतीश को बहुत दुःख हुआ।

सोमा सतीश को अपने पिता की चारपाई के निकट ले गई। एक अधेड़ आयु का व्यक्ति खाट पर लेटा हुआ बितर-बितर छत की ओर देख रहा था। लगभग उसकी आयु की एक स्त्री खाट के एक ओर बैठी बाहों पर किसी प्रकार के तेल की मालिश कर रही थी। सोमा ने भीतर जाकर सतीश का परिचय कराने के लिए कहा, "ये वही बाबू हैं जिन्होंने दवा के पैसे दिए थे।"

सोमा की माँ उठकर हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगी। इसके पश्चात् सतीश ने रोगी को देखा और उसके रोग का इतिहास पूछा।

सोमा की माँ ने बताया, "आज से दो मास पूर्व ये स्नान करने स्नानागार में गए तो गिर पड़े। ये अचेत थे। हमने अस्पताल के डॉक्टर को बुलाकर दिखाया तो उन्होंने बताया कि इनके मस्तिष्क में कोई रक्त-वाहिनी नाड़ी फट गई है। पश्चात्, उसने दवा लिख दी। यह लड़की दवा लाकर देती रही, परन्तु अवस्था में कुछ सुधार नहीं हो रहा है। जब सोते हैं तो आँखें बंद हो जाती है और जब जागते हैं तो आँखें खुल जाती हैं। और कुछ भी न ये कह सकते हैं न कोई संकेत ही कर सकते हैं।"

सतीश हस्तपाल के डॉक्टर को ले आया। उसने देखकर निराशा प्रकट की। उसके बाद सतीश लखनऊ के एक बड़े डॉक्टर को ले आया। उसकी औषध चलती रही और अवस्था में सुधार होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार सतीश को दूसरे-तीसरे दिन सोमा के घर जाना पड़ने लगा। वह उनको दवा आदि के खर्च के अतिरिक्त कुछ साप्ताहिक सहायता भी देता था।

इसी अवधि में सतीश के मन में सोमा के प्रति मधुर भाव उत्पन्न होने लगा। एक दिन वह गया और सोमा की माँ से कहने लगा, "मैं चाहता हूँ कि आपका परिचय अपनी बहन से करा दूँ।"

"ठीक तो है! बाबू, हम आपके बहुत ही कृतज्ञ हैं। आप इतने अच्छे हैं तो अवश्य ही आपकी माँ और बहन भी अच्छी ही होंगी।"

इस प्रकार वह सोमा को लेकर घर की ओर चल पड़ा। मार्ग में चलते हुए सोमा ने कहा, "मुझे वहाँ जाते हुए डर-सा लग रहा है।"

"क्यों?"

"इस कारण कि कहीं वे नाराज हो कुछ उल्टा-सीधा न समझ बैठें।"

"उल्टा-सीधा क्या?"

यह सुन सोमा लज्जित-सी हो गई। वह प्रश्नभरी दृष्टि से सतीश के मुख की ओर देखने लगी। सतीश ने कह दिया, "यह तो ठीक है कि इस प्रकार मैं अधिक काल तक तुम्हारी सहायता नहीं कर सकूँगा। इससे लोग अनेकानेक बातें बनाने लगेंगे। इस कारण मैं ऐसा करने का विचार रखता हूँ जिससे लोग समझें कि तुम्हें मुझसे लेने का अधिकार है।"

सोमा अभी भी नहीं समझ सकी कि वह क्या करना चाहता है। उसे अभी भी अपने मुख की ओर देखते हुए सतीश ने बात स्पष्ट कर दी, "यदि मेरी माँ चाहेंगी तो तुम्हें वहीं रख लेगी सदा के लिए, और तुमसे तथा तुम्हारे माता-पिता से हमारा अटूट सम्बन्ध हो जाएगा। वे चाहेंगी तो तुम्हें रेखा की भाँति लड़की मानेंगी। उस नाते तुम मुझसे सहायता की अधिकारिणी बन जाओगी।"

सोमा अब कुछ-कुछ समझने लगी थी। फिर भी बात स्पष्ट होती न देख पूछने लगी, "क्या आपके घर में खाली स्थान है?"

"हाँ, माता जी ने अपनी पतोहू के लिए एक स्थान रिक्त रखा है।"

इस प्रकार की बात सुनकर सोमा की आँखें झुक गईं तथा उसके मुख पर लालिमा आ गई। सतीश उसके मुख को देखकर समझ गया कि उसने अपने मन के भाव स्पष्ट कर दिए हैं।

सोमा ने भूमि की ओर दखते हुए ही कहा, "बहन तो गरीब हो सकती है, परन्तु गरीब बहू तो सदा अपमानित ही होती रहेगी।"

"मान-अपमान की कोई बात नहीं है। कारण कि तुम तो इस घर का एक अभिन्न अंग बन जाओगी।"

इस प्रकार केवल संक्षिप्त-से परिचय और वार्तालाप के पश्चात् सोमा को रेखा तथा उसकी माँ से मिला दिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी मध्याह्नोत्तर सरस्वती और रेखा को साथ लेकर सोमा अपने घर माँ के सामने जा पहुँची। उसको एक युवक के साथ जाते और इतने समय तक अनुपस्थित देखकर सोमा की माँ चिन्ता का अनुभव कर रही थी। उसे भय था कि कहीं भोले-भाले कलेवर के अन्दर वह युवक राक्षस तो नहीं! वह अभी तक तो उसका नाम भी नहीं जानती थी।

अब सोमा को एक भद्र परिवार की स्त्री और लड़की के साथ देख उसने संतोष की साँस ली। वह आगे बढ़ आदर से उनका स्वागत करने लगी। रेखा उस निपट निर्धनता के प्रतीक गृह को देखकर अवाक् खड़ी रह गई। रेखा की माँ को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। पश्चात् सोमा की माँ एक चटाई बिछाकर उनको उस पर बैठने के लिए कहने लगी। रेखा की माँ तो बैठ गई, किन्तु रेखा सोमा की बाँह में बाँह डाल बोली, "पहले पिताजी को दिखाओ, उनको नमस्कार तो कर आवें।"

रेखा का विचार था कि यदि वे वहाँ से टल जाएँ तो दोनों स्त्रियों को परस्पर बातें करने में सुविधा होगी। सोमा रेखा को लेकर उस कमरे में चली गई जहाँ सोमा का पिता लेटा हुआ छत की ओर देख रहा था।

रेखा ने हाथ जोड़कर नमस्कार की तो रोगी के मुख पर प्रसन्नता दौड़ गई। आँखों की चमक और मुख के कम्पन को सोमा ने भी देखा। उसने रेखा को बताया, "देखो, यह मुख पर प्रसन्नता की रेखा आज दो मास पश्चात् दिखाई दे रही है। भगवान् जाने ये मन में क्या समझे!"

रेखा इस समाचार को सुनकर प्रसन्न थी। उसने कह दिया, "यही समझे होंगे कि एक लड़की की दो लड़कियाँ हो गई हैं। यह प्रसन्नता का विषय तो है ही।"

: ९ :

सोमा की माँ ने अपने दुर्भाग्य की कथा रेखा की माँ को सुनाई। उसने बताया, "सोमा के पिता गिरधरलाल शर्मा के पिता का यह मकान है। वह ब्राह्मण-वृत्ति से आजीविका चलाते थे। उनके देहान्त के समय सोमा के पिता का विवाह हो चुका था। जब मैं घर आई थी तो जिस चाव से मेरे ससुर मुझको खाने तथा पहनने को देते थे, उससे प्रतीत होता था कि वे कम से कम निर्धन तो नहीं हैं।....

"मेरे ससुर के देहान्त के समय मेरे पति की आयु पन्द्रह वर्ष की थी और उन्होंने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास कर ली थी। पश्चात् स्कूल में अध्यापक हुए। तब तक सोमा का जन्म हो चुका था। किन्तु वे भी इस समय तक बुरी संगत में पड़ चुके थे। जब तक सोमा पाँच वर्ष की हुई, उसके पिता ने घर के सभी भूषणादि बेचकर समाप्त कर दिए थे। एक स्कूल-मास्टर की आय में घर का खर्च चलाना कठिन तो था ही, साथ ही उनकी उच्छृंखलता के लिए धन मिलना कठिन था। जब घर की पूर्ण सम्पत्ति समाप्त हो गई तो वे बढ़िया शराब छोड़ देशी शराब पीने लगे और फिर स्पिरिट। इससे वे रुग्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने लगे। उनके मस्तिष्क ने काम करना छोड़ दिया। मेरे पास केवल मंगलसूत्र रह गया था। परन्तु उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया।....

"इसके पश्चात् बारह वर्ष बहुत कठिनाई से निकले। मैं किसी के घर बर्तन मलती थी। उन्होंने शराब छोड़ दी।....

"इस काल में उन्होंने सोमा को स्वयं कुछ-न-कुछ पढ़ाया-लिखाया। उसको हिन्दी, गणित और कुछ अँग्रेजी भी सिखाई। परन्तु नियम से कमाते और पढ़ाते तो उसे स्कूल भेज सकती। अतः वह जो कुछ पढ़ी है वह घर पर ही पढ़ी है।....

"तीन मास के लगभग हुए हैं। वे प्रातःभ्रमण के लिए निकले तो वर्षा में भीग गए। उनको निमोनिया हो गया। हस्पताल में चिकित्सा हुई। निमोनिया से तो बच गए परन्तु दुर्बल अधिक हो गए। एक दिन वे स्नानागार में चक्कर खाकर गिर पड़े और उनको अर्द्धांगवात हो गया।....

"अब आपके सुपुत्र लखनऊ के एक डॉक्टर से चिकित्सा करा रहे हैं।"

रेखा की माँ ने सतीश का विचार व्यक्त किया तो सोमा की माँ विस्मय में उसका मुँह देखती रह गई। सरस्वती ने पूछा, "बताओ बहन! तुम्हारा क्या विचार है?"

"हम अपने को आपके योग्य किसी भी भाँति नहीं मानते। यह विवाह बेमेल होगा। सोमा आपके लड़के के जूते की बराबरी भी नहीं कर सकती। फिर हम निर्धन भी हैं। लड़की के लिए विवाह के समय लपेटने के कपड़े भी तो हमारे पास नहीं हैं।....

"नहीं बहन! यह मैं किसी प्रकार से स्वीकार नहीं कर सकती। आपके लड़के से सोमा को बाँध देना तो उसके साथ भारी अन्याय हो जाएगा।"

सरस्वती इस अस्वीकृति से प्रभावित हुई। वह सतीश से अत्यन्त स्नेह रखती थी। वह उसका अनिष्ट होता नहीं देख सकती थी। साथ ही एक बात रेखा ने आते हुए कही थी। उसका कहना था कि विवाह सतीश को करना है, तुम्हें नहीं। तुम्हें तो यह देखना चाहिए कि उसकी बहू तुम्हारी सेवा कर सकती है अथवा नहीं, या कम से कम वह तुम्हें कष्ट तो नहीं देगी।

अपने मन में इस बात का स्मरण आने पर सरस्वती ने कहा, "यह मेल-बेमेल, योग्य-अयोग्य की बात तो विवाह करनेवाले जानें। हम क्यों इसमें अपनी टाँग अड़ाएँ? मेरा तो यह कहना है कि यदि तुम्हें सतीश अपने लड़के के स्थान पर दिखाई देता है तो तुम्हारे इन्कार करने का कोई कारण नहीं है।....

"रही बात लेन-देन की। सुनो, एक समय था कि हमारे पास दो लाख रुपए के आभूषण तिजोरी में रखे रहते थे। फिर समय आया कि एक धोती-जम्पर के साथ मैं और यह लड़की घर से बाहर कर दिए गए। हमारे पास रात को खाने तक के लिए भी नहीं था। उस अवस्था में भगवान ने एक देवता को भेज दिया जिसने हमें धूलि से उठाकर पुनः राज-गद्दी पर बैठाया है।....

"क्या जानें, किसकी प्रेरणा से यह सम्बन्ध बन रहा है! कपड़े तो मिल जाएँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण भी भगवान के दिए हो जाएँगे। जो इतना-कुछ कर रहा है, अवशिष्ट भी वह कर देगा।"

सोमा की माँ चुप रही और बात एक प्रकार से निश्चित-सी हो गई। जाने से पूर्व रेखा ने सोमा को कहा, "सोमा बहन, अब सड़कों पर से गोबर बटोरने की आवश्यकता नहीं। हमारे घर में बटोरने के लिए बहुत गोबर है। तुम आओगी तो यह काम जी-भर कर लेना।"

अगले दिन रेखा सोमा के घर पर आई तो एक नौकर के हाथ अन्न-अनाज, सब्जियाँ, दालें और कपड़े उठवाकर ले आई। कुछ रुपए भी सोमा के हाथ में देते हुए वह बोली, "देखो सोमा! जब तक तुम्हें हम अपने घर नहीं ले जाते, तब तक इससे निर्वाह करो। दूध गौशाला में से आ जाया करेगा। यदि किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता हुई तो वह तुरन्त वहाँ आकर मुझे बता जाना।····

"अब तुम हमारे परिवार का अंग बन गई हो। इस कारण तुम्हारा सुख-दुःख हमारा सुख-दुःख हो गया है। काका आज ज्योतिषी से विवाह का मुहूर्त निकलवाने जा रहे हैं। आशा है कि शीघ्र ही हम सब मिलकर तुम्हें लिवा लेने को आएँगे।"

मुहूर्त के दिन सोमा की माँ के घर पर वेदी बनाने के लिए पुरोहित आया और सामान तैयार करने लगा। मध्याह्नोत्तर सतीश, रामनिरंजन, रामाश्रय, रेखा, सरस्वती, भगवती और रामसुमन आए और विवाह करके वहीं बैठे मिठाई खा तथा पुरोहित को दक्षिणा दे सोमा को अपनी वैन में बैठाकर ले गए। विवाह के समय गिरधरलाल की खाट विवाह-मण्डप के समीप लाकर रख दी गई थी। वे देखते रहे और कदाचित् सब समझते रहे कि क्या हो रहा है। सोमा को डोली में जाते देख उनकी आँखों से भी दो बूँद आँसू के टपक पड़े।

घर पर रामसुमन ने बड़ी धूम-धाम की हुई थी। उसने मलीहाबाद के अपने सब परिचितों और सेठ कमलापति के कुछ सम्बन्धियों को, जो सतीश से मिलते रहते थे, रानी के ससुरालवालों और गौशाला के सब कर्मचारियों को बहुत उत्तम भोज पर बुलाया हुआ था। अतिथि पहुँचे हुए थे। सतीश गाजे-बाजे के साथ डोली लेकर वहाँ आया।

सोमा को डोली से उतारकर घर की ऊपर की मंजिल पर ले गए और वहाँ उसको नववधू की भाँति भूषण-आभरण से अलंकृत कर नववधू की भाँति नीचे लाया गया।

गौशाला के मैदान में एक बहुत बड़े शामियाने के नीचे दो सौ के लगभग व्यक्तियों के खाने का प्रबन्ध था। जब सब लोग खाने लगे तो सतीश अपनी पत्नी को लेकर सब अतिथियों को नमस्कार करने के लिए चारों ओर घूम गया। सबने अनुभव किया कि लड़की अति सौम्य प्रकृति की है।

रात के समय सतीश और सोमा ने माँ के चरण स्पर्श कर कहा, "माँ, आशीर्वाद दो कि हमारा जीवन सुखमय हो!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सतीश ! यह नई बात कहाँ से सीखकर आए हो ? आज तक कभी ऐसा किया नहीं ।"

"माँ ! अब एक नया सलाहकार जो आ गया है । जब हम सोने को जाने को थे तो यह बोली—"मुझे तो एक काम करना है ।' मैंने पूछा—क्या ?

"कहने लगी—'सोने से पहले माँ जी के चरण स्पर्श करूँगी' ।"

सतीश की बात सुनकर सब-के-सब जो वहाँ पर उपस्थित थे, हँसने लगे । रानी के पास ही उसका पति बैठा था । वह उसको सम्बोधित कर कहने लगी, "देखो न ! भाभी ने आते ही कैसे लगाम डाल दी है !"

उसने भी व्यंग से कहा, "रानी ! जिस बात से बहू अपना जीवन आरम्भ कर रही है, क्या तुमने भी उसी प्रकार आरम्भ किया था ? तुम्हारी तो आते ही वस्त्र और आभूषणों की माँग आरम्भ हो गई थी । जब तक कि रत्न-जड़ित अँगूठी नहीं मिली थी, श्रीमती जी का हाथी की सूँड जैसा घूँघट हटा ही नहीं था ।"

"वह तो, 'जैसा मुख वैसी चपेड़' वाली बात थी ।"

इस बात से तो रानी के पति के माथे पर त्यौरी आ गई ।

रेखा की माँ ने देखा कि अभी महाभारत छिड़ने वाला है । इससे उसने बाद बदल दी और सतीश और उसकी बहू के सिर पर हाथ रखकर बोली, "बेटा ! जाओ, सौभाग्यवती होओ ! सौ वर्ष तक पुत्र-पौत्रों से विभूषित गृहस्थ-जीवन व्यतीत करो !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

एक दिन रेखा को, जब वह गौशाला के काम में व्यस्त थी, चपरासी ने आकर कहा, "बाहर एक स्त्री सेठ कमलापति की पत्नी से मिलने आई है।"

"क्या नाम बताया है उसने अपना?"

"इकादशी।"

"ओह!" रेखा समझ गई कि वह मामी है। उसने चपरासी को कहा, "भीतर ले आओ।"

इकादशी को रेखा के पास लाया गया। रेखा ने हाथ जोड़कर नमस्कार की और मामी को अपने समीप कुर्सी पर बैठाकर सुख-समाचार पूछने लगी। इकादशी ने उत्तर देने के स्थान पर रोना शुरू कर दिया।

"क्यों, क्या हुआ है? मामा जी कहाँ हैं?" उसने एक-साथ ही पूछा।

इसका उत्तर न देकर इकादशी बोली, "तुम्हारी माता जी कहाँ हैं?"

रेखा समझ गई वह उसे बताना नहीं चाहती। इस कारण वह उसे घर में ले गई। इकादशी ने रेखा तथा उसकी माँ के व्यवहार से समझ लिया कि ये लोग उस व्यवहार को भूली नहीं जो उसके पति ने उनके साथ किया था।

सरस्वती ने भी साधारण रूप से उसको सामने बैठाकर कहा, "भाभी! भाई साहब को कहाँ छोड़ आई हो?"

खिन्न स्वर में इकादशी बोली, "बहनजी! जो व्यवहार रमा के पिता ने आपके साथ किया है उसे मैं जानती हूँ, और यदि उसके प्रतिफलस्वरूप मुझे धक्के दिलवाकर यहाँ से निकलवा भी दें, तो भी मुझे कोई आपत्ति न होगी। मैं इस समय अत्यन्त दुःखी हूँ। ऐसे समय में ही सम्बन्धियों से आश्रय माँगा जाता है।....

"सरस्वती बहन! तुम्हें पता ही है कि रानी के पिताजी ने जमानत देकर उन्हें छुड़वाया था तो उनका विचार लखनऊ से भागने का था, परन्तु मैंने मना कर दिया। फिर भी वे माने नहीं; लखनऊ छोड़ कलकत्ता चले गए। मुझे भी उनके साथ ही जाना पड़ा। कलकत्ता जाकर वे कुछ काम-धन्धा चलाने लगे। वहाँ पर उन्होंने अपने कल्पित नाम से कार्य शुरू किया। उन दिनों हम दोनों में प्रायः इस बात पर विवाद होता रहता था। मैं चाहती थी कि आपको कुछ रुपया भेजकर सहायता की जाए। वे मेरी बात को टालते रहते थे। इसी व्यापार के सम्बन्ध में उन्हें कई बार जापान जाना पड़ा था। एक बार ऐसा हुआ कि वे वहाँ से लौटे नहीं। मेरे पास वहाँ का उनका पता नहीं था और मैं नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानती थी कि किस प्रकार उनसे सम्पर्क स्थापित किया जाए। वहाँ से उन्होंने कुछ खर्च के लिए भी नहीं भेजा। मेरे पास कुछ आभूषण थे और कुछ नकद रुपए भी। उनसे तीन वर्ष तक काम चलता रहा। तत्पश्चात् रुपए समाप्त हो जाने से हम भूखे मरने लगे। कुछ समय एक घर में चौका-बासन की नौकरी भी की, किन्तु उससे भी काम नहीं चला। साथ ही जापान से परिचित आए और उनसे उनका समाचार मिला। वे वहाँ किसी की हत्या करने के अपराध में पकड़े गए थे। समाचार लानेवाले का विचार था कि उन्हें मृत्यु-दण्ड मिलने वाला था।....

"ऐसी अवस्था में मैं छः वर्ष कलकत्ता में रहने के पश्चात् लखनऊ चली आई हूँ। सीताराम अग्रवाल की पत्नी मेरी सहेली थी। मैं उसके पास गई तो उसने घर के काम-काज की मुझे नौकरी दे दी।....

"छः मास मैं उसी के घर पर काम करती रही। अन्त में मुझ पर एक झूठा अपराध लगाकर उन्होंने आज निकाल दिया है।....

"आज प्रातः मुझे उनका घर छोड़ना था। मैं समझ नहीं पा रही थी कि कहाँ जाऊँ। मेरे पास इन पहने हुए कपड़ों के अतिरिक्त एक कौड़ी भी नहीं है।....

"यद्यपि मेरा आप पर किसी प्रकार का अधिकार नहीं रहा कि आपसे सहायता माँगूँ, फिर भी....मैं अब और किसके पास जाऊँ? जो भी पूर्व-परिचित हैं, सभी ने मुँह मोड़ लिया है। निर्धन का कौन अपना है!"

रेखा ने पूछा, "मामी, हम आपकी क्या सहायता कर सकते हैं?"

"बेटी! मैं इस पेट की अग्नि को शांत करने के लिए दो टुकड़े माँगने आई हूँ।"

सरस्वती बोली, "यहाँ पर तो काम करने पर ही रोटी मिलती है।"

"मुझे कोई काम दे दो, मैं उसे खुशी से कर दूँगी।"

"जब हम यहाँ आए थे तो रेखा गोबर एकत्रित करती थी।"

"वह काम मैं कर दूँगी।"

"नहीं मामी!" रेखा ने द्रवित होकर कहा, "तुम मेरी भाँति कठिन काम नहीं कर सकोगी। इस कारण तुम घर के काम-काज में हमारा हाथ बटाती रहा करो तो यहाँ रहने को स्थान, खाने को भोजन तथा पहनने को वस्त्र मिल जाएँगे।"

"मुझे स्वीकार है।"

"माँ! मामी को यहीं रहने दो। आखिर है तो वह अपनी ही।"

इसके पश्चात् इकादशी रेखा की माँ के साथ रहने लगी। वह घर का काम-काज कर देती थी और बदले में निर्वाह का सामान पा जाती थी।

: २ :

एक दिन रामसुमन अपने गाँव गया और वहाँ रामनिरंजन के लिए लड़की देख आया। उसने लड़की का परिचय अपनी पत्नी को दे दिया। उसने बताया, "भागीरथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा पड़ोसी और मेरे बचपन का साथी है। उसकी एक लड़की है। उसकी उम्र पन्द्रह वर्ष की है। मैंने उसे रामनिरंजन के लिए पसंद किया है। दो-चार दिन में भगीरथ आएगा और लड़के को देख जाएगा।"

"लड़की कुछ पढ़ी-लिखी है न?"

"उस गाँव में स्कूल तो है, परन्तु मैंने पूछा नहीं।"

"रंग-रूप कैसा है?"

"रंग उसका गोरा है और नखशिख भी अच्छे हैं। मैं समझता हूँ कि रामनिरंजन अवश्य पसंद कर लेगा।"

"पहले उससे पूछ लो। उस पर तो सतीश का रंग चढ़ा हुआ है। क्या जाने वह भी अपनी पसंद पर हठ करने लगे!"

परिणाम यह हुआ कि रात को भोजनोपरांत परिवार की गोष्ठी हुई। जब रेखा को पता चला कि गोष्ठी में रामनिरंजन की सगाई की चर्चा होने वाली है, तो वह पीछे हटकर बैठ गई। जब रामनिरंजन और सतीश आए तो रामसुमन ने अपने यत्नों का परिणाम वर्णन करते हुए कहा—

"कुछ दिन हुए लखनऊ में घूमता हुआ मुझे अपने गाँव का एक बचपन का मित्र मिल गया था। बातचीत में पता चला कि उसकी पन्द्रह वर्ष की लड़की है। मैंने उसके लिए रामनिरंजन का उल्लेख किया तो उसने कहा पहले गाँव में लड़की जरूर देख लो। मैं कल गाँव गया था। भागीरथ ने मुझे अपने घर में ठहराया। जब लड़की खाना परसने आई तो उसने संकेत से बता दिया कि वही लड़की है। पिछले ज्येष्ठ मास में वह पन्द्रह वर्ष की हुई है। मुझे लड़की पसन्द आ गई। लम्बी, सुन्दर, गौरवर्णीय और अति चञ्चल प्रकृति की है।"

"पर पिताजी!" रामनिरंजन ने कहा, "मैंने तो अपने विवाह का निश्चय किया हुआ है।"

"क्या निश्चय किया हुआ है?"

"यही कि अभी विवाह नहीं करना।"

"तो फिर कब करना है?"

"जब संयोग होगा।"

"संयोग कौन बनाएगा और कैसे पता चले कि कब संयोग होगा और अब नहीं है?"

"पिताजी! यह बात युक्ति का विषय नहीं है।"

"निरंजन!" रामसुमन ने डाँटकर कहा, "मैं अपनी स्वीकृति भागीरथ को दे आया हूँ। अब तो उसकी ओर से हाँ अथवा ना की बात रह गई है। यदि उसको आपत्ति न हुई तो यह विवाह हुए बिना नहीं रहेगा।"

रामनिरंजन ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। इसका यही अर्थ समझा गया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको कोई आपत्ति नहीं है। इस पर भगवती ने कहा, "एक बात गलत हो गई है।"

"क्या ?" रामसुमन ने विस्मय में पूछा।

"तुम दोनों पुरुषों ने लड़का-लड़की देखकर अपनी स्वीकृति दे दी है। मेरा और लड़की की माँ का कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा न ? पर यह काम तो स्त्रियों का है। क्या माताओं का पुत्र-पुत्री से कोई संबंध नहीं ?"

यह सुन रेखा हँस पड़ी। वह बोली, "काका ! आपकी स्वीकृति निरर्थक हो गई है ! अतः यही समझना चाहिए कि अभी कुछ भी निश्चित नहीं हुआ है। हाँ, रामनिरंजन तो लड़की को देखकर ही स्वीकृति देगा। नहीं तो सतीश भैया सदा उनका उपहास किया करेंगे।"

रामनिरंजन ने पुनः उत्साह पकड़कर कहा, "लड़की ने श्वसुर को देख लिया है और मैं अपने श्वसुर को देख लूँगा, अर्थात् दोनों के श्वसुर का वरण करना है, पति का नाता फोकट में ही हो जाएगा।"

यह सुनकर तो सभी हँस पड़े। अन्त में यह निश्चय हुआ कि भागीरथ को आने दिया जाए। लड़का देखने दिया जाए। पश्चात् विचार किया जाए।

फिर भी रेखा ने कह दिया, "बिना मेरे द्वारा भाभी को पसन्द किए विवाह नहीं हो सकेगा।"

रामनिरंजन ने हँसते हुए कहा, "तुम्हें तो विवाह के पश्चात् भी उसके दर्शन नहीं करने दूँगा।"

"तब तो ननद-भाभी में ठन पड़ेगी।" भगवती ने हँसते हुए कहा।

सतीश ने, जब गोष्ठी समाप्त हो गई, निरंजन की पीठ ठोंकते हुए कहा, "निरंजन, तुम तो सदा मुझसे आगे रहते थे, इसमें पीछे क्यों रह गए हो ? अब आगे निकल सकते हो।"

"नहीं सतीश, अब नहीं। अब तो पीछे रह गया हूँ और कदाचित् सदा पीछे ही रहूँगा।"

"झटपट विवाह करने की तैयारी करो। फिर आगे निकलना कठिन नहीं। पहली सीढ़ी चढ़ना ही कठिन है।"

"मैं तुमसे पीछे रहा हूँ तो अब पीछे ही रहूँगा।" फिर उसने धीरे से उसके कान के समीप मुँह ले-जाकर कह दिया, "मैं विवाह ही नहीं करूँगा।"

"अरे यह क्या कह रहे हो ! भला क्यों ?"

"बस मेरा यह निश्चय है।"

इस समय तक गोष्ठी समाप्त हो चुकी थी। सभी अपने-अपने स्थान पर जा चुके थे। रेखा और उसकी माँ दोनों अपने कमरे में पहुँचीं तो रेखा मुख पर चादर ओढ़कर खाट पर लेट गई। माँ ने उसकी खाट पर बैठते हुए कहा, "अब क्या कहती हो ? कहो तो बात चलाऊँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं माँ, मैं इसमें टाँग अड़ाना उचित नहीं समझती। मैं किसी के मार्ग में बाधा उपस्थित नहीं करना चाहती। फिर जिसका चुनाव हुआ है वह तो सर्वसम्पन्न है।"

"देख लो, जब बात एक बार आरम्भ हुई तो फिर माननी ही पड़ेगी।"

"माँ!" रेखा ने मुख से कपड़ा हटाते हुए कहा, "तुम चुप रहो, भाग्य को अपना मार्ग स्वयं बनाने दो। भाग्य पर बलप्रयोग करने से हानि होने की सम्भावना है।" यह कहते-कहते रेखा की आँखें तरल हो आईं। उसने पुनः मुख पर कपड़ा ओढ़ लिया और भीतर से ही बोली, "मैं सो रही हूँ।"

अब डेरी का काम और भी विस्तृत हो गया। गौओं की संख्या एक सौ के लगभग हो गई थी। सभी दूध सीधा ग्राहकों के पास पहुँचाने में असुविधा होने लगी थी। नित्य दस-बीस सेर दूध बच जाता था जिसका घी बनाना पड़ता था। परन्तु घी में दूध से कम लाभ होता था। इस पर भी धीरे-धीरे दूध और घी बेचने के कार्य में प्रगति होती जाती थी।

अब दूध बाँटने के लिए दो वैन रख ली गई थीं। एक वैन निरंजन ले जाता था और दूसरी सतीश। घी बेचने के लिए एक दुकानदार को एजेंसी दे दी गई थी।

अब बिक्री की सीमा भी बढ़ गई थी। वह चार सौ रुपए से अधिक होने लगी थी। अधिकांश धन तो मास के आरम्भ में कूपन बिकने पर मिल जाया करता था। फिर भी सौ-डेढ़ सौ रुपया प्रतिदिन नकद भी आता था। रुपया रामनिरंजन और सतीश लेकर आते थे। उसे लेजर में चढ़ाकर रेखा, जो आजकल कार्यालय के निरीक्षण का कार्य करती थी, के सुपुर्द कर दिया जाता था और वह बैंक में जमा करा आती थी।

आजकल रामाश्रय कर्मचारियों की सहायता से गौशाला का प्रबन्ध करता था। रामसुमन तो गौशाला के लिए आवश्यक पदार्थ—भूसा, दाना, घास, रस्से इत्यादि की खरीद आदि में ही लगा रहता था।

रात को रामसुमन और सतीश हिसाब मिलाते थे।

गौशाला में इस समय कर्मचारी काम करते थे जो वेतन पाते थे। उनका वेतन पचास रुपया मासिक से लेकर सौ रुपए तक था।

एक दिन सतीश बाजार से दूध बाँटकर लौटा और नकदी रेखा के पास जमा करने लगा तो उसने देखा कि एक देहाती ताँगे से उतरकर गौशाला के अन्दर आ रहा था। फाटक पर बैठा चौकीदार उससे बात कर उसे कार्यालय में ले आया। उस समय सतीश रुपए गिनकर रेखा को दे रहा था। वह देहाती सर्वथा श्वेत वस्त्र पहने हुए माथे पर चन्दन का तिलक लगाए और गले में रुद्राक्ष की माला पहने सामने आया तो रेखा समझ गई कि भागीरथ मिश्र ही होंगे। उसने अर्थभरी दृष्टि से सतीश की ओर देखा तो सतीश ने पूछ लिया—

"आप पण्डित रामसुमन जी से मिलना चाहते हैं न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, कैसे मालूम हुआ बेटा ?"

"आप बछरावाँ से आए हैं न ?"

वह विस्मय में सतीश का मुख देखता रह गया। फिर बिना कुछ बोले सिर हिला कर हाँ में संकेत कर दिया। सतीश ने चपरासी को कहा, "इनको काकाजी के पास ले जाओ।"

चपरासी उनको लेकर गया तो रेखा ने कहा, "भला आदमी प्रतीत होता है।"

"देखें ऊँट किस करवट बैठता है।"

"क्यों ?"

"रामनिरंजन कल कह रहा था कि वह विवाह नहीं करना चाहता।"

"क्यों ? कुछ कारण भी बताया है ?"

"नहीं। एक बात तो निश्चित ही है। जो विवाह से इन्कार करते हैं उनकी दृष्टि किसी ऐसी जगह होती है जो उनके बड़ों को पसन्द नहीं होता।"

"यह कोई सिद्धान्त तो नहीं है।"

"एक प्रकार से सिद्धान्त ही है। निन्यानवे प्रतिशत सत्य है।"

रेखा हँस पड़ी। सतीश ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो उसने कहा, "गलत है। अधिकाधिक पचास प्रतिशत ही यह बात होती है। और शेष पचास प्रतिशत में अन्य अनेक कारण होते हैं।"

"तुम तो ऐसे बात बना रही हो जैसे तुम्हें इसका अनुभव है।"

रेखा हँस दी।

: ३ :

सतीश कार्यालय से निकलकर बैठक में चला गया। वह भोजन के समय तक वहाँ पर बैठकर कुछ अध्ययन किया करता था। सतीश ने सामने रखे शैल्फ से एक पुस्तक उठाई और पढ़ने लगा। उसको पढ़ते हुए अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि रामसुमन भागीरथ मिश्र को साथ लिये हुए वहाँ आ गया। उसने परिचय कराते हुए कहा, "देखो सतीश ! ये हैं बछरावाँ के पं० भागीरथ मिश्र।" इतना कहकर रामसुमन वहाँ से चला गया।

सतीश ने मिश्र जी को नमस्कार करते हुए पूछा, "कैसे पधारना हुआ है ?"

भागीरथ बोला, "देखो बेटा ! रामसुमन और मैं बचपन के मित्र हैं। एक दिन ये मुझे अमीनाबाद पार्क में मिल गए तो बच्चों के विषय में बात हो गई। हम दोनों का विचार हुआ कि हमारे सम्बन्ध अधिक घने हो जाएँ। इसके लिए तीन-चार दिन हुए, ये हमारे गाँव में गए और मेरी लड़की को अपने सुपुत्र के लिए पसन्द कर आए। मैं अब बात पक्की करने के लिए यहाँ आया हूँ।"

"तो बात पक्की हो गई है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लड़के को देखने के पश्चात् निर्णय करना था, सो मैंने लड़का देख लिया है। अब रामसुमन से आगे का कार्यक्रम निश्चित करना है।"

"लड़का पसन्द आ गया है?"

"हाँ, मुझे तो पसन्द है।"

सतीश ने समझा कि रामनिरंजन दूध बेचकर आ गया होगा और काका ने उसको दिखा दिया है। इस कारण उसने पूछ लिया, "आपके अतिरिक्त और किसी को भी पसन्द करना है?"

"हमारे घर की औरतों को भी देखना है। सो बताइए, आप हमारे घर में कब आ रहे हैं?"

"मैं क्या करूँगा वहाँ जाकर?"

"आपको कुछ करना नहीं होगा, आप तो केवल अपने आने का दिन बता दें, शेष सब मैं कर लूँगा।"

वास्तव में जब नीचे कार्यालय में ही सतीश ने मिश्र जी ने पूछ लिया कि वे बछरावाँ से आए हैं क्या? तो वे समझे थे कि सतीश ही रामसुमन का लड़का है जिसकी सगाई की बातचीत हो रही है। मिश्र जी की इस भूल को सतीश समझ गया। वह जान गया कि उसको ही रामनिरंजन समझा जा रहा है। सतीश के मन में हँसी सूझी। उसने समझा कि बात स्पष्ट तो होगी ही, अभी कुछ मनोविनोद हो जाए। इस कारण उसने बिना अपना परिचय दिए कह दिया, "आप तो कर लेंगे। परन्तु प्रश्न यह है कि आपके घर की स्त्रियों को लड़का पसन्द न आया तो क्या होगा?"

"तो विवाह नहीं होगा।"

"इससे तो लड़के का भारी अपमान हो जावेगा। यह शर्त हमें स्वीकार नहीं।"

"तो आप क्या चाहेंगे?"

"मैं समझता हूँ कि लड़के को तब बुलाना चाहिए जब सब उसको पसन्द कर लें।"

इस समय रामनिरंजन, जिसको उसके पिता ने भेजा था, आ गया। वह चुपचाप आकर बैठ गया। सतीश ने अभी रहस्योद्घाटन न करते हुए अपना कथन जारी रखा। उसने कहा, "ऐसी अवस्था में उचित यही होगा कि आपके घर की स्त्रियाँ यहाँ आकर लड़के को देख जाएँ।"

रामनिरंजन ने इस वार्तालाप में बोलना उचित नहीं समझा। उसने देखा कि अभी भी सिद्धान्तात्मक बातें हो रही हैं। जब किसी प्रकार का निश्चय होने लगेगा तो वह बोल पड़ेगा। ऐसा विचार कर उसने सतीश को बात करने दी। सतीश ने अपना दृष्टिकोण समझाने के लिए कहा, "परन्तु देखिए न! आप एक लड़के को निमन्त्रण देते हैं और बाद में उसको अस्वीकार कर देते हैं, उससे लड़के के मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?"

"आशा तो है कि आप पसन्द कर लिये जाएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिरंजन भी मिश्र जी की भूल समझ गया। सतीश को अपने स्थान पर बातचीत करते देख वह हँस पड़ा और मिश्र जी के भ्रम को दूर करने के स्थान पर सतीश की बात का समर्थन करते हुए कहने लगा, "देखिए जी ! आशा और निश्चय में भारी अन्तर है। मेरे विचार में एक बात हो सकती है। आप यह बताइए कि आपने यदि पसन्द कर लिया तो आप अपने दामाद को क्या देंगे ? इस बात को जानकर ही वह इस अपमान के भय को सिर पर ले सकता है।"

"इस बात का लेन-देन से क्या सम्बन्ध हो सकता है ? यह पसन्द होने के पश्चात् विचार कर लिया जावेगा।"

"जी नहीं, आप समझे नहीं। कोई व्यक्ति जुवा खेलते-खेलते हार जाता है, तो भी खेलना बन्द नहीं करता। उसे जीतने की आशा लगी रहती है। कोई आपके गाँव में जाए ही क्यों यदि उसे अपमानित होने का भय हो, और लाभ की कुछ आशा न हो ?"

"तो यह बात है ! देखिए, मैं बहुत ही निर्धन किसान हूँ, इस पर भी चार-पाँच हजार तो दे ही सकता हूँ।"

"कितनी भूमि है आपके पास ?"

"अपनी तो दस बीघा है, कुछ अधिक भी ले रखी है। यह लड़की ही तो मेरी एक-मात्र सन्तान है। मेरे जीवन की कमाई इसी के लिए तो है !"

सतीश ने पूछा, "यदि सभी कुछ लड़की को ही दे देंगे तो फिर अपना निर्वाह कैसे करेंगे ?"

"और एकत्रित करूँगा अपने लिए। अभी बूढ़ा तो नहीं हुआ।"

"परन्तु मालूम होता है कि बूढ़े हो रहे हैं।"

"कुछ भी हो अपनी लड़की ही तो है। उसके लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ।"

"एक बात और है।" रामनिरंजन ने पूछा, "क्या लड़की को लड़का देख सकेगा ?"

"यह तो हमारे यहाँ रिवाज नहीं है। हाँ, आपकी माता उसे देख सकती हैं।"

"तो ऐसा ही सही। आप लड़की को लाकर लड़के की माँ को दिखा दीजिए, तब लड़का भी लड़की की माँ को दिखाने को ले-जाया जा सकेगा।"

इस उत्तर से भागीरथ को निराशा हुई। बात किन्तु युक्ति-युक्ति थी, फिर भी लड़की को लखनऊ लाकर दिखाना उसे पसन्द नहीं था।

सतीश ने कहा, "अच्छा आप काका से बात कर लीजिए।"

भागीरथ इससे प्रसन्न हुआ। उसने अनुमान लगाया कि लड़का मान गया।

भागीरथ मिश्र के चले जाने पर रामनिरंजन ने सतीश से कहा, "सतीश ! मैं यहाँ विवाह नहीं करूँगा।....

"मैं इन्हें सभी कुछ विवाह पर लगाकर निर्धन बनाना नहीं चाहता। इनके पास इतना कुछ तो है नहीं, जितना कि ये विवाह पर व्यय करना चाहते हैं। साथ ही कुछ पढ़े-लिखे भी नहीं। ये किसी भी मेज-कुर्सी पर बैठे व्यक्ति को अपना दामाद बनाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए लालायित हैं।"

"इसे मूर्खता क्यों कहते हो? यह तो सरलता है। ये देहाती लोग निश्छल होते हैं। मैं तो कहता हूँ, माँ को लड़की देखने के लिए भेज दो। यदि वह पूर्णांगी हो तो उससे विवाह कर लो।"

"पूर्णांगी की भी क्या आवश्यकता है? लँगड़ी-लूली ने क्या पाप किया है? जब विवाह करना ही है, तो जो मिल जाए वही ठीक है।"

दोनों को हँसी आ गई। एकाएक सतीश गम्भीर हो गया। उसने रामनिरंजन से पूछ लिया, "निरंजन! विवाह तो करना ही है, फिर इसमें ही क्या दोष है?"

"मैं कहता हूँ जब लखनऊ लड़कियों से भरा पड़ा है तो फिर बछरावाँ जाने की क्या आवश्यकता है?"

"तो यह बात है! किसी को पसन्द कर चुके हो क्या? मुझे बताओ, मैं काका से सिफारिश कर वहाँ सम्बन्ध करवा दूँगा।"

"वह काका के मानने की बात नहीं है। वह किसी के भी मानने की नहीं है। देखो सतीश! तुम इस समय इस बात को तो किसी तरह टालो, बाद में मैं समझ लूँगा।"

"बहुत सुन्दर है क्या वह?" सतीश ने फिर बात छेड़ दी।

"हाँ।"

"और तुम बहुत कुरूप हो क्या?"

"हाँ।"

"कौन है वह स्वर्गिक बाला?"

"मैंने विचार किया है सतीश! और इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मुझे उसका नाम भी मुख पर नहीं लाना चाहिए।····सतीश! मैं चाहता हूँ कि इस विषय को यहाँ पर ही बन्द कर दिया जाए।"

"केवल एक बात और बता दो, उसके पश्चात् इस विषय पर हम कोई बात नहीं करेंगे। माना कि वह सुन्दर है। वह अद्वितीय भी हो सकती है। जब उससे विवाह तो दूर रहा, उसका नाम भी नहीं लिया जा सकता और जब वह अप्राप्य है तो उसके स्थान पर प्राप्य घटिया वस्तु क्यों न ले ली जाए!····

"निरंजन! तुम विवाह करोगे तो रामाश्रय का भी विवाह हो सकेगा। अन्यथा उसका मार्ग कब तक रोके रखोगे?"

"ओह! इस ओर तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया था। अच्छा ठहरो!"

इतना कह वह उधर ही चल पड़ा, जिधर भागीरथ गया था।

: ४ :

जब भागीरथ मिश्र रामसुमन के पास पहुँचा, उस समय वह भूसा तुलवा चुका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। समीप कुर्सी पर उसको बैठाकर रामसुमन ने कहा, "मैं अभी दो मिनट में खाली हुआ जाता हूँ" इतना कहकर वह फिर भूसे का हिसाब गिनकर रसीद लिखने लगा, जिससे कि भूसेवाले को कार्यालय से मूल्य मिल जाए। वह गिनता रहा और हिसाब बनाता रहा। भागीरथ लड़के को देखकर प्रसन्न था। इससे वह धीरज के साथ रामसुमन के खाली होने की प्रतीक्षा करने लगा।

रामसुमन ने रसीद दी तो प्रश्नभरी दृष्टि से भागीरथ की ओर देखने लगा। वह चाहता था कि भागीरथ जी स्वयं बताएँ कि उनको लड़का पसन्द आया अथवा नहीं।

भागीरथ ने रामसुमन को खाली होते देखकर कहा, "रामसुमन ! मुझे लड़का पसन्द है। उसे किसी समय गाँव में भेज दो, जिससे कि लड़की की माँ उसे देख ले।"

"तो तुम्हारी बात पर लड़की की माँ विश्वास नहीं करेगी क्या ?"

"करेगी तो, फिर भी वह स्वयं लड़के को देखना चाहेगी। लड़के के साथ उसकी माँ को भी भेज देना जिससे वह भी लड़की को देख ले।"

इस समय रामनिरंजन वहाँ आ गया। उसने कहा, "मिश्र जी ! लड़के ने तो आपके गाँव में जाने से 'न' कर दी है। फिर भी एक बात मानें तो लड़के को विवाह के लिए राजी किया जा सकता है।"

"क्या करूँ ?"

"विवाह पर एक पाई भी खर्च न की जाए। इसका वचन दें तो मैं लड़के को आपके गाँव ले-जा सकता हूँ।"

"परन्तु भैया ! मैंने कोई चोरी का धन एकत्रित नहीं किया हुआ है। मेहनत की है, कंजूसी से जीवन व्यतीत किया है। यह सब इस कारण कि मैं अपनी एकमात्र लड़की के विवाह पर खर्च कर सकूँ।"

"वह सब-कुछ आप अपनी लड़की को दे सकेंगे ?"

भागीरथ इससे यह समझा कि रामसुमन का लड़का बड़ा लोभी है। वह विवाह पर व्यय किया जाने वाला धन भी अपने लिए चाहता है।

"देखिए जी !" भागीरथ ने कहा, "हम लड़के को बहुत-कुछ देंगे। विवाह पर जो खर्च होगा वह तो उसकी तुलना में बहुत ही न्यून होगा। भले ही हमें कर्ज लेना पड़े, परन्तु हमारी इच्छा है कि बारात सज-धजकर आए। तीन दिन तक हम बारात का आतिथ्य करेंगे।"

"जी नहीं। तब आपकी लड़की से विवाह नहीं हो सकेगा। आपको कहीं अन्य लड़का ढूँढ लेना चाहिए।"

"भैया ! मेरी समझ में तो यह बात नहीं आ रही है।"

"देखिए जी ! बारात में यहाँ से पाँच आदमी आएँगे। वे दस बजे आपके गाँव में पहुँचेंगे। वहाँ विवाह सम्पन्न होते ही उसी सायंकाल सात बजे की गाड़ी से लड़की का डोला लेकर आएँगे। साथ में न कुछ वस्त्र और न आभूषण लाएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और जो कुछ मेरे पास है, उसको क्या करूँगा?"

"उसका आप उपभोग करिएगा और मृत्यु के समयादि उसमें से कुछ बच जाए तो उसे किसी धर्मार्थ कार्य में दान कर दीजिए। हाँ, एक बात आप कर सकते हैं। यदि आपकी इच्छा हो तो उसका कुछ भाग आप अपनी लड़की के नाम पर लिख सकते हैं।"

"बेटा! तुम तो अनहोनी बात करते हो। भला मुझे क्या रोक है? लड़की के विवाह के समय मैं लड़की को जो चाहूँ क्यों न दूँ, जितना चाहूँ विवाह पर खर्च न कर सकूँ?....

"तुम बताओ, यह कोट पहने हुए हो, क्यों पहने हो इसे? एक धोती और कुर्ते में निर्वाह क्यों नहीं कर लेते? जब इस छोटी-सी बात में तुम अपनी इच्छानुसार रहना चाहते हो तो मुझे क्यों मना करते हो? यदि मेरे भावी दामाद को मेरी कमाई दोषपूर्ण प्रतीत हो तो मुझे बताइए मैं उसे गोमती में बहा दूँ? लोहू-पसीना बहाकर उसे जोड़ा है इस दिन के लिए?"

रामनिरंजन निरुत्तर हो गया था। उसने एक यत्न और किया। उसने कहा, "इस विषय में सरकार भी कानून बना रही है।"

"जब बनाएगी तब देखा जाएगा। सरकार यदि मूर्खता करे तो क्या हमें भी वह करना चाहिए? सरकार का काम तो यह देखना है कि मैंने चोरी, डकैती अथवा धोखे से तो धन नहीं कमाया है। जब मैंने उसके बनाए कानूनों का पालन करते हुए धन कमाया है तो उसका मैं अपनी इच्छानुसार व्यय क्यों नहीं कर सकता?"

एक देहाती व्यक्ति को इस प्रकार युक्ति करते देख रामनिरंजन चकित रह गया। फिर भी उसने एक यत्न और किया। उसने कहा, "लड़का दहेज की प्रथा को रोकना चाहता है जिससे दहेज लेना कानून-विरुद्ध हो जाए।"

"यह नहीं होना चाहिए। माँगनेवाला दण्डनीय है, न कि स्वेच्छा से देनेवाला।"

"पर दिखावे की क्या आवश्यकता है! आप अपनी लड़की को कुछ दें अथवा न दें, इसकी डुग्गी पीटने की क्या आवश्यकता?"

"नहीं, आवश्यकता है, जैसे कोट, पतलून और टाई लगाने की आवश्यकता है। जैसा इनके दिखाने का मूल्य है वैसे ही दहेज का भी है।"

रामसुमन अब तक चुपचाप बैठा था, परन्तु रामनिरंजन की बातों को पसन्द नहीं कर रहा था। फिर भी उसने आपत्ति नहीं की। वह समझता था कि रामनिरंजन विवाह के लिए तैयार हो गया है। उसने रामनिरंजन और भागीरथ के वार्तालाप में मध्यम मार्ग बनाते हुए कहा, "मिश्र जी! आजकल के बच्चे अनुभवी कम होते हैं। मेरा मत है कि आपको जो कुछ देना हो वह दे दीजिएगा। जिनको दिखाना है दिखा दीजिएगा। जो नहीं देखना चाहते उनको मत दिखाइएगा। कोई ऐसा कार्यक्रम बना लीजिए कि दहेज का दिखावा ऐसे समय में हो जाए जब वहाँ पर वे लोग न हों जो कि उसको देखना पसन्द नहीं करते।....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों रामनिरंजन ! अब तो ठीक है न ?"

भागीरथ आधे मन से मान गया। उसे अपने निर्धन हो जाने की चिन्ता नहीं थी। उसको चिन्ता थी तो यह कि अपनी इकलौती बेटी को वह पर्याप्त दहेज देकर भी वह बिरादरी और गाँववालों में कंजूस न समझ लिया जावे। रामसुमन का सुझाव कि वह अपने गाँववालों को एक दिन पहले दहेज दिखा दे, उसकी समझ में आ गया।

इस प्रकार इस मध्यम मार्ग से समझौता हो गया। अब रामनिरंजन ने कह दिया, "आपकी इच्छा है कि लड़का और उसकी माँ गाँव में जाएँ जिससे कि लड़की की माँ लड़के को देख ले और लड़के की माँ लड़की को ?"

"हाँ, यही तो मैं कह रहा हूँ।"

"परन्तु आपने लड़का देख लिया है क्या ?"

"हाँ, मैंने देख लिया है और मुझे वह पसन्द है।"

"कहाँ देखा है आपने उसे ? वह तो आज काम से लखनऊ गया हुआ है।"

इससे तो भागीरथ ही क्या, प्रत्युत रामसुमन भी विस्मय में रामनिरंजन का मुख देखता रह गया। रामनिरंजन ने आँख के संकेत से अपने पिताजी को चुप करा दिया और भागीरथ से कहने लगा, "वह अभी आने वाला है, तब आप उसको देख लीजिएगा।"

"तो वह जो ऊपर कमरे में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था वह आपका लड़का नहीं है ?" उसने रामसुमन से पूछा।

"है तो वह भी लड़का ही, किन्तु उसका विवाह हो चुका है। जिसका विवाह होना है वह तो अभी आएगा।"

रामाश्रय डेयरी का कुछ सामान खरीदने के लिए लखनऊ गया हुआ था। इतने में मध्याह्न के भोजन का समय हो गया। इस समय पूर्ण परिवार एकत्रित हो जाया करता था। अतः रामाश्रय नगर से लौट आया था। जब उसने अपना टाँगा कार्यालय के सामने खड़ा किया और उसमें से उतरने लगा तो रामनिरंजन ने भागीरथ मिश्र को संकेत कर दिया।

भागीरथ ने देखा कि यह लड़का तो उससे, जिसको वह पहले पसन्द कर आया था, अधिक सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, लम्बा तथा गौरवर्णीय है। इसके मुख पर ओज टपकता है। वह रामाश्रय को, जो टाँगे से उतर उधर को ही आ रहा था, देखता रहा।

रामसुमन इस अदला-बदली को पसन्द नहीं करता था। वह भी जानता था कि रामाश्रय रामनिरंजन से अधिक सुन्दर और जवान है। इससे वह भागीरथ की पसन्द को ठेस पहुँचाना नहीं चाहता था। वह चुप तो था, परन्तु प्रसन्न नहीं।

जब रामाश्रय उनके समीप आकर खाली कुर्सी पर बैठ गया तो भागीरथ ने उसको एक बार जी भरकर देखकर कहा, "मैं तो भूल रहा था। वे बाबू भी भले प्रतीत होते थे, परन्तु इसकी समानता नहीं कर सकते। एक बात और है, मैं समझता हूँ कि अब इन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बछरावाँ जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लड़की की माँ इन्हें बिना देखे ही पसन्द कर लेगी।"

अब विस्मय करने की बारी रामनिरंजन और रामसुमन की थी। परन्तु भागीरथ ने बात आगे चलाकर उनका समाधान करते हुए कहा, "मेरी पत्नी की यह इच्छा थी कि वह अपनी पुत्री का विवाह किसी गौरवर्णीय लड़के से ही करेगी। इसके भाई का रंग गेहुआँ है, इस कारण उसे और सब प्रकार से योग्य मानकर भी मैं सन्देह में था कि कदाचित् लड़की की माँ उसे पसन्द करेगी अथवा नहीं।....

"मधु जैसी सुन्दर है उसका पति भी वैसा ही होना चाहिए—यह हमारी इच्छा थी। वह बात पूरी हो गई है। यदि आप कहें तो मैं शकुन अभी दे सकता हूँ।"

रामसुमन और उसके दोनों लड़के हँसने लगे। रामाश्रय ने समझा कि रामनिरंजन के विवाह का प्रबन्ध तो पहले से हो रहा है, साथ ही यह आयोजन उसके विवाह का है। फिर भी सामने बैठे व्यक्ति को तुरन्त शकुन देने के लिए तैयार देखकर बोल उठा, "माँ लड़की देखने जाएँगी। हम सौन्दर्य को इतना महत्त्व नहीं देते जितना अन्य बातों को।"

"यह ठीक ही है, आप अपनी माता जी को भेज दीजिए और उनसे कह दीजिए कि यदि लड़की पसन्द हो तो शकुन भी लेती आवें।"

: ५ :

जब भागीरथ मिश्र चला गया और सब खाने के कमरे में एकत्रित हुए तो रामसुमन ने रामनिरंजन पर अपना रौब प्रकट कर दिया। उसने कहा, "निरंजन! यह तुमने क्या किया है? मेरा प्रयत्न तुम्हारे लिए था। यह क्या तुमने गुड़ गोबर कर दिया?"

"पिताजी! बहू का निर्वाचन किसने किया था?"

"मैंने।"

"आपने तो उसको अपनी बहू बनाने का निश्चय किया था न? उसको मैंने बदला नहीं, वह अब भी आपकी बहू ही रहेगी।"

अब रामाश्रय की समझ में आया कि वह देहाती ब्राह्मण रामनिरंजन से सगाई करने आया था और उसमें कुछ दोष देखकर मुझे पसन्द किया है। इस कारण उसको क्रोध चढ़ आया। उसने कुछ उद्विग्न होकर कहा, "भैया! यह तुमने क्या किया?"

"ठीक किया है रामाश्रय! पिताजी का विचार है कि लड़की सुन्दर है। माता जी उसे देख लेंगी, उसके पश्चात् ही विवाह होगा।"

"पर तुम विवाह क्यों नहीं कर रहे?"

"मैं एक अन्य छोकरी से विवाह करना चाहता हूँ।"

"कहाँ है वह?"

"अमरीका में अपनी माँ के घर पल रही है।"

"ओह!" आश्चर्यान्वित हो रामाश्रय के मुख से निकला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो मेरे मरने के पश्चात् ही होगा।" भगवती ने इस पर अपना अभिमत प्रकट करते हुए रुष्ट स्वर में कहा।

सतीश रामनिरंजन की बात को समझ रहा था। इस कारण वह हँस पड़ा। वह बोला, "काकी ! घर लाने से पहले हम उसको अपनी भाषा और रहन-सहन सिखा देंगे।"

"भाषा और रहन-सहन ही तो सब-कुछ नहीं। आचार-व्यवहार भी तो है ! गोमांस खानेवाली क्रिस्तान हमारे घर में नहीं आएगी।"

"काकी ! यदि उसने गोमांस खाया होगा तो अब गौओं का ग़ोबर उठाकर प्रायश्चित्त कर लेगी। सेवा करने से तो भगवान भी क्षमा कर देता है। गौ माता तो दया, विनय तथा वात्सल्य की प्रतीक होती है।"

रामसुमन ने भगवती को कहा, "भाग्यवान, जब वह आएगी, तब विचार कर लिया जावेगा। बीमार होने से पहले ही औषध का सोचना बुद्धिमत्ता का सूचक नहीं है।"

समय पाकर रामनिरंजन ने अपनी सफाई उपस्थित करते हुए कहा, "माँ, असल बात यह है कि मैं अभी विवाह नहीं करूँगा। पिता जी बहू पसन्द कर आए थे, इस कारण उसे घर लाना आवश्यक था। रामाश्रय भी तो पिताजी का पुत्र है, उसका भी तो आप लोगों को विचार करना चाहिए। मिश्र जी का कहना है कि लड़की गोरी और सुन्दर है। पिताजी का कहना है कि वह लम्बी और स्वस्थ है, तो और क्या चाहिए तुम्हें ?"

यद्यपि यह अदला-बदली रामसुमन को पसन्द नहीं थी, फिर भी वह यह समझता था कि उसके वचन का अनादर नहीं होगा। उसके पसन्द की लड़की घर आ रही है। अपने गाँववालों से सम्बन्ध भी बन रहा है।

अगले दिन रामाश्रय और रामनिरंजन एकान्त में मिले तो फिर से इस बदला-बदली पर बात होने लगी। रामनिरंजन ने वही बात, जो अपने विवाह न करने के विषय में उसने रात के समय कही थी, पुनः कह दी। उसने कहा, "रामाश्रय ! मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। इसका यह अर्थ नहीं कि तुम्हारे मार्ग में बाधा बनकर बैठा रहूँ। सतीश ने मुझे यह बात बताई तो मैंने तुम्हारे विवाह का आयोजन कर दिया है।"

"पर भैया ! तुम विवाह क्यों नहीं करते ?"

"देखो रामाश्रय ! मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ, परन्तु तुम उसे किसी से न कहने का वचन दो और साथ ही जितना कुछ बताऊँ उससे अधिक न जानने का प्रण करो।"

रामाश्रय इस भूमिका का अर्थ न समझते हुए भाई का मुख देखता रह गया। उसे चुप देख रामनिरंजन ने कहा, "तो वचन नहीं देते न ?"

"नहीं, वचन तब दे सकता हूँ जब तुम्हें कठिनाई को दूर करने में मेरा सहयोग स्वीकार हो।"

"उसमें तुम यही सहयोग दे सकते हो कि चुप रहो और अधिक जानने का यत्न न करो।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि अपनी बुद्धि को मैं ताला लगा दूँ।....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं भैया! यह नहीं होगा। यदि तुम छोटा भाई होने से मुझ पर विश्वास कर, मुझे अपना हितेच्छु मान कोई बात बताना चाहते हो तो बताओ, अन्यथा मत बताओ। मैं स्वयं जानने का यत्न करूँगा और तब तुम्हारा अधिकार नहीं रहेगा कि उसमें हस्तक्षेप करने से मुझे रोक सको।"

रामनिरंजन गम्भीर विचार में पड़ गया। तदनन्तर एकाएक उठा और गौशाला से बाहर चला गया।

रामाश्रय भाई के मन की अवस्था का अनुमान लगाता हुआ बैठा रहा। वह यह तो समझ गया कि उसका भाई किसी से विवाह करने का निश्चय कर चुका है और उसके प्राप्त होने में कुछ कठिनाई है, इस कारण वह विवाह के लिए राजी नहीं हो रहा है। रामाश्रय के मन में विचार आया कि निरंजन तो काम के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर जाता ही नहीं। वह व्यर्थ समय भी नहीं गँवाता, तो उसका किस प्रकार किसी लड़की से परिचय और प्रेम हो सकता है? परन्तु सतीश की बात उसके सम्मुख थी। सतीश भी तो किसी भाँति इसी स्वभाव का था। वह भी चुपचाप अपने लिए पत्नी ढूँढ लाया था।

रामाश्रय अब तक विस्मित था। सतीश ने अपने विवाह का प्रबन्ध किस प्रकार कर लिया था? रामनिरंजन को सतीश का अनुकरण न करते देखकर वह और भी विस्मय कर रहा था।

इस समय उसकी समझ में आया कि रामनिरंजन की गतिविधि का ध्यान रखना चाहिए। उसके रहस्य को जानकर आनेवाली बाधाओं को दूर करने का यत्न करना चाहिए। इस प्रयास में सतीश, और यदि हो सके तो पिताजी तथा रेखा को भी सम्मिलित कर लेना उचित होगा। यह निश्चय कर उसी दिन सायंकाल को वह सतीश के साथ दूध बेचनेवाली वैन में सवार हो चल पड़ा। सतीश ने पूछा, "रामाश्रय! किधर जा रहे हो?"

"बाजार में कुछ काम है। तुम भी तो उधर ही जा रहे हो, यह समझकर मैंने ताँगा तैयार करना व्यर्थ समझा। अब इसी में तुम्हारे साथ ही जाकर लौट भी आऊँगा।"

"मैं तो चौक की ओर जा रहा हूँ।"

"हाँ, दूध बाँटकर उधर ही चले चलेंगे।"

जब दूध बँट चुका तो सतीश ने पूछा, "अब बताओ किधर चलना है?"

"कम्पनी बाग में।"

"वहाँ क्या है?"

"सतीश, बात यह है कि तुमसे एक बात पूछनी है।"

सतीश गम्भीर हो गया। मोटरवैन सतीश चला रहा था, उसके साथ की सीट पर रामाश्रय बैठा हुआ था। जब वैन चल पड़ी तो रामाश्रय ने वह बात उसे सुना दी जो आज उसकी रामनिरंजन के साथ हुई थी। पश्चात् कहा, "सतीश भैया! दादा किसी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम में फँसा हुआ अपनी विचार-शक्ति को खो बैठा है। उसे ठीक मार्ग पर लाने के लिए उसका रहस्य जानना आवश्यक है। वह स्वयं तो बताएगा नहीं। यदि बताएगा भी तो इतना कम कि जिससे विषय का सिर-पैर समझ में नहीं आएगा। इस कारण मैं कहता हूँ कि हमारा कर्त्तव्य है कि उसके और अपने हित के लिए हमें उसे मिथ्या संसार से निकालकर वास्तविक संसार में लाना चाहिए।....

"सतीश ! मैं चाहता हूँ कि हम बिना उसे बताए गुप्त रूप से ही उसके रोग का निदान करें और फिर उसकी चिकित्सा ढूँढें। तुम्हें, पिताजी तथा रेखा अथवा अन्य किसी को भी, जो इसमें सहायक हो सकता हो, इसमें यत्न करना चाहिए।"

सतीश रामाश्रय की योजना सुनकर बोला, "बात तो तुम ठीक कहते हो, परन्तु पिताजी को इस बात में बोलने की आवश्यकता नहीं। मैं रेखा से यह बात करूँगा और फिर हम तीनों एक योजना के अधीन रामनिरंजन के रहस्य को जानने का यत्न करेंगे।"

इस योजना को रामाश्रय के विवाह के पश्चात् ही कार्यरूप देने का यत्न हो सका। अगले दिन रेखा और उसकी माँ को लेकर भगवती लड़की देखने को बछरावाँ चली गई और वहाँ लड़की को पसन्द कर तथा शकुन लेकर विवाह की तिथि निश्चित करके लौट आई।

इसके पश्चात् विवाह की तैयारी होने लगी। रामसुमन का मत था कि पत्नी के चुनाव के विषय में रामाश्रय का मत लेना आवश्यक था। विवाह का कार्यक्रम तो परिवार की प्रतिष्ठा का काम है।

यदि भागीरथ विवाह को धूम-धाम से करना चाहता था तो रामसुमन भी उससे कम नहीं था। उसने अपने मन में एक कार्यक्रम निश्चित करके परिवार की गोष्ठी में उपस्थित कर दिया।

सब लोग अगली ही रात भोजनोपरान्त बैठक में बैठे हुए रामाश्रय के विवाह का कार्यक्रम बनाने लगे। बारात, बाजे, बरातियों की संख्या, गाड़ी, घोड़ा, वस्त्र-भूषा, आतिशबाजी, अभिप्राय यह कि सैकड़ों बातों पर विचार हुआ और एक-एक कर सब बातों के निर्णय सतीश तो लिखा दिये गए। रामसुमन का प्रस्ताव था कि पति और पत्नी के लिए भूषण तथा वस्त्र तो रामाश्रय के खाते में से बनें और बारात तथा भोज पर जो व्यय हो उसे परिवार के साँझे खाते में से व्यय किया जाय।

रामसुमन की प्रायः सभी योजनाएँ स्वीकार हो गईं और तदनुसार ही कार्यारम्भ हो गया। जिस दिन भगवती और रेखा इत्यादि बछरावाँ गई थीं, उसके एक मास के भीतर ही विवाह की तिथि का निश्चय हो गया था। अतः विवाह के अतिरिक्त अन्य किसी समस्या पर विचार करने का अवसर ही किसी को नहीं मिला।

निश्चित तिथि में विवाह हो गया। मधु घर लाई गई। रामसुमन का परिवार, जो पच्चीस वर्ष पूर्व, दो व्यक्तियों से आरम्भ हुआ था, अब लाख रुपए से ऊपर की सम्पत्ति वाला और दस प्राणियों वाला हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशातीत आर्थिक और मानसिक उन्नति करने पर भी सब-के-सब दिनभर में दस घंटे काम करते थे और सब काम शृंखलाबद्ध होने से निरन्तर अपना प्रभाव उत्पन्न कर रहा था।

: ६ :

जब विवाह की धूम-धाम समाप्त हुई और पुनः सब सदस्य विधि-पूर्वक काम करने लगे तो रामाश्रय का ध्यान रामनिरंजन की समस्या की ओर चला गया। उसने समय निकालकर सतीश से फिर बात की। इस पर सतीश ने कहा, "रामनिरंजन की देख-रेख करने की आवश्यकता तो है, परन्तु उससे पहले एक और समस्या आ उपस्थित हुई है।....

"कुछ दिनों से मलीहाबाद के पार्श्व में एक नवीन कोठी बनी है। उसमें डॉक्टर आकर रहने लगे हैं। वे सर्जन हैं और बलरामपुर हॉस्पिटल में काम करते हैं। डॉक्टर साहब का नाम है बृजकिशोर शर्मा। आज-कल रेखा से उन डॉक्टर साहब का मिलना-जुलना अधिक हो रहा है। मुझे सन्देह हो रहा है कि शीघ्र ही रेखा का डोला हमें विदा करना होगा।"

"तब तो ठीक है, रामनिरंजन की बात पर पीछे विचार हो सकता है।"

"इस पर मैंने यह निश्चय किया हुआ है कि प्रथम रेखा के मन के भावों को जान लूँ। यदि पता लगा कि यह मेल-जोल औपचारिक मात्र है, तब रामनिरंजन की बात पर विचार कर सकते हैं।"

डॉक्टर बृजकिशोर शर्मा जिला सुलतानपुर के एक तिवारी-परिवार का मेधावी युवक था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० बी० एस० कर अधिक अध्ययन के लिए अमेरिका चला गया था। वहाँ से एम० डी० की उपाधि प्राप्त कर और तदनन्तर मौन्ट्रील के हस्पताल में दो वर्ष अभ्यास कर भारत लौटा था। भारत में उसकी बलरामपुर हस्पताल में नियुक्ति हुई तो अपने रहने के लिए मलीहाबाद की यह कोठी खरीदकर उसमें रहने लगा।

मलीहाबाद में 'अवध डेरी फार्म' की प्रशंसा सुनकर डॉक्टर शर्मा एक दिन इसे देखने आया। किसी का स्वागत करना रेखा के सुपुर्द था। अतः वही उसे दिखाने लगी। उसने न केवल गौशाला की वर्तमान गतिविधि समझाई, प्रत्युत उसका इतिहास भी बता दिया। डॉक्टर शर्मा वर्तमान कार्य से अधिक इसके इतिहास से प्रभावित हुआ और यह जानकर कि परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का इसकी उन्नति में हाथ है, वह परिवार के सदस्यों की ओर आकर्षित हो गया।

डॉक्टर शर्मा को रेखा अति प्रतिभाशाली लड़की प्रतीत हुई और जब उसे यह ज्ञात हुआ कि वह अभी अविवाहित ही है तो वह उससे घनिष्ठता उत्पन्न करने का यत्न करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह न केवल रेखा से मेल-जोल रखने लगा प्रत्युत सतीश और उसकी माँ को भी अपने यहाँ चाय इत्यादि पर आमन्त्रित करने लगा। रेखा की माँ यह विचार कर कि कदाचित् रेखा अपना विवाह न करने का निर्णय बदल दे, दोनों में परिचय परिपक्व होते देख चुप रही। सतीश भी डॉक्टर से मेल-जोल रख रहा था।

रेखा और डॉक्टर शर्मा के बारे में कोई निर्णयात्मक बात पता नहीं चली थी कि एक दिन सतीश ने माँ को निरंजन और रामाश्रय में हुई बात बता दी। सतीश की माँ रामनिरंजन के मन के भावों को समझती थी। उसने कहा, "सतीश ! रामनिरंजन और रेखा में से किसी एक का जब विवाह हो जाएगा तब यह उलझन सुलझेगी।"

सतीश इस बात को सुनकर अवाक् माँ का मुख देखता रह गया। माँ ने इसका स्पष्टीकरण करते हुए कहा, "दोनों के विवाह का परस्पर सम्बन्ध है।"

"क्या सम्बन्ध हो सकता है माँ ?" सतीश का हृदय धकधक कर रहा था। उसको सन्देह हो रहा था कि दोनों में घनिष्ठता रह चुकी है, तभी यह अस्वाभाविक व्यवहार हो रहा है।

सतीश के प्रश्न पर उसकी माँ ने केवल यही कहा, "कुछ देर अभी ठहरो। मैं चाहती हूँ कि डॉक्टर और रेखा का विवाह हो जाए। तब हम रामनिरंजन को विवाह करने के लिए तैयार कर लेंगे।"

परन्तु यह बात चिरकाल तक आँखों से ओझल नहीं रह सकी। रेखा का नित्य ही प्रातः डॉक्टर के घर चाय पर जाना रामसुमन से भी छिपा नहीं रह सका। रामसुमन ने इस बात को जब अनुभव किया तो उसने इसे रामनिरंजन को भी बता दिया। उसने कहा, "मुझे प्रतीत होता है कि अब हमें रेखा के स्थान पर किसी अन्य कार्यकर्त्ता की नियुक्ति करनी होगी।"

"क्यों, उसके काम में कोई त्रुटि होने लगी है क्या ?"

"नहीं निरंजन ! लक्षण ऐसे प्रतीत हो रहे हैं कि रेखा का विवाह तुमसे पहले हो जाएगा।"

"किससे ?"

"डॉक्टर शर्मा से। वही डॉक्टर शर्मा जो कुछ दिन से हमारे पड़ोस में आ रहा है। रेखा का उससे मेल-जोल बढ़ रहा है। प्रतिदिन उसके साथ वह मोटर में घूमने जाती है।"

"क्या यह ठीक है ?" निरंजन ने पूछ लिया। उस समय उसके माथे पर त्यौरी थी।

रामसुमन ने कहा, "वह लड़की अपनी ही लड़की है। मुझे तो उससे कुछ कहते भय और लज्जा आती है। उसकी माँ से भी नहीं कह सकता। कहीं इसे उल्टा न समझ बैठे ! यूँ तो सतीश और उसकी माँ को सभी कुछ पता ही है।"

रामनिरंजन कुछ बोला नहीं। वह मन में इस सबका अर्थ समझ रहा था। जो विचार उसके मन में उठने लगे थे, वह उन्हें भीतर-ही-भीतर पी नहीं सका। अतः जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल सतीश दूध बेचने जाने लगा तो उसने कहा, "सतीश ! मैं भी साथ चलूँगा।"

दोनों चौक की ओर चल पड़े। मार्ग में बात आरम्भ हो गई। रामनिरंजन ने सतीश से पूछा, "सतीश ! रेखा और डॉक्टर शर्मा में विवाह का निश्चय हो गया है क्या ?"

"जहाँ तक मुझे विदित है, अभी तक कोई बात नहीं हुई है।"

"विवाह होगा क्या ?"

"मैं क्या जानूँ ?"

"देखो सतीश ! दोनों का इस प्रकार अकेले घूमते रहना भला नहीं लग रहा। यदि विवाह होना है तो हो जाना चाहिए। तब वे दोनों जहाँ चाहें जा सकते हैं और जैसे रहना चाहें रह सकते हैं।"

"और यदि नहीं होना है तो ?" सतीश ने पूछा।

"तो क्या तुम नहीं जानते कि इस अवस्था में क्या होना चाहिए ?"

"देखो निरंजन !" सतीश को अपनी माँ की बात स्मरण हो आई—"मैंने एक बार रेखा से डॉक्टर के विषय में पूछा था। तब उसने बताया था कि डॉक्टर शर्मा एक भद्र व्यक्ति है। उसके साथ घूमने मात्र से कुछ आपत्ति न होनी चाहिए।....

"अब तुम इसके अर्थ स्वयं लगा लो। मैं तो इसका अर्थ यही समझा हूँ कि हमें उनसे किसी अभद्र व्यवहार की चिन्ता नहीं होनी चाहिए। यदि इससे तुम्हें सन्तोष नहीं तो तुम स्वयं उससे पूछ लो। तुम्हारा भी तो पूर्ण अधिकार है।"

सतीश का कहना कि 'अधिकार है' रामनिरंजन को इस प्रकार लगा जैसे इसमें कुछ उलाहना-सा छिपा हुआ हो। इससे रामनिरंजन सतीश का मुख देखता रह गया। पश्चात् कुछ विचार कर बोला, "अच्छी बात है, मैं स्वयं ही उससे बात करूँगा।"

इस बात का अवसर उसी रात को मिल गया। सतीश और निरंजन लौटे तो रेखा डॉक्टर की कोठी से अभी नहीं लौटी थी। रेखा की माँ भी उसके साथ ही थी। यह जानकर कि वह अभी नहीं आई, रामनिरंजन ने कहा कि वह उन्हें लेने जा रहा है।

रामनिरंजन दूधवाले वैन में से दूध के डिब्बे उतार वैन को लेकर डॉक्टर शर्मा की कोठी पर जा पहुँचा। कोठी के बाहर पता चला कि डॉक्टर साहब रेखा और उसकी माँ के साथ सिनेमा देखने गए हैं। इससे निराश हो निरंजन वहाँ से लौटने के लिए कोठी के बाहर चला आया। वह अभी अपनी वैन को स्टार्ट करने ही वाला था कि दूर से उसको एक मोटर की रोशनी नगर की ओर से आती दिखाई दी। वह मन में यह विचार कर कि यह डॉक्टर की गाड़ी हो सकती है, अपनी गाड़ी से उतर उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।

गाड़ी डॉक्टर की ही थी। डॉक्टर ने कोठी के बाहर दूधवाली गाड़ी देखी तो वह समझ गया कि आज नित्य से अधिक विलम्ब हो गया है। इसी कारण वहाँ के लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तित होंगे। डॉक्टर ने अपनी कार खड़ी की और रेखा से, जो माँ के साथ पिछली सीट पर बैठी थी, कहा, "देवी जी ! आपको कोई लेने आया प्रतीत होता है।"

रेखा ने डॉक्टर की कार की हैड लाइट के प्रकाश में रामनिरंजन को खड़ा देख लिया। अतः वे दोनों उतर आईं। डॉक्टर भी उतरकर रामनिरंजन से हाथ मिलाकर कहने लगा, "आपको भारी कष्ट हुआ है, मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। मैं तो अभी इन्हें छोड़ने जा ही रहा था।"

"आज सदा से कुछ अधिक देर हो जाने से पिताजी कुछ चिन्ता अनुभव कर रहे थे। आजकल के यान्त्रिक युग में क्या-कुछ नहीं हो सकता !"

डॉक्टर हँस पड़ा। उसने कहा, "आप भी तो मोटर पर ही घूमा करते हैं !"

"ठीक है डॉक्टर साहब ! विलम्ब हो जाने के कारण ही मुझे आना पड़ा है।" चलने के लिए तैयार होते हुए उसने कहा, "अच्छा नमस्ते ! मैं समझता हूँ अब हमें चलना चाहिए।"

रेखा और उसकी माँ रामनिरंजन के साथ अगली सीट पर बैठ गईं। मार्ग में किसी ने कुछ नहीं कहा। रेखा इस प्रकार रामनिरंजन के आने से चिन्तित थी। वह समझ रही थी कि उसके इतनी रात घर से बाहर रहने पर कुछ अनर्गल विचार घर में उत्पन्न हो रहे हैं। उसने अपने मन में निर्णय कर लिया था कि इस स्थिति को स्पष्ट कर देना ही चाहिए।

उधर रेखा की माँ यह समझ रही थी कि रेखा के विवाह की सम्भावना पर रामनिरंजन के मन में चंचलता उत्पन्न हो गई है। वह अपनी चंचलता उससे कैसे प्रकट करेगा और उसका परिणाम क्या होगा, इसका विचार करती हुई वह चुप थी।

गौशाला में पहुँचकर रामनिरंजन गाड़ी को सीधा मोटरखाने में ले गया। वहाँ मोटर को अपने स्थान पर छोड़कर वह उनको लेकर घर की ओर चल पड़ा। जब वह मोटर-खाना बन्द करने लगा तो रेखा की माँ जान-बूझकर कदम बढ़ाकर आगे निकल गई। रेखा उसके पास खड़ी रह गई। रामनिरंजन यही चाहता था। प्रश्न रेखा ने किया, "आपने मुझे क्या इतनी दुर्बलात्मा समझ लिया है जो जरा-सी देर हो गई तो ढूँढने के लिए चल पड़े ?"

"रेखा !" रामनिरंजन ने कुछ डाँटते हुए कहा, "मैंने तुम्हें दुर्बलात्मा नहीं समझा, परन्तु डॉक्टर को दुर्बलात्मा समझ लेना कोई अनुपयुक्त नहीं। वह इतना परखा-देखा तो है नहीं ?"

"आप जानते नहीं वह बहुत ही पवित्र विचारों का व्यक्ति है।"

"उससे विवाह की बात हो रही है क्या ?"

"क्या सभी से विवाह ही किया जाता है ?"

"विवाह के लिए इच्छुक होना कोई अनहोनी बात है ? परन्तु क्या उसकी इच्छा विवाह की नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विषय में तो मैंने उनसे पूछा नहीं।"

"परन्तु अपने मन से तो पूछा होगा ?"

"निरंजन !" रेखा ने वहीं खड़े होते हुए रामनिरंजन के मुख पर देखते हुए कहा, "क्या मुझे आपको वे सब बातें स्मरण करानी होंगी जो बचपन से हम दोनों के मध्य इस विषय पर होती रही हैं ?"

"तुम क्या समझती हो कि मेरी स्मरण-शक्ति ढीली पड़ गई है ?"

इस पर रेखा खिलखिलाकर हँस पड़ी और उसने कहा, "स्मरण-शक्ति ढीली नहीं हुई तो निष्ठा ढीली हो रही है क्या ?"

"देखो रेखा....!" इसके पश्चात् रामनिरंजन कुछ कह नहीं सका। रेखा उसको वहीं खड़ा छोड़ लम्बे-लम्बे पग बढ़ाती हुई घर की ओर चली गई।

रामनिरंजन भी विस्मित-सा घर जा पहुँचा।

घर के सब लोग भोजन के कमरे में बैठे इन लोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब वे आए तो सबने प्रसन्नता प्रकट की। दोनों बैठकर इस प्रकार बातें करने लगे, मानो कोई विशेष घटना नहीं घटी हो।

: ७ :

रेखा की माँ का विचार था कि यदि कोई विशेष बात हुई होगी तो रेखा रात के समय उसको बताएगी। परंतु उसने कुछ नहीं बताया।

हाँ, एक विशेष बात हुई। अगले दिन डॉक्टर शर्मा आया तो रेखा ने उसे कुछ कहकर टाल दिया और उसके साथ नहीं गई। इसी प्रकार दिन-पर-दिन आने-जाने लगे और उसके पश्चात् रेखा कभी भी डॉक्टर शर्मा के घर नहीं गई।

इस परिस्थिति से तो रेखा के घरवाले और भी अधिक चिन्ता का अनुभव करने लगे थे। डॉक्टर शर्मा भी इस व्यवहार का कारण जानना चाहता था। इसको जानने के लिए एक दिन वह सतीश के पास जा पहुँचा। उसने पता कर लिया था कि प्रातःकाल सतीश प्रायः घर ही होता है। वह एक दिन पैदल ही भ्रमण करने निकला तो सतीश को अपनी पत्नी के साथ भ्रमण करते देखकर साथ मिल गया।

बात आरंभ करने के लिए डॉक्टर ने पूछा, "तो आप लोग नित्य ही भ्रमण करने आया करते हैं ?"

"जी हाँ।"

"परंतु प्रतीत होता है कि आपकी पत्नी को...."

"जी हाँ, इसके लिए हमारे डॉक्टर का कथन है कि नित्य चलना-फिरना इसके लिए लाभदायक होगा।" बीच में ही बात काटकर सतीश ने कहा।

"हाँ, यह तो है ही। फिर भी इनका ब्लड प्रेशर चैक करवाते रहना चाहिए, विशेष रूप से भ्रमण के पश्चात्। यदि वह भ्रमण से बढ़ता नहीं तब तो यह हितकर होगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा हानि होने की संभावना हो जाती है।"

"आपका कथन ठीक है। हम वह दिखा लेंगे।"

"लौटते हुए कोठी की ओर से निकल चलेंगे तो मुझे ही दिखा देना।"

"क्यों सोमा, क्या विचार है?" सतीश ने पूछा।

"डॉक्टरों की बात को गलत कहना तो परमात्मा के विधान को न मानने के बराबर है।"

तीनों हँसने लगे।

"ठीक है, लौटते हुए तनिक ठहर जाइएगा, पाँच मिनट से अधिक नहीं लगेंगे," डॉक्टर ने बताया। फिर सोमा की ओर देखकर कहने लगा, "डॉक्टरों को भगवान की पदवी देकर तो आपने मुझे पत्थर के ठाकुर के समान कर दिया है।"

"और इससे अधिक आप लोग होते ही क्या हैं?" सोमा ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरे पिताजी बीमार थे। सब डॉक्टर कहते थे कि वे बच नहीं सकते, परन्तु हुआ यह कि वे तो चंगे-भले हो गए। उल्टा मेरी माताजी का देहांत हो गया जब कि वे सब प्रकार से स्वस्थ थीं। रात को सोईं तो प्रातः उठीं नहीं। बस इतना ही हमें विदित है।"

"तो इसमें डॉक्टरों का क्या दोष है?"

"जी नहीं, उनको कौन दोषी ठहराता है! इसे तो भगवान की माया कहते हैं और डॉक्टर हुए भगवानस्वरूप।"

डॉक्टर ने कहा, "सतीश! यह भगवान, जैसा कि आपकी पत्नी मुझे बना रही हैं, एक निवेदन करना चाहता है। कई दिन से मैं यह कहने का विचार कर रहा था, आज आपसे अकस्मात् भेंट हो गई है तो अपनी बात भी कह देता हूँ।"

सतीश और सोमा दोनों डॉक्टर की बात सुनने के लिए खड़े हो गए। डॉक्टर भी खड़ा हो गया। वह आँखें नीची किए हुए कहने लगा, "मैं आठ वर्ष कनाडा में रहा हूँ, इस कारण वहाँ के वातावरण का प्रभाव मेरे रोम-रोम में रमा हुआ है। उस प्रभाव के आधीन ही यह बात आपसे कहने की धृष्टता कर रहा हूँ कि मैं रेखा देवी से विवाह करने का इच्छुक हूँ।"

सोमा तो इसी बात की प्रतीक्षा कर रही थी, परन्तु सतीश इसकी अपेक्षा नहीं रखता था। अब एकाएक डॉक्टर से यह बात सुनकर उसने कहा, "डॉक्टर जी! रेखा अब वयस्क है। वह स्वयं अपने विषय में निर्णय करने को स्वतन्त्र है। यह डेयरी भी उसी वातावरण के अनुकूल है। यदि उसकी इच्छा हो तो हम लोग विरोध नहीं करेंगे। अतः आपको उससे सीधी बातचीत करनी चाहिए। जब उसकी स्वीकृति होगी, हम विवाह का प्रबन्ध कर देंगे।"

"आपकी रुचि जाने बिना मुझे यह प्रस्ताव करने में संकोच होता था। क्या माताजी का भी यही उत्तर समझूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, रेखा बहुत समझदार लड़की है। हम उसके निर्णय का सम्मान करेंगे।"

डॉक्टर बृजकिशोर को मार्ग मिल गया। उसकी समझ में आया कि रेखा का उसके साथ घूमना अथवा चाय पीने न आने का कारण यही हो सकता है कि वह प्रस्ताव से सहमत है।

उसी सायंकाल वह पुनः कार्यालय में पहुँचा तो रेखा को खाते में रकमें लिखते देखकर उसकी मेज के पास खड़ा हो गया। रेखा ने उसको बैठने के लिए कहकर फिर पूछा, "स्वास्थ्य तो ठीक है न?"

डॉक्टर हँसकर कहने लगा, "डॉक्टर से उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछकर उस‍ अपमान करना है। विपरीत इसके यह प्रश्न तो मुझे करना चाहिए था। आप तो सर्व स्वस्थ प्रतीत नहीं होतीं?"

"वाह! यह आप कैसे कहते हैं कि मैं ठीक नहीं हूँ?"

"आपको अब मेरे घर की चाय अनुकूल नहीं रही है न, इसी से मैंने निवेदन ि है। क्योंकि अरुचि मन्दाग्नि का पूर्व-रूप है।"

"नहीं, यह नहीं। मैं अपने घर में चाय पीती हूँ। चाय में किसी प्रकार की अ नहीं है। आपकी कोठी में जाने के लिए अवकाश नहीं मिलता। फिर वहाँ यदि होती तो कभी-कभी अवसर निकालना ही पड़ता।"

"भाभी?" डॉक्टर शर्मा के मुख का रंग उड़ गया। इसका अर्थ यह था कि डॉक्टर को भाई कह दिया है। फिर भी बात स्पष्ट करने के लिए डॉक्टर ने कह अपने घर में एक गृहिणी लाने के लिए ही तो आज आपकी अनुमति लेने आ क्या इस राय के लिए आपको अवकाश मिल सकेगा? अथवा वह भी नहीं?"

"इस शुभ कार्य के लिए तो अवकाश निकालना ही पड़ेगा।"

रेखा ने अपने रजिस्टरों को समेट दिया और वह उठकर चलने के लिए तैया गई।

"क्या इतना अवकाश है कि कोठी तक चलें?"

"मेरा विचार है कि आज आप हमारे ही यहाँ चाय पीजिए। वहाँ से यहाँ वि करने में अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।"

डॉक्टर समझ रहा था कि उसका प्रस्ताव स्वीकार होने की आशा कम है। भी आज अंतिम निर्णय करने का विचार कर लिया था, इसी कारण वह मा गया। दोनों घर जा पहुँचे। चाय का समय नहीं हुआ था, इस कारण खाने का खाली पड़ा था। रेखा ने इकादशी को कहा, "मामी! हमारे लिए चाय पह आओ।"

तदनन्तर वे खाने के कमरे में जा पहुँचे। डॉक्टर शर्मा ने बात आरम्भ क उसने कहा, "रेखा देवी! जब से मैंने आपको देखा है, तभी से मेरे मन में यह विच रहा है कि आप यदि मेरे घर तथा हृदय की लक्ष्मी बनें तो मैं कृतकृत्य हो जाऊँगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण था कि आपको अपने सम्पर्क में अधिकाधिक लाने का यत्न कर रहा था। मैं चाहता था कि आपको अवसर दूँ जिससे आप मेरे गुणावगुणों को भली-भाँति देखकर निर्णय कर सकें।....

"किन्तु कोई बात ऐसी हो गई कि आपने एकाएक मुझसे सम्पर्क तोड़ दिया। पहले तो मैंने समझा कि वास्तव में ही आपको अवकाश नहीं मिल रहा है, परन्तु जब पिछले मास में एक बार भी मेरे साथ चाय पीने का आपने कष्ट नहीं किया तो मुझे सन्देह होने लगा कि दाल में कुछ काला है। इसी कारण आज आपसे इस विषय में वार्तालाप करने का साहस किया है।....

"यदि आप मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करेंगी तो आप मुझ पर बड़ा एहसान करेंगी। ऐसी अवस्था में मैं भी यत्न करूँगा कि आपको प्रत्येक प्रकार से सुखी रखूँ। क्या मैं आपकी स्वीकृति की आशा रख सकता हूँ?....

"मैंने आज सतीश भैया से इस विषय पर बात की थी। उसने कहा था कि उसने तथा माताजी ने आपको इस विषय में पूरी स्वतन्त्रता दे रखी है। आप सज्ञान हैं, इसलिए आपकी इच्छा का वे आदर करेंगे।"

रेखा ने जब से डॉक्टर शर्मा के साथ भ्रमण करना छोड़ा था, तब से ही वह ऐसे वार्तालाप की आशा करती थी। उसने इसका उत्तर भी सोच रखा था। उसने कहा, "बचपन से ही मैं अपने विवाह के विषय में एक धारणा बनाए हुए हूँ। वह धारणा दिन-प्रतिदिन दृढ़तर होती जा रही है। धारणा यह है कि मुझे इस जीवन में विवाह नहीं करना है। इसका कारण यह था कि जिससे मेरी इच्छा विवाह करने की थी, उससे विवाह में समाज की प्रथाएँ बाधक थीं। समय व्यतीत होने के साथ-साथ वह विवाह न केवल असम्भव ही प्रतीत होने लगा, प्रत्युत व्यर्थ भी।....

"अतएव मेरे हृदय में तो अब सब पुरुषों के लिए भाई तथा पिता का स्थान रह गया है। जब आपसे परिचय हुआ था और निरंतर वह परिचय परिपक्व होने लगा तो मेरा तो आपसे स्नेह ही बढ़ा और वह अब भी विद्यमान है।....

"पिछले मास मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि हमारे परस्पर सम्बन्ध का मेरे समाज के लोग कुछ विपरीत अर्थ लगाने लगे हैं। मैंने अपने मन में इस विषय में विचार किया कि ऐसा क्यों है? किन्तु अभी तक भी मैं उस भावना का कारण जान नहीं पाई।....

"फिर भी किसी ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में हूँ जब हमारा परस्पर का व्यवहार एक स्थिर धारा में बहने लगे और तदनन्तर वह प्रत्यक्ष हो सके।....

"यह तो मुझे आज ही विदित हुआ कि आप विवाह का विचार रखते हैं। यद्यपि यह इच्छा अस्वाभाविक नहीं, किन्तु मेरे हृदय में इसके लिए स्थान नहीं है।"

"मैं समझती हूँ कि इस भेंट के उपरान्त तो आपको मुझसे मिलने के लिए आना चाहिए अथवा नहीं—इस बात का निर्णय करने में आपको सुगमता हो जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर शर्मा रेखा के कथन के प्रभाव से अपने-आप को अभी सम्भाल ही रहा था कि रेखा की माँ वहाँ आ गई। वह डॉक्टर को वहाँ देखकर और नमस्कार कर एक कुर्सी पर बैठ गई। उसने कहा, "इकादशी बहन चाय बनाने लगी तो पता चला कि आज आपने यहाँ आने की कृपा की है। सुनाइए, स्वास्थ्य ठीक है न ?"

डॉक्टर के कुछ कहने से पूर्व ही रेखा ने अपने ढंग से बात कह दी। उसने कहा, "माँ, डॉक्टर साहब ने मुझसे विवाह करने की इच्छा प्रकट की है। मैंने इन्हें अपने मन की अवस्था बता दी है। तुम तो जानती ही हो कि मुझे विवाह नहीं करना है। वही बात मैंने इनको भी बता दी है। मैंने कहा है, मेरे हृदय में तो भाई और पिता बननेवालों के लिए ही स्थान रिक्त है और उसी स्थान पर मैं इनको प्रतिष्ठित करने का यत्न कर रही थी।"

इस समय इकादशी चाय लेकर आ गई। डॉक्टर शर्मा रेखा की स्पष्टवादिता से प्रसन्न तो था, तदपि सन्तुष्ट नहीं था। वह चुपचाप बैठा हुआ अपने मन के भावों का विश्लेषण करता रहा। अब वह विचार कर रहा था कि रेखा से विवाह का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। रेखा के मन की स्पष्टता को देखकर तो निकट भविष्य में भी उसकी इच्छा दूर होने की कोई आशा नहीं कर सकता था। इसके साथ ही रेखा ने बहन बनने का प्रस्ताव उपस्थित कर दिया था। इस परिस्थिति में वह अपने मन को स्थिर करने का प्रयत्न कर रहा था।

रेखा ने चाय बनानी आरम्भ कर दी। रेखा की माँ ने डॉक्टर साहब से कहा, "देखो बेटा ! आप दोनों में घनिष्ठता बढ़ती देखकर यह स्वाभाविक ही था कि हम आप दोनों का विवाह होने की आशा करते। इस कारण घर के लोग रेखा को बधाई देने की उत्सुकता प्रकट करने लगे तो रेखा ने आपके साथ आना-जाना बन्द कर दिया। आज की बात के पश्चात् हम यह समझ लेंगे कि इस विषय में आप दोनों में विचार स्थिर हो गए हैं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ है कि पिछले कई मास के व्यवहार के पश्चात् भी रेखा ने विवाह न करने का अपना निश्चय नहीं बदला है। परन्तु अपने विचार तथा कार्य के लिए यही सर्वथा उत्तरदायी है। अतः हम इस विषय में चुप हैं।....

"हाँ, रेखा का यह प्रस्ताव कि यह अब आपको राखी बाँधने से भाई का सम्बन्ध रखने को उत्सुक है, आपके विचार का विषय है। क्या आप एक अन्य बहन की सुरक्षा का भार वहन करने के लिए तैयार हैं ? यह तो आप ही जानें। मैं तो एक 'और पुत्र के लिए प्रचुर मात्रा में वात्सल्य रखती हूँ। आपका रेखा से कैसा भी सम्बन्ध हो, मेरे लिए तो आप पुत्र का स्थान पा चुके हैं।"

: ८ :

डॉक्टर शर्मा के प्रति रेखा के व्यवहार में स्वाभाविकता आ जाने पर रेखा की माँ के मन में रेखा के भविष्य के विषय में विचार करने की आवश्यकता पुनः उत्पन्न हो गई। इस बार उसने सतीश को अपने गुप्त ज्ञान में सम्मिलित करना उचित समझा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन सतीश अपना काम समाप्त कर लौटा और नियमानुसार समाचारपत्र पढ़ने बैठक में गया तो उसकी माँ उसके पास आ गई। उसने कहा, "सतीश बेटा! तुम अनुभव कर रहे होगे कि अब मैं वृद्ध होती जा रही हूँ। यों तो शास्त्र में भी लिखा है कि पोता हो जाने पर घर छोड़ देना चाहिए। परन्तु परिस्थितियों के कारण घर तो छोड़ नहीं रही, कदाचित् छोड़ सकती भी नहीं। मुझमें वह शक्ति नहीं रही जो एक संन्यासिन के लिए आवश्यक है।....

"फिर भी कुछ ऐसा आभास हो रहा है कि तुम्हारे पिता मेरा आह्वान कर रहे हैं। किसी भी दिन मुझे जाना पड़ जाए, इस कारण मुझे रेखा की चिन्ता लगी रहती है। मरने से पूर्व मैं चाहती हूँ कि कहीं उसका जीवन स्थिर हो जाता।"

"पर माँ!" सतीश ने गम्भीर होकर कहा, "जहाँ तक आर्थिक परिस्थिति का प्रश्न है वह तो स्थिर है। काका उस दिन कह रहे थे कि आपस के समझौते से एक वचनपत्र लिख लिया जाए जिसमें प्रत्येक कितने-कितने भाग का भागीदार है निर्णय किया जाए। ऐसा होने पर रेखा को भी भाग मिलेगा।....

"रही उसके विवाह की बात, वह हमारे विचार करने की नहीं। डॉक्टर शर्मा का प्रस्ताव तो कोई भी लड़की स्वीकार कर लेती। वह भी जब उसने अस्वीकार कर दिया है तो इसमें हम क्या कर सकते हैं!"

"देखो सतीश! मैंने तुमको एक दिन यह बताया था कि उसके विवाह का सम्बन्ध रामनिरंजन के विवाह से है। आज तुम्हें इसका ज्ञान करा देना चाहती हूँ।....

"रामनिरंजन का तुम्हारे कमरे में पढ़ने के लिए आने पर उसका रेखा से मेल-जोल बढ़ गया। रेखा तुमसे दो वर्ष छोटी है। वह जन्म-काल से ही चंचल रही है। उसकी चंचलता उसके लिए सबमें आकर्षण उत्पन्न करती रही है। रामनिरंजन भी उसकी ओर आकर्षित हुआ प्रतीत होता है। उस समय उनका बाल्यकाल था और अनजाने में उनके मन पर ऐसे संस्कार पड़ गए जो अब भी चित्रित हुए एक बड़े पौधे के रूप में परिवर्तित हो गए हैं।....

"एक दिन रेखा मेरे पास आई और कहने लगी, 'माँ, मैं अपनी गुड़िया का विवाह रामनिरंजन के गुड्डे से करूँगी।' मैंने कह दिया, 'नहीं, यह नहीं हो सकता।' इस पर उसने इसका कारण पूछा तो मैंने अपने समाज के व्यवहारानुसार कह दिया, 'इसलिए कि एक अमीर की लड़की एक निर्धन के घर नहीं विवाही जा सकती।'

"सौभाग्य या दुर्भाग्यवश यह बात रेखा के कोमल हृदय पर एक गहरी छाया छोड़ गई है। वह दिन-रात इस पर चिन्तन करती रही और एक दिन उसने रामनिरंजन से ही पूछ लिया, 'क्या एक धनी लड़की किसी निर्धन लड़के से विवाह नहीं कर सकती?'

"रामनिरंजन का कहना था कि 'कर सकती है। पर कौन विवाह करेगा?' रेखा ने कह दिया कि वह करेगी। कुछ दिन पश्चात् रामनिरंजन ने भोलेपन में उसे कह दिया कि वह उससे विवाह नहीं करेगा क्योंकि वह उसकी बहन है। भाई-बहन में विवाह नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता। रेखा अपने विचारों पर दृढ़ थी और उससे ही विवाह करना चाहती है, परन्तु कर नहीं सकती। कारण कि वह निर्धन का पुत्र है।....

"दोनों अपने-अपने बड़ों से पूछते रहे। दोनों के बड़े इस विवाह के न हो सकने में भिन्न-भिन्न कारण बताते रहे। रेखा को मैं सदा यही सीख देती रही कि रामनिरंजन निर्धन है। उससे विवाह अस्वाभाविक बात है। रामनिरंजन को उसकी माँ सदा यह कहती रही है कि रेखा उसकी बहन है, अतः बहन से विवाह नहीं हो सकता।....

"इस प्रकार वे सज्ञान हो गए। रेखा दस-ग्यारह वर्ष की थी और रामनिरंजन तेरह वर्ष का। एक दिन मैंने कह दिया, 'रेखा! तुम्हें रामनिरंजन से मेल-जोल कम करना चाहिए। उसका प्रश्न था, 'क्यों?' मैंने बताया 'वह लड़का है, तुम लड़की हो इसलिए।' इस पर उसके चंचल मस्तिष्क ने विचार किया और कह दिया, 'पिताजी पुरुष हैं, माताजी स्त्री हैं तो वे क्यों मेल-जोल रखते हैं?'

"मेरा उत्तर था, 'इसलिए कि उनका मुझसे विवाह हो चुका है।'

'तो मेरा विवाह भी निरंजन से हो जाएगा।'

'पगली, तुम लखपति की लड़की और वह एक चौकीदार का लड़का—तुम्हारा विवाह उससे कैसे हो सकता है?'

"इस पर उसने एक दिन निरंजन से पूछ लिया, 'निरंजन! तुम धनी नहीं बन सकते क्या?'

"उसने पूछा, 'क्यों पूछ रही हो?' तो रेखा ने बताया कि 'मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ। किन्तु माँ कहती हैं कि तुम निर्धन हो, इस कारण मेरा विवाह तुमसे नहीं हो सकता।' इस पर रामनिरंजन ने रेखा को बहन कहना आरम्भ कर दिया और वह रेखा को भी विवश करने लगा कि वह उसको 'भैया' कहे। परन्तु ये तो शब्द-मात्र थे। रेखा के मन में इनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। जब रामनिरंजन ने मैट्रिक पास किया था तो उस समय रेखा ने स्पष्ट कह दिया था कि वह उससे प्रेम करती है और उसी से विवाह करेगी। रामनिरंजन का कहना था कि वह उसके प्रति बहन की भावना रख चुका है, इस कारण विवाह नहीं कर सकता। इस पर रेखा ने पहली बार उसको बताया कि 'यदि ऐसा है तो वह किसी अन्य से विवाह नहीं करेगी, भले ही उसे जीवनभर कुँवारी ही रहना पड़ जाए।'

"रामनिरंजन ने उससे क्रोध में कह दिया कि 'कुमारी रह सकती हो तो रहो, पर मैं बहन से विवाह नहीं कर सकता।'

"ज्रहाँ तक रामनिरंजन की बात थी, वह तो तटस्थ रहने लगा। इसके कुछ ही दिनों के पश्चात् रामनिरंजन और उसके पिता को अपमानित कर कोठी से निकाल दिया गया। इसका रेखा के मन पर बहुत गहरा प्रभाव हुआ। वह समझने लगी थी कि यदि यही अन्तर है धनवान और निर्धन का, अर्थात् एक अन्याय कर सकता है और दूसरे को सहन करना पड़ता है तो ऐसा धनवान अवांछनीय है।....

"इसके पश्चात रामनिरंजन और रामसुमन धनवान बनने लगे और उनके धनवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने का समाचार तुम कभी-कभी लाने लगे। इन समाचारों से रेखा के मन के भाव दृढ़तर होते गए।····

"पश्चात् उसकी कानपुर में सगाई हो गई तो वह मन में आत्महत्या करने का निश्चय कर बैठी। इसी समय तुम्हारे पिताजी का स्वर्गवास हो गया। तुम्हारे मामा बेईमान सिद्ध हुए और रामनिरंजन निर्दोष। रामनिरंजन की सहायता से हमारा उद्धार हुआ। इन सब घटनाओं के प्रभाव रेखा के मस्तिष्क पर बहुत गम्भीर हुए। वह अपने मन में उसे ही पति वर बैठी और विवाह न हो सकने की अवस्था में अविवाहित रहने का निश्चय कर लिया।····

"ऐशबाग वाले मकान में उसकी इस विषय पर रामनिरंजन से बात हुई। उसने रामनिरंजन से कहा था, 'कैसी विधि-विडंबना है कि मैं अब एक दिवालिए की पुत्री हो गई हूँ! अतः अब मेरी माँ को आपके साथ मेरा विवाह करने में आपत्ति नहीं होगी। इसके उत्तर में रामनिरंजन ने कहा, 'यह ठीक है कि तुम निर्धन की पुत्री हो गई हो और मैं कुछ धनी-सा। अब तुम्हारी माता को तो क्या, तुम्हारे मामा को भी मेरे साथ तुम्हारे विवाह में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी, परन्तु रेखा, मैं बचपन से तुम्हें बहन मानता आ रहा हूँ। मेरे मन में भाई-बहन का संस्कार इतना दृढ़ हो गया है कि मैं तुम्हारा पति बन ही नहीं सकता। निर्धन धनी हो सकता है, परन्तु बहन पत्नी नहीं हो सकती।'

"इस पर रेखा ने अपना निर्णय बताते हुए उसको कह दिया कि तब तो उसको अविवाहित जीवन ही व्यतीत करना पड़ेगा।····

"रामनिरंजन ने कहा, 'तो क्या हुआ! हिन्दुओं में अनेक बाल-विधवाएँ हैं जो अविवाहित ही जीवन व्यतीत कर देती हैं।'

'दूसरों को सीख देना सुगम है।' रेखा का कहना था, 'परन्तु कार्य की कठिनाई तो उसके उन्नति करने पर ही प्रतीत होती है।'

"ऐसा प्रतीत होता है कि इसके पश्चात् रेखा ने जब अविवाहित जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया है तो निरंजन भी अविवाहित रह रहा है। कदाचित् वह नहीं चाहता कि एक तो मेरे कारण दुःख-यातना भोगती रहे और मैं संसार-सुख भोगता रहूँ।"

सतीश इस कथा से अवाक् बैठा रह गया। उसकी माँ ने कहा, "बेटा! एक युवा लड़की का अविवाहित रहना कितना कठिन है! रेखा कई रातें बिना सोए निकाल देती है। परन्तु यह मानव है, पशु नहीं है। इस कारण वह संघर्ष करती रहती है।····

"डॉक्टर शर्मा से जिस संयम से वह व्यवहार करती रही है, उससे तो मेरी दृष्टि में उसका आचरण बहुत ऊँचा हो गया है। इस पर भी मैं इसमें क्या कर सकती हूँ! यदि उसका रामनिरंजन से लगाव युक्ति का विषय होता तो मैं उसे समझाती, उससे युक्ति करती और उसको अनेक उदाहरण देती। मैं उसको बताती कि कैसे अविवाहित रहने से कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अन्यथा, साथ ही मानव घोर पतन की ओर जाने लगता है। परन्तु वह तो भावना के वश जी रही है।····

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका उपाय है रामनिरंजन। या तो वह कहीं अन्यत्र विवाह कर ले अथवा रेखा से विवाह कर ले। वह मेरी कोख से तो पैदा हुआ ही नहीं है। वचनमात्र से ही तो रेखा का भाई बना था!"

सतीश ने कहा, "माँ! रामनिरंजन अत्यन्त ही निष्ठावान व्यक्ति है। उसको अपने निश्चय से विचलित करना सुगम नहीं। इस पर भी मैं यत्न करूँगा।"

: ९ :

सुन्दरदास हत्या करने के अपराध में पकड़ा गया था और उसकी एक मित्र 'गीशा' नाम की औरत ने बहुत परिश्रम और ध्यान से उसे बचा लिया था। सिद्ध यह किया कि मृत व्यक्ति ने पहले आक्रमण किया था। सुन्दरदास ने तो अपनी रक्षा के लिए ही उस पर वार किया था। पकड़े जाने से पूर्व सुन्दरदास ने अपनी सारी सम्पत्ति इस औरत के नाम कर दी थी। इसके उपकार में उसने सुन्दरदास को निर्दोष सिद्ध करने के लिए कुछ उठा न रखा था। जो कुछ बचा था, उसने सुन्दरदास को दे दिया था।

सुन्दरदास का कोई उत्तरदायित्व तो था नहीं। वह कई व्यसनों में पड़ गया, और उन्हीं में उसने सब कुछ रहा-सहा धन स्वाहा कर दिया।

पाश्चात्य देशों में निष्क्रिय रहना अपराध है, अतः वहाँ की पुलिस ने उसे हिन्दुस्तानी समझकर, एक जहाज में लाद दिया और कलकत्ता लाकर उतार दिया। सुन्दरदास को अपनी पत्नी तथा लड़की का स्मरण हो आया तो वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ उनको छोड़ गया था। वे वहाँ नहीं थीं। अड़ोस-पड़ोस में पता करने पर मालूम हुआ कि वे लखनऊ चली गई हैं। सुन्दरदास की जेब में एक पैसा भी नहीं था, अतः वह भिक्षावृत्ति करने लगा।

कलकत्ता नगर में भिक्षा मिलना भी कठिन था। भिखारियों में भी प्रान्तीयता चरम-सीमा तक पहुँच चुकी थी। आखिर उसे कलकत्ता छोड़ देना पड़ा और लखनऊ चलने का निश्चय कर लिया। एक दिन वह भीख से एकत्रित किए पैसों से बर्दवान का टिकट लेकर पंजाब मेल में सवार हो गया। मुगलसराय पहुँचने पर वह पकड़ लिया गया। उसने अपने-आपको भिखारी प्रकट कर अपनी जान छुड़ाई। मुगलसराय से पैदल चलकर वह बनारस पहुँचा और वहाँ भी उसे भीख का ही आश्रय लेना पड़ा। रात को मणिकर्णिका मन्दिर की सीढ़ियों पर जाकर सो रहता और प्रातः ही मृतकों का दाह-कर्म तथा श्राद्ध करनेवालों से भिक्षा माँगकर निर्वाह कर लेता। रोटी जो रूखी या सूखी मिलती, उसे खा लेता और जो पैसा-टका मिलता उसे अंटी में छुपा लेता।

उसके मन में यह उत्कट इच्छा बनी थी कि वह किसी प्रकार लखनऊ पहुँच जाए। वहाँ तक जाने योग्य रेल-किराए की रकम जब एकत्रित हो गई तो उसने निश्चय कर लिया कि अगले दिन पैसेन्जर गाड़ी से वह लखनऊ को चल देगा।

किन्तु दुर्भाग्य ने अभी भी उसका साथ नहीं छोड़ा था। रात में सोकर जब वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः जगा तो पता लगा कि अंटी से रुपए लापता थे। उसको यह समझ में नहीं आया कि कब और कैसे कोई उसकी अंटी में से रुपए निकालकर ले गया है।

उसको निराशा तो बहुत हुई, परन्तु उसने उत्साह नहीं छोड़ा। पुनः वह उसी प्रकार पैसा-पैसा कर धन एकत्रित करने लगा। जब उसके पास दो रुपए हो गए तो वह जंगई का टिकट ले गाड़ी में चढ़ गया और लखनऊ पहुँचने पर पकड़ लिया गया। उसको मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित किया गया। उसने अपना असली नाम प्रकट नहीं किया। उसने अपना नाम सालिगराम बताया और कहा कि वह कलकत्ते में रहता था। वहाँ पर जब उसे खाने को भी कुछ नहीं मिला तो पश्चिम की ओर कोई काम-धन्धा ढूँढने के लिए चला था। उसके पास बनारस तक के लिए पैसे थे। वहाँ वह कुछ दिन काम की खोज में रहा। किसी प्रकार उसके पास जंगई तक आने के पैसे हो गए और उसने जंगई का टिकट ले लिया, किन्तु वह वहाँ न रुककर लखनऊ आ गया है। मजिस्ट्रेट ने आज्ञा सुना दी। उसको एक महीने का कठोर कारावास का दण्ड मिला। इस प्रकार सालिगराम के नाम से सुन्दरदास को कारावास में डाल दिया गया।

वहाँ उसे अभी दस-पन्द्रह दिन ही हुए थे कि जेल के एक पुलिसवाले ने उसे पहचान लिया। एक बार जेल को निर्मित करने का ठेका सुन्दरदास को भी मिला था। इस पुलिसमैन को विदित था कि सुन्दरदास 'चार सौ बीस' के अपराध में पकड़ा गया था और उसके सम्बन्धी ने एक बहुत बड़ी जमानत देकर उसको छुड़ाया था। वह यह भी जानता था कि सुन्दरदास लापता हो गया था और उसके जमानती के रुपए कुर्क कर लिये गए थे जिससे उसके हृदय की गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया था।

उस पुलिसवाले को जब सन्देह हुआ तो दो-चार दिन तक वह अपना सन्देह दूर करने की दृष्टि से, सुन्दरदास को पहचानता रहा। एक दिन उसके पास जाकर पूछ लिया, "क्यों सुन्दरदास! अभी भी धोखेबाजी चलती है?"

सुन्दरदास अपना नाम सुनकर चौंक उठा और वह घबरा गया। उसके मुख से एक शब्द भी नहीं निकला। इससे उस पुलिसवाले को विश्वास हो गया कि उसने ठीक ही पहचाना है। अतः उसने तुरन्त अपने अफसर को सूचना दी। परिणाम यह हुआ कि पुलिस ने सुन्दरदास को पुराने मुकद्दमे में पुनः पकड़ लिया और उसके विरुद्ध जाँच आरम्भ कर दी।

पुलिस सुन्दरदास की पहचान के लिए रामनाथ बत्रा, बैंक के मैनेजर और सतीश को बुला लाई। वह पहचान लिया गया और अब उस पर मुकद्दमा चलने लगा। मुकद्दमा वही पुराना था। उसने प्रोनोट लिखकर बैंक को ठगा था।

सतीश को पुलिस का एक आदमी थानेदार का रौब दिखाकर हवालात में ले गया। वहाँ सुन्दरदास को उसके सम्मुख खड़ा कर पूछा, "इसे जानते हो?"

"हाँ पहचानता हूँ, ये मेरे मामा हैं।"

"क्या नाम है इनका?"

"सुन्दरदास।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके पिता जी ने इसकी जमानत दी थी क्या ?"

"जी हाँ।"

"और यह भाग गया था ?"

"इनका पता नहीं मिला। इस पर पिता जी पर कुर्की लग गई और उनका हृदय की गति बन्द होने से देहान्त हो गया।"

यह सब-कुछ लिखकर हस्ताक्षर करवा लिये गये। बत्रा ने भी सतीश की बात का समर्थन किया। इसके अतिरिक्त तीन-चार और साक्षी भी लाए गए।

उसी दिन सतीश ने घर आकर माँ और मामी को अपने मामा के हवालात में होने के विषय में बताया। सुनते ही इकादशी दूसरे दिन हवालात में जा पहुँची। उसकी उपस्थिति ने भी प्रमाणित कर दिया कि यही सुन्दरदास है।

इकादशी और सुन्दरदास में कोई बात नहीं हुई। वह नहीं चाहता था कि उसके मुख से एक शब्द भी ऐसा निकले जिसका बुरा प्रभाव उसके मुकद्दमे पर पड़े।

अवसर पाकर इकादशी ने उसे अपना सारा हाल सुना दिया और यह भी बताया कि वह अब सरस्वती के घर पर रहती है। वहाँ से लौटकर इकादशी कई दिन तक रोते हुए अपने दुर्भाग्य को कोसती रही।

सुन्दरदास के मुकद्दमे के समय वह कचहरी में उपस्थित होती रही। उसने देखा कि उसके पति की सहायता के लिए वहाँ कोई भी नहीं आता। अदालत ने सुन्दरदास की प्रार्थना पर एक साधारण-सा वकील उसकी ओर से खड़ा कर रखा था और वह सुन्दरदास को बचाना तो एक ओर रहा, अपनी बहस से सुन्दरदास के अपराध को कुछ बढ़ा-चढ़ाकर ही उपस्थित करता था। मजिस्ट्रेट ने इस अपराध में अधिक-से-अधिक दण्ड दे दिया। सुन्दरदास को सात वर्ष का कठोर कारावास हो गया।

सुन्दरदास की किसी ने अपील नहीं की और वह चुपचाप दण्ड भोगने लगा।

इस घटना से इकादशी को इतना दुःख हुआ कि वह निरन्तर बीमार रहने लगी। अपने पति के मुकद्दमा समाप्त होने के तीन मास पश्चात् वह मृत्यु का ग्रास बन गई।

इकादशी का संस्कार कर घर के सब प्राणी लौटे तो रामसुमन के मुख से निकल गया, "भगवान के घर देर तो है पर अन्धेर नहीं।"

"काका!" रेखा ने कहा, "भगवान जाने और उसके अपराधी जानें। हमें तो अपनी ही बात का ध्यान रखना चाहिए। हम कहाँ थे और कहाँ पहुँच गए हैं! इसके लिए तो हमें भगवान का धन्यवाद ही करना चाहिए।"

"वही कह रहा हूँ बेटी! मुझे लखनऊ में आए छब्बीस वर्ष हो गए हैं। इस काल में मेहनत, सचाई और लगन से जीवन-यापन में लगा हूँ और भगवान का धन्यवाद है कि मेरी मेहनत का फल मिल रहा है।"

रामनिरंजन बोल उठा, "भगवान की बात तो मैं जानता नहीं। इतना जानता हूँ कि मेहनत करने और युक्ति तथा मितव्ययिता से निर्वाह करने में हम सब ने एड़ी से चोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक का जोर लगाया है। यह सब-कुछ उसी प्रयत्न का फल है।"

रामसुमन हँस पड़ा। वह कहने लगा, "यह मेहनत, यह सचाई, यह युक्ति और विपत्ति में उत्साह, इन सभी का आधार भी तो राम की कृपा ही है। निरंजन, भगवान सबके हृदय में विराजमान है। वह मनुष्यों को सीधा और सच्चा मार्ग बताता रहता है। परन्तु जो लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के वशीभूत होकर उसके निर्देश नहीं सुनते, वे अपनी भूल का फल भोगते हैं। उनके मन के द्वार काम-क्रोधादि से इस प्रकार बन्द हो जाते हैं कि वहाँ तक भगवान की आवाज पहुँच ही नहीं पाती। वे लोग अपने हाथ से ही अपना सर्वनाश कर लेते हैं।"

"तो क्या यह बात भी आपको भगवान ने बताई होगी कि गाय का दूध बेचने से हमारी उन्नति होगी?" निरंजन ने तुरन्त उत्तर दिया।

"नहीं निरंजन! भगवान ने तो केवल सत्य भाषण, निष्कपटता, निरहंकारता तथा वशीकरण का मार्ग दिखाया था। उस पर चलकर जीवन-यापन करना मेरे आधीन था। भगवान के बताए मार्ग पर चलनेवाले को सीधा और सच्चा मार्ग स्वयं मिलता रहता है। उसी का परिणाम है कि मेरी वृत्ति गोसेवा, गोमाता का गोबर उठाना तथा उनके दूध को निर्विकार रखने की ओर झुकी। फल तुम देख ही रहे हो। दूध दोहता था और गोबर समेटता था। मैं इसके अतिरिक्त अन्य कोई काम जानता भी नहीं था।"

: १० :

सतीश ने अपना माँ को यह आश्वासन दिया था कि रामनिरंजन को समझाने का यत्न करेगा। फिर भी उसे अवसर नहीं मिला। इसी बीच में सुन्दरदास की घटना आ घटी थी। पूर्ण परिवार का ध्यान उसी ओर केन्द्रित हो गया था। मुकद्दमे को तीन साल लग गए और मुकद्दमा समाप्त होते-होते इकादशी बीमार रहने लगी।

इकादशी का संस्कार किए भी एक मास हो चुका था और सतीश रामनिरंजन से रेखा की बात कर नहीं सका। वह अनुभव कर रहा था कि रेखा और रामनिरंजन दोनों ही गौशाला का कार्य चित्त लगाकर करते हैं। देखनेवाला यह नहीं कह सकता था कि दोनों के मन में जीवन की महान् निराशा विराजमान है।

उस वर्ष की आय का ब्यौरा तैयार किया गया। सब प्रकार के खर्चे तथा टैक्स देकर इस वर्ष तीस हजार नकद बचा था। यों तो बैंक में गौशाला का साठ हजार रुपए से ऊपर नकद जमा था। रामनिरंजन का प्रस्ताव था कि कानपुर में भी एक ऐसी ही गौशाला खोल दी जाए। रामसुमन का विचार था कि यदि कोई चाहे तो वह यहाँ से पृथक् होकर कानपुर में अपना कार्य आरम्भ कर सकता है। उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि यहाँ रहते हुए वहाँ के काम पर नियन्त्रण नहीं रह सकेगा। वेतनधारी कर्मचारी उस प्रकार काम नहीं कर सकते जिस प्रकार कि हम लोग करते हैं।"

रेखा ने इस बात का समर्थन करते हुए कह दिया, "काका जी का कहना ठीक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ पर हम घर के लोग ही अपने-अपने काम को सम्भाले हुए हैं। वहाँ जो कोई भी जाएगा उसे अकेले काम करना होगा और शेष काम नौकरों पर छोड़ना होगा। इस अवस्था में वहाँ का काम यहाँ की तरह नहीं चल सकेगा।....

"हाँ, कुछ काल के पश्चात् जब सतीश और रामाश्रय के बच्चे बड़े हो जाएँगे तो वे लोग कहीं अन्यत्र जाकर ऐसी गौशाला चला सकेंगे।"

रामसुमन ने कहा, "इसलिए मेरा विचार है कि साठ हजार में से चव्वन हजार रुपए पत्तीदारों में बाँट दिये जाएँ। वे अपने-अपने रुपए को जैसे चाहें प्रयोग में ला सकेंगे।"

इस प्रकार बाँटे जाने वाले रुपयों के छः-छः हजार के नौ भाग कर दिए गए। दो-दो भाग सतीश, रामसुमन और रामाश्रय को मिल गए। रेखा और रामनिरंजन को एक-एक भाग मिला।

इस बँटवारे पर सतीश को विस्मय हुआ। बाद में एकान्त में उसने रामसुमन को कहा, "काका! यह तो अन्याय हो गया।"

"क्या अन्याय हुआ है?"

"रामनिरंजन को दो भाग मिलने चाहिएँ।"

"नहीं सतीश! उसने विवाह नहीं किया। इस कारण उसका अधिकार नहीं कि वह दो भाग ले।"

"पर काका! हमारे विवाह के कारण तो व्यवसाय में किसी प्रकार भी उन्नति नहीं हुई?"

"देखो सतीश! जब रामनिरंजन और रामाश्रय का जन्म हुआ था तो मेरा कुछ उत्तरदायित्व बढ़ गया था। मैं अपनी मेहनत और रुपया इनके पालन-पोषण में, शिक्षा-दीक्षा में व्यय करता हुआ सदा यह अनुभव करता था कि मेरी पूँजी बढ़ रही है। यह ठीक था कि उस समय यह पूँजी लाभ नहीं दे रही थी, परन्तु समय पाकर यह लाभ देने लगी। हमारी उन्नति का रहस्य यही है कि निरंजन, रामाश्रय और तुम्हारी पूर्ण शिक्षा इत्यादि मेरे व्यवसाय की उन्नति में लगी हुई है।....

"इसी प्रकार तुम्हारा लल्लू और रामाश्रय का बच्चा जो होने वाला है, हमारी पूँजी बनकर किसी समय इसको उन्नत करनेवाले होंगे।"

सतीश हँस पड़ा। रामसुमन उसके हँसने का अर्थ भाँप गया। इस कारण उसने कहा, "कदाचित् इस कारण हँसे हो कि यदि रामनिरंजन और रामाश्रय बड़े होकर भारत के अन्य युवकों की भाँति माता-पिता से स्वतन्त्र होकर पृथक् कारोबार करते तो मेरी पूँजी व्यर्थ जाती न? इसमें हँसने की कोई बात नहीं सतीश! ऐसा भी हो सकता था। इससे भी बुरी बात कि इनके पढ़ने और बड़े होने के पश्चात् भगवान इनको मुझसे छीन लेता। हो सकता था इनकी अकाल मृत्यु हो जाती। तब क्या होता? तब वही होता जो चेचक से हमारे सब जानवरों के मरने पर हुआ था, अर्थात् अपने दुर्भाग्य से पूर्ण पुरुषार्थ के विनाश होने पर पुनः पुरुषार्थ करता।....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही तो भगवान का आशीर्वाद है कि जिससे मेरी सचाई, ईमानदारी तथा धीरज का फल मिला। लड़के बड़े हुए, आज्ञाकारी हुए और सहकारिता के सिद्धांत को माननेवाले हुए। इसका परिणाम भी तुमने देख लिया है।"

सतीश बात को समझ रहा था। सरल भाषा में रामसुमन के कथन का अर्थ वह यह समझा था कि परिवार का बड़ा होना लाभ की बात है, हानि की नहीं। यह हानि की बात तब होती है जब सब बड़े होकर पक्षियों की भाँति अपने माता-पिता के घोंसले को छोड़कर पृथक् घोंसला बना लेते हैं।

रामनिरंजन के विवाह की समस्या उसके मस्तिष्क में खटक रही थी। एक दिन उसे अवसर मिला, तब वह रामनिरंजन के पास जा पहुँचा। उससे लाभ के बँटवारे की बात चलाकर उसने कहा, "निरंजन! काका का कहना है कि तुमको एक भाग इसलिए मिला है क्योंकि तुम अभी तक अविवाहित हो।"

रामनिरंजन ने मुस्कराते हुए कहा, "तो तुम्हारा अभिप्राय यह है कि लाभ अधिक लेने के लिए मैं विवाह कर लूँ?"

"यदि केवल लाभ की ही बात हो तो मैं तुम्हें विवाह के लिए नहीं कहता, किन्तु काका का कथन है कि घर में जितने भी बच्चे होते हैं उतनी ही व्यवसाय की पूँजी बढ़ती है। यदि तुम लोग काका की सहायता करनेवाले न होते तो काका वह सब उन्नति न कर सकते।"

रामनिरंजन खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "बहुत खूब! सतीश, तुम कहते हो कि विवाह करूँ जिससे लाभ का अधिक भाग मिल सके। और फिर बच्चे उत्पन्न करूँ जिससे व्यवसाय की उन्नति हो सके। अर्थात् मैं अपनी आत्मा को व्यवसाय की उन्नति के लिए बेच डालूँ।"

"इसमें आत्मा को बेचना कहाँ आ गया? मैंने सोमा से विवाह किया है, उसने एक अति सुन्दर-सुडौल बालक को जन्म दिया है। क्या इसमें मेरी आत्मा बिक गई है?"

"ठीक है, यदि सोमा जैसी पत्नी मिल जाए तब न? मुझे तो वैसी लड़की दिखाई दे नहीं रही।"

निरंजन ने हँसते हुए आगे कहा, "सतीश! मैं नित्य प्रातःकाल घूमने जाता हूँ। सहस्रों ग्राहकों को दूध दे चुका हूँ, उनमें सैकड़ों ही लड़कियों को देखा है, परन्तु न तो सोमा जैसी कोई गोबर एकत्रित करती और न ही दूध ले-जाती अभी तक दिखाई दी है।"

"होंगी तो सैकड़ों, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि तुम आँखें मूँदकर ही विचरते हो, जो तुमको इस चौबीस वर्ष में भी कोई दिखाई नहीं दी।....

"निरंजन! मेरे कान में एक धीमी-सी फुसफुसाहट सुनाई दी कि एक सोमा जैसी ही सौम्य, गम्भीर, सुशील और पूर्णांगी लड़की यहीं गौशाला में है। वह तुमसे विवाह की इच्छुक भी है, परंतु तुमने उसे अस्वीकार कर दिया है। बताओ, यह आँखें होने तथा न होने की बात नहीं है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिरंजन ने सिर उठाकर सतीश के मुख पर देखते हुए पूछा, "रेखा की बात कर रहे हो सतीश ?"

"हाँ, क्या हानि है इसमें ?"

"यह तुम कह रहे हो ?"

"हाँ, भैया निरंजन ! मैं सतीश, सेठ कमलापति का सुपुत्र, अपनी बहन और चौकीदार के पुत्र रामनिरंजन के विवाह की बात कर रहा हूँ।"

"ओ हो, तुम्हारे मस्तिष्क में अभी भी रुपए की बू घुसी हुई है। मैंने रेखा से विवाह न करने का निश्चय इसलिए नहीं किया कि वह धनी की लड़की थी अथवा मैं अब धनवान हो गया हूँ। नहीं सतीश ! यह बात नहीं है।....

"बात यह है कि मैं बचपन से ही उसमें बहन की भावना रखता हूँ। उसने मुझको एक बार कहा था कि वह बचपन से ही मुझमें पति की भावना रखती है। दोनों की भावनाएँ अपने-अपने स्थान पर हृदयंगम हो चुकी हैं। न वह अपनी भावना निकाल सकी है और न मैं ही उसमें अपनी पत्नी की भावना उत्पन्न कर सका हूँ। परिणाम यह हो रहा है जो तुम देख रहे हो।....

"वह अपना भावना के अधीन आजीवन कुँवारी रहना चाहती है। मैं अपनी बहन को दुःखी देख विवाह करना नहीं चाहता।"

"क्या यह भावना की बात पागलपन नहीं है ?"

"अभी तक तो यह एक अति श्रेष्ठ वस्तु समझ में आ रही है। जब इसके विपरीत बात समझ में आवेगी तो विवाह कर लूँगा।"

सतीश निरुत्तर हो गया। उस रात वह देर बाद सो सका। सोते ही वह एक स्वप्न देखने लगा। उसको दिखाई दिया कि उनकी गौशाला स्वर्ण की बनी हुई है। रामसुमन अस्सी वर्ष का वृद्ध, श्वेत केश, झुर्रियाँ पड़ा मुख लिये बहुत सुन्दर वस्त्र पहने स्वर्ण-महल के एक आगार में बैठा है। उसके चारों ओर वह स्वयं, रामाश्रय, उन दोनों की पत्नियाँ तथा एक दर्जन के लगभग लड़के-लड़कियाँ छोटी-बड़ी आयु के बैठे परस्पर खेल-कूद रहे हैं। उसकी माँ वहाँ नहीं है। परन्तु दीवार के साथ उसका चित्र टँगा है और वह चित्र देखकर मुस्करा रहा है।

सतीश ने उस स्वप्न में रामनिरंजन को देखना चाहा। इधर-उधर देखने पर भी वह दिखाई नहीं दिया। इस कारण उसने रामसुमन से पूछ लिया, "काका ! निरंजन कहाँ है ?"

"वह बाहर बैठा है।"

सतीश उठकर उसको देखने के लिए चला गया। रामनिरंजन घास की लॉन में भगवे वस्त्र पहने खड़ा था। वह सतीश को देखकर बोल उठा, 'नारायण हरि।'

सतीश भौंचक्का-सा देखता रह गया। इस पर रामनिरंजन ने एक आवाज दी, 'नारायण हरि।'

इतने में रेखा मकान पर से हाथ में दो रोटी लिये उतरी और बाबाजी की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Central Library
081
168007
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
168007
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हाथ बढ़ा दिया। रामनिरंजन ने कमण्डल आगे कर दिया। रेखा ने रोटियाँ उसमें डाल दीं। रामनिरंजन 'नारायण हरि' कहता हुआ लॉन से बाहर हो गौशाला के कुएँ की जगत पर बैठकर रोटी खाने लगा।

रेखा की आँखों से आँसुओं की अविरल धारा बह रही थी। उसने आँचल से आँसू पोंछे और मकान के भीतर चली गई।

सतीश इस दुःखदायी दृश्य को देखकर रामसुमन के पास जाना भूल गया और कुएँ की ओर रामनिरंजन से मिलने चला गया। वह वहाँ पहुँचा तो रामनिरंजन वहाँ पर नहीं था। उसने समझा कि उसको आता देख रामनिरंजन चला गया है। इतने में सतीश की नींद खुल गई। मनोद्‌गारों से उसके शरीर से पसीना निकलने लगा था।

परंतु सतीश का ध्यान इधर नहीं गया। वह लपककर निरंजन के कमरे में गया। देखा चारपाई पर बिस्तर बिछा था, पर रामनिरंजन नहीं था। पिंजरा टँगा था, पर तोता उड़ चुका था। वह भागा वहाँ से और गया दूसरे कमरे में, तीसरे, चौथे, पाँचवें कमरे में पसीने से तर और व्यस्त। निरंजन कहीं न था। वह भागा इधर-से-उधर पागल की तरह। अन्त में निकल गया घर से बाहर लॉन में और पुकारने लगा जोर से—"निरंजन! निरंजन!! भैया निरंजन!!!"

उसकी आवाज सुनकर सभी भागते आए। निरंजन के लापता होने का वृत्तांत सुनकर अवाक् रह गए, खड़े के खड़े स्तम्भित-से। सभी के आँसुओं की धारा बह रही थी। पर मुख बन्द किए एक-दूसरे को देख रहे थे। इतने में भीतर से आवाज आई—रामसुमन के भजन की। सभी धीरे-धीरे उधर गए। रामसुमन ध्यानमग्न हो गा रहा था—

पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजु सुनु शठ मना।
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना॥
आभीर जय न किरात खल स्वपचादि अति अघरूप जे।
कहि नाम नारक तेहि पावन होहिं राम नमामि ते॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम हित निर्वान प्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमन्द तुलसीदास हूँ।
पायो परम विश्राम राम सयान प्रभु नाहीं कहूँ॥

उसके भजन को सुनकर उन्हें शांति मिल रही थी। उनकी अश्रु-धारा भक्ति से निर्मल होकर उनके हृदय के शोक को प्लावित करने लगी। इतने में रामसुमन ने फिर गाना आरंभ किया—

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी॥
मो समान आरत नहीं आरतिहर तो सौं।
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मो सौं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-S

आगत संख्या 168007

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(१८९४-१९८९)

शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गए।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शस्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किए बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar